GOVERNMENT OF INDIA

ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA

CENTRAL ARCHÆOLOGICAL LIBRARY

ACCESSION NO. 20246.

CALL No. Sa7R/ Tog

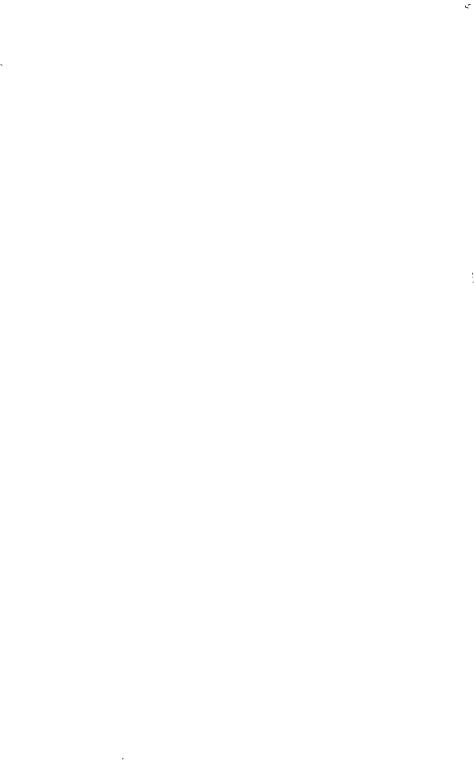
P4.I

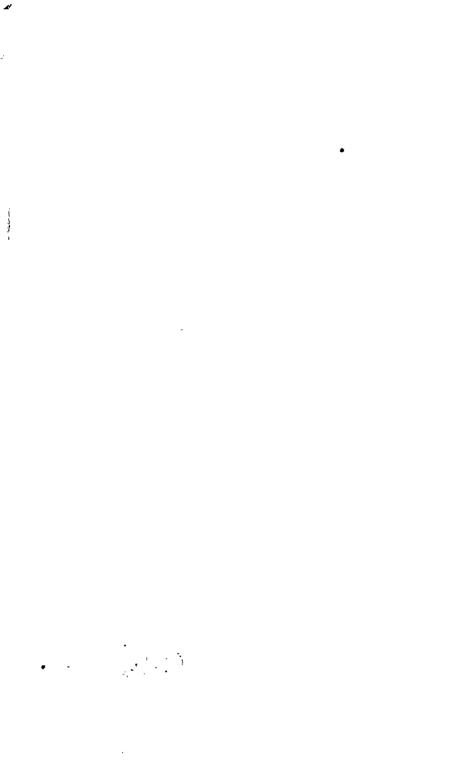
D.G.A. 79

20246

B 271 Part 1

15271 (12(1)







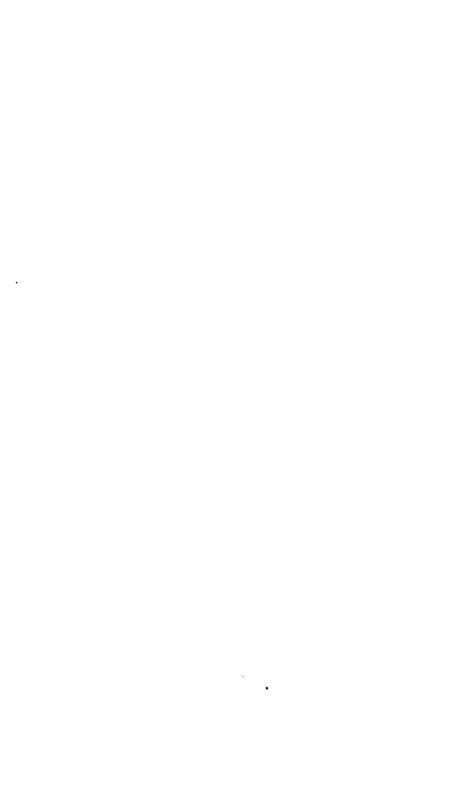


о Б2 -



RAJAH GUMM. SUUHINDRO MOMUT TIGA MINUS NGC. G.I.E F.R.S.L.M.R.A.S.

20246 MANI MALA ম নি মালা Part 1 134 S.M. TAGORE INDIA 327/1



मिणिमाला

अर्थात्

रत्नविज्ञान-ग्रन्थः।

श्रीशीरीन्द्रमोद्दन ठाकुरेण मिडजिक् डाकार,

नाइट्कमार्खार् अश्दि अश्वीर अत् निज्ञोगोन् अत् तेन्जियम्, नाइट्कमार्खार् अत्दि पार्टकास् अत्दि अश्वीर् अत्यानवार्ट अत्साक्सनि, सिभे नियार् अत्दि इस्मिरियेन अश्वीर अत् में डिजिडि अत् टारिक,

ध्यामदेशीय नाइट अव दि अक्षीर अव वसवमाना, नेपानीय नाइट अव्दि गुरखा अक्षीर अव सरखती, सङ्गीतनायकः, सङ्गीतसागरः,

> वङ्कसङ्कीत-विद्यालय-प्रतिष्ठात्वसभापतिः, गरीयानरेरि माजिष्टेट. जष्टिम् अव्दि पिस,इउनिभार

किताता महानगरीयानरेरि माजिप्नेट, जिप्तम् अविदि पिस, इउनिभारिसिटि फेलो । प्रेट टटनायल एडीय रयेल आसियाटिक सोसाइटि मे म्बर, साहित्य रयेल सोसाइटि फेलो;

सुद्रडेन् राजधानी एकक्लम् नगरीय सङ्कीत विद्येत्राडेभि अनरेरि मे स्वर, फ्यान्स राजधानी पारिस् नगरीयाफिसर डिलाइनप्ट्रक्सन् पवलिक् एकाडेमि आफिसार, वेल्जियम्राज्यस्य थिल्स साहित्य विज्ञान रयेल एकाडेमिएसोसिएट मे स्वर,

द्यामष्टाड्राम्नगरीय सङ्गीतिवद्यामोसाद्गटिकरेखारिं मेम्बर, निदारलग्र्डस्थ हेगनगरीय रवेल फादललिजिकेल् एथ्नायाफिकेल् भारतवर्षीये निष्टिटिडसन् फरेन् मेम्बर,

जेनिभानगरीय विश्व-विद्यालयं करे स्परिष्डं में स्वर, रोम राज्यस्य सेण्टिंसिसिलिया नगरीय रयेल एकाडेमि सोसिस्रो अनरेरिस्रो,

दराबी राज्यस्य मोसादरा डिडासकालिका सोसित्रो जनरेरित्रो, फोरन्स नगरीय रयेव मिर्जाजकेन द्रनिष्टिटिउट एकाडेमिएकाडेमिको करेस्सण्डे ण्टि, जरिएउटाव एकाडेमिजर्डिनारि में स्वर;

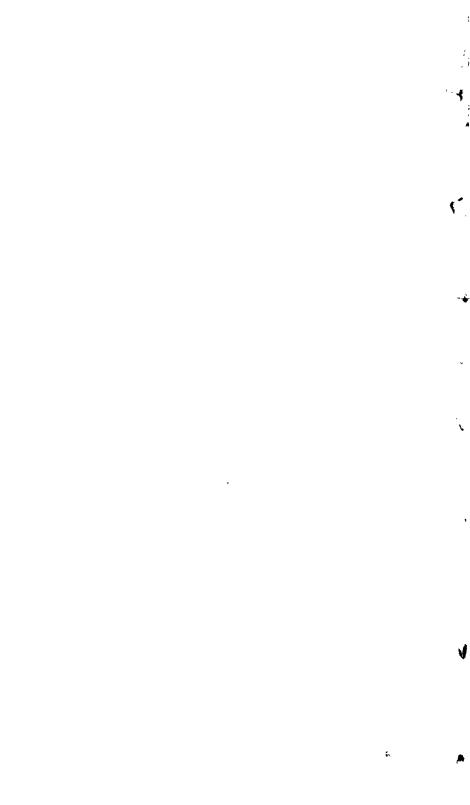
इरानोस्य उर्द्धिनोनगरस्य राफेनो रयेन एकाडेमि मोसियो करेस्पर्डेरिट, पारमा रयेन विश्वविद्यालय वेनिमेरिटो,

नेपल्स राज्यस्य पिटागोरिका नगरीयकाडमि सोमिको कोयापित्टर, वोलोगना नगरीय फिलज्ञारमिक एकाडेमि सोमिको जनरेरिको, योस राज्यस्थैधेनुसनगरीयारिचक्रोलिककेल सोसाद्दिये स्वर,

सि.सिनिद्वीपस्य पातारमानगरीय रयेन एकाहेमि मोमिको अनरेरिको, मार्डिनिया द्वीपस्य सेसेरि विश्व-विद्यालय पेइन्, अट्टेनियास्यमे जवोरन् नगरीय फिन्हारमणिक सोसाद्रटिक्यनरेरि मेम्बर,

इत्याद्युपाधिकेन प्रचीता।

कलिकातायां यन्यकारे या प्रकाशिता।



मणिमाला

ऋषात

रत्ने विज्ञानका ग्रन्थ।

श्रीशौरोन्त्रमोच्न ठाकुर मिउजिकं डाक्तर,

नाइट्कमार्ग्डार अव्दि अक्षीर अव् तिश्रीपोल्ड अव् वेलिजयम, नाइट्कमार्ग्डार अव्दि भाष्ट क्वास अविदि अर्डार अव् आजवार्ट अव साक्सनि, सिमे नियर अव्दि इम्मिरियेल अक्षीर अव् में ड्जिडि अव् टार्कि, स्थाम देशका नाइट् अव्दि अर्डार अव्वसवमाला, नेपालका नाइट् अव्दि गुरुखा अर्डार अव्सरस्तती, सङ्गीत नायक, सङ्गीत सागर,

नेपालका नाइट अव दि गुर्खा अडीर अव सरस्तती, सङ्गीत नायक, सङ्गीत सागर, वङ्ग-सङ्गीत-विद्यालयका प्रतिष्ठापक और सभापति,

कन्कत्ताका दर्जनभार सिटिका फेलो, अनरेरि माजिष्ट्रेट, जॉप्टस् अब दि पिस, चेट ब्रिटन और आय्रलग्डके रएल आसियाटिक् सोसाद्रटिका मेम्बर, साहित्यके रएल सोसाद्रटिका फेलो,

सुद्रडेनका राजधानी एक् इलम्का सङ्गीत विद्याके एकाडामिका अनरेरि में स्वर, फूान्सका राजधानी पारिसके आफिसार डिला दनष्ठ क्सन् पविलक्ष और एकाडामिका काफिसार,

वेल्जियमका थिल्प साहित्य और विज्ञानके रएल एकाडामिका एसोसिएट में स्वर,

आमष्टार डामका सङ्गीत विद्याका सोसाइटिका करे स्परिखं में स्वर, निदारल एडस्थं हेंग नगरका

रएल फाइललजिकेल एथ्नायां फिकेल भारतवर्थीय इनिष्टिटिलसनका फरेन में स्वर,

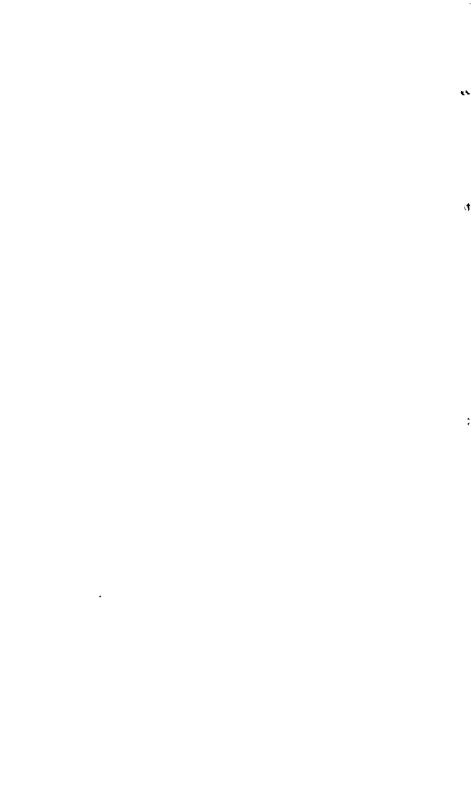
जिनिभा नगरका विश्व-विद्यालयका करे स्परिष्डं मे स्वर, रोम राज्यस्य सेर्प्ट्सिसिलियाका रएल एकाडामिका सोसिको अनरेरिको,

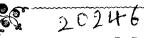
द्रटाली राज्यस्य सोसादटा डिडास्कालिकाका सोसिओ अनरेरियो, फ्रीरेन्स नगरका रएत मिडजिकेल द्रिटिटिडट एकाडामि एकाडामिकोका करेस्पग्डे एिट और अरियेण्टल एकाडामिका अर्डिनारि मेम्बर, द्रटालीका डर्तिनोका राफेलोका रएल एकाडामिका सोसिओ करेस्पग्डेरिट, पार्माका रएल विश्व-विद्यालयका वेनिमेरिटो,

नेपलस राज्यका पिटागोरिकाका एक डिमिका सोसिओ कोयापरिटर, वोजोग्नाका फिल्हार मिषक एकाडामिका सोसिओ अनरेरिओ, शीसका एयनस नगरका आरचिओलिजिकेल सोसाइटिका में स्वर,

सिसिलि द्वीपस्थ पालारमे का रएल एकाडामिका सोसिखी अनरेरिखी, सार डिनिया द्वीपस्थ सेसेरिका विश्व-विद्यालयका पेट्रन्, अष्ट्रेलियास्य मेल्बीरन्ता फिल्हार्मिशक सोसाद्गटिका अनरेरि सेस्वर इत्यादि उपाधिक कर्नुक प्रणीत और प्रकाशित।

कलकत्ताने यन्यकारणे प्रकाशित।





MANI-MÁLÁ,

OR

A TREATISE ON GEMS.

ВV

SOURINDRO MOHUN TAGORE, Mus. Doc.,

KNIGHT COMMANDER OF THE ORDER OF LEOPOLD OF BELGIUM;

KNIGHT COMMANDER OF THE 1ST CLASS OF THE ORDER OF ALBERT OF SAXONY;

CHEVALIER OF THE IMPERIAL ORDER OF MEDJIDIE OF TURKEY;

KNIGHT OF THE SIAMESE ORDER OF BUSABÁ-MÁLÁ;

KNIGHT OF THE GURKHÁ ORDER OF SARASWATI, SANGITA NÁYAKA AND SANGITA SÁGARA OF NEPAUL;

FOUNDER AND PRESIDENT OF THE BENGAL MUSIC SCHOOL;
HONORARY MAGISTRATE, JUSTICE OF THE PEACE AND
FELLOW OF THE UNIVERSITY OF CALCUTTA;

MEMBER OF THE ROYAL ASIATIC SOCIETY, AND FELLOW OF THE ROYAL SOCIETY OF LITERATURE, GREAT BRITAIN AND IRELAND;

HONORARY MEMBER OF THE ROYAL SWEDISH MUSICAL ACADEMY, STOCKHOLM;
OFFICIER DE L'INSTRUCTION PUBLIQUE AND OFFICIER D'ACADEMIE,
PARIS; ASSOCIATE MEMBER OF THE ROYAL ACADEMY OF SCIENCES,
LETTERS AND FINE ARTS OF BELGIUM;

CORRESPONDING MEMBER OF THE MUSICAL SOCIETY OF AMSTERDAM;
FOREIGN MEMBER OF THE ROYAL PHILOLOGICAL AND ETHNOGRAPHICAL
INSTITUTION OF NETHERLANDS INDIA AT THE HAGUE;
CORRESPONDING MEMBER OF THE UNIVERSITY OF GENEVA;

SOCIO ONORARIO OF THE ROYAL ACADEMY OF ST. CECILIA, ROME;
SOCIO ONORARIO SOCIETA DIDASCALICA ITALIANA;
ACCADEMICO CORRISPONDENTE OF THE ACADEMY OF THE
ROYAL MUSICAL INSTITUTE AND ORDINARY MEMBER OF THE

ORIENTAL ACADEMY OF FLORENCE;

SOCIO CORRISPONDENTE OF THE ROYAL ACADEMY OF RAFFAELLO, URBINO, ITALY; BENEMERITO OF THE ROYAL UNIVERSITY OF PARMA; SOCIO CO-OPERATORE OF THE ACADEMY OF PITTAGORICA, NAPLES; SOCIO UNORARIO OF THE PHILHARMONIC ACADEMY OF BOLOGNA;

HONORARY MEMBER OF THE ARCHÆOLOGICAL SOCIETY OF ATHENS, GREECE; SOCIO ONORARIO OF THE ROYAL ACADEMY OF PALERMO, SICILY; PATRON OF THE ATHENEUM OF THE ROYAL UNIVERSITY OF SASSARI,

SARDINIA; AND HONORARY MEMBER OF THE PHILHARMONIC SOCIETY OF MELBOURNE, AUSTRALIA; &C., &C., &C.

Sa7K

PART I.

CALCUTTA:

PRINTED T I. C. Bose & Co., Stanhope Press, 249, Bow-Bazar Street, and Published by the Author.

1879.

[All rights reserved.]





CENTRAL Ace. No. 20246.

The 6. 4. 55.

All No. Satr Tag.

ম্পিম্পূ

অৰ্থাং

রত্ববিজ্ঞান-গ্রন্থ।

জ্ঞীশৌরীন্দ্রমোহন চাকুর, মিউজিক ডাক্তার, নাইট কমাণ্ডার অব দি অর্ডার অব লিওপোল্ড অব্ বেল্লিয়ম, নাইটু কমাণ্ডার অব্দি ফাষ্ট' ক্লাস অব্দি অর্ডার অব আলবার্ট অব্ সাক্সনি, সিভেলিয়র অব্ দি ইম্পিরিয়েল অর্ডার অব্ মেড্জিডি অব্ টার্কি, भागमान्द्रभत नार्डे अव् कि अर्थात अव्यन्तरभाना,

तिभीत्मत्र नाहिष्ट अव् कि खर्था अछात्र अव् मत्रच्छी, मङ्गीक नात्रक, मङ्गीक मार्गत्र ;

বঙ্গ-সঙ্গীত বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা ও সভাপতি. কলিকাভার ইউনিভারদিটির কেলো, অনরেরি মাজিট্রেট, জাইিদ্ অব্ দি পিস, এেট ত্রিটন ও আয়র্লণ্ডের রএল আসিয়াটিক্ লোসাইটির মেম্বর, সাহিত্যের রএল সোসাইটির কেলো;

স্থইডেনের রাজধানী প্রকৃহলমের সঙ্গীত বিদ্যার একাডেমির অনরেরি মেধর, ফালের রাজধানী পারিদের আকিসার ডিলা ইন্ট্রকুসন পব্লিক্ ও একাডামির আফিসার,

বেলজিয়মের শিশ্প সাহিত্য বিজ্ঞানের রএল একাডেমির এসোসিয়েট মেম্বর,

আমষ্টারডামের সঙ্গীত বিদার সোসাইটির করেম্পণ্ডিং মেম্বর, নিদারলগুস্থ হেগ নগরের

त्र अन का हमन जिएकम अथना औं कि दर्जना जात्र जरवीं व हैन हि हि डेमरनद करतन रमन्त्र, জিনিভানগরের বিশ্ববিদ্যালয়ের করেম্পুণ্ডিং মেম্বর, রোম রাজ্যত্ব দেণ্ট দিদিলিয়ার রএল একাডেমির সোদিও অনরেরিও,

ইটালী রাজ্যন্থ সোদাইটা ডিডাস্কালিকার দোসিও অনরেরিও, ক্রোরেন্স নগরের রএল মিউজিকেল ইনিষ্টিটেউট একাডেমি

একাডেমিকোর করেম্পণ্ডেণ্টি, ও ওরিরেণ্টাল একাডেমির অর্ডিনরি মেমর,

ইটালীস্থ উর্বিনোর রাফেলোর রয়েল একাডেমির সোসিও করিম্পণ্ডেণ্টি, পার্মার রয়েল বিশ্ববিদ্যালয়ের বেনিমেরিটো,

নেপলন রাজ্যের পিটাগোরিকার একাডেমির সোসিও কোয়াপরিটর, বোলোগ্নার ফিল্হারমণিক একাডেমির সোসিও অনরেরিও, वीरमत এएथम नगरतत

আর্চিওলজিকেল সোপাইটির অনরেরি মেম্বর, দিদিলি দ্বীপক্ষ পালার্মার রয়েল একাডেমির দোলিও অনরেরিও, मार्जिनीयां दीशक रमरमदित विश्व-विमानरयत शिवन, অট্রেলিয়াস্থ মেল্বোরণের ফিল্হার্মণিক সোদাইটির অনরেরি মেম্বর,

> ইত্যাদ্বাপাধিককর্ত্তক প্রণীত। কলিকাডায় গ্রন্থকার কর্তৃক প্রকাশিত।



भूमिका ।

श्चार्याणां पुराणादिशास्ताकरेश्यो रत्नात्याहृत्येयं "मणिमाला" हिन्दीं-राजी-संस्कृत-वङ्गीयभाषाचतुष्टयसूत्रेर्याधिता । प्रतिरत्नविवरणान्ते रचनाया दृष्तासम्पादनार्थं ग्रान्यस्तरूपामउरोपीयरत्नतत्त्वविदां मतं सिन्नविश्चितं। ग्रन्थश्चे मालाग्राधितरत्नविषयकवर्षनपरिश्लोभितमध्यमणि-रूपपरिशिष्टकं योजितम्।

ग्रन्थकार:।







भूमिका।

द्यार्थ-जातिका पुराण, चौर चन्य चन्य प्राह्मखरूप चाकरसे रत्न
सव सङ्ग ह करके यह "मिणमाला" चारेजी, हिन्दी, वाङ्गाला चौर
संख्नुत यह चारो भाषा खरूप चारो मूच करके वनाया। प्रत्येक
रत्नके वर्णनाके प्रेषभागमे रचनाका टज़्ता करनेकेवासे इउरोपका
रत्नतत्त्वच पण्डित लोगके मत ग्रन्थि खरूप कल्पित भये। यह मालामे
नाना रत्नके विषयका वर्णन करके परिशोभित मध्यमण्डिके खरूप एक
परिश्रिष्ट संयुक्त भया।

ग्रन्थकार।





PREFACE.

strung on the four-fold thread of English, Bengali, Hindi and Sanskrit languages, with the gems obtained from the precious mines of the Puránas and other classic works of the Hindus. At the end of the description of each class of gems have been inserted the views of the European authorities thereon as a knot in order to compactness. To the whole has been attached a Pendant forming the supplement, replenished with miscellaneous information on diverse kinds of gems.

S. M. TAGORE.







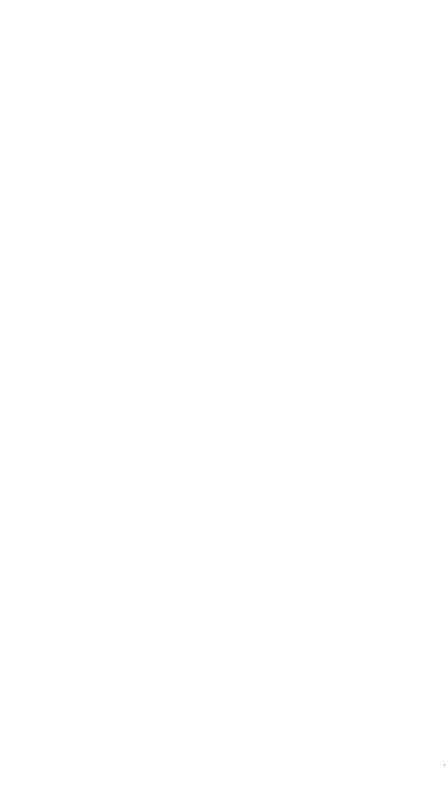


আর্ঘ্যাতির পুরাণ ও অন্যান্য পুরাতন গ্রন্থমূহরূপ আকর হইতে বন্ধ সম্দার আহরণপূর্বক এই "মণিমালা" ইংরাজী, বাঙ্গালা, হিন্দী ও সংস্কৃত এই চারি ভাষারূপ চারি গাছি স্থ্রন্থারা গ্রথিত হইরাছে। প্রত্যেক রত্নের বর্ণনার শেষভাগে রচনার দৃঢ্তা সম্পাদনের নিমিত্ত ইউরোপীয় রত্নতন্ত্ববিদ্দিগের মত গ্রন্থির করিত হইরাছে। এই মালাতে নানা রত্ববিষ্থিণী বর্ণনা দ্বারা পরিশোভিত মধ্যমণিস্বরূপ একটী পরিশিষ্ট সংযুক্ত হইরাছে।

গুন্থকার।











To

THE HON'BLE SIR ASHLEY EDEN, K.C.S.I.,

Sientenant-Governor of Bengal,

THIS

MA<u>N</u>I-MÁLÁ

18

Most Respectfully Dedicated

BY

HIS MOST GRATEFUL

AND

OBLIGED SERVANT

THE AUTHOR.









सूचीपवम्।

विषयः ।					ঘূষা
रत्नजातिः		•••	•••	•••	8
स्यमन्तकोपाखा	नम	• • •	•••	•••	T
नवरत्नानि		•••		•••	७२
वज्ञम्	•••	•••	•••		E o
वज्दोधाः		•••	•••	•••	११8
वजुमारग्रविधिः	•••	•••	•••	•••	१ इह
माणिकाम्	•••	***	•••	•••	१८६
मागिकास्य काय	ाद्यः	•••	•••	•••	२ ०२
<u>बैदूर्य्यम्</u>	•••	•••	•••	***	रपूर
वैदूर्यग्रामाः	•••	•••	•••	***	२५ €
वेंद्रूर्यदोषाः	•••	***		•••	२५८
मुत्ता	•••	•••	•••	•••	<i>२७</i> २
मुक्तागुर्याः	•••	•••	•••	•••	इ १०
मुक्तादीषाः	•••	•••	•••	•••	३ १६
ग्रोमेदः	•••	•••	•••	•••	₹५८
विद्रुमम्	•••	***	•••	•••	३६६
मरकतम्	•••	•••	•••	•••	३८६
मरकतदोषाः	•••	•••	•••	•••	३ ८२
मरकतग्राः	•••	•••	•••	***	इ.€8
मरकतच्छाया	•••	•••	•••	•••	३८ई
मुष्यरा गः	•••	•••	•••	•••	8 २ ०
इन्द्रनीलः	•••	•••	•••	•••	८३८
इन्द्रनीचगुर्याः	•••	•••	***	•••	88•
इन्द्र नी चरीघाः		•••	•••	•••	४४२
कर्ते तनम्	•••	•••	•••	•••	8६०
यु चकम् े	•••	•••	•••	•••	8 € ←
र्वाधरा खम्	•••	•••	•••	•••	8-0
स्फटिकम्	•••	•••	•••	•••	855
भीषाम्	•••	•••	•••	•••	8£ Ę







- 大学

सूचीपत ।

					×
		सूचीपत ।	1		
		4 ♦►			
विषय।					प्रजा
रह्नका जात	•••	•••	•••	•••	8
स्यमन्तन मसिका	वया न	•••	•••		ਢ
े नौरत्नका वयान		•••	•••		७२
हीरेके वयान		•••	•••	•••	60
हीरेका अयेव	•••	•••		•••	११८
हीरेका मारनेका	उपाय	•••	•••	•••	१३६
माणिकका वयान			•••		१ <i>८</i> ६
माणिकका काया	=7	•••		•••	२ ० २
सश्चित्रवेका वयान		•••		•••	२ ५ूर
सश्चिवेका ग्या				•••	⋜पू€
लशुनियेका अयेव		•••		• • •	२५ू⊂
मोतिका वयान		•••	•••	•••	२ ७२
मोतिका गरा	•••	•••	• • •	•••	₹१०
मोतिका अयेव		•••			३१ €
) गोमेदका वयान		•••			રૂપૂ છ
्रे मंग्रेका वया न		•••			३ ६६
पान्नका वयान		· · ·	•••	•••	३८६
पान्नेका अधेव	•••				३८२
पानेका गुग	•••	•••	•••	•••	835
पानेका काया		•••			ર્દર્દ
{ मुखाराजका वयान	Г		•••	•••	४२०
नीलम्का वयान		•••	•••		કર્ક
नीलाका ग्रा	•••	•••			880
नी लाका अधिव		•	•••	•••	89२
क्वेतकका वयान					8 € ∘
्रु जुक्का वया न		• • •	• • •		8É.
रुधिराख्यका वया	न	•••		•••	800
स्फटिकका वयान			• • •	•••	800
भीषाका वयान	•••				8£ É
}					





CONTENTS.

				I	Page
Invocation				•••	3
History of Syamantaka		•••	•••	•••	9
General Remarks on General Remarks of General Remarks on General Remarks of General Remar	ms	•••	•••	•••	7 3
DIAMO	ond, pag	ge 91 —1 8	5.		
Defects of Diamond	•••	***	***		115
Process of Refining a Di	iamond	•••	•••	•••	137
Diamond: Its Propertie		•••	•••	•••	142
Diamonds—where found	l	•••	•••		144
Colored Diamond				•••	151
Mode of Cutting-India	in and I	European	***	***	153
Engraving on Diamond		•••		•••	157
Price of Diamond, its	Flaws	and Defe	ects; m	ode of	
Testing		•••	•••		159
Supernatural and Med	icinal I	Properties	attribu	ited to	
the Diamond		•••	•••	•••	163
Celebrated Diamonds, I	Cohi-no	or	•••	•••	165
Great Mogul	•••	***	•••	•••	168
Pitt or Regent Diamond	ł	•••	•••	• 1 •	170
Orloff or Amsterdam D		•••	•••	•••	171
Nassuck Diamond		•••	***	•••	173
Nizam		•••	•••		"
Shah of Persia		•••		•••	,,
Pacha of Egypt		•••	•••	•••	174
Mattam Diamond	•••	•••	••	•••	,,
Sancy Diamond		• • •	•••	•••	175
Charles the Bold's Dian	\mathbf{nond}	•••	••	•••	176
Florentine Brilliant		•••		•••	177
Braganza	•••	•••	•••	•••	178
Pigott Diamond		•••	•••	•••	179
Hope Diamond	•••	•••		•••	22
Eugénie Brilliant		•••		•••	,,
Cumberland Diamond	•••	•••	•••	•••	180
Star of the South		•••	,	***	,,
Polar Star	•••	***	•••	•••	,,
Other large Diamonds	•••	•••	•••	•••	181





Ę	9	6	•	•
(6	Ò	L	
ł	•	_	_	1

	1	Pag e
Ruby, page 187—250.		Ū
Shades and other Qualities of Rubies	•••	203
Ruby: Its Properties	• • •	230
Rubies—where found	•••	233
Mode of Cutting	•••	236
Ruby, as known to the Ancients	•••	237
Engraving on Rubies Price of the Ruby, its Flaws and Defects; mod		238
Price of the Ruby, its Flaws and Defects; mod	le of	040
Testing Marvellous and Medicinal Powers attributed to		240
		0.40
Ruby	•••	243
Celebrated Rubies	•••	245
CAT'S EYE, page 253-270.		
Qualities of the Cat's-eye		257
Defects of the Cat's-eye	•••	259
Cat's-eve: Its Properties		266
Cat's-eyes—where found	•••	267
Mode of Cutting		"
Its price, Flaws and Defects; mode of Testing	•••	1)
Its Marvellous Powers	•••	269
Celebrated Cat's-eyes	•••	,,
PEARL, page 273-352.		
Properties of Pearls	•••	311
Defects of Pearls	•••	317
Pearl: Its Properties	•••	326
Original Formation of Pearls	• • • •	327
Pearls-where found: Pearl Fisheries	•••	331
Mode of Boring and Polishing	•••	339
Pearls, as known to the Ancients	•••	340
Price of Pearls: Imitations	•••	344
Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl		348
Celebrated Pearls	•••	349
Gomeda or Zircon, &c., page 355-36	5.	
Zircon, Hyacinth or Jacinth: Its Properties	•	360
Zircon, &c.,—where found	•••	361
Mode of Cutting and Polishing	•••	362
Zircon, Jacinth or Hyacinth, as known to the Anc	ienta.	002
Engravings		363
Engravings Price of the Zircon; its Flaws and Defects; mo	de of	0.00
resung		••
Marvellous Properties attributed to the Zircon	•••	365







				Page
Coral, 1	page 367—3	85.		_
Coral: Its Properties	•••	•••	•••	378
Corals-where found: Cora	l Fisheries		***	379
Cutting and Boring of Cora	.l ,	•••		381
Engraving on Corals		•••	•••	,,
Coral, as known to the Anci		se s	•••	382
Price of Coral: Its Imitation	ons		• • •	383
Marvellous and Medicinal P	owers attrib	outed to Co	ral	384
EMERALD,	, page 387—	-418.		
Defects of the Emerald	• • • •			393
Good Properties of the Eme		•••	•••	395
Shades of the Emerald	•••	***		397
Emerald: Its Properties	•••	•••	•••	402
Emeralds—where found	•••			404
Emerald, as known to the A	Ancients			407
Engravings on Emerald	•••	•••		411
Cutting of Emerald		•••		412
Price of the Emerald; its	Flaws and I	Defects: Im	ita-	
tions		•••	•••	413
Marvellous and Medicinal P	roperties	•••	•••	415
Celebrated Emeralds		***		417
Topaz, pa	age 421—4 3	33.		
Topaz: Its Properties				426
Topazes - where found: Va	rieties of th	e Topaz	•••	427
Topaz, as known to the Anc	ients		•••	428
Cutting and Engraving		***		
Its price: Imitations	••		٠, وه	430
Marvellous and Medicinal I	Properties at	tributed to	the	
Topaz		•••	•••	431
Celebrated Topazes	•••	•••		432
	page 435-	459.		
Qualities of the Sapphire	1.9.			441
Defects of the Sapphire	• • • •	•••	•••	443
Sapphire: Its Properties	•••	•••	•••	450
Sapphires—where found		•••	•••	451
Sapphire, as known to the A				
Engraving and Cutting		•••	•••	452
Its price, Flaws and Defects	:: Imitation	ns	•••	453
Marvellous and Medicinal H	Properties at	tributed to		
Sapphire		•••		.456
Celebrated Sapphires	•••	•••	••	458
Coronama tout bearing				









CHRYSOBERYL, page 461-	→4 66.	1	Page
CHRYSOBERYL, page 461- Chrysoberyl: Its Properties Chrysoberyls—where found Mode of Cutting Chrysoberyl, as known to the Ancients Its price GARNET, page 469— Garnet: Its Properties Its varieties—where found Cutting and Engraving			464 465 ", 466 472
Garnet, as known to the Ancients Its price: Imitations Marvellous and Medicinal Properties Celebrated Garnets CARNELIAN, page 481-	-487.	•••	476 477 479
Carnelian: Its Properties Carnelians—where found Cutting and Engraving Carnelian, as known to the Ancients Its price Marvellous and Medicinal Virtues att Carnelian	•••	the	482 483 484 485 486
QUARTZ, page 489— Quartz: Its varieties Rock-Crystal, page 48	•••	•••	494
Rock-Crystal: Its Properties: Where and Engraving Rock-Crystal, as known to the Ancien Its price: Imitations Marvellous and Medicinal Properties Celebrated Rock-Crystals	found: Cut	•	502 503 504 505









मृहीপত্ত।

	- →	_		
				পৃষ্ঠা
•••	•••	***	•••	æ
थान	***	•••	•••	৯
	•••	•••	***	৭৩
₹	•••	•••	***	১১
•••	***	•••	•••	35¢
à	•••	•••	•••	১৩৭
•••	•••	***	***	১৮৭
য়াদি		•••	•••	२०७
•••	•••	•••	***	२৫७
1	•••	•••	***	२৫१
য	4.0	•••	•••	२৫৯
•••	•••	***		२१७
•••	•••	***	•••	955
•••	1.0	***	***	৩১৭
•••	***	•••	100	৩৫৫
•••	•••	***	•••	৩৬৭
•••	***	***	***	৩৮৭
ষ	•••	•••	***	৩৯৩
۱	***	•••	•••	৩৯৫
•••	•••	***	***	৩৯৭
•••	•••	***	•••	8२১
***	***	•••	144	8७৫
ণ	•••	•••	•••	885
াষ	•••	•••	***	889
•••	***	***	***	8%5
•••	•••	***	•••	8%
•••	4.4	•••	***	852
•••	100	•••	***	848
•••	•••	***	•••	829
	খ্যান ह র : : : : : : : : : : : : : : : : : : :	ा रंगान ह स्रोणि स्राणि स्राणि स्राणि स्राणि स्राणि स्राणि	शान	रात











PART I.











मिणमाला।

मङ्गलाचरणम्।

चज्ञानध्वाल इन्ही विधिष्टरिगिरिशैः सूयमाना प्रशानता खोतासोजे वसन्ती हिमकरस्वाचिः खोतभूषाद्यता या। वीणाद्ग्रस्डं दधाना कमु हद्ममनं प्रस्तकं विभृती तां वन्दे वाणीं प्रमन्ना परिष्टरित यथाजाततां शंददाति॥

जो अज्ञानरूप आंधरेको नाम कर्ति है, ब्रह्मा, विष्णु और महेम सब्दा जांहा स्तृति कर्ते रहते हैं, जिस्की मूरत अति माना है, जो सफेद कमलफुलके वनमे वास कर्ति है, जिस्के अक्षकी किरण चन्द्रमाके समान मुक्ता वर्ण, जिस्का सर्वाङ्ग सफेद गहनों में भृषित है, और जिस्के कमलके समान हाथमे कभी वीण और कभी उम्दा पुक्तक भ्रोभा दिति है, वह प्रसन्त होकर मनुष्यकी मुखताको नाम और कल्याण करे, वही वाग्वादिनी सरस्ती देवीको वन्दना कर्ता हों।

P

MA<u>N</u>I-MÁLÁ,

OR

A Theatise on Gems.

THE INVOCATION.

ness of ignorance! Her, who is ceaselessly adored by the Holy Triad, whose form is gentleness, who dwells constantly in the lotus forest, whose lustre resembles that of the moon, whose person is decked all over with milk-white ornaments, whose hand sometimes holds the hard handle of the Viná, at others, the neat volume, whose favor reclaims people from ignorance and brings about their good,—hail to the word-presiding goddess, Saraswati!

যিনি অজ্ঞানতারপ অন্ধকার বিনাশ করেন, ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর সর্বাদা যাঁহার স্তব করিয়া থাকেন, যাঁহার মূর্ত্তি অতি প্রশান্ত, যিনি শ্বেতকমল-কাননে নিরন্তর বাস করেন, যাঁহার অঙ্গের আভা নিশাকরসদৃশ, যাঁহার সর্বাঙ্গ শ্বেত অলঙ্কারে ভূষিত, যাঁহার কর-কমলে কথন কঠিন বীণাদণ্ড, কথন বা পরিচ্ছন্ন পুস্তক শোভা পায়, যিনি প্রসন্ন হইলে মানবগণের মূর্থতা নাশ ও কল্যাণ বিধান করেন, সেই বাগ্বাদিনী সরস্বতীদেবীকে বন্দনা করি॥



6 4

मू चम्।

रत्नं निधारयेत् कोषे गुर्दं सग्रणमञ्चयं । सद्रत्नानामनो जातिं गुणं तेषां परीचयेत्॥१॥ सखदा मणयः गुद्धा दःखदा दोषणालिनः। श्वतो मणीनां वच्चामि लच्चणादीनि तच्चतः॥ २॥

तनादी रत्नजातयः।

वज्रमुक्तागोमेदसपद्मरागाः समरकताः प्रोक्ताः।
श्विषिनेन्द्रनीलमणिवरवेदूर्याश्व प्रध्यरागाश्व॥३॥
कर्केतनं सपुलकं रुधिराख्यसमन्वितं तथा स्कटिकं।
विद्रुममणिश्व यतादुहिष्टं संग्रहे तज्ज्ञैः। १॥

तर्जमा।

समस्त रहिकी जात और ग्रुण पहिले परीचा कर्के जी विशुद्ध और ग्रुणयुक्त बोध होए, वही सब खाजाने से रख्ने के योग है। १।

वे अयेव रत जिस्पकार मनुष्यके नानाप्रकारके सुखका निदान है, उसी प्रकारसे दोषयुक्त रत्न नाना-प्रकारके दु:खका हेतु है; अतएव रत्नका यथार्थ लह्न-णादि लिखा जाता है। २।

रतका जात।

रत्न-परीचा-पिण्डित कहते हैं, के हीरा, मित, गोमेदक् माणक्, पाझा, नीलम् वा लीला, लग्गुनिया, पोखराज, कर्कतक्, ताम्डा, नरम्, फिटक्, और संगा पदार्थकी रत्नमें गणित है, और यत्नपूर्वक सञ्चय और तन्नास कर्ते हैं। ३१८।



- 1. Of the various kinds of gems, those only that, on examination, turn out to be sterling, should be treasured up.
- 2. As a pure jewel is a source of manifold blessing to man, so a flawy one is the cause of diverse troubles. I shall therefore expose the real properties of precious stones.
- 3—4. According to authorities in the science of precious stones, the following classification well night exhausts the more important ones: diamond, pearl, zircon, ruby, emerald, sapphire, cat's eye, topaz, cymophane, garnet, spinel or balas ruby, quartz and coral.

অহুবাদ।

প্রথমে রত্ন সমুদায়ের জাতি এবং গুণ পরীক্ষা করিয়া যে গুলিকে বিশুদ্ধ ও গুণযুক্ত বলিয়া বোধ হইবে, তৎসমুদায়-কেই ধনাগারে স্থাপন করা বিধেয়॥ ১॥

বিশুদ্ধ রত্ন যেমন মানবগণের অশেষ স্থথের নিদান, দোষান্বিত রত্নও তদ্ধ্রপ নানা হুঃথের হেতু; অতএব রত্ন-সমূহের যথার্থ লক্ষণাদি বলা যাইতেছে॥২॥

রত্ন-পরীক্ষক পণ্ডিতেরা হীরক, মূক্তা, গোমেদ, মাণিক বা চুণি, পান্না, নীলম্ বা নীলমণি, লস্তনে বা বিড়ালচক্ষু, পোথ-রাজ, কর্কেতন, তাম্ড়া, নরমচুণি, স্ফটিক ও পলা প্রভৃতিকে রত্নমধ্যে পরিগণিত করেন, এবং অতি যত্নসহকারে এই সকল রত্নের অনুসন্ধান ও সংগ্রহ করিতে বিধি দেন ॥ ৩ ॥ ৪ ॥



3

मूलम्।

श्राक्तिवर्णी प्रथमं ग्रुणदोवे तत् फलं परीचा च।
मूच्यञ्च रत्नकु भले विज्ञे यं सर्वे रत्नानां । ५ ॥
कुलाने पूपजायन्ते यानि चापष्ठते द्विन ।
दोषे सान्युपयुच्यन्ते ष्टीयन्ते गुणसम्पदा । ६ ॥
परीचा परिशुद्धानां रत्नानां प्रथिवी मुजा ।
धारणं संग्रष्टो वापि कार्यः श्रियमभी प्सता ॥ ७ ॥
शास्त्रज्ञाः कुभलाश्वापि रत्नभाजः परीचकाः ।
त एव मूच्यमा चाया श्वे नारः परिकस्थिताः ॥ ८ ॥

तर्जमा।

रत्नपार्ची-पिण्डित पिंचले रत्नका कई, रङ्ग, उडनर, भायेव श्रीर नका, नोकशान परीचा करके बाद उस्के किमत करेड़े। पू।

जो रत कुद्नि भीर कुलानमे पयदा होता है, चोई रत गुणहीन और दोषी होते हैं। ई।

जो राजा अपने मङ्गलको कामना करते हैं, उन्को उचित है, पहिले रत्नकी परीचा कर्के छस्मे जो निर्देश घोए, उसीको संग्रह श्रीर धारण करेड्डे। ७।

जो मनुष्य रत्नशास्त्रमे निपुषः सर्वेदा रत्नका व्यवचार कर्ते हैं, किस् रत्नका केया दाम उचित है, उसके विशेष जान्नेवाले, स्पीर रत्नकेदनमे परिपक्ष हैं, वही लोग रत्नपार् ची हैं। ८ ।





- 5. The worth of gems is ascertained by persons skilled in the knowledge of them, after examination of their figure, color, flawlessness or otherwise, and the effects deducible therefrom.
- 6. Stones originating on inauspicious days and at unlucky moments are not only void of any beneficial quality, but are positively harmful.
- 7. Those princes that are desirous of securing good fortune, should procure and wear jewels of spotless chastity.
- 8. Only such persons as have mastered the knowledge of gems, use them habitually, can judge their value with precision, and are skilled in the lapidary art, should be reckoned as connoisseurs of precious stones.

অহুবাদ।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা প্রথমে রত্নের আকৃতি, বর্ণ, গুণ, দোষ এবং গুণদোষের ফলাফল পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ মূল্য নিরূপণ করিবেন॥ ৫॥

যে সকল রত্ন কুদিনে কুলগ্নে উৎপন্ন হয়, সেই সকল রত্নই গুণহীন অথচ দোষান্বিত॥ ৬॥

যে রাজা নিজ মঙ্গল কামনা করেন, তাঁহার কর্ত্ব্য, অগ্রে রত্নের পরীক্ষা করিয়া তন্মধ্যে যে গুলিকে বিশুদ্ধ বলিয়া বোধ হইবে, সেই গুলিই সংগ্রহ বা ধারণ করেন॥৭॥

যে সকল ব্যক্তি রত্নশাস্ত্রনিপুণ, সর্বাদা নানারত্নের ব্যব-হার করেন, কোন্ রত্নের কিরূপ মূল্য হওয়া উচিত, ইহার বিশেষজ্ঞ, রত্ন-চেছদন-পরিপক তাঁহারাই রত্ন-পরীক্ষক বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন। ৮॥





रत्नानां ग्रुपदोषप्रभावतो जनानामिष्टानिष्टे भवित्रमर्छत इति प्रकटीकर्तुः अत्रेव समन्तकोपास्थानसङ्खतम् ।

म्लम्।

स्वमन्तकोपाख्यानम् ।

अनिमचान्निम्नः निम्नस्य प्रसेनसचाजितौ । तस्य च सचा-जितस्य भगवानादित्यः सखा सभवत् । १ ।

एकदा तु श्रमोधेसीरसंश्रयः सूर्यं सत्राजितस्तृष्टाव।
तन्मनस्त्रतया त्र भाखानिमप्र्यमानोऽग्रतस्य तस्यो। श्रस्य न मूत्तिधरं चैनमालोक्य सत्राजितः सूर्यमाह यथैव व्योख्यि वां विद्विपिण्डोपममहमपर्थं तथैवाद्याग्रतो गतमप्यत्र न किञ्चिद्गगवता प्रसादीकृतं विशेषसुपलच्चयामि। १०।

रत्नोको गुणदोषको प्रभावसे आदमीओं को ग्रुम और अग्रुम होने सकी, यह बात प्रकाश करणेकेवास्ते यह जगहों में स्थमनाकके बयान योग किया है।

तरजमा ।

धनिमित्रका लेखका निम्न, और निम्नके दो लेखके। वहिका नाम सवाजित, और कोटेका नाम प्रसेन। भगवान् सूर्य्यदेव सवाजितके परम मिच थे। ८।

एक समर्थे सचाजित ससुद्रके किनारे वयेठ कर सूर्यति श्राराधना कर्ते थे। एकदिल होकर सूर्यतका स्तोच पाठ कर्ते थे, उस समये सूर्यत्र उनके पाश श्राये। सचा- जित्ने सूर्यतकी मूर्च स्पष्टभावे ना देखकर कहा, "भगवन! में श्राकाशमे श्रापको जिसतरहसे श्रामके पिराइके समान देखता इ., श्राज श्राप हमारे सामने मौजुद है, लेकेन उस परभी में श्रापको हसी तरहसे देखता इ.। श्रापके क्षापका कोई चिक्क मैंने नहि देखा। १९०।





In order to illustrate the influence which gems exercise over the destinies of individuals, I shall narrate the history of the classic gem, Syamantaka.

TRANSLATION.

The History of Syamantaka.

- 9. Nighna, the son of Anámitra, had two sons, Satrájita and his younger brother Prasena. A great intimacy is said to have subsisted between Satrájita and the divine sun.
- 10. Once Satrájita took up his abode in the seacoast for the purpose of spending his time in worshipping the sun. After he had prayed long and intently, the 'king of day' appeared before him. Satrájita, not perceiving the god distinctly, said,—"Lord, why, notwithstanding your personal appearance before me, do I see in you the same globe of fire that crests the welkin? I see no signs of your favor."

রত্নমূচের গুণদোষ প্রভাবে মানবগণের শুভাশুভ ঘটনা হইতে পারে, তাহাই প্রকাশ করিবার জন্য এন্থনে সামন্তকোপাখ্যান যোজিত হইল।

অনুবাদ।

স্যমন্তকোপাখ্যান।

অনমিত্রের পুত্র নিম্ন, নিম্নের ছই পুত্র, জ্যেচের নাম সত্রাজিত ও কনিষ্ঠের নাম প্রসেন। ভগবান্ সূর্য্যদেব সত্রা-জিতের পরম মিত্র ছিলেন। ৯।

এক সময়ে সত্রাজিত সমুদ্রকূলে অবস্থান করিয়া সূর্য্যের উপাসনা করেন। একাগ্রচিতে স্তৃতিপাঠ করাতে দিবাকর তাঁহার সন্নিহিত হইলেন। সত্রাজিত দিবাকরের মূর্ত্তি স্পফ্টলবে দেখিতে না পাইয়া বলিলেন, ভগবন্! আমি নভোমগুলে আপনাকে যে প্রকার অগ্নিপিগুসদৃশ দেখিতে পাই, আজ আপনি আমার সম্মুখে উপস্থিত হইয়াছেন, কিন্তু তথাপি আপনাকে সেইরূপই দেখিতেছি। আপনার প্রসন্থ তার কোন চিহ্নই দেখিতে পাইতেছি না।১০।



म्लम्।

द्रत्येवस्को (भगवता) सूर्येण निजकण्डादुन्मुच्य स्थमन्तक-नामा मणिरवतायेत्र एकान्ते न्यसः। ततस्तमाताम्रोज्जूल-इस्ववपुषं देषदापिङ्गलनयनमादित्यमद्राचीत्। क्रतप्रणि-पातस्तवादिकञ्च सचाजितमाच भगवान् वरमस्त्रनोऽभिमतं वृणीष्वेति। स च तदेव मणिरतमयाचत। स चापि तस्त्री तत् दत्त्वा वियति स्वं धिष्णात्रमाक्रोच। ११।

सचाजितोऽपि अमलमणिरतमनाथकण्डतया सृर्थे इव तेजोभिरशेषदिगन्तराण्युद्भासयन् द्वारकां विवेश । १२। तर्जमा।

मचाजितके इस् तरहक कहनें सूर्यादेवने अपने गलें स्थमन्तकनामे मणि खोलकर रख दि। वाद उस्के सचाजितने सूर्यादेवका प्रत्यच्च दर्शन किया। उनका रङ तांवेको समान थोड़ा लाल और उज्जूल, क्षोटा कद, आंख थोड़ी पिज़ अवर्ण, अर्थात् थोड़ा नीला और षड़त् पीला मिला ज्ञया। वाद उस्के सचाजितने प्रणाम करके सुति किया, तब मूर्यादेवने उनको कहा, के सचाजित ! तुम हमसे अपने द्वापूर्वक बर मांगो। सचाजितने मूर्यादेवकी यह वात शोनकर वही मणिरत्को मांगा। सूर्यादेवने सचा-जितको वह मणि देकर अपने स्थानको गमन किया। ११।

सवाजित उस् वेकीमत मिण्यतको अपने गलेमे पहरते ही मूर्यप्रके समान तेजस्वी हो कर अपने तेजको चारों त्रोर प्रकाश कर्ते इन्हें दरका नगरीमे दाखिल इन्हें। १२।



- 11. On being thus accosted, the divine sun took out the gem Syamantaka from his neck, and laid it out. Satrájita could now see his real form. His complexion was reddish like copper, and lustrous; his body was under the middle stature; his eyes were slightly tawny. After Satrájita had worshipped him duly, the divinity said,—"Satrájita, do you ask for some recompense for your merit." Satrájita thereupon asked for the gem. The sun accordingly gave it him and went away.
- 12. On wearing the jewel over his neck, he appeared refulgent like the sun, and entered Dváraká.

অভ্বাদ।

সত্রাজিত এই কথা বলিবামাত্র সূর্য্যদেব আপনার কণ্ঠ হইতে শুমন্তক মণি উন্মোচন করিয়া এক পার্শ্বে রাখিলেন। তদনন্তর সত্রাজিত সূর্য্যদেবকে প্রত্যক্ষ দর্শন করিলেন। তাঁহার বর্ণ তাত্রের ন্যায় ঈষৎ লোহিত, উজ্জ্বল, শরীর থর্কা, চক্ষু ঈষৎ পিঙ্গলবর্ণ। অনন্তর সত্রাজিত প্রণিপাতপূর্বক স্ত্রাদি করিলে সূর্য্যদেব তাঁহাকে বলিলেন, সত্রাজিত! তুমি আমার নিকট অভিলধিত বর প্রার্থনা কর। সত্রাজিত সূর্য্যদেবের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া সেই মণিরত্র প্রার্থনা করিলেন। অর্য্যান্ত তদকুসারে সেই মণিরত্র সত্রাজিতকে প্রদান করিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। ১১।

সত্রাজিত সেই অমল মণিরত্ন কণ্ঠে ধারণ করিবামাত্র সূর্য্যের স্থায় তেজস্বী হইয়া স্বতেজে দশদিক্ উজ্জ্বল করিয়া দ্বারকানগরীতে প্রবেশ করিলেন। ১২।





मू चम्।

हारकावामिजनपदस्तु तमायान्तमवेन्य भगवन्तमनादि-पुरुषं पुरुषोत्तमं अविनिभारावतारणायांग्रेन मानुषरूप-धारिणं प्रणिपत्याच भगवन्! भगवन्तमयं नूनं द्रष्टुमाया-त्यादित्यः। द्रत्याकाण्ये प्रचस्य च तानाच भगवान् नायमादित्यः सचाजितोऽयमादित्यदन्तं स्थमन्तकान्त्यं मण्डामणं विभ्व-दचोपायाति। तदेनं विश्वव्याः पश्चत दत्युक्तान्ते ययः । १३।

स च तं स्थमन्तकार्खं महामणिमात्मनिवेशने चके । १८। प्रतिदिनञ्च तन्मणिरतुप्रवरमष्टौ कणकभारान् सुवित। १५।

तर्जमा ।

दरकानिवासी आदमी सचाजितको आते देखकर
प्रश्नीके भारके नाम करनेवाले अंग्ररूप मनुष्यरूप अनादि
पुरुषोत्तमके पास जाकर प्रणाम कर्के वोले, भगवन्!
आपके देखनेकेवास्ते सूर्यप्रदेव आते हैं। श्रीकृष्ण उन्की
बह वात ग्रुनकर हास्ते हास्ते वोले, तुम् लोग
जिस्को सूर्यप्र खेयाल कर्ते हो, वह सूर्यप्र निह है, वह
राजा सवाजित हैं। उक्कने सूर्यप्रकी दोक्जयी स्यमन्तकनामे महामणिको पहरकर याहां आगमन किया है, इस्लिये तुम लोग निभये उनको देखो। श्रीकृष्णकी दुस्
वातको ग्रुनकर सब दरकानिवासी चले गये। १३।

सचाजितने वही स्थमनाजनामे महामणिको अपने मकानमे रख्खा। १८।

वडी श्रेष्ठ मणिरत हर रोज श्राट भार सोणा देता।१५।



11)



- 13. When the inhabitants saw him coming, they hastened to that Incarnation of the Deity and Bearer of our sins—Krishna, and, bowing themselves down before him, said,—"Lord! the divine sun is coming hither to see you." On hearing this, Krishna replied, with a smile, "He whom you take for the sun, is king Satrájita. He is coming hither, decked in the great gem obtained by him from the sun. You may therefore see him without fear." Thus enlightened, they went their way.
 - 14. Satrájita kept Syamantaka in his palace.
- 15. This matchless gem every day produced eight loads* of gold.

অন্থ্ৰাদ।

দারকানিবাসী জনগণ সত্রাজিতকে আগমন করিতে দেখিয়া পৃথিবীর ভার অবতরণের জন্ম অংশে মন্ত্র্যুরূপী অনাদি পুরুষ পুরুষোন্তমের সন্নিধানে গমন করত প্রণিপাত-পূর্বক বলিল, ভগবন্! আপনাকে দর্শন করিবার আশয়ে সূর্য্যদেব আসিতেছেন। শ্রীকৃষ্ণ তাহাদিগের এই কথা শুনিয়া স্মিতমুখে বলিলেন, তোমরা যাঁহাকে সূর্য্য বলিয়া বিবেচনা করিতেছ, তিনি সূর্য্য নহেন, রাজা সত্রাজিত। ইনি সূর্য্যদত্ত স্থমন্তকনামে মহামণি ধারণ করত এখানে আসিতেছেন, অতএব তোমরা অশঙ্ক মনে ইহাঁকে দেখ। শ্রীকৃষ্ণের এই কথা শুনিয়া তাহারা প্রস্থান করিল॥ ১৩॥

সত্রাজিতও সেই স্থমন্তকনামক মহামণি আপনার নিকেতনে রক্ষা করিলেন। ১৪।

সেই শ্রেষ্ঠ মণিরত্ন প্রত্যহ আট ভার স্থবর্ণ প্রসব করিত। ১৫।

^{*} Sanskrita, vára = 20 Tolás = 2,000 Palas of gold. - Williams.





म्लम्।

तत्प्रभावाच्च चकलस्यैव राष्ट्रस्य उपसर्गा अनावृष्टि-व्यालाम्निचौरदुभिचादिभयं न भवति । १६ ।

चचुतोऽपि तद्रतुमुयसेनस्य भूपतेर्योग्यमेतदिति लिप्सा-चुको गोत्रभेदभयाच्च शकोऽपि न जहार । १७ I

सचाजितौ ध्यच्तो मामेतत् याचिष्यतीत्यवगतरत् लोभः स्थाचे प्रसेनाय तद्रतु दत्तवान्। १८।

तर्जमा।

11,

स्यमन्तकमणिके प्रभावसे राजमे पाणि ना वर्षना, सांप, चाग,चोर चौर दुभिच दूस सवका भय ना घा । १६।

उस् महारतको राजा उग्रसेनके लायेक समक्रकर श्रीक्रवाने उस्के लेनेके श्रीमलाघी घोकरभी जातके भगड़ के भयसे बावजुद शक्ति चौर ताकत के उम्को जोरसे न लिया। १७।

दुस्मणि पर कृष्णको लोभ पयदा ज्ञया है, समभते हैं, को पीक्रे हमारे पास यह प्रार्थना करेंगे। दूस् भयसे सचाजितने अपने भाद्र प्रसेनको वह मणि दे दिया। १८८।





- 16. Through its magical influence, the kingdom became free from draught, serpents, conflagration, thieves and famines.
- 17. The gem having been deemed worthy of Ugrasena in the opinion of Krishna, he was anxious to have it, but the fear of family feud restrained him from taking possession of it by force.
- 18. "I understand that Krishna covets this jewel." Lest he asked for it of him, Satrájita transferred it to his brother, Prasena.

অহুবাদ।

স্থমন্তক-মণি-প্রভাবে রাজ্যমধ্যে অনার্ন্তি, দর্প, অগ্নি, চোর ও তুর্ভিক্ষাদির ভয় থাকে না। ১৬।

সেই মহারত্ন মহারাজ উগ্রসেনের উপযুক্ত বিবেচনায় শ্রীকৃষ্ণ তাহা গ্রহণাভিলাযুক হইয়াও জ্ঞাতিবিরোধ আশ-ক্ষায় সামর্থ্যসত্ত্বেও বলপ্রকাশ করিয়া তাহা গ্রহণ করি-লেন না। ১৭।

এই মণির প্রতি কৃষ্ণের লোভ জন্মিয়াছে, বুঝিতে পারিতেছি, পাছে আমার নিকট ইহা প্রার্থনা করেন, এই ভয়ে সত্রাজিত নিজসোদর প্রসেনকে তাহা সমর্পণ করিলেন ।১৮।







मू चम्।

तच्च श्रुचिना भ्रियमाणमशेषस्वर्णमावादिकं ग्रुणमुत्-पादयित चन्यया य एव धारयित तमेव चन्तीति। चमा-विष प्रमेनः स्थमन्तकेन कण्टासक्तेनाष्वमाक च्चाटव्यां चगया-मगच्छत्। तच च सिंचात् वधमाप। साख्य तं निचत्य मिंची प्रयमनमण्डित्मास्याग्रेणादाय गन्तुमुद्यतः भ्रचाधि-पतिना जाम्बवता दृष्टो घातितस्य। जाम्बवानप्यमनं तन्मणि-रतुमादाय स्विनं प्रविवेश सुकुमारकसंज्ञाय च वानकाय की दुनमकरोत्। १९।

तर्जमा।

पित्रच होकर पहरनेसे वह मिण सोणा देगी, उसके विपरीत होनेसे अधात् अगृह रहनेसे निश्चय उसके नाशका कारण होगी। किसी समयमे प्रसेन वही मिण अपने गलेमे पहरकर घोड़े पर स्थार होकर शिकार खेलनेको बनमे गये थे। बनमे याते ही एक सेरने उसको और उसके घोड़ेके मारा, और उस मिणको सहसे लेकर चला; उसी समयमे भालको राजा जाम्बुवन्तने उसको मारकर उस निम्मील मिणको ले लिया, और अपने घरमे चला गया। और सकुमारकनामे अपने लेडकेको खेलनेके लिये हावयाले किया। १९८।







19. When worn by a clean man, it produces gold, but to an unclean person it indubitably proves fatal. On one occasion, Prasena, decked in this gem, rode a-hunting into the forest. There a lion slew both the horse and the horseman, and was about to depart holding the gem in his mouth, when Jámbabán, king of bears, slew him in turn, took the spoil home to his cell and gave it to his son as a gewgaw.

অহুবাদ।

পবিত্র হইয়া ধারণ করিলে সেই মণিরত্ন স্থবর্ণ প্রস্বাদি করে, তদন্যথায় অর্থাৎ অপবিত্র শরীরে ধারণ করিলে অবশ্যই তাহার বিনাশের নিদান হয়। কোন সময়ে প্রসেন সেই স্থমন্তক মণি নিজকণ্ঠে পরিধান করিয়া অশ্বারোহণে মুগয়াভিলাষে বনমধ্যে গমন করেন। বনমধ্যে প্রবেশমাত্র এক সিংহ তাঁহাকে ও তাঁহার অশ্বকে বিনাশ করিয়া সেই মহামণি স্থমন্তক মুখে ধারণপূর্বক গমন করিতে উদ্যত হইলে ঋক্ষাধিপতি জাম্ববান্ তাহাকে বিনাশ করত সেই অমল মণিরত্ন গ্রহণ করিয়া নিজ আবাসগর্তে প্রবেশ করিল এবং স্থকুমারকনামে আত্মজকে ক্রীড়নার্থ প্রদান করিল। ১৯।







म्चम्।

श्वनागच्छति च तिस्मन् प्रसेने स्नव्णो मणिरत्नमिन लिवतवान् न च प्राप्तवान् नूनमेतदस्य कर्मानान्येन प्रसेनो इन्यत दत्यस्त्रिल एव यदुलोकः परस्परं कर्णाकण्ये कययत्। ५०।

विदितलोकापवादष्टनान्तस्य भगवान् यदुसैन्यपरिवारः प्रसेनाम्बपदवीमनुसमार दद्भं चाश्वममेतं प्रसेनं निहतं सिंहन। सिखलजनपदमध्ये सिंहपदद्भनक्षतपरिमुद्धिः सिंह-पदमनुससार। २१।

तर्जमा।

मोकरर वक्तपर जब प्रसेन फिरकर निर्इं आया,
तब सब यदुवंशी आपसमे काना फुसकी करने लगे, के
श्रीक्रवणने स्थमन्तकमणिके बावत् अपनि दक्का प्रकाश किथी। परन्तु वह प्राप्त निह इदी। दूस् कारण हम लोगें।
के समभमे क्रवणहीने प्रसेनको मारकर मणि लिया है;
श्रीर किसीने प्रसेनको मारा निह। २०।

श्रीक्रणाने इस् भुठी बातको श्रुनकर यदुवंशीयोंकी सेना एककट्टा करके प्रसेनके घोड़े के पात्रोंके चिक्क अनुसार बनमे घुमकर देखा, के प्रसेन घोड़े मिन्न सेरके पञ्जोसे मारा ज्ञया जमीनपर पड़ा है। श्रीक्रव्याने अपने साथी लोगोंको प्रसेनके स्तक शरीरको श्रीर सेरके पञ्जोके निशानको देखाकर श्रपना कलक्क दूर किया। बाद सम्के सेरक पञ्जोके निशानके अनुसार चलना सुक किया। २१।



- 20. When the Jádavas saw that the hour for Prasena's return had gone by, they concluded that, without doubt, Krishna had murdered him and appropriated the gem, he having been before known to covet it.
- 21. When intelligence of this false accusation came to the knowledge of Krishna, he assembled the Jadu host, and entering the forest by tracing the hoof-marks of Prasena's horse, discovered the dead body of Prasena and his steed. By showing the prints of the lion's paws, he exculpated himself from the blame laid at his doors; and then began to search for the lion guided by the paw-marks.

অত্নবাদ।

প্রত্যাগমনকাল অতিক্রান্ত হইলেও যখন প্রদেন প্রত্যাণ গত হইলেন না, তথন যাবতীয় যতুবংশীয় ব্যক্তি পরস্পার বলাবলি করিতে লাগিল যে, শ্রীকৃষ্ণ শুমন্তকের প্রতি অভিলাষ প্রকাশ করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহা প্রাপ্ত হন নাই, অতএব আমাদিগের বিবেচনায় কৃষ্ণই প্রদেনকে বিনাশ করিয়া মণি গ্রহণ করিয়াছেন, অন্ত কোন ব্যক্তি প্রদেনকে বিনাশ করে নাই।২০।

শ্রীকৃষ্ণ এই মিথ্যাপবাদের কথা কর্ণপরম্পরায় শ্রবণ করিয়া যতু দৈন্যসমবেত হইয়া প্রদেনের অন্ধের পদচিহ্ন অনুসারে বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন, প্রদেন অশ্বের সহিত সিংহকর্তৃক নিহত হইয়া ভূমিতে পতিত রহিয়াছেন। শ্রীকৃষ্ণ স্বসমভিব্যাহারী ব্যক্তিবর্গকে প্রদেনের মৃতদেহ ও সিংহের পদচিহ্ন দেখাইয়া নিজকলঙ্কাপনয়ন করিলেন, পশ্চাৎ সিংহের পদচিহ্নানুসারে তাহার অনুসরণ করিতে লাগিলেন। ২১।







मूचम्।

श्चविनिष्ठतञ्च मिंहमधाखे भूमिमागे हथु। ततत्र तद्रव-गौरवाहचस्त्रापि पदान्यनुवयौ। गिरितटे च सक्तनमेव यद्सैन्यमवस्त्राप्य तत्पदानुगारी श्चचविनं प्रविवेश। श्रद्ध-प्रविष्ठश्च धाच्याः सकुमारकसुञ्जापयन्त्रा वाणीं शुत्राव। १२।

सिंहः प्रमेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्योष स्थमन्तकः॥ २३॥

तर्जमा।

श्रीक्षणाने सेरके पञ्जोके निशानसे कुछ दूर जाकर देखा, के सेरभी किसी भानुकके हातसे मरकर जमीनपर गिरा है। बाद उस्के उस् स्थमन्तकमणिको बज्जत् दुने भ सममक्तर भानुकके पाञ्चों के निशानके अनुसार चलना सुरु किया। थो छे ही दूर जाने पर एक पाहाड़के करिवकी जमीनपर सब सेनाको रखकर भानुकके पाञ्चों के निशानके अनुसार उस्के ग्रहातक पज्जे अस् ग्रहामे थोड़ी दूर जाते ही सुकुमारककी दाईकी नीचे लिखे ज्ञये वेड़का खेलानेकी आवाज भुनी। २२।

सुकुमारक! तुम रो मत, एक घेरने प्रसेनको मारकर यो मणि लिया था, तुद्धारे बाप भालुकके राजाने उम् सेरको मारकर उस् मणिको लाकर तुद्धा दिया है; यह मणि अब तुद्धारी ही है। ५३।





- 22. After proceeding some way, he lighted upon the carcass of the lion. Having regard to the rarity of such a gem as syamantaka, he then proceeded to search for the bear in the direction pointed out by the traces of his paws. After having advanced awhile, he stationed his army in a valley; and himself entered the den of the bear. When he had advanced only half way, he heard the following soothing-speech addressed to Sukumára by his nurse:—
- 23. "Hush, child! Don't you know that the gem of which the prince of bears, your father, forcibly possessed himself by slaying the lion, has been given to you, and that now it is your own?"

অञ্বাদ।

শ্রীকৃষ্ণ সিংহের পদচিক্ন ধরিয়া কিয়দ্র গমন করিয়া দেখিলেন, সিংহও কোন ঋক্ষকর্ত্ত নিহত হইয়া ভূমিতে পতিত রহিয়াছে। পরে সেই স্যমন্তকের তুর্লভত্ব জ্ঞানে ঋক্ষের পদচিক্ছানুসারে গমন করিলেন। কিয়দ্র গমনের পর এক পর্বতসন্নিহিত ভূভাগে সমুদায় যতুসৈত্য স্থাপন করিয়া ঋক্ষের পদচিক্ছানুসারী হইয়া ঋক্ষের বিবরমধ্যে প্রবেশ করিলেন। বিবরের অর্দ্ধমাত্র প্রবেশ করিয়াই স্ক্রমারকের প্রতি ধাত্রীর নিম্নলিখিত সান্থনাবাদ শুনিতে পাইলেন। ২২।

স্থকুমারক! তুমি রোদন করিও না, এক সিংহ প্রদেনকে বিনাশ করিয়া বে মণিরত্ন গ্রহণ করে, তোমার পিতা ঋক্ষরাজ সেই সিংহকে বিনাশ করিয়া সেই মণি আনয়ন করিয়া তোমাকে দিয়াছেন, এক্ষণে এই মণিরত্ন তোমারই হইল। ২৩।





म्लम्

दत्याकण्ये लब्धस्यमन्तकोदन्तोऽन्तःप्रविष्टः कुमारक-क्रीड्नकीकृतश्च धाचीचक्ते तेजोभिर्ज्ञाञ्चल्यमानं स्यमन्तकं दद्र्य। २४।

तञ्च स्थमन्तकाभिलाषचचुषमपूर्वे पुरुषमागतमवेच्य धाची चाहि चाहीति व्याजहार। २५।

तदार्त्तनादश्रवणानन्तरञ्चामधेपूर्णे इदयः स जास्ववनाज-गाम तयोश्व परसारं युध्यतोद्देयोर्युद्वमेकविंशतिदिनान्यभवत्।

तर्जमा।

श्रीक्षणाने यह बात शुनते ही स्थमन्तक मणिका हाल मालुम करके गुहामे प्रवेश किया। देखा, वही स्थमन्तक मणि लेड्के के खेलने के लिये दाई के हाथमें है, श्रीर उसके तेजसे चारें। तरफ प्रकाशमान है। २४।

दाईने देखा के एक आदमीके जिस्को निष्ट कभी देखा या, फकत उस्मणिको देखता है, हमको वचाओ, हमको बचाओ ऐसा सोरकर उठी। २५।

जाम्बुबन्त दाईका ऐ ना नोर शुनकर क्रोधातुर होकर उनीदम उन् जगद या मीजद ऊट्या; घीर श्रीक्रव्यासे दन्द्र युद्व करने लगा। श्रीर वह लड़ाई एकिश दिनतक ऊद्र।





- 24. On learning this, Krishna came forward, and found syamantaka lying in the hand of the nurse and illumining the spot.
- 25. When the eyes of the nurse fell upon a person whom she had never seen before, and who eyed eagerly the prize in her hand, she cried out, "help, help! O."
- 26. Alarmed by her cries, Jámbabán immediately appeared on the spot, filled with wrath, and entered into a fierce combat with Krishna. Thislasted for twenty-one days.

অহুবাদ।

শ্রীকৃষ্ণ এই কথা শুনিবামাত্র স্থমন্তকের সংবাদ অবগত হইয়া বিলমধ্যে প্রবেশ করিলেন, দেখিলেন, সেই স্থমন্তক বালকের ক্রীড়ার নিমিত্ত ধাত্রীহস্তে ক্যস্ত রহিয়াছে, এবং তাহার তেজে চতুর্দ্দিক আলোকিত হইয়াছে। ২৪।

ধাত্রী দেই অদৃষ্টপূর্ব্ব অথচ শুমন্তকের উপর সতৃষ্ণদৃষ্টি পুরুষকে দেখিয়া আমাকে রক্ষা কর, রক্ষা কর, বলিয়া চীৎকার করিয়া উঠিল। ২৫।

জাম্বান্ ধাত্রীর এই প্রকার সভীতি চীৎকার শ্রবণে ক্রোধে পরিপূর্ণ হইয়া তৎক্ষণাৎ সেই স্থানে উপস্থিত হইয়াই শ্রীকৃষ্ণের সহিত ঘোরতর দম্বযুদ্ধ আরম্ভ করিল। সেই যুদ্ধে একবিংশতি দিন গত হইল।





मृचम्।

ते च यहुपैनिकासच सप्ताष्ट दिनानि तिद्राष्ट्रान्ति-सुदीच्छमाणासाख्यु:। चनिष्क्रममाणे च मधुरिपी चमाववद्य-मच विलेऽत्यन्तानाममाप्तो भविद्यत्यन्यया तस्य कयमेता-वन्ति दिनानि मचुजये व्याचेषो भवतीति कताध्यवसाया दारकामागता इत: कृष्ण इति कययामासुः। ५६।

तदान्धवाश्च तत्कालोचितमस्त्रिलम्परतिकथाकलापं चक्रः। २७।

तच चास्य युध्यमानस्यातित्रद्वादत्तविशिष्टपाचोपयुक्तान्न-तोयादिना क्रष्णस्य वन्तप्राणपुष्टिरभूत्। २८।

तर्जमा।

श्रीर दूधर यदुवंशीयांकी सेनाने श्रीक्रणाकी ग्रुहासे बाहार होने के दनितजारमें सात श्राट दिनतक काटा; जब देखा, के श्रीक्रणा सात श्राट दिनतक भी फिरकर निह श्रावे, तब उनलोगांने तजबीज किया, के श्रीक्रणाने जकर ग्रुहामें श्रपना प्राण कोड़ दिया; जीते रहने से दुसमनके मारने में दूबी देर नो होति; यही निश्य करके उनलोगांने दरकामे फिर श्राकर यह बात ममूरकी, के श्रीक्रणाने प्राण कोड़ दिया है। ५६।

श्रीकृष्णके भाद्रबन्धने यह वात ग्रुनकर उसीवक क्रिया-करण अर्थात् श्राह्वकम्य करडाला । २७।

भाइबन्धुने बज्जत् अद्वासे अन्न पानि श्रीक्रवणके हेत दान किया। श्रीर वही अन्न पानि लड़ाइ करते ज्ञये श्रीक्रवणके बलका मजबृत्करने वाला ज्ञया। २८।





When the Jadu army found that he did not return after a week had passed they concluded him dead; for had he lived, (thought they) he would certainly have returned by this time. Under this conviction, they returned to Dwáraká, and gave out that Krishna had given up the ghost.

- 27. On receiving this tidings, the friends of Krishna performed his funeral ceremonies.
- 28. The various articles of food offered to his manes contributed but to impart a fresh accession of strength, while engaged in the combat.

অনুবাদ।

এখানে যছ্-সৈনিকেরা শ্রীকৃঞ্বের গর্ভ হইতে নিজুমণ অপেকায় সাত আট দিন অতিবাহিত করিল। যথন দেখিল, শ্রীকৃষ্ণ সাত আট দিনের পরেও প্রত্যাগত হইলেন না, তথন তাহারা স্থির করিল যে, অবশ্যই শ্রীকৃষ্ণ গর্ভমধ্যে লীলা সম্বরণ করিয়াছেন, জীবিত থাকিলে কখনই শত্রুজয় করিতে তাহার এত বিলম্ব হইত না। এইরূপে কৃতনিশ্চয় হইয়া তাহারা দ্বারকায় প্রত্যাগমনপূর্ব্বক এই কথা রটাইয়া দিল যে, শ্রীকৃষ্ণ প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছেন। ২৬।

শ্রীকৃষ্ণের বন্ধুবান্ধবেরা এই কথা শ্রবণ করিয়া তৎ-কালোচিত প্রেতকার্য্য সমুদায় সম্পন্ন করিল। ২৭।

বন্ধুগণ অতি শ্রদ্ধাপূর্ব্বক অন্নপানাদি শ্রীকৃষ্ণের উদ্দেশে দান করাতে তদ্ধারা যুদ্ধে ব্যাপৃত শ্রীকৃষ্ণের বলাদির পৃষ্টি-সাধন হইল। ২৮।







मूलम्।

दूतरस्यानुदिनमतिगुरुपुरुषमिद्यमानस्यातिनिष्ठ्रप्रचार-पीडिताखिलावयवस्य निराचारतया वलचानिः। निर्जितश्च भगवता जास्ववान् प्रणिपत्याच् असुरसुरयचगन्धर्वराचसा-दिभिरप्यखिनैभगवान् न जेतुं शकाः किस्तावनिगोचरैरख-बीर्येनरावयवभूते च तिर्यग्योत्यनुस्तिभिः किं पुनरसादिधे-रवस्यं भगवतोऽस्मत्स्वामिनो नारायणस्य सकलजगत्परा-यण्यां भेन भगवता भवितव्यमित्युक्तः । २९।

तर्जमा।

भ्खे उद्ये और प्रवलवलवान श्रीक्रष्णके वर्दे भारी सक मारसे तामाम बदन चूर चूर होजाने से जास्तुबन्त बल-हीन होकर गिर पड़ा। श्रीक्षणाने श्रनायास उसको परा-जित किया। जाम्बुबन्त इँस् तरहसे हारकर श्रीकृष्णको प्रणाम करके बोला, भगवन! जिस् समय सब सुर, श्रसुर, यद्य चौर गन्धळ वगयरह प्राणीमाच एककट्टे होकर कभी चाप्को पराजयकर निष्ठ सक्ते, तब एथ्वीके रहनेवाले कमताकत मनुष्य-चाकृति तियाग् योनि-चनुसारी इम ऐसे चादमी चापको हारावें, यह कभी खेयालमे नहि चा सक्ता। इसको सच यकीन ज्ञया है, के जो सब जगत्का एकमाच आधार हमारा प्रभुवही नारायणके अंग्रके आप अवतार हैं। २८।



29. What through privation, and what owing to the many and deep wounds inflicted by his powerful adversary, Jámbabán at length succumbed. Being thus defeated, he bowed humbly to Krishna, and said, "Lord! when all the Gods and Asuras,* Jakshas† and Gandharvas‡ could not defeat thee, what is the chance of a weak beast like me, although in a human form? On my life, thou partakest of the nature of that Universal God who is the author of my life as of all else that breathe."

অনুবাদ।

নিরাহারে এবং প্রবল পরাক্রান্ত শ্রীকৃষ্ণের গুরুতর নির্চ্চর প্রহারে সর্বাঙ্গ ক্ষতবিক্ষত হওয়াতে জাম্ববান্ একবারে নিস্তেজ হইয়া পড়িল, স্কতরাং শ্রীকৃষ্ণ অনায়াসেই তাহাকে পরাজিত করিলেন। জাম্ববান্ এইরূপে পরাজিত হইয়া শ্রীকৃষ্ণকে প্রণিপাতপূর্ব্বক কহিল, ভগবন্! যথন সমুদায় স্থর, অস্থর, যক্ষ ও গন্ধর্ব প্রভৃতি প্রাণিচয় একত্র হইয়াও কথনই আপনাকে পরাজয় করিতে সমর্থ হয় না, তথন যে, পৃথিবীম্ব, অল্পন্ধ, নরাকার, তির্ব্যগ্যোনির অকুসারী অম্বন্ধি ব্যক্তি আপনাকে পরাজয় করিবে, ইহা কথনই সম্থবের নহে। আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে, যিনি সমুদায় জগতের একমাত্র আধার, আমার প্রভু সেই নারায়ণের অংশে আপনি আবিভূতি হইয়া থাকিবেন।২৯।

[†] Celestial musicians who form the orchestra at the banquets of the gods, and who belong to Indra's heaven.—(wid.)



^{*} Adversaries of the Gods.

⁺ Demi-gods who are attendants on Kuvera, the God of wealth, and employed on the care of his garden and treasures.—(Williams)



मृजम्।

तसी भगवानिखलमविभारावतारमाचचे । ३०।
प्रीत्याञ्चितकरतलस्पर्यने न चैनमपगतयुद्धखेदं चकार ।३९।
स च प्रणिपत्यैनं पुनरिप प्रमाद्य जास्ववतीं नाम कन्यां
युद्धागमनार्ध्यभूतां ग्राच्यामास । ३२।

स्थमन्तकमणिमध्यसौ प्रणिपत्य तसौ प्रद्रौ। अच्युतौ-ऽध्यतिप्रणतात् तसाद्यास्त्रमपि तन्मणिरत्नमात्मशोधनाय जग्राह। ३३।

तर्जमा ।

श्रीक्रष्णाने जास्त्रवन्तकी यह बात गुनकर कहा, के पृथ्वीके बीक्षेके उतारने केवासी हम श्रंग श्रवतार ऊर्ये हैं। ३०।

जाम्बन्त श्रीक्षणाकी बातमे सन्तृष्ट होकर बदनपर हाथ फेरकर युद्धका कष्ट दूर किया। ३१।

उस्के बाद जाम्बुवन्त प्रश्वीपर माथा रखकर प्रणाम करके श्रीक्रणाको प्रसन्न करके उस्के मकानपर श्रीक्रणा आये हैं, दूम् कारण पूजाके स्वरूप श्रपनी लेड्की जास्त-वतीको दिया। ३२।

जाम्बुवन्त ने फेर प्रणाम करके स्थमन्तक मणिभी श्रीकृष्णको इवाले किया। श्रागर के श्रीकृष्णने श्रपने भक्तोंकी चिज लेना, गयेर मनासिफ समभा, लेकिन नाचार होकर श्रपना कलङ्क टूर करनेकेवासी वह मणि लेना पड़ा। ३३।





30. At this, Krishna frankly confessed to his incarnation for bearing the sins of this world.

- 31. Highly satisfied at this frank avowal, Jámbabán began to shampoo Krishna's body, with a view to relieving the pain incident to the late combat.
- 32. Jámbabán again reverentially bowed, and, by way of paying suitable respect to Krishna for having condescended to come to his dwelling, bestowed on him the hand of his daughter, Jámbabatí.
- 33. He also presented his divine guest with the gem Syamantaka. Although fully alive to the impropriety of depriving his friendly host of the jewel, Krishna was obliged to accept it, in order to wipe out the stigma that had attached to his name.

অভুবাদ।

শ্রীকৃষ্ণ জাম্বানের এই কথা শুনিয়া তিনি যে, পৃথিবীর ভারাপনোদনের জন্ম অংশাবতাররূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন, এ কথা তাহাকে বলিলেন। ৩০।

জাম্ববান্ শ্রীক্লকের বাক্যে প্রীত হইয়া অঙ্গে হস্তামর্যণ দ্বারা তাঁহার সংগ্রামজনিত ক্লেশ অপনীত করিল। ৩১।

তৎপরে জাম্বান্ প্রণিপাতপূর্ব্বক পুনরায় ঞীকৃষ্ণকে প্রদন্ন করিয়া তাহার ভবনে যে, কৃষ্ণ আগমন করিয়াছেন, তাহার অর্য্যস্করপ জাম্বতী নান্নী নিজতনয়াকে তাঁহাকে সম্প্রদান করিল। ৩২।

জাম্বান্ পুনরায় কৃতপ্রণাম হইয়া শুমন্তক মণিও শ্রীকৃষ্ণকে প্রদান করিল। এরূপ অনুগত ব্যক্তির নিকট হইতে সেই মণি গ্রহণ অতিঅকর্ত্তব্য বিবেচনা করিয়াও শ্রীকৃষ্ণ শুদ্ধ আত্মকলঙ্কাপনোদনের জন্ম অগত্যা তাহা গ্রহণ করিলেন। ৩৩।







मूलम्।

सच जास्ववत्या दारकामाजगाम । भगवदागमनोद्गूत-चर्कोत्कर्षस्य दारकावासिजनस्य क्रष्णावलोकनानु चण्मेवाति-परिणतवयसोऽपि नवयौवनिभवाभवत्। आनकदुन्द्भिञ्च दिष्ट्यादिष्टेप्रति च सकलयादवाः स्त्रियश्च सभाजया-मासः। ३४।

भगवानिष यथानुभूतमशेषयाद्वसमाजे यथावदाचचचे स्वमन्तकञ्च मचाजिताय दत्त्वा मियप्राभिशक्तिविशुद्धिमवाप जाम्बवतीञ्चान्तः पुरे निवेशयामास। मचाजितोऽपि मयास्या-भूतमितनमारोपितमिति जातमन्त्रासः स्वमुतां मत्यभामां भगवते मार्यप्रां ददौ। ३५।

तर्जमा।

उस्के बाद श्रीक्रवा जामवती सहित हरकामे फिर श्राये। श्रीक्रवाके फेर श्रानेसे हरकानिवासी लोगके ए से श्रानन्द इत्ये, के बूटे श्रादमी जवानके ए से ताकतदार होगये श्रीर तमाम यदुवंशी स्त्री पुरुष वसुदेवके पाम जाकर बद्धत श्रानन्द जाहेर करने लगे। ३४।

दुस् मणिके मध्ये जो जो ज्ञयाया, श्रीकृषणाने सबसे कहा।
श्रीर सवाजितको बही मणि देकर अपने भुठ कल दूसे
कुटे। उस्के बाद जाम्बवतीको अन्तः पुरमे भेजवा दिया।
सवाजितने जो श्रीकृष्णाको भुठा कल द्व लगायाया, उस्के
सवबमें बज्जत भयभीत होकर अपनी लेडकी सत्यभामाको
हवाले कर दिया। ३५।



TRANSLATION.

- 34. Then Krishna returned to Dwáraká with Jámbabatí. His unexpected return infused such joy into the people, as made even the old young. All the men and women of the Jadu race flocked to Vasudeva and expressed their heart-felt congratulations.
- 35. Krishna now related all that had befallen the gem; and finally bestowing it on Satrájita, wiped out the 'damned spot' on his fair fame. He then sent Jámbabatí to the inner apartments. Satrájita now became a prey to fear for having groundlessly blamed Krishna, and married his daughter Satyabhámá to him, by way of conciliation.

অহুবাদ।

অনন্তর শ্রীকৃষ্ণ জান্ববতীর সহিত দারকায় প্রতিগমন করিলেন। শ্রীকৃষ্ণের পুনরাগমনে দারকানিবাসী জনসমৃ-হের এরূপ আনন্দোদয় হইল যে, শ্রীকৃষ্ণকে দর্শন করিয়া বৃদ্ধ ব্যক্তিরাও নব-যুবকের স্থায় বলশালী হইল, এবং যত্ত্বংশীয় সমুদায় স্ত্রী পুরুষ বস্তুদেবের নিকট গিয়া মহা আনন্দ প্রকাশ করিতে লাগিল। ৩৪।

এই মণিসম্বন্ধে যাহা যাহা ঘটিয়াছিল, শ্রীকৃষ্ণ সর্ববিদ্যক্ষে তাহা ব্যক্ত করিলেন, এবং সত্রাজিতকে সেই শুমন্তক মণি প্রদান করিয়া নিজ মিথ্যাপবাদ হইতে মুক্ত হইলেন। পরে জাম্বতীকে অন্তঃপুরে প্রেরণ করিলেন। সত্রাজিতও শ্রীকৃষ্ণের প্রতি অকারণ কলঙ্কারোপ করিয়াছিলেন বলিয়া অত্যন্ত ভীতান্তঃকরণ হইয়া তাঁহাকে নিজ তন্য়া সত্যভামাকে প্রদান করিলেন। ৩৫।



मूलम्।

ताञ्चाक्ररक्षतवसीयतथन्वप्रसुखा यादवाः पूर्वं वरयामासुः।
ततस्तत्प्रदानादवज्ञातमात्मानं मन्यमानाः सचाजिते वैरानुवन्धं चकुः। चक्र्रक्षतवसीप्रसुखाच यतथन्वानमूचुः चयमतिदुरात्मा सचाजितो योऽस्माभिभवता चास्यर्थितोऽप्यात्मजामस्मान् भवन्तं चाविगण्य्य क्रष्णाय दत्तवान्। तदलमनेन
जीवताः, घातियत्वैनं तन्मचारत्नं त्या किं न गृद्यते।
वयमप्रस्थपपत्स्थामः यद्यच्यतस्तवापि वैरानुवन्धं करिख्यतीति। ३६।

तर्जमा।

यक्रूर, छतबस्मा और यतधन्ता यदुवं शीयोंने पहिले सत्यभामाके सादिकरनेके लिये सचाजितसे कहाया। यव सत्यभामाको त्रीक्षणाके हावाले करनेसे उन समें ने आपित वे इजती समभ्रकर सचाजितसे दुसमनी करनेको तैयार छये। यक्रूर और छतवस्मा वगयरह यदुवंशी यतधन्त्रासे बोले, के देख, सचाजित बढ़ा दुरात्मा है। हमने और तुमने सचाजितसे सत्यभामाकी दरखासा कियी, लेकिन उसने हम दोनों से किसीको न दिया, और अवज्ञा करके त्रीक्षणाकी दिया; इस्लिये हमारे तुमारे सलामे उसको जोता रखना मनासिफ निह । खुब हो, जो उसको मारकर वह मणि लेलेवो। त्रार छ्या दूस बाबमे तुमसे दुसमनी करेंगे, तो हम साफ कहते हैं, के जक्र हमलोग तुस्नारी मदद करेंगे। ३६।



36. Akrura, Kritabarmá, Satadhanvá and other jádavas had before this sought the hand of Satyabhámá. Now seeing that Satrájita gave her away to Krishna, they felt insulted and plotted against the father. Akrura, Kritabarmá, &c., said to Satadhanvá—"Lo! Satrájita is a villain: see, he has given away Satyabhámá to Krishna, slighting us. Down with him! Why do you not slay him and possess yourselves of the matchless jewel held by him? If Krishna prove hostile to you, depend upon it, we shall be at your back."

অञ্বাদ।

অকুর, কৃতবর্মা ও শতধন্বা প্রভৃতি যাদবগণ পূর্বের দেই
সত্যভামাকে বিবাহার্থ সত্রাজিতের নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন। এক্ষণে দেই কন্যা শ্রীকৃষ্ণকে সমর্পণ করাতে
তাঁহারা সকলে আপনাদিগকে অবমানিত বোধ করিয়া
সত্রাজিতের প্রতি বৈরামুষ্ঠানে রত হইলেন। অকুর ও
কৃতবর্মা প্রভৃতি যতুবংশীয়েরা শতধন্বাকে কহিলেন; দেখ,
সত্রাজিত অতি ছুরাত্মা, কারণ, তুমি এবং আমরা ইহার
নিকট সত্যভামাকে যাচ্ঞা করিয়াছিলাম, কিন্তু সে
তোমাকে ও আমাদিগকে অবজ্ঞা করিয়া এখন কি না
কৃষ্ণকে সেই কন্যা দান করিল; অতএব আমাদিগের
বিবেচনায় ইহাকে জীবিত রাখা কর্ত্তব্য নহে। তবে
তুমি যে, কেন ইহাকে বিনাশ করিয়া সেই মহামণি গ্রহণ
করিতেছ না, বলিতে পারি না। যদি শ্রীকৃষ্ণ এ বিষয়ে
তোমার সহিত বৈরতা করেন, আমরা মুক্তকণ্ঠে বলিতেছি,
অবশ্যই তোমার সাহায্য করিব। ৩৬।







मुचम्।

एवसुक्रस्वयेत्वसावष्याह । जतुगृहद्ग्धानाम्च पास्डु-नन्दनानां विदितपरमार्थोऽपि भगवान् दुर्वेऽधिनप्रयत्न-श्रीवित्यार्थं कुल्यकरणाय बारणावतं गतः । ३७ ।

गते च तसिन् सुप्तमेव सनाजितं श्रतधन्वा अधान मणिरत्नश्चाददे। पित्वधामप्रेणां च सत्यभामा श्रीष्टं स्थन्दन-मारूढा वारणावतं गत्वा भगवते उत्तं प्रतिपादितेति श्रचान्ति-मता श्रतधन्वना श्रस्मत्पिता व्यापादितः तन्त्व स्थम-न्तकमणिरत्नमपञ्चतं। तदियमस्थायष्टामना। तदालोच्य यदच सुकं तत् कियतामिति क्रम्णमाष्ट। ३८०।

तर्जमा।

श्रतधन्ताने श्रक्त्रकी यह बात श्रुनकर कवुल किया। बाद उसके श्रीक्षणाने यह बात श्रुनके पाग्डवगण लाला-गृष्टमें ज्वलकर मरगये हैं। दुर्योधन जिसमें फेर पाग्डकी तलास ना करे, इस श्रमिप्रायसे इन्द्रप्रस्थमें श्राह्व कराने-वास्ते चले गये। ३७।

श्रीक्षण्य दुन्द्रपृष्यके जानेके बाद शतधन्ताने सचा-जितको सोते ज्ञये मारकर स्थमन्तक मणिको चोराव जिया। सत्यभामा बापके मरेजानेके दुःखसे कोधातुर चोकर उसी समये रथपर सवार हो दुन्द्रपृष्यको पर्जंच गई, खौर श्रीकृषण्य कहा, हमारे बापको तुद्धारे साथ हमारे सादि होनेके सववसे शतधन्ताने मारहाला, श्रव श्राप दस बावमे जो मनासिक हो, सो क्रजीये। ३८।





- 37. Satadhanvá consented. In the meanwhile, Krishna with a view to confirming Durjyodhana in his belief that the Pándavas had been burnt to death in the house of lac, went to Báranábata in order to perform their funeral obsequies.
- 38. Taking advantage of his absence, Satadhanvá murdered Satrájita while asleep and took possession of Syamantaka. Satyabhámá, all grief for the death of her father, immediately went to Báranábata and said to Krishna, "Satadhanvá has murdered my father and stolen the gem Syamantaka, because he gave away my hand to you; now, I leave it to you to do the needful."

অভ্বাদ।

শতধন্বা অক্রুরাদির কথায় সন্মত হইলেন। পরে শ্রীকৃষ্ণ পাণ্ডবেরা জতুগৃহে দগ্ধ হইয়াছেন, এই সন্ধাদ শ্রবণে ছুর্য্যোধন যাহাতে তাঁহাদিগের অন্বেষণে আর অধিক যত্ন না করেন, এই অভিপ্রায়ে পাণ্ড্-নন্দনদিগের প্রেত-কার্য্য করিবার জন্ম বারণাবতে গমন করিলেন। ৩৭।

শ্রীকৃষ্ণ বারণাবতে গমন করিলে পর, শতধন্বা সত্রাজিতকে স্থপাবস্থায় সংহার করিয়া স্থমন্তকমণি অপহরণ করিলেন। সত্যভামা পিতৃবধামর্বপূর্ণা হইয়া তৎক্ষণাৎ রথারোহণে বারণাবতে উপস্থিত হইলেন, এবং শ্রীকৃষ্ণকে কহিলেন যে, আমার পিতা আপনাকে আমায় দান করাতে শতধন্বা তাঁহার প্রাণ বিনাশ করিয়া স্থমন্তক মণি অপহরণ করিয়াছে। এক্ষণে এ বিষয়ে আপনার যাহা কর্ত্ব্য হয়, করুন। ৩৮।





मूलम्।

तया चैषमुक्तः परितुष्टान्तः करणोऽपि कृष्णः सत्यभामा-ममषतास्रनोचनः प्राष्ट सत्ये! ममेषावद्यासना नाइमेतां तस्य दुरात्मनः सिष्ट्ये। नद्यानुन्नुङ्गा वरपाद्यं तत्कृतनोड़ा-श्रीयणो विद्यक्षा वध्यन्ते। ३९।

तद्लमत्यर्थममुनास्मत्युरतः शोकप्रेरितवाक्यपरिकरेण दृख्युक्ता द्वारकामभ्येत्य वलदेवमेकान्ते वास्त्रदेवः प्राच्च न्यया-गतं प्रसेनमट्यां न्यगपतिज्ञेषान । सन्नाजितोऽप्यधुना शतघन्वना निधनं प्रापितः । तद्वभयविनाशात् तन्मणिरत्न-मावाभ्यां सामान्यं भविष्यति । ४०।

तर्जमा।

सत्यभामाकी यह बात शुनकर मनहीं मनमे बद्धत सन्तृष्ट होकर बनावटकी खुख आंखे करके मत्यमामासे बोले, हे सत्ये! यह तुद्धारे बापका मारना निह है, बलके हमारि बेद्दज्दी है। हम कभी एँ में दुरात्माका अपमान सह ना मकेंगे। गाकको पहिलेन कटनेसे उमके रहनेवाले पत्तीको मारना मुसकील है। ३८।

तुम अव हमसे दुःखकी वात मत कहो। श्रीकृष्ण दूसतरहसे सत्यमामाको श्रान्त करके दरका फेराकर वलरामको एकान्तमे लेजाकर वोर्ले, के प्रसेन सिंहके हाथसे
वनमे मरागया, अव सवाजित शतयन्वाक हाथसे बध
ज्ञया। दस कारण उसके मरेजानेंसे स्थमन्तक हमारे तुद्धारे
दो आदमीका होगा। ४०।



- 39. Although this intelligence filled Krishna with delight, (the cause whereof will appear in the sequel), he feigned wrath and with blood-shot eyes, said, "O Satye! This proceeding of Satadhanvá has not disgraced your sire but me, and woe unto the wretch for it. Unless you ascend the tree where the bird has taken shelter, you can not kill it."
- 40. "Pray, fobear to bewail the loss of your father." Thus having soothed Satyabhámá, Vásudeva returned to Dwáraká and taking Baladeva aside, said, "Prasena, as you know, was slain in the forest by a lion, now Satrájita also has been killed by Satadhanvá. These two having died, Syamantaka will be ours."

অञ্বাদ।

সত্যভামা এই কথা বলিলে, শ্রীকৃষ্ণ মনে মনে অতিশয় সন্তুষ্ট হইয়াও কৃত্রিম ক্রোধভরে চক্ষুর্ঘয় লোহিতবর্ণ করিয়া সত্যভামাকে কহিলেন, সত্যে! ইহা ত তোমার পিতার অবমাননা নহে, আমারই অপমান করা হইয়াছে। আমি কদাপি সেই তুরাত্মকৃত এই অবমাননা সহু করিব না। আশ্রয়তকৃকে অগ্রে উল্লেজ্ঞ্যন না করিলে তদাশ্রিত পক্ষীকে কথনই বিনাশ করিতে পারা যায় না। ৩৯।

তুমি আমার নিকট আর শোকব্যঞ্জকবাক্য প্রয়োগ করিও না। বাস্থদেব সত্যভামাকে এইপ্রকার সান্ত্রনাবাক্য বলিয়া দ্বারকায় প্রত্যোগমনপূর্বক বলদেবকে নির্জনে ডাকিয়া বলিলেন; দেখুন, প্রদেন ত বনমধ্যে সিংহকর্তৃক নিধনপ্রাপ্ত হইয়াছে, অধুনা সত্রাজিতও শতধন্বাকর্তৃক নিহত হইয়া-ছেন। অতএব এই উভয় ব্যক্তির বিনাশ হওয়াতে স্থমন্তক আমাদিগের তুই জনের হইবে। ৪০।





मृचम्।

तदुत्तिष्ठ आरुद्धातां रथः श्रतधनुर्निधनायोद्यमं कुर दृत्यभिष्ठितस्ययेति समन्वीप्षितवान्। क्रतोद्योगौ च तावुभा-वुपलभ्य श्रतधन्या क्रतवस्याणसुपेत्य पाण्णि पूरणकस्यिनिमन्न-मचोदयत्। आरु चैनं क्रतवस्यां नाष्टं वलभद्रवास्तदेवाभ्यां पष्ट विरोधायालम् दृत्युक्तश्चाक्रूरमचोदयत्। आष्ट्र चासाविष निष्ठ किश्चित् भगवता पादप्रहारपरिकम्यितज्ञगन्त्रयेण श्रस्र-वरवनितावेधव्यकारिणा प्रवलरिपुचकाप्रतिष्ठतचकेण चिक्रणा

तर्जमा ।

याप उठिये, और रथपर सवार होकर शतधन्त्राके मारनेकेवासे तैयार छजीय। बलदेबने श्रीक्रषाकी यह बात शुनकर कहा, ऐ गाही होगा। क्रष्णुबलराम उस्की लड़ाइकेवासे तैयार छये हैं, शतधन्त्राने यह बात शुनकर क्रतबस्मीसे मदद चाही, उसने कहा, के हम क्रष्णुबलरामसे लड़ाइ न कर सकेंगे। तब शतन्त्राने श्रुक्तरे पास जाकर मदद चाही। स्रक्रूर बोले के जिङ्कुने एक लायसे तिनी लोगको कम्पायमान करिद्याया, श्रीर जिनका बड़ा प्रवल पराक्रम है, श्रीर श्रुप्ते स्क्रीयांको जिङ्कुने विधवा कर दिया है, श्रीर श्रुपने चक्रसे प्रवल श्रुद्धलको दलन करते हैं, एसे चक्रधारी ममवान श्रीक्रष्णुके साथ,







41. "Do you therefore, Sir, get up, and prepare for slaying Satadhanvá." Baladeva replied:—"Be it so." Hearing that Krishna and Balaráma were preparing for battle against him, Satadhanvá asked the aid of Kritabarmá. "I shall not be able to compete with Krishna and Balaráma," was the answer of Kritabarmá. Satadhanvá now applied to Akrura. Akrura said, "He who by one kick shook the three worlds, who has brought about the widowhood of the wives of mighty Asuras, who by his discus subdues powerful enemies, is an overmatch

অভ্ৰাদ।

আপনি গাতোত্থান করুন, রথারত হইয়া শতধন্বাকে বিনাশ করিবার জন্য উদেয়াগী হউন। বলদেব শ্রীকৃষ্ণের এই কথা শুনিয়া তথাস্ত বলিয়া স্বীকৃত হইলেন। কৃষ্ণ বলরাম তাঁহার বিরুদ্ধে সংগ্রামার্থ সক্ষিত হইয়াছেন, এই কথা শুনিয়া শতধন্বা কৃতবর্মার নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। আমি কৃষ্ণ বলদেবের সহিত সংগ্রামে সমর্থ হইব না, কৃতবর্ম্মা শতধন্বাকে এই কথা বলিলে শতধন্বা অক্রুরের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। অক্রুর বলিলেন, যিনি এক পদাঘাতে জগত্রয় কম্পিত করিয়াছিলেন, যিনি অতি প্রবল পরাক্রান্ত অস্তরগণের বনিতাবর্ণের বৈধব্য-সম্পাদন করিয়াছেন, যিনি স্বীয় চক্রে প্রবল রিপু-চক্র দলন করেন, দেই চক্রী ভগবান শ্রীকৃষ্ণের সহিত









म्सम्।

मद्मुद्तिनयनावलोकितारिवलियातनेन श्रतिग्रहवैरिवार-णाक्षपाविष्कृतमिष्टमोहसीरेण सीरिणा च सष्ट सकल-जगदन्द्रानाममरवराणामि योद्धं समर्थः किमुताष्टम्। तदन्यतः श्ररणमभिलष्यताम्। ४१।

इत्युक्तः शतधनुराच यद्यस्मत्परिचाणाममधं भवानात्मान-मवगच्छति तदयमसान्मणिः संग्रद्धा रच्यताम्। इत्युक्तः सोऽप्याच यद्यन्तायामप्यवस्थायां न नसीचिद्भवान् कथिष्यति

तर्जमा।

श्रीर जो सुरापानसुदितनयनकटा चसे सब शबुकी सैन्य संचार कर सके हैं, श्रीर शबुक्प प्रवल सब चाथीको पकड़-नैसे जिसकी मिंचमा प्रकाश डियो है, ऐसे वलरामके साथ युद्ध करनेको लोगपूजित देवता लोग समय निष्ठ चोते, तब इम लोग केया हैं। इस् कारण तुम श्रीर लोगोंको पास श्राणागत हो। 8१।

श्रतधन्वाने अकूरकी यह बात शुनकर कहा, के अगर आप हमारे रच्चा नहि करते हैं, तो यह मणि अपने पास राखिये। अकूरने श्रतधन्वाकी यह बात शुनकर कहा, के देख, तुम अगर मरते बक्त किसीसे यह बात जाहेर ना करो,







for even the gods, not to speak of weak men like us; and who again can take the field against him whose half-shut eyes (through drink)* can disperse adverse hosts by his side-glances, and who has achieved immortal fame by drawing by main force a herd of elephants which had arrayed themselves against him—namely the mighty Haláyudha? You must therefore seek for help in other quarters.

42. Hearing this, Satadhanvá replied, "If you don't think you can assist me, you will, I hope, oblige me so far as to keep this gem with you." "I can comply with your request," said Akrura, "on condition that you engage never to give this fact out—

অনুবাদ।

এবং যিনি স্থরাপানমুদিত-নয়নকটাক্ষে সকল শক্রেসেন্স সংহার করিতে পারেন, অত্যন্ত প্রবল শক্রুরপ দন্তিযুথ আকর্ষণ করাতে যাঁহার মহিমা প্রচারিত হইয়াছে, সেই হলায়ুধের সহিত যুদ্ধ করিতে লোকপূজিত-দেবগণও যথন সমর্থ হন না, তথন আমরা কোথায় আছি! অতএব তুমি অন্য কোন ব্যক্তির শরণাগত হইতে চেন্টা কর। ৪১।

শতধন্বা অক্রুরের এই কথা শুনিয়া বলিলেন, যদি আপনি আমাকে রক্ষা করিতে পারিবেন না, এরূপ বোধ করেন, তাহা হইলে এই মণিটা গ্রহণ করিয়া আপনার নিকট রাখুন। অক্র শতধন্বার উক্ত বাক্য শুনিয়া কহিলেন, দেখ, যদি তুমি আপনার চরম-দশাতেও একথা কাহারও নিকট প্রকাশ না কর,

^{*} Baladeva is a staunch votary of Bacchus as also Krishna although in a lesser degree. The former is always 'tottering' and 'reeling.' Vulc Horivansa, a chapter of Muhābhárata, and a highly interesting and entertaining paper by Dr. Rajendra Lala Mittra in No. CLXXX. of th Asiatic journal.





मूचम्।

तद्दमेनं ग्रहीधामि । तथेतुरको चक्रुरस्तमणिरत्नं जग्राह। ४२।

श्तधनुरष्यतुलवेगां शतयोजनवाचिनीं वद्धवामारु स्थाप-शैद्यस्यीवमेधपुष्पवलाहकाम्बचतुष्टययुक्तर्या-वस्थिती वलदेववासुदेवी तमनुप्रयाती। ४३।

साच बद्दा शतयोजनप्रमाणं मार्गमतीत्य पुनर्पा वास्त्रमाना मिथिलावनोहेशे प्राणातुत्समञ्जा। शतधनरि तां परित्यच्य पदातिरेवाद्रवत्। ४४।

तर्जमा ।

तो इम इस मणिको कवुल कर सके हैं। शतधन्वाने वही मानाकर मणि चक्रूरके हावाले की, चक्रूरनेभी वह मणि ग्रहण किया। ४२।

शतधन्वाने अनूरको मणि देकर रोज चार शौ कोश जानेवाले घोडेपर सवार होकर भागा। क्रमणबलरामने श्रतधन्वाके भागने का चाल शुनकर शैद्य, स्त्रीव, मेघपुष्प श्रीर बलाइक नामे चार घोड़ें को रयमे लगा सवार चोकर ग्रतधन्वाके पिके पिके दौड़े। ४३।

गतधन्वाके घोड़ी एकदिनमे चार भी कोग्र जाकर फेर चलनेसे मिथिलादेशके करिव जङ्गलमे घ्मकर मरगयी। ग्रतधन्वा उस मरा घोडीको क्रोड़कर पायद्व भागा । १४।





nay, not even in your death-bed." Satadhanvá,

agreeing to this, Akrura accepted the gem.

43. Having given the jewel to Akrura, Satadhanvá mounted a mare which could go a hundred jojanas* a day, and departed. On hearing of his escape, Krishna and Balaráma yoked to a car the four horses named Saivya, Sugriva, Meghapushpa and Baláhaka and hastened in pursuit of the fugitive.

44. After having gone a hundred jojanas in one day, the mare of Satadhanvá died of fatigue in a woodland tract close to Mithilá.† So he was obliged

to continue his journey on foot.

অহুবাদ।

তাহা হইলে আমি তোমার বাক্যে সম্মত হইতে পারি। শতধন্বা তাহাই স্বীকার করিয়া মণিটা অক্রুরকে প্রদান করাতে অক্রুরও গ্রহণ করিলেন। ৪২।

শতধরা অকুরকে মণিরত্ব প্রদান করিয়া দিবদে শত-যোজন-বাহিনী, অত্যন্ত বেগশালিনী ঘোটকীতে আরোহণ-পূর্ব্বক তথা হইতে নিজ্ঞান্ত হইলেন। কৃষ্ণ বলরাম শতধরার পলায়নসমাচার প্রাপ্তে শৈব্য, স্থগ্রীব, মেঘপুষ্প ও বলাহক নামে অশ্বচতুক্টয়যোজিত রথে আরোহণ করিয়া শতধরার পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন। ৪৩।

শতধন্বার বড়বা এক দিবদের মধ্যে শত যোজন পথ গমন করিয়া পুনরায় চালিত হওয়াতে মিথিলার সমিহিত বনপ্রদেশে প্রাণত্যাগ করিল। শতধন্বা মৃত বড়বাকে ত্যাগ করিয়া পদব্রজেই গমন করিতে লাগিলেন। ৪৪।



^{*} A particular measure of distance, sometimes regarded as about equal to an European league, (i.e. four or five English miles, but more correctly = 4 krosās or about nine miles; according to other calculations=2½ English miles, and according to some=8 krosās) (Williams) vide also Mr. Broodley's interesting paper on Buddistic Remains of Behar, page 211, No. CLXXX, of the Journal of the Aciatic Society.

⁺ The Modern Oude.



मूलम् ।

क्रष्णोऽपि वलभद्रमाच्च तावद्त्तेव खन्दने भवता खेयम्।
अच्चेनमधमाचारं पदातिरेव पदातिमनुगम्य यावद् घातयामि। अच चि भूभागे दृष्टदोषा च्या नैतेऽस्वा भवतेमं
भूमिभागमुञ्जङ्का नेयाः। ४५।

तथेत्युक्ता वलभद्रो रथ एव तस्थी। क्रष्णोऽिप दिक्रोशमार्च भूमिभागमनुस्त्य दूरस्यस्थेव चर्क चित्रा शतधनुषः
शिरिविच्छेद। तच्छरीराम्बरादिषु च वज्जप्रकारमन्बिष्यद्मिष्
स्वमन्तकं मणिं नावाप यदा तदोपगम्य वलभद्रमाह दृष्टैवास्त्राभिः घातितः शतधनुने प्राप्तं श्रिक्षिणगत्सारभूतं
तन्मणिरतः। द्रत्याकण्ये उद्युतकोपो वलदेवो वासुदेवमाह

तर्जमा।

श्रीकृष्ण वलराम में बोले, आप दूस जगह दूस रथपर रहिये; हम एकेलेही पायदल उस अधम-आचार शत-धन्नाको मारकर आते हैं। हमारे घोड़ें ने दूस जगह अनिष्ट देखा है, दूस कारण दून घोड़ें को दूहां से आगे लेजाना मनासिफ नहि हैं। ४५।

बलराम इस बातको मानकर उस रथपर बयठे रहे।
श्रीकृष्णाने दो को असे चक्र फेककर श्रतधन्त्राका श्रिर काठ
उाला। श्रीर उसके कपड़ों मिणिको तलास किया,
मगर न पया। तब बलराम से श्राकर कहा, के हमने
बेफयदा श्रतधन्त्राको मारा। जो मिणि तमाम दुनियाकी दौलतका मूल है, वह न मिलि। बलभद्र
श्रीकृष्णाकी यह बात श्रुनकर बद्धत् को ध करके बोले



45. When Krishna came to the spot, he said to Balaráma! "Please stay here, while I go to have the life of this slave. Our horses has come upon this unsightly spectacle here. They should not

therefore go forward."

46. Baladeva accordingly remained in the car. After having proceeded only two miles or more, Krishna sent his discus from a distance and cut off the head of the fugitive. Next he examined Satadhanvá's body and searched his clothes for Syamantaka, but in vain. He returned to Baladeva and communicated his disappoinment. "We have slain Satadhanvá to no purpose, because that pink of perfection, Syamantaka was not with him." At this Balaráma flew into a towering rage—

অহুবাদ ৷

কৃষ্ণ বলরামকে কহিলেন, আপনি এই স্থানেই স্থাননে অবস্থিতি করুন; আমি একাকীই পদব্রজে সেই অধমাচার পদাতি শতধন্বার অনুগমনপূর্ব্বক তাহার প্রাণ সংহার করিয়া আসিতেছি। আমাদিগের অশ্বগণ এই ভূভাগে অনিষ্ট ঘটনা দর্শন করিয়াছে, অতএব ইহাদিগকে এ স্থান অতিক্রম করিয়া স্থানান্তরে লইয়া যাওয়া আপনার উচিত নহে। ৪৫।

বলদেব তাহাতে দন্মত হইয়া রথেই অবস্থান করিতে লাগিলেন। শ্রীকৃষ্ণ কোশদ্বয়মাত্র গমন করিয়াই দূর হইতেই চক্র নিক্ষেপ করত শতধন্বার শিরশ্ছেদন করিলেন। পরে তাহার অঙ্গবস্ত্রাদি বিশেষরূপে অনুসন্ধান করিয়াও যথন স্থমন্তক মণি প্রাপ্ত না হইলেন, তখন বলদেবের নিকট আসিয়া বলিলেন, আমরা অকারণ শতধন্বাকে বিনাশ করিলাম, যেহেতু সমস্ত জগতের সারভূত সেই মণিরত্ন পাইলাম না। বলভদ্র শ্রীকৃষ্ণের এই কথা শ্রবণ করিয়া অত্যন্ত কোপপ্রকাশপূর্বক কহিলেন,





मूलम्।

धिक् लां यस्त्रमधिलिप्सः। एतच्च ते स्वाहत्वानमधेये तदयं पन्या स्वेच्छया गम्यतां न मे दारक्या न त्वया न वन्हुंभिः कार्य्यम्। चलमेभिमेमाग्रतोऽलीकशपयैः। द्रत्याच्चित्य तं तथा प्रमाद्यमानोऽपि न तस्यौ विदेचपुरीं प्रविवेश । 8६।

जनकश्चित्रपूर्वेकमेवैनं गृष्टं प्रवेशयामास । स तत्रैव च तस्थौ । वासुदेवोऽपि दारकामाजगाम । यावच्च जनकराजगृष्टे

तर्जमा।

के कथा! तुमको धिकार है, तुम एसे दुनियाके लोभी हो! हमने तुमको भाद समभक्तर ह्यमा किया; अगर कोई दुसरा होता, कभी मेरे हाथसे न बाचता। यही सिधा राखा है, जिधार चाये चले जाओ। हमको दरकासे प्रयोजन नहिं, और न तुद्धारे एसे भाइकी जरूरत है, और न भाइबन्धुकी दरकार है। तुम वेफयदा क्यं हमारे पाय भुठ कसम खाते हो? बल-देवने इस प्रकारसे क्रयाको तिरस्कार करके राखा लिया। क्रयाने बज्जत् तरह विनय किया, परन्तु जरासमी न टहरकर विदेह नगरको चले। 8६।

विदेश नगरका राजा जनक बलरामके पायाको घोकर अपने मकानपर लेगया, और वह वही रहे, और कृषण हरकामे लौट आवे। बलराम जिस समय जनकके मकानपर



"O fie! Krishna," exclaimed he, "Your cupidity has struck me dumb. I forgive you in this matter, as you are my brother, but had it been any body else, by Heaven, he would never have raised his head more. The path lies before you, go wherever you like. As for me, I have no further need of Dwáraká, no further need of such a brother as you, no further need of friends and relatives. A truce to your false protestations." After having thus vented his rage, Baladeva left the scene, notwithstanding the reiterated attempts of Krishna to dissuade him; and went to Videha.

47. The king of that place lavished costly presents upon him and conducted him to his palace. Balaráma became domiciled there. Krishna returned to Dwáraká. While Baladeva was staying under the roof

অনুবাদ।

কৃষ্ণ তোমাকে ধিক্! তুমি এমন অর্থলোভী! আমি তোমাকে ভাতা বলিয়াই এ বিষয়ে ক্ষমা করিলাম, অন্ত কেহ হইলে কথনই তাহাকে ক্ষমা করিতাম না। এই সোজা পথ রহি-য়াছে, তোমার যথায় ইচ্ছা চলিয়া যাও, আমার আর দারকায় প্রয়োজন নাই! তোমার মত ভাতায় প্রয়োজন নাই! বন্ধু-বান্ধবেও প্রয়োজন নাই! তুমি আর অকারণ কেন আমার নিকট অলীক শপথ করিতেছ? বলদেব এই প্রকারে শ্রীকৃষ্ণকে তিরক্ষার করিয়া প্রস্থান করিলেন। কৃষ্ণ বহুবিধ অনুনয় করিলেও বলদেব ক্ষণকাল তথায় অবস্থান না করিয়া বিদেহনগরীতে গমন করিলেন। ৪৬।

বিদেহ রাজ জনক অর্য্য প্রদান করিয়া বলদেবকে নিজালয়ে লইয়া গেলেন, তিনি সেই থানেই থাকি-লেন। এদিকে কৃষ্ণও দারকানগরীতে প্রত্যাগমন করিলেন। বলরাম যৎকালে জনকের আলয়ে





मृलम्।

वलभद्रोऽवतस्थे तावत् धार्त्तराष्ट्रो दुर्खोधनस्तत् मकाणाद्-गदाणिचामणिचत । ४७।

वर्षचयान्ते च वस्तुयसेनप्रस्तिभिर्यावदैने तद्रतं क्रणो-नापद्धतमिति क्रतावगितिभिर्विदेचपुरीं गत्वा वलदेवः संप्रत्याया दारकामानीतः। ४८।

चक्ररोऽपि उत्तममणिससुद्गृतसुवणिध्यानपरः ततो यज्ञानीजे। ४८।

सवनगतौ हि च चियवेश्यौ निघन् ब्रह्म हा भवतीत्यतो दीचाकवचं प्रविष्ट एव तस्यौ दिषष्टि वर्षाणि। ५०।

तर्जमा।

ये, उस समय धतराष्ट्रका लेड्का दुर्थोधन गदायुह्व वर्षा शिखता था। ४७।

तिन वरस गुजरे बाद वस्तु श्रीर उग्रसेन श्रादि यादव-लोग विदेचपुरीमे जाकर बलरामसे यह बात बोले, के कृष्णाने वह मणि चोरीकर न लिया। दूस तरहका विश्वास देलाकर वलदेवको फेर दरकामे लेशाए। ४८०।

त्रक्ते यागयज्ञमे समय काटने लगे। ४९।

यज्ञवती होनेसे चित्र और बैश्वभी खगर मारा जाय, तो उसके मारनेकी हत्या ब्रह्महत्याके पापके समान है। मालूम होता है, के खब्कूर दूस उपायसे खपनी जान बाचा-नेकेवास्ते बासट बरसतक दीचारूप कवचसे खपना बदन क्रपाय राखा था। पूर्ण





of king Janaka, Duryodhana, son of Dhritaráshtra, learnt from him the principles of mace-warfare.

48. After three years had elapsed, Babhru, Ugrasena and other Jádavas, visited the palace of the king of Videha and creating in Baladeva the belief that Krishna had not appropriated Syamantaka, prevailed upon him to return to Dwáraká.

49. Furnished with immense gold through Syamantaka, Akrúra spent his time in celebrating vari-

ous jajnas.*

50. A man who slays a Kshetriya or a Vais'ya engaged in a jajna, is guilty of killing a Bráhmin.† It was perhaps this which shielded him for no less than sixty-two years from any hostile manifestations on the part of Krishna.

ञञ्चाम।

অবস্থিতি করেন, সেই সময়েই ধৃতরাষ্ট্রাত্মজ হুর্য্যোধন তাঁহার নিকট গদাযুদ্ধ শিক্ষা করেন। ৪৭।

তিন বৎদর অতীত হইলে বক্র ও উগ্রসেনাদি যাদবগণ বিদেহপুরীতে গমন করত কৃষ্ণ সেই স্যমন্তক মণি অপহরণ করেন নাই, এইরূপ বিশ্বাস জন্মাইয়া দিয়া বলদেবকে পুন-রায় দ্বারকায় আনয়ন করিলেন। ৪৮।

অক্রুরও সেই মহামণিপ্রসূত স্থবর্ণরাশিদ্বারা বিবিধ যজ্ঞানুষ্ঠান করত কাল্যাপন করিতে লাগিলেন। ৪৯।

যজে ব্রতী ক্ষজ্রিয় এবং বৈশ্যের প্রাণ বধ করিলে ব্রহ্ম-হত্যার পাপগ্রস্ত হইতে হয়; বোধ হয় অক্রুর এই উপায়ে আত্মরক্ষার নিমিত্তই দ্বিষষ্টি বৎসর কাল অনবরত দীক্ষারূপ ক্রচদ্বারা আর্ত থাকিতেন। ৫০।

† According to Manu the slaying of a Brahmin is one of the five capital sins, mahapatakas, (vide the Institutes by Sir W. Jones.)





^{*} A general name for certain ceremonies presided over by priests, in which oblations are presented and sometimes sacrifices made.





मृजम्।

एवं तन्मणिरत्नप्रभावात् तच चपसगैदुभिच्चमरकादिकं नाभूत्। पृरु।

चयाकरपचीयैभीजैः शनुक्ते साखतस्य प्रपौचे व्यापा-दिते भोजैः सन्दाक्रिते दारकामपन्नाय चपकान्तः । ५२।

तद्पक्रान्तिदिनादारभ्य तचोपसर्गव्यालानाष्टिष्टमरका-द्युपद्रवा वभूवः। त्रय याद्ववलभद्रोग्रसेनसमवेतोऽमन्त्रयत् भगवानुरगारिकेतनः कियदिद्मेकदैव प्रचुरोपद्रवागमन-मेतदालीच्यताम्। ५३।

तर्जमा।

उसी समय उस मणिके प्रभावसे दरकानगरीमे कोई उपद्रव, दुर्भिच, मरिका भय न था। पूर।

इस प्रकारसे कुच दिन व्यतीत होने पर अक्रूरके दोस्त भोजगण नामेने सात्वतके परपोते शचुन्नको मारडाला। इस भयसे अक्रूर भोजगणके साथ दरका क्रोड्कर भाग गया। पूर।

जिस दिन अकूर भागा, उसी दिनसे दरकामे नानाप्रकारका उपद्रव, सांपका भय, अनाष्टिष्ट और महामारी
होने लगी। उस्के बाद श्रीक्रम्ण, बलराम, उग्रमेन
और यादवलोग वगयरह एककट्ठे होकर सला करने लगे।
के किस कारण यह सब देवी विपन्न होने लगी, इसका
निश्चय करना अवस्थ है। ५३।







- 51. During all this time, through the influence of this gem, Dwáraká enjoyed perfect freedom from wars, rebellions, famines, pestilences, &c.
- 52. Afterwards, the bhojas of Akrúra slew Satrughna, the grandson of Sátvata. Alarmed at this Akrúra fled from Dwáraká with them.
- 53. His departure was the signal for the prevalence of snake-bites, droughts, pestilences and other calamities. Krishna, Baladeva, Ugrasena and others met together and seriously addressed themselves to the ascertaining of the causes of the miseries which the people were groaning under.

অञ্বাদ।

তৎকালে সেই মণির প্রভাবে দারকানগরীতে কোন উপদ্রব, ছুর্ভিক্ষ ও মরকাদির ভয় ছিল না। ৫১।

এইরূপে কিছু দিন গতে অক্র্রের পক্ষ ভোজগণ সাত্মতের প্রপোত্র শক্রত্মকে বিনাশ করে। তাহাতে অক্র্র ভীত হইয়া ভোজগণের সহিত দ্বারকা পরিত্যাগপূর্বক পলায়ন করিলেন। ৫২।

যে দিবদ অক্র পলায়ন করেন, সেই দিব্দ হইতেই দারকাতে নানা উপদর্গ, দর্পাদিভীতি, অনারপ্তি ও মরকাদির উপদ্রব হইতে লাগিল। তাহার পর শ্রীকৃষ্ণ, বলদেব ও উগ্রদেন প্রভৃতি যাদবগণ একত্র দমবেত হইয়া মন্ত্রণা করিতে আরম্ভ করিলেন। কি কারণে অকম্মাৎ একেবারে এই দমস্ত দৈববিভূমনা উপস্থিত হইতে লাগিল, তাহা নিরূপণ করা অবশ্য কর্ত্রব্য। ৫০।





मूचम्।

इत्युक्ते अन्धवनामा यद्रदृद्धः प्राष्ट्र अस्याक्रूरस्य पिता खफल्को नाम यच यचामूत्तच तच दुभिच्चमरकानादृष्ट्या-दिकंच नामूत्। ५८।

काशिराजस्य विषयेऽत्यन्तानाष्ट्रस्यां श्रुफल्कोऽनीयत्। ततस्तत्त्वणादेव देवो ववषे। काशिराजस्य पत्नरास्य गर्भे कन्या पूर्वमासीत्। पूप्र।

सापि पूर्णेऽपि प्रसृतिकाले नैव निश्वकाम। एवश्व तस्य गर्भस्य द्वादश वर्षाण्यनिष्कामतो यदः। काशिराजस्य ता-मात्मजां गर्भस्थामाच पुचि! कसाज्ञ जायसे निष्कुस्यताम् श्रास्थं

तर्जमा।

सबने जब यह बात कही, तब अन्धक नामे एक ब्ड्ढा अदमी यदुबंशीयोंनेसे बोला, देख, हमने देखा है, के अक्रूरका बाप आफल्क जिस जिस जगह रहा, वहां कभी दुभिन्न, मरी, और अनाष्टि वगयरहका भय नहिं होता था। ५8।

एक समय काशिराजके राजमे अत्यन्त अनावृष्टि होनेसे खफल्कको उस जगह लेगये। अपल्कके राजमे जातेही देवराज इन्द्रने वर्षण प्रारम्भ कर दिया। उस समय काशिराजकी स्त्रीके गर्भमे एक कन्या थी। पूप्।

लेड्का पयदा होनेके समयके व्यतीत हो जानेके बादभी लेड्की पयदा न ऊई। दूस प्रकारसे बारह वर्ष व्यतीत क्षेत्र प्रकार करें। दूस प्रकार के काणि राज काणि राज गर्भस्य कन्यासे बोले, हे पुनि! तुम किसवासी गर्भसे बाहर नहि होती, बाहर आयो, हम तुस्लारे मुख





54. An old Jádava, Andhaka by name, said, "I have remarked that wherever Saphalka, the father of Akrúra, resides, the natural calamities

cannot approach.

55. "Once the provinces of Kásiráj were suffering terribly from drought; but no sooner Saphalka entered the kingdom than the Thunderer* began to send down heavy showers. A daughter was then residing in the womb of the royal spouse.

56. She was not delivered of her burden even when the proper time had gone by. Twelve weary years passed in this manner. Once the king addressed his embryonic daughter thus: "O daughter, why are you vet delaying to come out? Do, I beseech you, come out. How my soul longs to see your dear face!

অত্নবাদ।

সকলে এই কথা বলিলে অন্ধকনামক এক জন যতুরুদ্ধ কহিলেন, দেখ, আমি দেখিতেছি অক্রুরের পিতা শ্বফল্ক যে যে স্থানে অবস্থিতি করেন, সেই সেই স্থানে কথনই তুর্ভিক্ষ, মরক ও অনারষ্টি প্রভৃতি উপদ্রব সংঘটিত হয় না। ৫৪।

এক সময়ে কাশিরাজের রাজ্যমধ্যে অত্যন্ত অনার্ষ্টি উপস্থিত হওয়াতে শ্বফল্ককে তথায় লইয়া যায়। শ্বফল্ক রাজ্যমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র দেবরাজ ইন্দ্র প্রচুর বর্ষণ আরম্ভ করিলেন। তৎকালে কাশিরাজের পত্নীর গর্ভে এক কন্যা অবস্থান করিতেছিল। ৫৫।

প্রসব সময় উত্তীর্ণ হইলেও সেই কন্সা গর্ভ হইতে নিঃস্বত হইল না। এইরূপে দ্বাদশ বর্ষ গত হইল,তথাপি কন্যা ভূমিষ্ঠ হইল না। একদা কাশিরাজ সেই গর্ভস্থ কন্যাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, পুজ্রি! তুমি কি নিমিত্ত ভূমিষ্ঠ হইতেছ গর্ভ হইতে নির্গত হও, আমি তোমার মুখচন্দ্র

^{*} Indra, the supreme god in the Vedic hierarchy, the Hindu Zeus.





मूचम्।

ते द्रष्टुमिच्छामि। स्वकाञ्च मातरं किमिति चिरं कुं शयि द्रियुक्ता सा गर्भस्थैन व्याजचार तात! यद्येकैकां गां दिने दिने वाद्याणेस्य: प्रयच्छिसि तदाचमन्ये स्त्रिभिन धेरसाद् गर्भात् तावदवस्यं निष्कृमिष्यामीति। एतच तद्वचनमाकण्ये राजा वाद्याणाय दिने दिने गां प्रादात्। सापि तावता कालेन जाता। ततसस्याः पिता गान्दिनीति नाम चकार। ताञ्च गान्दिनीं कन्यां श्रुफल्कायोपकारिणे गृडागतायाध्रम्भूतां प्रादात्। साच गान्दिनी प्रतिदिनं यावज्जीवं वाद्याणाय गां दत्तवती। तस्यामयमक्रूरः श्रुफल्कात् जच्चे। तस्यैवं ग्रुणमियुनादुत्पत्तः। पृक्ष्।

तरजम(।

देखनेको बड़त् व्याकुल हैं, श्रीर एतने दिन किसवासे श्रपनी माको गर्भभार धारण करनेका क्रुग्न देती हो। काणि-राजका इस प्रकारका बचन ग्रुनकर कन्या गर्भमें से बोली, पिता! श्राप श्राग्र श्राजसे हर रोज एक एक ब्राह्मणको एक एक गौ दान करें, तो उसके तिन बरम बाद में गर्भसे बाहर श्राउंगी। काणिराजने गर्भस्थित कन्याके कहनेके श्रुनार प्रतिदिन ब्राह्मणको एक एक गौ दान करने लगे। इस प्रकार तिन बरस व्यतीत होनेसे कन्या उत्पन्न द्धई। दिन दिन गौ दान करनेसे बन्या उत्पन्न द्धईयी, इस कारण उसका नाम गान्दिनी रक्षा गया। जिस समय खफल्कके श्रानसे श्रनाष्टि दूर द्धई, उस समय उसको गान्दिनी कन्या दान किया। वह गान्दिनीभी प्रतिदिन ब्राह्मणको एक एक गौ दान देती थी। श्रुपल्कके बीजसे गान्दिनीके गर्भमे श्रुक्तूरका जन्म है। ऐसे ग्रुणसम्पन्न स्वीपुरुषसे श्रुक्तूर जन्मे हैं। पूर्ह।





Why are you, again, inflicting so much hardship upon your mother?" "If you, dear father," replied the daughter, "henceforth daily offer a cow to a Bráhmin, I shall be born only after three years." Kásiráj complied with this. After three years had thus passed, the daughter saw the light. Having regard to the unique circumstances that preceded her birth, her father called her Gándini.* By way of rewarding Saphalka, the king bestowed Gándini on him. She also daily bestowed a cow on a Bráhmin. This lady bore her husband Akrúra. Sprung from such parents, Akrúra should naturally partake of their wonderful virtues.

অহ্বাদ।

দর্শনের জন্য অতি উৎস্থক হইয়াছি। এবং এত দিন ধরিয়া স্বজননীকে কি কারণে এই গর্ভভার-বহন-ক্রেশ দিতেছ ? কাশিরাজ এইপ্রকার বাক্য বলিলে সেই কন্যা গর্ভ হইতে বলিল, পিতঃ! আপনি যদি অদ্যাবধি প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করেন, তাহা হইলে আর তিন বৎসর পরেই আমি ভূমিষ্ঠ হইব। কাশিরাজ গর্ভস্থ কন্যার কথাসুসারে প্রতিদিন ব্রাহ্মণদিগকে এক একটা গো দান করিতে লাগিলেন। এইরপে তিন বৎসর অতিক্রান্ত হইলে কন্যা ভূমিষ্ঠ হইল। দিন দিন গো দান করাতে কন্যা প্রসূত হইয়াছিল বলিয়া কন্যার নাম গাদ্দিনী রাখিলেন। যৎকালে শ্বফল্কের আগমনে রাজ্যমধ্যে অনার্ষ্টি নিবারিত হয়, সেই সময় তাঁকে গাদ্দিনী কন্যা সম্প্রদান করেন। সেই গাদ্দিনীও প্রতি দিন ব্রাহ্মণদিগকে এক এক গো দান করিতেন। শ্বফল্কের উরসে এবং সেই গাদ্দিনীর গর্ভে অক্রুরের জন্ম হয়। এই প্রকার গুণসম্পন্ন দম্পতী হইতে অক্রুরের জন্ম হয়।

^{*} The word, through the particle at, alludes to the singular circumstance of the offering of kine.





1

11

मुलम्।

तत् कथमसिद्मपक्रान्तेऽच मरकदुभिचाद्यपद्रवा न भवि-ष्यन्ति। तदयमानीयतामिति श्रलमचातिग्रणवत्यपराधान्वे-ष्रणेन द्रति। ५७।

यदृष्टद्वस्थान्धकस्य एतद्वचनमाकाण्यं केशवोग्रसेन-वलमद्रपुरोगभैयद्भिः द्वतापराधितितिचाभवमभयं द्त्वा श्वाफल्किः स्वपुरमानीतः। तच चागत एव तत्स्रस्यमन्तक-मणेः अनुभावादनाष्टिमरकदुभिच्चत्यालाद्युपद्रवः शशाम। कृष्ण्य चिन्तयामास स्वत्यमेतत् कारणं यद्यं गान्दिन्यां श्वफल्केनाकूरो जनितः सुमहां यायमनाष्टिष्टदुभिच्चमरका-द्युपशमनकारी प्रभावः। पूर्वः।

तर्जमा।

जब के ऐसे अकूर दरका के छोड़ कर गये, तब क्यं उस जगह मरी, और दुशिल्ल नहिं होगा। हमारी सलाहमें अकूरकों फेर इस जगह लाना मनासिफ है। अगर अकूरने महा अपराधभी किया है, परन्तु जिसका ऐसा अधिक गुण है, उसका अपराध पकड़ना उचित नहिं। 49।

क्रणा, उग्रसेन और बलदेव आदि यांद्वगण अन्धकती यह बात मुनकर ख़फल्क-पुन अक्रूरका पहिला अपराध चमा करके अभय देकर फेर हरकामे लाए। अक्रूरके नगरमे प्रवेश करते ही उस स्थमन्तक मणिके प्रभावसे अना-ष्टिष्ट, मरी, दुर्भिच और सांपका भय सब निवारण ही गया। श्रीकृषण अक्रूरकी यह बढ़ाइ देखकर आश्रय होकर चिन्ता करने लगे, के अक्रूर गान्दिनीके गर्भमे खफल्कके बीजसे पयदा उछ हैं, यह बज्जत् थोड़ा कारण है, बलके अनाष्टिष्ट, दुर्भिच और मरीका दूर होना बज्जत् भारी है। प्रदा



57. "What wonder, then, that natural calamities should befall the land on which he has turned his back? My voice is for bringing him back. Although I grant that he has committed wrong, yet what may not be forgiven to such as he?"

58. Agreeably to this sage advice, Kes'ava, Ugrasena, Baladeva and other Jádavas, brought the son of Saphalka over to Dwáraká, condoning his past transgressions. Anon the drought, plague, famine, snake-bites, &c. ceased to rage by virtue of Syamantaka, which was with him. The sudden change led Krishna to reflect:—"Akrúra's having sprung from the loins of Saphalka and the womb of Gándini," thought he, "is no sufficient reason. To a certainty, this extraordinary phenomenon must owe its origin to a far more potent cause.

অহুবাদ।

যখন সেই অক্রুর এই দারকা পরিত্যাগ করিয়া গিয়া-ছেন, তখন কেনই বা এখানে মরক ছুর্ভিক্ষাদি না হইবে ? আমার বিবেচনায় অক্রুরকে পুনরায় এখানে আনরন করা কর্ত্তব্য। যদি চ অক্রুর মহা অপরাধ করিয়াছেন বটে, কিন্তু যাহার এত অধিক গুণ, তাহার অপরাধ ধর্ত্ব্যই নহে। ৫৭।

কেশব, উগ্রদেন, বলদেব প্রভৃতি যাদবগণ যতুর্দ্ধ অদ্ধানর এই যুক্তিযুক্ত বাক্য প্রবণ করিয়া শ্বফল্কস্থত অক্রুরের পূর্ববৃত্বত অপরাধ ক্ষমা করিয়া অভয় দিয়া পুনরায় তাঁহাকে দ্বারকায় আনমন করিলেন। অক্রুরনগরে প্রবেশ করিবামাত্র তাঁহার নিকটন্থিত স্থমন্তকপ্রভাবে অনার্ন্তি, মরক, ছর্ভিক্ষ ও সর্পাদির উপদ্রব প্রশমিত হইয়া গেল। শ্রীকৃষ্ণ অক্রুরের এই অসাধারণ ক্ষমতা দর্শনে বিস্মিত হইয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন। অক্রুর গান্দিনীর গর্ভে এবং শ্বকল্কের উর্বেদ জ্বিয়াছেন, ইহা অতি সামান্য কারণ, কিন্তু এই অনার্ন্তি, ছর্ভিক্ষ ও মরকাদি নিরাকরণপ্রভাব অত্যন্ত গুরুতর। ৫৮।



म्बम्।

तन्त्रानमस्य सकाशे स महामणिः स्यमन्तकाखिसिष्ठित ।
तस्य द्वावंविधाः प्रभावाः श्रूयन्ते । श्रयमणि यन्नादनन्तरं
श्रम्यत् क्रत्वन्तरं तस्मात् यन्नान्तरं यजतीति । श्रस्तोणादानञ्चास्य । श्रमंश्यमचासौ वरमणिसिष्ठतीति क्रताध्यवसायोऽन्यत् प्रयोजनसृद्ध्य सकलयादवसमाजमात्मगे हे
एवाचीकरत्। तन चोपविष्ठेषुखिलेषु यादवेषु पूर्वप्रयोजनः
सपन्यस्य पय्यवसिते च तस्मिन् प्रसङ्गगतपरिचासकथामक्रूरेण सच्छत्वा जनाद्दनसम्ब्रूरमाच । ५६।

तर्जमा।

हमको निश्चय मालुम होता है, के अक्रूरके पास वह स्यमन्तक महारत है। हमने ग्रुना है, उसके प्रभावसे यह सव उपद्रव शान्त होता है। अक्रूर एक यक्कि बाद दुसरा यक्क, तिसरा यक्क, दूसीतरह हमें सा करता रहता है। दूसकी दौलतभी ऐसी निहं है, जिसके हारा एतने यक्क हो सकें। हमसे यही निश्चय मालुम होता है, वह स्यमन्तक मणि दूंसीके पास है। श्रीकृष्णाने मनही मनमे यह निश्चय करके एकदिन अपने मकानपर एक काम ठहराकर सव यादवगणको एकच किया; और उस कामके श्राखेर हो जानेके वाद श्रीकृष्ण अक्रूरके साथ तरह तरहकी दिल लागि करके वोले। पृहा



59. "It is odds he has got the magical Syamantaka with him. I have heard people attribute wonderful properties to the gem, whereby natural calamities can be removed. What, again, enabled Akrúra to celebrate jajnas* without number, if he were not furnished with heaps of gold by Syamantaka?" Having come to this conclusion, Krishna brought together the whole body of the Jádavas on some occasion. The avowed purpose of the meeting having been accomplished, Krishna began to talk with Akrúra in a light vein. The conversation having been brought to the intended pass, the former said:—

অতুবাদ।

আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে অক্রুরের নিকট সেই

স্যমন্তক মহারত্ন আছে, আমি শুনিয়াছি তাহারই প্রভাবে

এই সকল উপদ্রব প্রশমিত হয়। অক্রুর এক যজের পর

অপর যজে, তাহার পর অন্য যজে, এইরূপে অনবরতই

যজানুষ্ঠান করে, ইহার বিভব ত এত অধিক নহে, যাহা

দ্বারা এতাধিক যজ্ঞ সম্পন্ন হয়। ইহা দ্বারাও নিশ্চয় বোধ

হইতেছে যে, সেই স্যমন্তক ইহারই নিকট আছে। শ্রীকৃষ্ণ
মনে মনে এইরূপ নিশ্চয় করিয়া কোন অন্য একটা উপলক্ষে
নিজালয়ে সমুদায় যাদবকে সমবেত করিলেন। যাদবগণ
উপবিষ্ট হইলে যে উপলক্ষে তাহাদিগকে আহ্বান করা

হইয়াছিল, তাহা শেষ হইলে শ্রীকৃষ্ণ প্রসঙ্গতমে অক্রের

সহিত নানাপ্রকার পরিহাস করিয়া তাঁহাকে বলিলেন। ৫৯।



^{*} Vide anté.



मुखम्।

दानपते! जानीम एव वयं यथा शतधन्त्रना ऋखिलजगत्मारभूतं स्वमन्तकरत्नं भवतः सकाशे समर्पतं। तदेतद्राष्ट्रीपकारकं भवतः सकाशे तिष्ठतीति तिष्ठतु सन्ने एव वयं
तत्प्रभावफलभुजः किन्तेष वलभद्रोऽस्मानाशिक्षःतवान्।
तदस्यत्पीतये दश्य दत्य भिष्टितः सरतः सोऽचिन्तयत्।
किमचानुष्ठेयम्। श्रन्यथा चेत् व्रवीस्यष्टं तत्केवलास्वरतिरोधानमन्त्रिधन्तो रत्नमेते द्रस्यन्तीति श्रतोऽन्वेषणं न
चोममिति संचिन्ता तमिखलजगत्कारणभूतं नारायणमाष्टाकरूरः भगवन्! ममैतत् स्वमन्तकमणिरतः श्रतधनुषा
समर्पितम्। ६०।

तर्जमा।

हे दानपते! यतधन्वाने जो खापके पास सव जगत्का सार स्थमन्तक मिण रक्षा था, सो हम जानते हैं, वह मिण्रत राजका बज्जत् उपकारी है, खगर वह खापके पास है, रहे, हम सवही उसका फलभोग करते हैं। मगर वलदेव हमारे ही पर हमेसा मन्देह करते हैं। मसीवाले हमारे सन्तोषके लिये वह मिण एकबार देखला दो। खी हथाकी यह बात यमकर खकूर मनही मनमे चिन्ता करने लगे, के मिण तो हमादे पासही है, दूम समय केया कहें। खगर मुठ कहें, तो यह पता लगाकर हमारे कापड़ें। मेन से नेकाल लगे, खौर सव देखेंगे। यह खगर तलास करें, तो हमारा खाच्छा न होगा। खकूरने यह सव बात किया कर सकल जगत्के कारणसहप नारायणसे वोले, भगवन्! यतधन्वाने हमको स्थमन्तक मिण दि थी। है।



60. "O Lord of Dánavas,* that Satadhanvá has kept with you the incomparable Syamantaka is well-known to us. That gem is a blessing to the land; and we don't grudge you the possession of it: enough that it is with one of us. But Baladeva suspects me of having appropriated it—in order to disabuse him of this false notion, please show it me once before this assembly." In this dilemma, Akrúra thought, "The gem is with me: now, what shall I say? If I deny, they will search my body, and will surely find it out. Nor will this be a happy circumstance for me. O Lord," he then said to the Great Cause of this Universe, "Satadhanvá did lodge the jewel with me.

অভুবাদ।

দানপতে! শতধন্বা যে, আপনার নিকট সেই সমস্ত জগতের সারভূত স্যমন্তক মণি রাখিয়াছিলেন, তাহা আমরা জানি। সেই মণিরত্ন রাজ্যের অশেষ উপকারী, তাহা আপনার নিকট আছে, থাকুক, আমরা সকলেই ত তাহার ফলভোগী,বলদেব কিন্তু আমার প্রতিই সর্বদা সন্দেহ করেন, অতএব আমার সন্তোষের জন্য সেই মণিটা একবার দেখান। শ্রীকৃষ্ণের এইরূপ বাক্য প্রবণ করিয়া অক্রুর মনে মনে চিন্তা করিতে লাগিলেন, মণি ত আমার নিকটেই রহিয়াছে, এক্ষণে কি বলি? যদি মিথ্যা বলি, তাহা হইলে ইহারা অনুসন্ধান করিবে, বস্ত্রমধ্য হইতে বাহির হইয়া পড়িবে, সকলেই দেখিতে পাইবে। ইহারা যদি অন্বেষণ করে, সেটা আমার পক্ষে মঙ্গলজনক হইবে না। অক্রুর এই সকল বিষয় পর্যালোচনা করিয়া সকল জগতের কারণ স্বরূপ নারায়ণকে বলিলেন। ভগবন্! শতধন্বা আমার নিকট এই স্যমন্তক মণি সমর্পণ করিয়াছিলেন। ৬০।

^{*} Hindu 'Titans who warred on' the Suras (gods.)



मूचम्।

श्रपगते च तस्मिन् श्रद्धा खः परखो वा भगवान् मां याचिष्यतीति क्रतमतिरतिक्रच्छ्रेणैतावन्तं कालमधारयम् श्रस्य च धारणक्तो ग्रेनाइमग्रेषोपभोगेषुसङ्गिमानसी न वेद्मि स्रस्यक्रकामि । ६१ ।

एतावन्माचमशेषराष्ट्रीपकारि धारियतुं न शक्तोतीति मां भगवान् मंस्यत दत्यात्मना न चोदितम्। ६२।

तदिदं स्वमन्तकरतं ग्रह्मताम् दृच्ह्या यस्याभिमतं तस्य समप्यताम्। ततः सोऽधरवस्त्रनिगोपितातिलघु कणक-समुद्रकं प्रकटोक्ततवान् । ६३।

तर्जमा।

श्रतधन्वाके मरने बाद आज, या काल, या परशें। जकर आप इससे यह मणि माझते, यह विचार करके मैंने बद्धत् कष्टमें एतने दिन रह्या किया। इसके रखनेसे इसको बड़ा क्लोश द्धया है। मैं सब उपभोगसे बिश्चत होकर सब सुख कोड़ दिया। ६९।

पाक्के आप मनमें कहेंगें के अक्रूर अयोग्य है, के समु-दाय राजका अशेष मञ्जल करनेवाली मणिकों रख न सका। इस भयसे एतने दिनतक मैंने आपके बिना मांगें दिया नहीं। ६२।

दूस समय आप यह स्थमन्तक मिण सृत्मे लेकर जिसको मनासिफ हो, उसको दिजीए । अक्रूरने कंट्याके यह बात कहकर अपने कापड़े से एक क्षोटीसी सोनेकी डिविया बाहर नेकाली। ६३।



- 61. "I have kept it in my possession so long, in the hope of bestowing it on you after the death of Satadhanvá. Alas! sir, it has been a thorn in my side.
- 62. "I did not give it to you so long, lest you should think me incapable of bearing about a gem of such mighty virtues.
- 63. "Now accept it, sir, and bestow it on whomsoever you please." Having delivered himself thus, Akrúra took out a small golden box from his dress.

অञ্বাদ।

শতধরার মৃত্যুর পর আজ হউক, কাল হউক, বা পরশ্বই হউক, অবশ্যই আপনি এক দিন আমার নিকট চাহিবেন, এই ভাবিয়া আমি অতি কফে এতকাল ইহা রক্ষা করিয়াছিলাম, ইহার ধারণে আমার এত ক্লেশ হই-য়াছে যে, আমি সমুদায় উপভোগে বঞ্চিত হইয়া কাল-যাপন করিতেছি, স্থথের লেশমাত্রও অনুভব করিতে পারি নাই।৬১।

পাছে আপনি মনে করেন, অক্রুর এমনই অক্ষম যে, সমুদায় রাজ্যের অশেষ উপকারক মণিরত্নও ধারণ করিতে পারিল না, এই ভয়ে এতদিন আমি স্বয়ং উপযাচক হইয়া আপনাকে ইহা সমর্পণ করি নাই। ৬২।

এক্ষণে সেই শুমন্তক রত্ন গ্রহণ করিয়া যাঁহাকে অভিনত হয়, তাঁহাকেই সমর্পণ করুন। অক্রুর কৃষ্ণকে এই কথা বলিয়া নিজ পরিধেয় বস্ত্রমধ্য হইতে একটা ক্ষুদ্র স্থবর্ণ কোটা বাহির করিলেন। ৬৩।





म्चम्।

तत्र निष्काम्य स्यमन्तकमणि तच यदुममाजे सुमोच। म्क्रमाचे च तेनातिकान्त्रा तदखिलमास्थानसुद्रोतितम्। ६४।

अयाचात्रात्रः स एव मणियः शतधन्वनासातं ममपितः यसायं स एनं ग्रङ्कात्विति। तन्मणिरतमालोका सब-याद्वानां साधु साध्विति विस्तितमनसां वाचोऽसूयन्तः। तमालोक्य ममायमच्यतिनैव मामान्यः समन्वीप्सितः इति वलभद्रः सस्यृष्टोऽभवत्। ६५।

तर्जमा।

उसके बाद अक्रूरने उस सोनेकी डिवियासे वह स्यम-न्तक मणि नेकाल कर उपस्थित यादवगणको देखलाया। वाहर नेकलते ही उसके दमक चमकसे तामाम सभामग्डल प्रकाशमान की गया। ६८।

बाद उसके अनूर वोले, के शतधन्वाने हमारे पास जो मणि रक्खी थी, वह मणि यही है। यह जिसकी चिज हो, वह लेवे। याद्यगण उस मणिके दर्शन करते ही वज्जत आख्रयमें चारों तरफसे बाहवाका शब्द उच्चारण करने लगे, वलदेव देखकर उस्मणिकेवास्ते वक्कत् आमक्त-चित्त होकर मनही मनमे कहने लगे, के क्रष्णाने पहिले ही कहा है, के यह मणिरत हम दोनो चादमीकी होगी। ६५।



64. And laid Syamantaka before the assembled Jádavas. The gem sent a gleam far into the bosom of the apartment.

65. "Listen, princes," said Akrúra, "this is the gem which Satadhanvá lodged with me. Let him who is its rightful owner claim it." The Jádavas were struck with surprise at the sight, and were lavish in their praises. Baladeva secretly pined for possessing it, and thought within himself, "Krishna promised formerly that this gem should be our common property."

অমুবাদ।

পরে অক্রুর সেই কোটা হইতে শুমন্তক বাহির করিয়া উপস্থিত যাদবগণকে প্রদর্শন করিলেন। বাহির করিবামাত্র তাহার প্রভায় সমুদায় সভামগুপ আলোকিত হইয়া উঠিল। ৬৪।

অনন্তর অকুর কহিলেন, শতধন্বা আমার নিকট যে মণি রাথিয়াছিলেন, সেই মণি এই; ইহা ঘাঁহার বস্তু, তিনি গ্রহণ করুন। যাদবগণ সেই মণি দর্শনমাত্র অত্যন্ত বিশ্বয়ের সহিত চতুর্দিক হইতে সাধুবাদ প্রদান করিতে লাগিলেন। বলদেব দেখিয়া তাহার প্রতি অত্যন্ত আসক্তচিত্ত হইয়া মনে মনে কহিতে লাগিলেন, শ্রীকৃষ্ণ পূর্ব্বে অঙ্গীকার করিয়াছেন যে, এই মণিরত্ন আমাদিগের উভয়ের সম্পতি হইবে। ৬৫।





मृलम्।

ममेवेदं पित्रधनिमत्यतीव च सत्यभामापि स्पृष्टया-ञ्चकार। वलसत्याननावलोकनात् क्रच्णोऽप्यात्मानं चक्रा-न्तरावस्थितमिव मेने। ६६।

सक्तयाद्वसमचन्दाक्र्रमाच एतद्वि मणिरत्नमात्म-शोधनायेषां यदूनां दर्शितम्। एतच्च मम वलभद्रस्य च सामान्यं पित्रधनचैतत् सत्यभामाया नान्यस्य। ६७।

एतच्च सर्वेकालं शुचिना ब्रह्मचर्थेगुणवता ध्रियमाण-मशेषराष्ट्रस्थोपकारकम् ऋशुचिना ध्रियमाणमाधारमेव इन्ति। ६८।

तर्जमा।

सत्यभामा मनमे कहने लगी, के यह हमारे वापकी चिज है, यह हमको ही मिलना चाहिये। कृष्णा वलदेब श्रीर सत्यभामा के सुखका माव देखकर भकुएकी तरफ हो गये। हह ।

वाद उस्के श्रीकृष्ण मसुदाय यादवगणके सामने वोले, के देख, मैंने केवल अप्ने कलक्षके दूर करणेकेवास्त सबको यह मणिरत्न देखलाया। पहिले मैंने कवुल किया था, के यह मणिरत्न बलदेवकी और हमारे साभेकी चिज होगी, लेकिन यह सत्यभामाके वापके धन है, दस कारण सत्यभामाहीकी मिलना उचित है, दसरेको लोभ करणा मनासिफ नहिं। ६७।

यह मणि पवित्र श्रीर ब्रह्मचर्थे ब्रती होकर धारण करणेसे राजका मङ्गल करणेवाला है, लेकिन श्रपवित्र श्रदमीके धारण करणेसे उसका नाम करणेवाला है। ६८।





66. Satyabhámá thought that since Syamantaka was the property of her father, it should now be hers. Seeing the countenances of Baladeva and

Satvabhámá, Krishna became embarrassed.

67. Then addressing Akrúra, he said, "You must know, Sir, that I have shown this gem, only to remove the stain which had attached itself to my reputation. Formerly I promised that it should be the joint property of Baladeva and myself. But, it is Satyabhámá's paternal possession, and now ought to be hers. None else should covet it.

68. "When a man who is clean and who is engaged in *Brahmacharjya*,* wears it, it conduces to his good; but it is destructive to an unclean person.

অহুবাদ।

সত্যভাষা মনে করিতে লাগিলেন ইহা যখন আমার পিতৃ-সম্পত্তি, তখন আমারই হওয়া উচিত। কৃষ্ণ বলদেব ও সত্যভাষার মুখভঙ্গি দর্শনে আপনাকে চক্রান্তপতিত ব্যক্তির ন্যায় বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ৬৬।

পরে শ্রীকৃষ্ণ সমুদায় যাদবের সমক্ষে অক্রুরকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, দেখুন, আমি কেবল নিজ কলঙ্কাপ-নোদনের জন্মই এই মণিরত্ন সকলকে দেখাইলাম। পূর্ব্বে আমি স্বীকার করিয়াছিলাম যে, এই মণিরত্ন বলদেব ও আমার সাধারণ সম্পত্তি হইবে, কিন্তু ইহা সত্যভামার পিতৃধন, অতএব সত্যভামারই হওয়া উচিত; অন্যের ইহাতে লোভ করা বিধেয় নয়। ৬৭।

এই মণি পবিত্র ও ব্রহ্মচর্য্যব্রতী হইয়া ধারণ করিলেই রাজ্যের মঙ্গল-জনক হয়, কিন্তু অপবিত্র ব্যক্তিকর্তৃক ধৃত হইলেই তাহার মৃত্যুর কারণ হইবে। ৬৮।

^{*}The condition of a young Brahmin or student in the first period of his life, involving much rigorous prayer and fasting. Vide The Commentaries.





मूलम्।

चतः चर्चचयः घो इग्रस्तीतत्त्वपरिग्रहात् चनमर्थो धारणे। ६८।

कथक्षेतत् सत्यभामा स्वीकरोतु । आर्थेण वनभद्रेणापि मिद्रापानाद्यभेषोपभोगपित्लागः कथं कार्यः। तदयं यदनोकोऽयं वनभद्रोऽकं सत्या चंत्वां दानपते प्राययामः एतद्भवानेव धारियतुं समर्थः। त्वत्स्यक्षास्य राष्ट्रस्रोपकारकं तद्भवानभेषराष्ट्रोपकारनिमित्तमेतत् पूर्वेवत् धारयतु। त्वयान्यया न वक्तव्यमित्यके दानपितः तथेत्यकृ जग्राह।

तर्जमा।

दूम घालतमे किस तरहसे उसके धारण करणेके में योग्य ऊं। केसेवास्ते के मेरी घोल घाजार स्त्री हैं। इट ।

मत्यभामाभी इस्को किन तरहमे धारण करेगी। वह केया इन मणिकेवाक्त ब्रह्मचय्य बत धारण करेगी। और वलदेवभी इस मणि धारण करणेकेवाक्ते सरापान आदि सब भोगको त्याग करणेको मामर्थ होगे? हे दाता अकूर! और किसीको देनेकी में तज्जिज निहं कर्ता। यही यादवगण, वलदेव, सत्यभामा और में सवलोग कहते हैं, के आप सवराजके मङ्गलकेवाक्ते यह स्थमन्तक मणि धारण करें। यह आपके पास रहनेसे राजका मङ्गल होगा। इस कारण आप धारण करें। इस्के सेवाय और दुसरी वात खेयाल न करें। श्रीकृष्णकी यह वात श्रनकर अकूर वोले वज्जत् आच्छा। हमारेही पास रहे, यह कहेकर वह मणि आप उक्ताने ले लिया।





69. "How then can I wear it, considering that I have no less than sixteen thousand queens?

70. "How again can Satyabhámá use it? Shall she engage in Brahmacharjya for the sake of the jewel? Shall the respected Baladeva renounce the convival cup and other pleasures in order that he could grace his person with Syamantaka? O Lord of Dánavas, no use of my endeavours. Here are these Jádavas, here is Baladeva, here is Satyabhámá, and here am I. We all beseech you, do you wear the gem for the good of this kingdom. "Pray, do not disregard this advice." "Be it so"

অহুবাদ।

এরূপ অবস্থায় আমি কিরূপে ইহা ধারণ করিতে সক্ষম হই ? যেহেতু আমার ষোড়শসহস্র মহিধী। ৬৯।

সত্তামাই বা কি প্রকারে ইহা ধারণ করিবেন ? তিনি কি মণির অনুরোধে ব্রহ্মচর্য্য-ব্রতাবলম্বন করিবেন ? এবং আর্য্য বলদেব কি এই মণি ধারণের উদ্দেশে স্থরাপানাদি সমস্ত উপভোগ পরিত্যাগ করিতে সমর্থ ইইবেন ? দানপতে! অপর চেক্টায় প্রয়োজন করে না, এবং যাদবগণ,এই বলদেব, এই সত্যভামা এবং আমি, আমরা নকলেই আপনাকে অনুরোধ করিতেছি, সমস্ত রাজ্যের কল্যাণের জন্য এই মণিরত্ন আপনি ধারণ করুন। ইহা আপনার নিকট থাকিলেই রাজ্যের মঙ্গলকর হইবে। অতএব আপনিই ধারণ করুন, ইহার অন্যথা করিবেন না। শ্রীকৃষ্ণ এই কথা বলিলে অক্রুর তথাস্ত বলিয়া সেই মণিরত্ন গ্রহণ করিলেন।





मू चम्।

तन्म हामणिरतं ततः प्रभृति चाक्रूरः प्रकटेनैवातीव तेजसा जाज्वत्यमानेनात्मकण्टासक्तेनादित्य द्रवांग्रमाजी चचार। ७०।

दूत्येतां भगवतो मिथ्याभिश्वसिचालनां यः सारित न तस्य कदाचिद्खापि मिथ्याभिश्वसिभेवति श्रव्याचतेन्द्रिय-श्वाखिलपापमोच्चमवाप्रोति। ७१।

इति खमन्तकोपाखानम्।

तर्जमा ।

उसीदिनसे अनूर बह महारत्न मणि अपने गलेमे पहरकर अत्यन्त तेजः पुञ्ज कलेवर दुस्रे सूर्य्यके समान फिरने लगे। ७०।

जो चदमी भगवान श्रीक्षणाका यह भुट कल दूर होनेकी कथा ग्रुनेगा, श्रथवा मनमे लावेगा, कभी थोड़ाभी कल दूर उस्की सब दुन्द्रियभी ठिक रहेंगी. श्रीर शेषमे वह सदमी सब पापसे मुक्त हो कर विकृष्ट वास करेगा। ७१।

स्यमन्तकका वयान आखेर।







said Akrúra, who continued to wear Syamantaka, and ranged Dwáraká like a second sun."

71. When a man remembers the false accusation of Krishna mentioned above, he can bear with equanimity lesser false charges against him, and is finally absolved from all sin.

End of the History of Syamantaka.

অনুবাদ।

দেই অবধি অক্র দেই মহারত্ন নিজকণ্ঠে ধারণ করিয়া অত্যন্ত তেজঃপুঞ্জকলেবর দ্বিতীয় সূর্য্যের ন্যায় বিচরণ করিতে লাগিলেন। ৭০।

যে ব্যক্তি ভগবান শ্রীকৃষ্ণের এই মিথ্যা কলঙ্কাপনোদন-রক্তান্ত স্মরণ করে, কখনই তাহাকে সামান্ত মিথ্যাপবাদ স্পর্শন্ত করিতে সমর্থ হয় না, তাহার ইন্দ্রিয় সমুদায় অবিকৃত থাকে এবং পরিশেষে সে ব্যক্তি সমুদায় পাপ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করে। ৭১।

ইতি শুমন্তকোপাখ্যান।







नवरत्नानि।

मूचम्।

वज्रमाणिकावेद्दर्थं सुक्तागो मेदविद्रुमं। मरकतं पुष्परागञ्च नीलञ्चेति यथाक्रमं॥

तर्जमा।

हीरा, माणिक, लखनिया, मोति, गोमेरक, मृङ्गा, पाता, पोलराज, खौर नीलम् वा नीला यही नौ प्रकारका रत्नके नवरत्न कहते है।

TRANSLATION.

The Diamond, Ruby, Catseye, Pearl, Zircon, Coral, Emerald, Topaz and Sapphire are called the nine precious gems.

অহুবাদ।

হীরক, মাণিক্য, বৈদূর্য্য অর্থাৎ লগুনিয়া, মৃক্তা, গোমেদ, বিদ্রুম অর্থাৎ প্রবাল, মরকত অর্থাৎ পালা, পুপ্ররাগ অর্থাৎ পুখ্রাজ এবং ইন্দ্রনীল অর্থাৎ নীলম্ এই নয় প্রকার রত্ন নবরত্নমধ্যে পরিগণিত। ৭২।









GENERAL REMARKS.

be traced to the most remote ages, and though it is now a hopeless task to point out the country where they were first discovered, or the nations by whom they were first worn, there are many circumstances which materially help us in concluding that India was their birth-place. For every luxury and comfort that man enjoys, for everything rare and beautiful in nature, for every delight that charms his senses and gratifies his vanity, for perfection in plants, flowers, perfumes, animals, birds, insects, music,* gems, pearls, &c., we are indebted to the East.

Mention is made of gems and jewels in the earliest writings of the Hindus. The Vedas speak of a place illuminated by rubies and diamonds which gave out a light as refulgent as that of the planets. Precious stones play a prominent part in the mythologies of the Hindus; in their traditions, poems and legends. In the two great epics of Hindustan, the Rámáyana and the Mahábhárata, frequent

There is nothing in the West which has not come from the East .-

F. J. FETIS.





^{*} The country which affords us the most ancient memorials of a perfect language, of an advanced civilization, of a philosophy where all directions of human thought find their expression, of a poesy immensely rich in every style, and of a musical art corresponding with the lively sensibility of the people,—India appears to have given birth to bow-instruments, and to have made them known to other parts of Asia, and afterwards to Europe.—F. J. Fetis.



mention is made of stones and pearls with which the kings and the people of the period used to decorate their persons. Amongst the other ancient nations of the East, the Persians had a great taste for gems. The Phænicians are known to have brought from the East precious stones and jewels to Egypt and Greece. The Egyptians are noted to have been very fond of them. The belles of ancient Egypt used to adorn their brows with diadems of Pearls, and their throats with necklaces of four rows of precious stones. The fingers of the men were loaded with rings. Five or six centuries before Christ, the Grecian kings and rulers of the neighbouring countries used ornamental and signet rings made with cut stones. Onomacritus, a priest and founder of Hellenic mysteries, is said to have treated of precious stones and their supernatural powers (500 B. C.). Heredotus mentions, (besides the Emerald in Polycrates' ring,) signet rings such as that of Darius, and also speaks of the so-called Emerald column in the temple of Hercules in Tyre, which emitted a splendid light at night. Plato makes mention of the Sard, Jasper and Emerald. Aristotle had a better knowledge of stones than those authors that preceded him. scholar, Theophrastus, has left a work on the subiect. Alexander the Great had his breast-plate set with stones, and his mantle embroidered with gold and gems. When the Romans conquered Egypt and Greece, they took away, as the spoils of their







successful invasions, all the luxuries of the subjugated countries, and thus imbibed, among others, a taste for gems and stones. Cæsar and Cleopatra are said to have met in a hall of tortoise-shell, studded with Emeralds and Topaz. Caligula adorned his horse with a collar of Pearls; the shoes of Heliogabalus were studded with gems, and the statues of the gods had eyes of precious stones,-a custom borrowed evidently from the East. Even now, the horses of the Oriental Princes are brought out, on festive processions, studded all over with Pearls and other gems. In the time of the Ptolemies, jewels were used in profusion for ornamenting arms, drinking cups, and even the altars of the gods, and were also set in the frames in which the sacred pictures were put. Constantine is said to have entered Rome in a chariot of gold, adorned with dazzling gems, and in his time the Royal Crown was first set about with precious stones. This custom still prevails throughout the civilized world. Pliny and Strabo make prominent mention of gems and jewels in their works. The Bible gives descriptions of various kinds of stones known to the Hebrews. The twelve stones which were in the breast-plate of the High Priest were-the Sard, the Topaz, the Carbuncle (or Ruby), the Emerald, the Sapphire, the Diamond, the Ligure, the Agate, the Amethyst, the Beryl, the Onyx and the Jasper. The twelve Apostles were also represented by gems, called the Apostle stones:-









- 1.—The hard and solid *Jasper*, representing the rock of the Church, was the emblem of *Peter*.
- 2.—The bright-blue Sapphire was emblematic of the heavenly faith of Andrew.
- 3.—The Emerald, of the pure and gentle John.
- 4.—The white Chalcedony, of the loving James.
- 5.-The friendly Sardonyx, of Philip.
- 6.—The red Cornelian, of the martyr, Bartholomew.
- 7.—The Chrysolite, pure as sunlight, of Mathias.
- 8.—The indefinite Beryl, of the doubting Thomas.
- 9.—The Topaz, of the delicate James the younger.
- 10.—The *Chrysophrase*, of the serene and trustful *Thaddeus*.
- 11—The Amethyst, of Mathew the Apostle.
- 12.—The pink *Hyacinth* of the sweet-tempered *Simeon*, of Cana.

Sidorus, the Bishop of Seville, is said to have written a work on stones (630 A.C.) The number of properties attributed to precious stones at this time was wonderful; they were said to have the power of conferring health, wealth, beauty, honor, good fortune, and influence. Men and women used to carry them about their persons and called them amulets. These were also thought to have some connection with the stars and seasons. A particular stone was supposed to be sacred to each month. The following are what were known as the Zodiac stones:—





January ... Jacinth (Hyacinth), or Garnet.

February ... Amethyst.

March ... Bloodstone, or Jasper.

April ... Sapphire.

May ... Agate.

June ... Emerald.

July ... Onyx.

August ... Cornelian.

September ... Chrysolite.

October ... Aquamarine, or Beryl.

November ... Topaz. December ... Ruby.

Supernatural influences have been attributed to particular stones, which are still believed in by the superstitious. The Ruby is known to be a sovereign remedy for pestilence and poison; it also drives away evil spirits and bad dreams. Jacinth, if worn on the finger, procures sleep, and brings riches, honor, and wisdom. The Amethyst dispels drunkenness and sharpens the wit. Balas Ruby restrains passion and fiery wrath, and is a preservative from lightning. The Emerald discovers false witnesses by suffering alteration when it comes in contact with such persons; the Sapphire procures royal favor, and frees men from enchantment. The Chrysolite was said to cool boiling water, and soften wrath, and if placed in contact with poison, it lost its brilliancy until removed. Opinions, of course, differ as to these attributes, according to the fancy of the writers.





The superstitions attached to these stones were not confined to the ancients only. The Empress Eugenie of France, it is said, would not wear a precious Opal, because it was known to have brought ill-luck to the wearer. But our Most Gracious Majesty the Queen Victoria, Empress of India, having no superstition on the point, has presented each of her daughters, on their marriage, with a parure of Opals and Diamonds.

It has now become a fashion to have fingerrings set with certain stones, so arranged that the initials of their names would give a desired name. The following alphabetical list of precious and half-precious stones will be of great use in forming the names:—

	${\it Transparent.}$	Opaque.
\mathbf{A}	Amethyst	Agate.
В	Beryl	Basalt.
\mathbf{C}	Chrysoberyl	Cacholong.
\mathbf{D}	Diamond	Diaspore.
${f E}$	\dots Emerald \dots	Egyptian pebble.
\mathbf{F}	Felspar	Fire-stone.
\mathbf{G}	Garnet	Granite.
\mathbf{H}	Hyacinth	Heliotrope.
I	Idocrase	41.4
J	··· ••• · · · · · · · · · · · · · · · ·	Jasper.
K	Kyanite	Krokidolite.
L	Lynx-Sapphire	Lapis-Lazuli.
M	Milk-Opal	Malachite.
\mathbf{N}	Natrolite	Nephrite.
O	Opal	· Onvx

@A	•
(S)	
~	

	Transparent.	Opaque.
P	Pyrope	Porphyry.
Q	Quartz	Quartz Agate.
\mathbf{R}	Ruby	Rose Quartz.
\mathbf{S}	Sapphire	Sardonyx.
\mathbf{T}	Topaz	Turquoise.
\mathbf{U}	Uranite	Ultra-marine.
\mathbf{V}	Visuvianite	Verd-antique.
W	Water-Sapphire	Wood-Opal.
\mathbf{X}	Xanthite	Xylotile.
Y	***	•••••
\mathbf{Z}	Zircon	Zurlite,

Thus, the name "Charles" may be represented by Chrysoberyl, Hyacinth, Amethyst, Ruby, Lapis-Lazuli, Emerald and Sapphire. The Prince of Wales, on his marriage with the Princess Alexandra, gave her a ring which represented his own name "Bertie." It was set with stones in the following order—Beryl, Emerald, Ruby, Turquoise, Jacinth and Emerald.

The following account of precious stones, as supposed to be found on reptiles and animals, is taken from "All the Year Round" of the 1st June, 1878:—

"Among the Arabians, serpents were supposed to possess precious stones of inestimable virtue. This belief was current through many ages. Mathew Paris relates the story of a miserly Venetian, named Vitalis, who was rescued from a terrible death—having fallen into a pit in which were a lion and a serpent—by a wood-cutter, to whom he





promised half his property for this deliverance. The lion and the serpent, who take advantage of the ladder by which Vitalis is brought to the surface, also testify their gratitude to the woodcutter, by crouching at his feet. While the poor man is having his humble repast in his little hut, the lion enters with a dead goat as a present. serpent also enters, bringing in his mouth a precious stone, which he lays in the country-man's plate. He next goes to Venice, and finds Vitalis in his palace, feasting with his neighbours in joy for his deliverance. On being reminded of his promise, the rich man denies having seen the woodcutter, and orders his servants to cast him into prison; but before this could be effected, the rustic escapes and tells his story to the judges of the city. At first they are incredulous; but on showing the iewel, and proving further the truth, by conducting them to the dens of the lion and the serpent, where the animals again fawn on their benefactor, Vitalis is compelled to perform his promise. This story, adds Mathew Paris, was told by King Richard, to expose the conduct of ungrateful men.

"In Timberlake's discourse of the Travels of two English Pilgrims to Jerusalem, Gaza, &c., (1611), we find an account of a great jewel which was taken from a serpent's head, and used in conjuring. In Alphonso's Clericalis Disciplina, a serpent is mentioned with eyes of real Jacinth. In the romantic history of Alexander, he is said to have







found serpents in the Vale of Jordan with collars of huge Emeralds growing on their backs. Milton gives his serpent eyes of Carbuncle. A marvellous stone was said to be found in the serpent's brain, but in order to secure its lustre and potent influences, it was to be extracted from the living animal.

"The Draconius, described by Albertus Magnus as of a black-color and pyramidical form, was also taken out of the heads of dragons, while they lay panting. To the snake-stone a popular superstition is still attached in the East. In the narrative of a voyage in Her Majesty's ship Samarang, Captain Sir Edward Belcher says:-"At my last interview with the Sultan of Guning Taboor, he conveyed into my hand-suddenly closing it with great mystery-what they term here as the snakestone. This is a polished globe of Quartz, about the size of a musket-ball, which he described as of infinite value, an heir-loom, and reported to have been extorted from the head of an enchanted snake." Allusions to serpent-stone are frequent in the early writers. We read in the Gesta Romanorum that the Emperor Theodosius the Blind ordained that the cause of any injured person should be heard on his ringing a bell, which was placed in a public part of his palace. A serpent had a nest near the spot where the bell-rope hung. In the absence of the serpent, a toad took possession of her nest; the serpent, twisting itself round





the rope, rang the bell for justice, and at the Emperor's special command the toad was killed. A few days afterwards, as the Emperor was reposing on his couch, the serpent entered the chamber, bearing a precious stone in its mouth, and, crawling up to the Emperor's face, laid it on his eyes, and glided out of the apartment; the monarch was immediately restored to sight.

"Apropos of the burglarious toad, the philosophers taught that though ugly and venomous, "it wears yet a precious jewel in its head." Lupton, in his Book of Notable Things, instructs his reader how to procure it; "you shall know whether the tode-stone be the ryghte or perfect stone, or not. Hold the stone before a tode, so that he may see it, and if it be a ryghte and true stone, the tode will leap towarde it, and make as though he would snatch it. He envieth so much that none should have that stone." If swallowed, it was a certain antidote against poison; and it was usual to take it as a precautionary pill-rather a hard onebefore eating.

"In the Philosophical Transactions, vol. vi., p. 21, we find that the toad-stone was supposed, in the Highlands, to prevent the burning of houses and the sinking of boats, and if the Commander in the field had one about him, he would either be sure to win the day, or all his men would die on the spot!







"The bezoar was a stone procured from the cervicebra, a wild animal of Arabia, and was supposed to have been formed of the poison of serpents which had bitten the creature, combined with the counteracting matter with which Nature had furnished it. There was a belief in the Middle Ages that the bezoar was a potent charm against the plague and poison.

"The wonderful effects of stones found in various animals are too numerous to mention. The brain of a tortoise contained one that had the effect of a fire-annihilator in extinguishing flames; moreover, whoever did at a proper time-having first washed his mouth-carry it under his tongue, felt a divine inspiration to foretell future events. Birds were particularly distinguished for the possession of talismanic stones. hyæna was very properly hunted; not, however, for its ferocious propensities, but for a precious stone in one of its eyes, full of mystic virtues. One of the most curious superstitions, and one which has been a favorite theme with writers of all ages, is connected with the Carbuncle, or Ruby. Ælian has a singular story on this subject, how a certain widow, Herculia, had tended a young stork which had broken its leg, and how the grateful bird, returning from its annual migration, dropped into her lap a precious stone, which on her awaking





at night, lighted up her chamber like a blazing torch.

"The fabulous animal called the carbunculo, said to have been seen in some parts of Peru, is represented to be about the size of a fox,* with long black hair, and is only visible at night, when it slinks slowly through the thickets. If followed, it is said to open a flap, or valve, in the forehead, from which an extraordinary and brilliant light issues. The natives believe that the light proceeds from a precious stone, and that any person who may venture to grasp at it rashly is blinded: then the flap is let down, and the animal disappears in the darkness."

The following lines from the journal of Sir Jerome Horsay, who was employed as a special messenger between Ivan the Terrible of Russia and Queen Elizabeth, sufficiently prove the superstitions that existed with respect to precious stones at that period (1584).

"The old emperor was carried every day in his chair to the treasury. One day he beckoned me to follow. I stood venturously and heard him call for some precious stones and jewels. He told the princes and nobles present before and about him the virtue of such and such, which I observed, and do pray I may a little digress to declare for my

^{*} A variety of the fox known as the oolka-mookhee (Sans. Dwipta-jeeva) exists in Bengal, from the mouth of which a bluish light is known to issue. This is called by the ignorant natives, the "will-o'-the-







memory's sake: 'the loadstone, you all know, hath great and hidden virtue, without which the seas that encompass the world are not navigable, nor the bounds nor circles of the earth cannot be Mahomet, the Persian's Prophet, his tomb of steel hangs on their Rapetta at Dorbent most miraculously.' He caused the waiters to bring a chair of needles touched by this loadstone, and hanged all one by the other. 'This fair coral and this fair turcas, you see. Take it in your hand. Of his nature and orient colors put them on my hand and arm. I am poisoned with disease. You see they show their virtue by the change of their pure colour into pale-declares my death. Reach out my staff royal, an unicorn's horn, garnished with very fair diamonds, rubies, sapphires, emeralds, and other precious stones that are rich in valuecost seventy thousand marks sterling of David Gower from the fowlkers of Ausborghe. Seek out spiders.' He caused his physician, Johannes Lloff, to scrape a circle thereof on the table, put within it one spider, and so one other that died, and some other alive, then run apace from it. 'It is too late, it will not preserve me. Behold these precious stones, the diamond is the orient's richest and most precious of all others. I never affected it. It restrains fury and luxury, gives abstinence and chastity. The least parcel of it in powder will poison a horse, given in drink, much more a man.' Points at the ruby, 'ah, this





is most comfortable to the heart, brain, vigour, and memory of man, clarifies congealed and corrupt blood.' Then at the emerald: 'The nature of the rainbow, this precious stone is an enemy to uncleanness. The sapphire I greatly delight in; it preserves and increaseth courage, joys the heart, pleasing to all the vital senses, precious and very sovereign for the eyes, cheers the sight, takes away blood-shot, and strengthens the muscles and sinews thereof.' Then takes the onyx in hand. 'All these are God's wonderful gifts, secrets in nature and yet reveals them to man's use and contemplation as friends to grace and virtue, and enemies to vice. I faint, carry me away till another time.'"

The following lines about the supernatural properties attributed to precious stones are also taken from "All the Year Round" of the same date:—

"Innumerable were the effects produced by certain precious stones; among others the Heliotrope had special virtues. It was called by necromancers the "Babylonian gem," and if rubbed over into the juice of the herb of its own name, it rendered the wearer invisible. In the Middle Ages, the Heliotrope which contained many red spots, were highly valued from a belief that the blood of Christ was diffused through the stone. The Moonstone was, as its name implies, venerated from its supposed lunar attractions. It is one of the prettiest, though most common of precious stones in Ceylon. Pliny describes it as containing an image of the moon,





"which, if the story be true," he observes, "daily waxes, or wanes, according to the state of that luminary." Chalcedony hung about the neck, dispersed sadness, and if a person carried one perforated with the hairs of an ass run through it, he would overcome all disasters. Crystal dispelled witch-craft. The Chrysophrasus gladdened the heart, the Chrysolite expelled phantoms, and what was more servicable rid people of their follies. Onyx, in the Middle Ages, was believed to prevent ugly dreams by night, and law-suits by day. The Jasper was a charmer of scorpions and spiders, and was worn as a talisman by the Roman athlete. Burton, in the Anatomy of Melancholy, tells us that, "if hung about the neck, or taken in drink, it much resisteth sorrow and recreates the heart." The same qualities were attributed to the Hyacinth and Topaz. The Crystal has been the most popular of all oracular stones; a favorite stone was the Beryl, "which," says Aubrey in his Miscellanies, "is a kind of Crystal that has a weak tincture of red; in this magicians see visions." The custom was to consecrate, or "charge" them, as the modern term is, for which purpose set forms were used, which are described in Reginald Scotts' Discovery of Witch-crafts. The famous Crystal of that prince of quackery, Dr. Dec, is preserved in the Ashmolean Museum at Oxford.

"The properties of the Ruby were endless; bruised in water it was a panacea for all com-





plaints; it had the peculiarity, wherever worn, of discovering its presence by its lustre, which would shine through the thickest clothes. Powdered Agate was an infallible remedy for "all the ills that life is heir to." Pliny quotes the Magii, as teaching in Persia that storms could be averted by burning Agates. The Amethyst would prove a boon to modern tipplers, if, as the ancients asserted, it prevented intoxication. The Sapphire and the Emerald strengthened the sight, a property said to have been also possessed by the Turquoise; but it could confer a still more wonderful gift on its wearer; "whoever," says Van Helmont, "wears a Turquoise, so that it, or its gold setting, touches the skin, may fall from any height and the stone attracts to itself the whole force of the blow, so that it cracks and the person is safe." The Romans regarded the Diamond with superstitious reverence and Pliny tells us that it baffles poison, keeps off insanity, and dispels vain fears."

According to ancient authorities, all composite substances consist of the four elements—fire, air, earth and water: the difference between gems and common pebbles being caused by the predominance of water in the former, and of earth in the latter. The water condensed and congealed by the dryness of the earthy particles was supposed to give to precious stones their brilliance and transparency. Aristotle asserted that the first cause of stones was viscous mud, a sap that shrinks and is congealed by







cold, in which water predominates over earth: to these he adds stony fragments and particles of stone, and another special sap, which he calls lapidific Theophrastus taught that "stones were made of pure, equal and compact substance, after its perlocation, the which substance, being in certain places become petrified by flowing, or in some other manner." Avecenna only says mud or foul, stagnant water composes stones. Falopius thinks stones to be the produce of a very pure juice. Cardan says that "they are engendered between the rocks by means of a sap, which is distilled through their concavity even as the babe in the maternal blood." This last assertion gave rise to a new theory, the object of which was to establish that the engendering of precious stones was not to be attributed to the same causes as that of inert nature, but that it proceeded from causes absolutely similar to those of animated living being. Beetius de Boot, a physician of the 17th century, attributes the formation of the stones to the almost direct intervention of the Deity.

The precious stones and pearls are mostly obtained from Ceylon, India, Brazil, Australia, California, Siberia and South Africa.

In the widest interpretation of the term, a gem or a precious stone is nothing but a mineral—hard, of a beautiful color, or absolutely colorless; usually transparent, of great rarity and value. Minerals possessed of these properties have been generally divided into two classes—(1) jewels or gems, perfectly pure; (2) half-pure precious stones, colored or tinted. The first class includes in its province those rare minerals which are distinguished by colors at once bright and dazzling, soft and tender; also by transparency, high lustre, great density and capability of polish. The so-called precious stones which have these characteristics, but in a much less degree, come under the category of the 2nd class.





श्रय वन्त्रं।

मृचम्।

महाप्रभावं विवुधेर्यसादक्षमृदाह्यतं ।
वज्रपूर्वा परीचेयं ततोऽस्माभिः प्रकीर्माते ॥ ७३ ॥
हैममातक्षरीराष्ट्राः पौष्डकालिक्षकोश्रलाः ।
वेणातटीयसीवीरी वक्षस्वाष्टविधाकराः ॥ ७४ ॥

हीरेकी वयान।

तर्जमा।

देवताचीने समस्त रहोमे चीरेको अञ्चल कहा है, तदनुसार पहिले चीरेका विषय लिखा जाता है। ७३।

हैम (हिमालय प्रदेश), मातक (दाचिणात्यको सन्त-गत ऋष्यस्ख पर्वतको निकट पम्पा नदीको किनारेका देश), सौराष्ट्र (स्राट), पौण्ड (रक्षपुर, दिनाजपुर, राजसाही, वीरभूम, स्रिसदावाद, नवहीप, वर्ड्डमान, सौर मेदिनीपुर वगयरच प्रदेश), कलिक (द्राविड और डिड्छाके मध्य-वर्ती प्रदेश), कोशल (श्रयोध्या), महाराष्ट्र देशके गोदावरी नदीकी उपनदी वेणा श्रयवा वेणगङ्गाके तीर, सौवीर (शतद्र श्रयांत्शतल सौर सिन्धु नदके मध्यदेश), दक्षि श्राट जगहों में श्रीरेकी खान है 1981





THE DIAMOND.

TRANSLATION.

73. The Gods have considered the diamond as the best of gems. I shall accordingly describe it first.

74. The diamond is produced in the following

eight places:—

Haima,* Mátanga,† Sauráshtra,‡ Paunda,§ Kalinga,|| Kosala,¶ Venwa,** or the shores of the Vena-Gangá, and Saubíra.††

शेवक ।

অত্বাদ।

দেবতারা সমুদায় রত্নের মধ্যে হীরককেই সর্ব্ব-রত্ন-শ্রেষ্ঠ বলিয়া কল্পনা করিয়াছেন, স্থতরাং তদনুসারে প্রথমেই হীরকের বিষয় বলা যাইতেছে। ৭৩।

হৈম (হিমালয় প্রদেশ), মাতঙ্গ (দাক্ষিণাত্যের অন্তর্গত ঋষ্যমুখ পর্বতের নিকটস্থ পম্পা নদীর তীরবর্তী প্রদেশ), সোরাষ্ট্র (স্থরাট), পোগু (রঙ্গপুর, দিনাজপুর, রাজদাহী, বীরভূম, মুরদিদাবাদ, বর্দ্ধমান ও মেদিনীপুর প্রভৃতি স্থান), কলঙ্গ (দ্রাবিড় ও উড়িষ্যার মধ্যগত প্রদেশ), কোশল (অযোধ্যা), বেণা বা বেণ-গঙ্গার তীর (মহারাষ্ট্রের অন্তর্গত গোদাবরীর উপনদীর কূল), সোবীর (পাশ্চাত্যে শতক্রও দিকু নদের মধ্যবর্তী প্রদেশ), এই আট স্থানে হীরক উৎপন্ধ হয়। ৭৪।



^{*} The country of the Himalayas.

⁺ The lands adjacent to the shores of the river Pampá near the Hrishyamukha mountains in the Deccan.

I Surat.

[§] Rungpore, Dinagepore, Rajshahye, Beerbhoom, Moorshedabad, Burdwan, Midnapore, &c.

^{||} The provinces between Orissa and Drávira.

The modern Ajodhyá.

^{**} A tributary of the River Godávari in the Maharatta country.

⁺⁺ The tract lying between the Satadru and the Indus.



म्सम्।

यातामा हिमग्रैनजाः शशिनभा वेणातटीयाः गुभाः भौवीरासु सितास्त्रमेघमहशासामास्य सौराष्ट्रजाः । कालिङ्गाः कनकावदातक्तिराः पीतप्रभाः कौश्रनाः स्थामाः पुरुडभवा मतङ्गविषये नात्यन्तपीतप्रभाः ॥ ७५ ॥ एथिव्यापौ वियत्तेजो मक्त्रीवेति पञ्चभिः । वज्रमुत्यद्यते ब्रह्मन् कथितं वज्रकोविदैः ॥ ७६॥

तर्जमा।

हिमालय प्रदेश, श्रायित हिमालय पर्वतके निकटके खानों में जो हीरा पयदा होता है; उस्के रङ्ग में तांवापन भलकता है; वेण गङ्गा के किनारे जो हीरा पयदा होता है; वह चन्द्रमाने समान उज्जूब समक्ता है; सीवीर देश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग खेत कमलके समान श्रायवा सादे वादबके समान होता है; सराट प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग तांवे के समान होता है; किल्डु प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग तांवे के समान होता है; किल्डु प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग सोनके समान होता है; श्री हि प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग श्रामवण होता है; सौर मातङ्ग प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग श्रामवण होता है; सौर मातङ्ग प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग श्रामवण होता है; सौर मातङ्ग प्रदेश में जो हीरा पयदा होता है, उस्का रङ्ग हाल्का जरदवण होता है। ७५।

वजु-विद्याके कुशल परिखत कहते हैं, के हीरेमें एयी, जल, श्राकाश, तेज श्रीर वायु यही पञ्च महाभूत सामान्य विशेष करके हैं। ७६।





- 75. The diamonds of the Himalayas are slightly copper-colored, those found on the shores of the Venwa are lustrous like the moon, those of Saubíra resemble in hue the white lotus or the silvery cloud, those of Surat are copper-colored, those of Kalinga dart golden rays, those of Kosala are yellow, those of Paunda, sable, and those of Mátanga, yellowish.
- 76. According to persons versed in the know-ledge of jewels, diamonds vary in the preponderance of one or other of the five primal elements—earth, water, the sky, energy and the air.

অভুবাদ।

হিমালয় পর্ব্বতে ঈষৎ তাত্রবর্ণ, বেণ্ণতীরে চন্দ্রের ন্যায় শুক্রবর্ণ, সৌবীরে শেতপদ্ম অথবা শুভ্র মেঘদদৃশ, সৌরাষ্ট্র প্রদেশে তাত্রবর্ণ, কলিঙ্গ প্রদেশে স্থবর্ণবর্ণ, কোশলে পীত-বর্ণ, পোও-প্রদেশে শ্যামবর্ণ, মাতঙ্গ-প্রদেশে ঈষৎ পীতবর্ণ হীরক উৎপন্ন হয়। ৭৫।

বজ্র-পরীক্ষা-কুশল পণ্ডিতেরা কহেন, হীরকবিশেষে ক্ষিতি, অপ, আকাশ, তেজ ও বায়ু এই পঞ্চ মহাভূতের প্রাধান্য লক্ষিত হয়। ৭৬।







मुखम्।

मन्नाप्रभावं सदलं सुशोभं पार्थिवं विदः। सिम्यं चटु धनं खळ्मायमाजः परं व्धाः ॥ ७७ ॥ विमलं गुचि तौचुाग्रं वैयतं वन्त्रमुच्यते। पद्मभूतात्मकं वज् तेजसं प्रायशो भवेत्। लघु तीचुं खरस्यां वायव्यं परिकस्पत्रते॥ ७८॥ समस्तां प्रथिबीं पाति पार्थिवस्य विधारणात्। लित्र की विश्व की तिराधवज्र स्व भारणात् । ७६ ।

तर्जमा।

जिस् हीरेमे एथ्वीका अंग्र न्यादा है, वह हीरा गांद्वा होता है; जिस्मे जलका यंग व्यादा है, वह हीरा घन, समान, श्रायति स्रोन, अनकदार श्रीर स्वच्छ श्रीता F 1 99 1

निस्ने याकायका यंग मधिक है, वह हीरा निर्मात, पविच चौर तीचुाग्र होता है; जिस्मे तेजका खंश अधिक है, वह हीरा रक्तवर्ण होता है; और जिस्मे वायुका संग च्यादा है, वह हीरा हालका, तीचुाग्र सौर खुर्धरा श्रोता है। ७८।

जिस् दीरेमे पृथीका अंग अधिक है, उस्को जो धारण करे, वह राजा है; जिस् हीरेमे जलका संग्र श्रधिक है, वह हीरा धारण करनेसे मनका त्रि, लच्ची, यग्र भीर कीर्ति लाभ होए। ७८।



- 77. The diamonds in which earthy matter forms the base are thick, while those in which water preponderates are dense, smooth, cool and transparent.
- 78. Diamonds mainly composed of the sky, are exceedingly flawless, clean, and sharp-ridged; those having for their base, energy, are almost always blood-red; and those preponderated by the air are exceedingly light, sharp-pointed and rough.
- 79. The wearing of earthy diamonds leads to universal dominion; and the watery kind brings contentment, riches, fame and renown.

অহ্বাদ।

যে দকল হীরকে পার্থিবাংশের আধিক্য থাকে, সেই দকল হীরক দলে পুরু; যাহাতে জলীয়াংশের প্রাধান্য থাকে, তাহা অতি ঘন, মহণ, স্লিগ্ধ এবং স্বচ্ছ। ৭৭।

আকাশাংশের প্রাধান্যে হীরক অতি নির্ম্মল, পবিত্র ও তীক্ষাগ্র হইয়া থাকে; তেজঃপ্রধান হীরক প্রায়ই রক্তবর্ণ হয় এবং যাহাতে বায়ুর প্রাধান্য থাকে, সেই হীরক অতি লঘু, তীক্ষাগ্র ও খরস্পার্শ হয়। ৭৮।

পার্থিবাংশপ্রধান হীরকধারণে সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ হয়; জলীয় হীরকধারণে মানদিক তৃপ্তি, লক্ষ্মী, যশ ও কীর্ত্তি লাভ হয়। ৭৯।







मूचम्।

उत्साहिषयहिष्टालं वायव्यस्य विधारणात्।
तथा सम्पत्तयः सव्यो वैयतस्य विधारणात्।
प्रतापः गौर्थमुत्साहस्तेषमस्य विधारणात्। ८०॥
हिमकुन्देन्दुधवलं षट्कोणाष्ठदलं तथा।
तीच्चं वारिभवं वद्यं धनमङ्काशकान्तिमत्।
प्रस्थकारे च दीप्येत तज्ज्ञे यं वज्रमुत्तमं। ८१॥
गुणाढंग्र तीच्चधारं यत्सपद्रपनिवारणं।
तस्य धारणमाचेण विषरोगः प्रशास्यति। ८२॥

तर्जमा।

जिस् हीरेमे वायुका संग्र ऋधिक है, वह हीरा धारण कर्नेसे उत्साहकी टहि, और लोगोंमे प्रिय होए; जिस् हीरेमे आकाशका अंग्र अधिक है, उस् हीरेको धारण कर्नेसे सम्मित्त लाभ होए; जिस् हीरेमे तेजका संग्र ऋधिक है, वह हीरा धारण कर्नेसे प्रताप, बीरत्व, सौर उत्साह टहि होए। ८०।

को हीरा वरफ, कुन्दफुल, सफेद वादल, और चन्द्रमाके सभान सुक्षवर्षे होता है, और इस्कोष अथवा आटकोष-सुक्र, तोसुधार, जलमे उत्पन्न होता है; और आंधेरेसे प्रकाश पाता है; वह होरा अति उत्तम है। ८१।

ग्रणयुक्त और तीचधार हीरा धारण कर्नेसे सर्पका विष और अन्यान्य विषधर जन्तुका विष नष्ट होता है। ८२।





- 80. The airy sort give heart and gracefulness; and the skyey diamonds bring about the possession of all kinds of wealth. The use of energy-preponderated diamonds adds to puissance, heroism and hope.
- 81. Those diamonds that are white like hailstones, the Kunda flower,* white clouds or the moon, possessed of six or eight corners and sharp-ridged, that have originated from water, and that shine even in darkness, are the acme of excellency.
- 82. The wearing of a genuine and sharp diamond leads to instant cure from snake-bite, and proves efficacious in neutralizing the effects of other poisons.

অভুবাদ।

বায়বীয়াংশপ্রধান হীরকধারণে উৎসাহ ও প্রিয়দর্শনত্ব জন্মে; আকাশপ্রধান হীরকধারণে সর্ব্ব প্রকার সম্পত্তি লাভ হয়। তৈজস হীরকধারণে প্রতাপ, শোর্য্য, ও উৎসাহ বর্দ্ধিত হয়।৮০।

যে বজ্র করকা, কুন্দপুষ্পা, শুক্ল মেঘ অথবা চন্দ্রসদৃশ ধবল বর্ণ ; ষট্ বা অফকোণবিশিষ্ট ; তীক্ষ্ণার ; জলোৎপন্ন এবং অন্ধ্বনারেও দীপ্তি পায়, সেই হীরকই উৎকৃষ্ট। ৮১।

গুণযুক্ত অথচ তীক্ষ্ণার হীরক ধারণ করিবামাত্র সর্প-দফ্ট ব্যক্তি আরোগ্য লাভ করে, এবং তদ্বারা অপরাপর জন্তুর বিষও শমতা প্রাপ্ত হয়। ৮২।





^{*} Jasaminum Multiflorum or Pubescens.



मृ चम्।

कोटिसूर्यप्रतीकाशं कोटिचन्द्रस्थीतनं।
यन्धकारहरं वज्ं विज्ञे यं महदुत्तमं।
तस्य धारणमाजेण सब्देरोगः प्रयास्यति ॥ ८३ ॥
तस्र दुग्धे जले तेले प्रते चिप्तोऽपि यः पविः।
योततां नाययेसाद्यः स ज्ञेयः स्टर्डलेभः॥ ८४ ॥
वस्रचिचिवट् श्रद्रभेदासास्य चतुर्विधाः।
क्रमयो लच्चणं तेषासुच्यते दिनसन्तम् ॥ ८५ ॥

तर्जमा।

चो हीरा कोट सूर्य के समान प्रकाशमान, छीर कोट चन्द्रमार्के समान शीतल, और आंधेरेमे प्रकाश पाता है, वह हीरा सबसे श्रेष्ठ है, और उस्के पहेरनेसे सब विमारी नष्ट होते हैं। ८३।

जो हीरा गरम जल, गरम दुध, गरम प्टत चौर गरम तैलमे फेंक दिया जाय, चौर उसी समय उन् वस्तुकी गरमि दूर हो जाय, ऐसा हीरा देवतांको दुर्लभ है। ८४।

मनुष्यगणमे जिस्प्रकारके ब्राह्मण, चिन, वैद्य, श्रीर भूद्र यही चार वर्ण है; उसी प्रकार हीरामेभी ब्राह्मण, चिन, वैद्य और भूद्र यही चार वर्ण है, प्रथक् प्रथक् कर्के उस्का लच्चण लिखता ऊं। ८५।





- 83. A diamond which is refulgent like myriads of suns, while deliciously cool as numberless moons, which illumines even palpable darkness, is excellent, and proves a panacea as soon as worn.
- 84. The diamond which, on being thrown into hot water, milk, oil, or clarified butter, extinguishes the heat, is coveted by the gods.
- 85. Like men, diamonds are divided into Brahmins, Kshetriyas, Vaisyas and Sudras. The distinctive features of each caste I will now set forth.

অভ্ৰাদ।

যে হীরা কোটি সূর্য্যের ন্যায় ভাস্বর, অথচ কোটি চন্দ্রের ন্যায় স্থশীতল, এবং অন্ধকারেও দীপ্তি পায়, সেই হীরক সর্ব্বশ্রেষ্ঠ; তাহা ধারণ করিবামাত্র সর্ব্ব প্রকার রোগের শান্তি হয়। ৮৩।

যে হীরা উষ্ণ জল, তুগ্ধ, তৈল বা স্থতের মধ্যে নিক্ষিপ্ত হইয়া তৎক্ষণাৎ উক্ত পদার্থনিচয়ের উষ্ণতা বিনাশ করে, দেই হীরক দেবতাদিগের তুর্লভ। ৮৪।

মনুষ্যগণের ন্যায় হীরকেরও ব্রাহ্মণ, ক্ষজ্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র এই চারি প্রকার জাতিভেদ আছে। ক্রমশঃ তাহা-দিগের লক্ষণাদি নির্দেশ করা যাইতেছে।৮৫।





मूलम्।

विप्रच गञ्जकुमुद्स्फिटिकावदातः
स्थात् चिवयच गगवक्रविनोचनाभः ।
वैश्वय कान्तकद्नीद्नसिद्धकागः
गूद्रच धौतकरवानसमानदीप्तिः ॥ ८६ ।
विप्रचिवयवैश्वानां गूद्रजातेयेणाक्रमं ।
खेता रक्षा तथा पीता कृष्णा च्हायाखतुर्विधाः ॥ ८७ ॥
यत्रौदिनेस्तपोभिच यदाप्रोति तदाप्र्यात्।
गुणयुक्तस्य वद्धस्य विप्रजातेच धारणात्॥ ८८ ॥

तर्जमा।

जो हीरा शक्क, बुसुदफुल, घौर सफ्रिटकको समान सुक्षवर्ण, वह हीरा ब्राह्मणवर्ण है; जो हीरा खरमसके स्रांखके समान रक्षवर्ण, वह हीरा चित्रवर्ण है; जो हीरा नये केलेको पातको समान सवुजवर्ण, वह हीरा वैद्यवर्ण है; स्रोर जो हीरा परिष्कार खड़को समान, वह हीरा शूट्र-वर्ण है। ८६।

वास्त्रणवर्णे हीरेका काया सफोद; चित्रवर्ण हीरेका काया रक्तवर्ण; वैश्वंवर्ण हीरेका काया पीलावर्ण श्रीर शूद्रवर्ण हीरेका काया क्रष्णवर्ण होगा। ८०।

यज्ञ, दान, श्रीर कठिन तपस्थाके दारा मनुष्य को फल लाभ करता है, गुणयुक्त बाह्यणवर्ण हीरा धारण करनेसे बही फल पाता है। ८८।



- 86. Diamonds white like the conch, waterlily, or crystal, are Vipras (Brahmins); those which are red like the eyes of the hare, are Kshetriyas; those which are verdant like the cool plantain-leaf, are Vaisyas; and those which resemble in color the cleaned sword, are known as Sudras.
- 87. The Brahmin, the Kshetriya, the Vaisya and the Sudra, cast around white, red, yellow and black gleams respectively.
- 88. The fruit which is reaped through the celebration of various sacrifices, munificence, and the austerest devotion, is also gained by wearing superior Brahman diamonds.

অমুবাদ।

যে হীরক শহা, কুমুদ-পুষ্প, বা ক্ষটিকের ন্যায় শুক্রবর্ণ, তাহা বিপ্রজাতি; যাহা শশকের চক্ষুর ন্যায় রক্তবর্ণ, তাহা ক্ষজ্রিয় জাতি; যাহা স্লিগ্ধ কদলীদলের ন্যায় হরিদ্বর্ণ, তাহা বৈশ্যজাতি এবং যাহা পরিষ্কৃত করবালসদৃশ শ্যামবর্ণ, তাহা শুদ্রজাতি বলিয়া পরিচিত হয়। ৮৬।

বাক্ষণ, ক্ষজ্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র এই চারি জাতীয় হীরক হইতে ক্রমান্বয়ে শ্বেত, রক্ত, পীত ও রুষ্ণবর্ণ ছায়া নির্গত হয়। ৮৭।

মানবগণ বিবিধ যজ্ঞ, অসামান্ত দান, ও অতি কঠোর তপদ্যা দারা যে ফল লাভ করেন, গুণযুক্ত ব্রাহ্মণবর্ণ-হীরক ধারণ করিলেও সেই ফল প্রাপ্ত হইতে পারেন।৮৮।





मू सम्।

जयः पराक्रमसस्य भवुनाभय जायते ।

गुणवत् चयजातीयं वर्ज् वमित यद्गृ है ॥ प्रः ॥

सलाकुभलता तस्य प्रचा चेमं यभो महत् ।

गुणिनः पविरत्नस्य वैध्यजातेस्य धावणात् ॥ १०॥

परोपकारिता चेमं धनधान्यसमृह्यः ।

गुणशुक्तस्य वज्रस्य भूद्रजातेस्य धारणात् ॥ ११॥

वर्ज् स्वणशुक्तं देवानामिष परिग्रचः प्रोकः ।

वर्णस्यस्य विभागः कार्यो वर्णाभ्यादेव ॥ १२॥

तर्जमा।

ग्रुणयुक्त चिविषा श्रीरा जिस्के घरमे रहता है, उसके सव कार्य्य ने जयलाभ, पराक्रमष्टद्वि श्रीर श्रव्युका नाश होता है। ८८।

जो मनुष्य ग्रणयुक्त वैश्ववर्ष हीरेको धारणकरे, वह मनुष्य कताकुणक, वज्जदर्शी, चरोगी और यशस्त्री होता है। १०।

जो मनुष्य गुणयुक्त गूट्रवर्ण हीरेके धारण करे, वह मनुष्य श्राट्याना परोपकारी, अरोगी, और धनधान्य आदिसे समृद्विभाली होए। ८१।

मोनेमे जड़ा ज्ञया घीरा देवता लोगभी पश्रन्द कर्ते है; और वर्णके संज्ञामे ही घीरेकी भिस्नता बुभाइ देति है। १२।







- 89. The better sort of the Kshetriya class bring about uniform success, accession of power, and destruction of foes.
- 90. First-rate diamonds belonging to the Vaisya caste are productive to their wearers of wisdom, cure, fame and skill in the elegant arts.
- 91. The higher order of the Sudra class induce benevolence in their master, and make him hale and wealthy.
- 92. Diamonds set on gold are an acceptable offering to the gods. They are classified according to color.

অত্বাদ।

গুণান্বিত ক্ষজ্রিয়বর্ণহীরক যাহার গৃহে থাকে, তাহার সকল বিষয়ে জয়লাভ, পরাক্রমরন্ধি ও শক্রবিনাশ হয়।৮৯।

গুণশালী বৈশ্যবর্ণহীরকধারী মানবগণ কলাকুশলতা, বিজ্ঞতা, আরোগ্য ও যশ লাভ করিয়া থাকেন। ৯০।

যে ব্যক্তি গুণযুক্ত শূদ্রবর্ণহীরক ধারণ করে, সে ব্যক্তি অত্যন্ত পরোপকারী, অরোগী এবং ধনধান্যাদি সমৃদ্ধিশালী হয়। ১১।

স্থবৰ্ণপ্ৰতিবন্ধ হীরক দেবতাদিগেরও গ্রাহ্ম। হীরক বর্ণান্তুসারেই বিভাগার্হ। ৯২।







म्खम्।

हरितसितपीतपिङ्गलतामुखामाः स्वभावतो किचराः।
हरिवक्षणम्बद्धत्ववर्षात्मकतां स्वका वर्णाः ॥ १३ ॥
हो वज्वर्णा प्रथिवीपतीनां सिद्धः प्रदिष्टी नतु सास्त्रजन्यं।
यः स्याध्ववाविद्रुमभङ्गणोणो यो वा हरिद्रारससंविकागः॥१॥
ईश्वतात् सर्ववर्णीनां ग्रणवत् सास्त्रवर्णिकं।
कामतो धारयेद्राजा न त्वन्योऽन्यं कथञ्चन ॥ ८५ ॥

तर्जमा।

मवुज, सफेद, पीला, पिङ्गल (नीला और पीला मित्रित) तांवेके समान और खाम यही कप्रकारका रङ्ग हीरे मे होता है। नारायण, वर्षण, इन्द्र, श्राम, यम श्रीर वायु इस्क रङ्ग मज्जुरेवालेके क देवता है। १३।

वही क्षप्रकार वर्षयुक्त हीरे के मध्ये जनेल फुल, अथवा सुद्धेके समान रक्तवर्ष, अथवा हल्दीके समान पीलारङ्ग यही दो वर्षविश्रिष्ट हीरा राजा लोगांको ग्रुभदायक है। ८४।

श्रार किसी एक हीरेंसे क प्रकारका रक्ष पाया जावे, तो उस् हीरेको राजा धारण कर सक्ता है, लेकिन क प्रकार रक्षका क हीरा एकदफे कभी धारण नहि करेगा। ८५।





- 93. Diamonds are generally green, white, yellow, brown, copper-colored or black; and the classes are presided over by Náráyana, Varuna, Indra, Agni, Yama and Váyu respectively.
- 94. Of the six classes, those that are red like the China rose or coral, or yellow like turmeric, are productive of good fortune to princes.
- 95. They can wear a diamond whose hue is a medley of all the colors enumerated above, but never diamonds of diverse colors at one and the same time.

অনুবাদ।

হীরকে হরিত, শুরু, পীত, পিঙ্গল, তাত্রবৎ ঈষৎ লোহিত ও শ্যাম, এই ছয় প্রকার বর্ণই স্বভাবতঃ হইয়া থাকে, এবং নারায়ণ, বরুণ, ইন্দ্র, অগ্নি, যম ও বায়ু এই ছয় দেবতা উক্ত ছয়বর্ণের এবং তদকুসারে উক্ত ছয়বর্ণ-বিশিষ্ট হীরকেরও অধিষ্ঠাত্রীদেবতা। ৯৩।

উল্লিখিত ছয় প্রকার বর্ণবিশিষ্ট হীরকের মধ্যে জবা-কুস্থম বা প্রবালের ন্যায় রক্তবর্ণ, অথবা হরিদ্রারদের ন্যায় পীতবর্ণ বিশিষ্ট হীরকই রাজাদিগের শুভজনক। ৯৪।

যদি একখানি হীরকে উক্ত সর্ব্বপ্রকার বর্ণ থাকে, তাহা হইলে রাজারা সে হীরক ধারণ করিতে পারেন, কিন্তু একদা বিভিন্ন বর্ণের ভিন্ন ভিন্ন হীরক কথনই ধারণ করিবন না। ৯৫।









मूलम्।

स्वधरोत्तरहत्ता हि याहक् स्वाद्वण्यक्तरः।
ततः कष्टकरो वज्वणानां सङ्गरो मतः॥ ८६ ॥
कोद्यः पार्कानि धारास्र षड्छौ द्वादशेति च।
उत्तुङ्गमतीच्वाग्रां वज्रस्याकरजा गुणाः॥ ८७ ॥
गुणाः पञ्च समाखाता दोघाः पञ्च प्रकीत्तिताः।
काया विज्ञेयास्त्वारो वज्राणां रत्नकोविदैः॥ ८८ ॥
घट्कोणत्वं चघ्नत्वच्च समाष्टद्चता तथा।
तीच्याग्रता निमेचत्वमिमे पञ्च गुणाः साताः॥ ८८ ॥

तर्जमा।

जिस् प्रकार मनुष्यमे ब्राह्मण, ह्यचिया वैश्व और शृद्रके परस्पर संयोग होनेसे सङ्गरवर्णका उत्पत्ति होती है, उसी किसिम्से हीरेके विभिन्नवर्ण संयोग होनेसे सङ्गरवर्ण होरा होता है; बही सङ्गरवर्ण हीरा मनुष्यके कप्टदायक है। ८६।

क्रकोण, श्रष्टपाश्विता (स्राटो सांसघाट) वार धार (गेरदा घाट) गट्ठा, समान, श्रीर तीच्वाग्रता बडी सव गुण हीरेमे स्वभाविक पयदा होता है। ८७।

रत्नशास्त्रको परिष्डत हीरेके पांच ग्रुण, पांच दोष स्त्रीर चार काया तज्विज किया है। १८०।

क्रकोण, हाल्का, आठो आंस घाट, तीचुाग्रता, और निर्मातता यही पांच ग्रण हीरेने होता हैं। १८।





- 96. As the promiscuous intercourse of one caste with another gives rise to mixed castes among mankind, so it is with diamonds, the mixed classes of which are fraught with great troubles to man.
- 97. The qualities of being six-cornered, eight-sided, twelve-edged, high, smooth and sharp, diamonds bring from their quarries.
- 98. Persons skilled in the knowledge of jewels enumerate five good, and as many bad qualities of diamonds; and have also mentioned four kinds of shades as proper to them.
- 99. The qualities of being six-cornered, light, sharp-edged, and pure, as well as the state of having eight equal sides are the five good properties of diamonds.

অনুবাদ।

ব্রাহ্মণাদি বিভিন্ন বর্ণের সংযোগে মনুষ্যগণের মধ্যে যেমন সঙ্করবর্ণের উৎপত্তি হয়, হীরকেও সেইরূপ ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের পরস্পর সহযোগে সঙ্করবর্ণ হইয়া থাকে, হীরকের সঙ্করবর্ণ মনুষ্যগণের পক্ষে অতি কফটায়ক। ৯৬।

ষট্কোণতা, অফ্টপার্শ্বতা, দাদশধার, উভ্নুঙ্গতা সমান অথচ তীক্ষাগ্রতা এই কয়প্রকার গুণ হীরকের স্বভাবসিদ্ধ, অর্থাৎ আকর হইতেই এই গুণসমূহ উৎপন্ন হয়। ৯৭।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা হীরকের পাঁচ প্রকার গুণ, পাঁচ-প্রকার দোষ ও চারি প্রকার ছায়া নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ৯৮।

ষট্কোণত্ব, লঘুত্ব, সমান-অঊদলত্ব, তীক্ষাগ্রত্ব ও নির্মালত্ব এই পাঁচটী হীরকের গুণ। ১১।







मुसम्।

वर्कोणगुडुममलं गुचि तीच्णधारं
वर्णान्वतं लघु सुपार्श्व ममेतदोषं।
दून्द्रायुधांगुविस्तिच्छिरितान्तरीचःमेवंविधं भृवि भवेत् सुलभं न वद्यं। १००।
ज्ञाल्यं लघु वर्णतस्य ग्रुणवत् पार्श्वे घु सम्यक् समं
रेखाविन्दकलङ्ककाकपदकचामादिभिविज्ञितं।
लोकेऽसिन परमाणुमाचमपि यदजं कचिद्रस्थते
तिस्तिन् देवसमात्रयो द्यावितयसीचाग्रधारं यदि। १०१।

तर्जमा।

जो हीरा विश्व हु, क्रकोण युक्त, अत्यन्त निर्माल अर्थात् बद्धत साफ, तीच्य धार, उत्तम वर्ण विश्विष्ठ हाल्का आक्हा घाटदार, वेश्वयेव, और जिस्से इन्द्रधनुकके समान श्वाभा निक्ले, ऐसा हीरा पृथी पर बद्धत नायाव है। १००।

बज्जत हाल्का, उत्तम वर्ष युक्त, ग्रुणयुक्त, बरावर घाट, तीच्णाय, अर्थात् चुटीदार, चिर, क्रिटा, दाग, काकपद, गड्हा, यही चव अयेबवर्ज्जित, हीरेके क्रोटे तारेके समान जिस जगहमे रहे, उसी जगहमे जहर देवताका वास होगा। १०१।





100. The diamond which is free from defect, six-cornered, pure, sharp, possessed of an agreeable color, light, beautifully shaped, flawless and irisgleaming is a rarity in the world.

101. The place where there is even a particle of such a diamond as is sharp, equal-sided, exceedingly light, possessed of an excellent color and of other good properties, and free from Rekhá, Vindu, Kalanka,* Kákapada, Trása, &c., is certainly frequented by the gods.

অञ্বাদ।

যে হীরক বিশুদ্ধ, ষট্কোণবিশিষ্ট, অতি নির্মাল, তীক্ষ্ণ-ধার, উত্তমবর্ণভূষিত, লঘু, স্থপার্ম, নির্দ্দোষ এবং যাহা হইতে শক্রধমুর প্রভা নিঃস্থত হয়, সেপ্রকার হীরক পৃথি-বীতে অতি তুর্লভ। ১০০।

অত্যন্ত লঘু, উৎকৃষ্ট বর্ণান্বিত, সগুণ, সমপার্থ, তীক্ষাগ্র এবং রেখা, বিন্দু, কলঙ্ক, কাকপদ ও ত্রাসাদি দোষবিবর্জ্জিত হীরক পরমাণুপরিমাণে যে স্থানে থাকে, সে খানে অবশ্যই দেবতাদিগের সমাগম হইয়া থাকে। ১০১।



^{*} A dark spot.



मूचम्।

तीचाग्रं विमलमपेतमब्बदोषं धत्ते यः प्रयततनुः सदैव बज्रं। दृद्धिमां प्रतिदिनमेति यावदायः

श्रीमम्पत्स्तधनधान्यगोपशूनां ॥ १०२।
यत्तु सर्वगुणेर्युक्तं वज्रंतरित वारिणि।
रत्नवर्गे समस्तेऽपि तस्य धारणिमष्यते ॥ १०३।
श्रम्भसारित यदज्रमभेद्यं विमलञ्च यत्।
तथा संशुद्वघट्कोणं लघु भागवनन्दन ॥ १०४॥
प्रभा च शक्रचापामा यस्याकीभिमुखी भवेत्।
तदज्रं धारयन् राजा सर्वान् जयित शाच्चवान् ॥ १०५॥

तर्जमा।

जो अदमी चोठीदार, साफ, और वेअयेव हीरा यतन कर्के पहेरे, वह अदमी जेत्ने दिन जीता रहेगा, उत्ने दिन दौलत, सम्पत्, श्रौनाद, धन, धान्य, गौ और पश्चना मालिक रहकर जीन्दिगी भर बद्धत खुसीसे बसर करेगा। १०२।

जो चीरा तामाम तारिकेंग्रे मीं सुफ चोकर पाणिपर तरेगा, वची सब रह्नोमें बड़ा है, श्रीर उनके पहेरनेसे बड़त फयदा है। १०३।

जो हीरा वज्जत् साफ, श्रभेद श्रयीत् जिस्को भेद ना कर नके, क्रकोण, बज्जत हास्का, पाणिपर तरता हो, श्रीर सूर्यके सामने रखनेसे दुन्द्र धनुकके समान श्राभा देवे, वही हीरा पहेरनेसे राजा लोग सब जगह जय पानेवाले होते हैं। १०४।१०५।





- 102. The man who carefully keeps about him a sharp-pointed, spotless and genuine diamond, is blessed with the life-long possession of riches, good fortune, sons, corn, kine and other beasts.
- 103. The diamond which crowned with every good property, floats on water, is the very pink of perfection; and the use of such a gem is attended with greater good.

104-105. The possession of such a diamond as is exceedingly flawless, impervious, six-cornered and light to a degree, as forms the rainbow on being exposed to the sun, and as does not sink in water, renders a prince victorious over every enemy.

অনুবাদ।

যে ব্যক্তি তীক্ষাগ্র, নির্ম্মল এবং নির্দ্দোষ হীরক অতি যত্নসহকারে ধারণ করে, সে ব্যক্তি যাবজ্জীবন লক্ষ্মী, সম্পদ, পুত্র, ধন, ধান্য, গো ও পশুর আধিপত্য লাভ করিয়া কাল যাপন করিতে পারে। ১০২।

যে হীরক সর্বগুণালঙ্কত হইয়া জলে ভাসমান হয়, সমস্ত রত্নমধ্যে সেই হীরকই উৎকৃষ্ট, এবং তাহা ধারণেও অধিক ফল লাভ হয়। ১০৩।

যে হীরক অতি নির্মাল, অভেদ্য, ষট্কোণবিশিষ্ট, অতিশয় লঘু, জলে ভাসমান, সূর্য্যাভিমুখে ধৃত হইলে ইন্দ্রধনুর প্রভা বিস্তার করে, এপ্রকার হীরক ধারণ করিলে রাজগণ সর্ব্বত্রই সকল শক্রকে জয় করিতে সমর্থ হন। ১০৪।১০৫।





मूचम्।

यत्तु वारिभवं नाभ दृष्णीपचजनक्कि ।
सवर्षमाचं तुलया तहम् कोटिभाजनं ॥ १०६ ॥
यद्यपि विश्रीषकोटिः सिवन्दु रेखान्वितो विवर्षो वा ।
सोऽपि च धनधान्यस्तान् करोति सेन्द्रायुधो वजः ॥ १०९॥
सौदामिनीविस्कृरिताभिरामं राजा यथोकं कुलिशं दधानः ।
पराक्रमाक्रान्तपरप्रतापः समस्तसामन्तम्वं भुनिक्त ॥ १०८॥

तर्जमा।

जो हीरा पाणिसे पयदा होता है, खीर जिसका रक्ष सबुज घासके पाणिके वूंद्के समान, और खोजनमे एक तोला भारी हो, उस हीरेके दाम क्रोर रूपेया होता है। १०६।

टुटाकोणा, क्रिटा, चिर, श्रीर बदरक यही सब श्रयेवदार हीरासे श्रगर द्रम्द्रधनुकके समान श्रामा प्रकाश पावे, तभी पहेरनेसे धन, दौलत श्रीर श्रावोलातकी तर-किक होये। १०७।

जो राजा पहिले वयान किये गये वेश्रयेव श्रीर विज-लीके समान श्राभा प्रकाशित शीरा पहेरे, वह बढ़ा एक वालमन्द होकर तामाम जमीनका राज लाभ करे। १०८।







- 106. The diamond which has originated from water, which weighs one tolá,* and which is transparent as the dew-drop on a blade of grass, is worth ten millions.
- 107. Even a diamond which is cracked, spotted, striped, discoloured, or otherwise defective, leads to wealth and increase of children, if it possesses the power of forming the iris.
- 108. The sovereign who wears a diamond possessed of the good qualities mentioned above, and laughing like the lightning's flash, attains to universal dominion.

অনুবাদ।

যে হীরক জল হইতে উৎপন্ন, যাহার বর্ণ দূর্ব্বাদলো-পরি পতিত জল-বিন্দুর ন্যায় স্বচ্ছ, এবং ওজনে এক তোলাপরিমিত, তাহার মূল্য কোটি মূদ্রা। ১০৬।

ভগ্নকোণ এবং বিন্দু, রেখা ও বৈবর্ণ্য ইত্যাদি দোষ-দূষিত হীরক হইতে যদি ইন্দ্রধনুর প্রভা প্রকাশ পায়, তাহাও ধৃত হইলে ধন, ধান্য, ও সন্ততি রৃদ্ধি করে। ১০৭।

যে রাজা পূর্ব্বোক্ত গুণসমূহে ভূষিত এবং সোদামিনীর স্থায় প্রভাপ্রকাশক হীরক ধারণ করেন, তিনি অতিশয় পরাক্রমশালী হইয়া সমস্ত পৃথিবীর আধিপত্য লাভ করেন। ১০৮।

^{*} A weight of gold or silver, calculated at 12 māshās, Jeweller's Weight, and equivalent to nearly 210 grains; but actually it is of the same weight as the sicca or 1793 grains.—Williams.





श्रथ वज्नहोषा:।

मूचम्।

मलो विन्दुस्तथा रेखा चारः काकपदस्तथा।

एते दोषाः समाखाताः पञ्च वजेषु कीविदेः ॥ १०६॥

मले मिलनता खाता विन्दी सर्वार्थनायनं।

रेखायां दंष्ट्रिणो भीतिः चासे चारः चयः पदे॥ ११०॥

दोषेषु विन्दुरावर्तः परिवर्त्तो यवाक्ततिः।

चतुर्विधाः समाखाता विन्दवो वजुर्गश्चिताः ॥ १९१॥

हीरेका अयेव।

तर्जमा।

रत्नशास्त्रके पिण्डत मयला, किटा, चिर, गड्डा चौर काकपद यही पांच प्रकारके हीरेके अयेव कहे गये हैं। १०८।

मिलन हीरे के पहरने से मन मयला होता है, किटेदार हीरे के पहरने से सक्जनाश होता है, चिरदार हीरे के पहेरने से सांपका भय होता है, गड़्हादार होरा पहेरने से हमेसा मनके दु:ख रहता है, और काकपदिच्छियक हीरा पहेरने से अदमी बद्धत जल्द नाशको प्राप्त होता है। ११०।

हीरेमे जो किटा है, वह प्रकारभेदसे बिन्दु, आवर्त्त, परिवर्त्त और यवाक्तित यही चार प्रकार होता है। १९२।



DEFECTS OF DIAMOND.

TRANSLATION.

- 109. Authorities in matters of precious stones mention five bad qualities of diamonds; namely, mala,* vindu,† rekhá,‡ trása§ and kákapada.||
- 110. The first defect causes impurity, the second brings down destruction on the wearer, the third renders him apprehensive of snake-bite, the next infuses constant fear into the mind, and the last leads to ruin.
- 111. Diamond spots are divided (according to the respective character of each) into four classes, namely; vindu (or the spot proper), ávarta, parivarta, and jabákriti.

হীরকের দোষ।

অন্থবাদ।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা মল, বিন্দু, রেখা, ত্রাস, ও কাক-পদ এই পাঁচ প্রকারকে হীরকের দোষ বলিয়া উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন । ১০৯।

মলিন হীরকে মনের মালিন্য জন্মে; বিন্দুযুক্ত হীরক সর্ব্বনাশের নিদান; রেথাবিশিক্ট হীরক সর্পাদি দংষ্ট্রি ভয়োৎ-পাদক; ত্রাসযুক্ত হীরক সর্ব্বদা ত্রাসজনক এবং কাকপদ-চিহ্নিত হীরক মন্তুষ্যের ক্ষয়কারক বলিয়া কথিত আছে। ১১০।

হীরকস্থিত বিন্দু প্রকারভেদে বিন্দু, আবর্ত্ত, পরিবর্ত্ত ও যবাকৃতি এই চতুর্বিধ হইয়া থাকে। ১১১।

I Literally, that which is shaped like a barley corn.





मू चम् ।

रक्तोऽत्र वर्तुलो विन्द्रशवर्त्ती मध्यवर्तुलः ।
रक्तत्र परिवर्तस्य रक्त एव यवाक्रतिः ॥ ११२ ॥
विन्दुरायुर्धनं चन्यादावर्त्ती भयमादिशेत् ।
परिवर्त्ते भवेद्व्याधियवे तत्मलस्रचाते ॥ ११३ ॥
रक्तवर्णे यवे खातं गजाम्बस्य विनाशनं ।
यवे पीते कुलस्यान्तं धनमायु:च्यं भवेत् ।
एवं दोषाः समाख्याता यवविन्दोरशेषतः ॥ १९४ ॥

तर्जमा।

रक्तवर्ष गोल चिक्कको विन्तु अर्थात् किटा कहते हैं, मध्यगोलाकार चिक्कको आवर्त्त कहते हैं, सामान्य रक्तवर्ष चिक्कको परिवर्त्त कहते हैं, सौर रक्तवर्ष जव चिक्कको जवाद्यति कहते हैं। १९२।

जो हीरा क्रिटेदार है, वह उमर श्रीर दीलतको नाश करता है, श्रावर्त्तका अयेवदार होनेसे बद्धत प्रकारका खीफ पयदा करता है, परिवर्त्त अयेवदार होनेसे विमारी करता है, श्रीर जवाद्यति श्रयेवदार होनेसे वही श्रयेव होता है। १९३।

किसी पिएडतने मतानुसार जनके समान निशान सुख होनेसे हाती और घोडाको नाश करे, और पीला होनेसे कुल, धन और उमर नाश करे। जन चिक्कसे यही सन अथेन होता है। १९४।



- 112. A blood-red, circular spot is a vindu, a circular spot situated in the middle is called an ávarta, a simple red speck is entitled a parivarta, while a Jabákriti is a blood-red mark shaped like a barley corn.
- 113. A vindu-marked diamond is inimical to life and property; an ávarta-spotted one gives rise to various fears; a parivarta-specked and a jabákriti-spotted one are fraught with disease.
- 114. According to some, if the barley corn-shaped speck is red, it is destructive to horses and elephants; and when it is yellow, loss of family dignity and of wealth and curtailment of life are the consequences.

অনুবাদ।

রক্তবর্ণ বর্ত্ত্র্লাকার চিহ্নকে বিন্দু, মধ্যবর্ত্ত্র্লাকার চিহ্নকে আবর্ত্ত, সামান্য রক্তবর্ণ চিহ্নকে পরিবর্ত্ত ও রক্তবর্ণ যবচিহ্নকে যবাকৃতি কহে। ১১২।

বিন্দুযুক্ত হীরক আয়ু ও ধন নাশ করে, আবর্ত্ত-দোষা-দ্বিত হীরক নানা ভয়ের উৎপাদক, পরিবর্ত্ত ও যবাকৃতি-দোষদূষিত হীরক নানাব্যাধিজনক হয়। ১১৩।

কাহারও মতে রক্তবর্ণ যবচিহ্ন হস্তী ও অশ্বের বিনাশক এবং পীতবর্ণ যবচিহ্ন কুলনাশক এবং ধনায়ুঃক্ষয়কারক হয়। যবচিহ্নের এই সকল দোষ উক্ত হইয়াছে। ১১৪।







मू चम्।

मव्यवका शुभा रेखा वामवका भयद्भरी।
केदभान्तिकरी च्छेदा रेखा शस्त्रभयप्रदा ॥११५॥
पच्च स्वयप्रद्या या केदा सा परिकीत्तिता।
रेखा वन्धविनाशाय जायते वजुसंश्रया ॥११६॥
सव्या चैवापसव्या च केदा रेखोद्धगामिनी।
सव्या चाक्रभिदा ज्ञेया अपसव्या धनच्छिदा।
ऊर्द्धा चासंप्रचाराय केदा केदाय वन्ध्भिः।१९७॥

तर्जमा ।

चिर त्रगर दाहिने तरफ टेड़ा होए, तो वह उत्तम फल देवे, बांगे तरफ टेड़ा होए. तो बद्धत तरहेका खौफ पयदा करे, खौर जिस् चिरसे हीरा फाटा मालुम होए, वह चिर होनेसे तलवारका खौफ होए। ११५।

हीरमें जो चिर पत्तीके परके समान होए, उसे केंद्रा कहते हैं, खौर केंद्रा निशान भाद्र वन्धुके बिनाशका कारण होता है। १९६।

केदा निशान अगर वांचे तरफ टेडा होए, तो अपने कुल्वेके साधमे कलह पयदा करे, दक्षिण तरफ टेडा होए, तो दौलतका नाश करे श्रीर सिधा होए, तो दौली में दस्मृनि करावे। ११७।



- 115. If the above-mentioned stripe appears in a bent form on the right side, it is productive of good consequences; but the same appearance on the left occasions various fears; again, the streak which looks like a cleft renders one liable to blows from weapon.
- 116. That stripe in a diamond which resembles a bird's wing is termed *chhedá*. This mark brings about loss of friends.
- 117. When the chhedá mark is visible in a crooked form on the left, it leads to dissension with kindred; a like mark on the right side entails loss of wealth, and if pointing upwards, brings on difference with friends.

অহুবাদ।

রেখাচিক্ন দক্ষিণে বক্র হইলে শুভ ফল প্রসব করে, বামদিকে বক্র হইলে নানা ভয়ের কারণ হয়, এবং যে রেখা দ্বারা হীরককে ফাটা বলিয়া বোধ হয়, সেই রেখা হইতে শস্ত্রাঘাতের ভীতি উৎপন্ন হয়। ১১৫।

হীরকস্থিত যে রেখা দেখিতে পক্ষীর পক্ষের ন্যায়, তাহাকে ছেদা কহে, ছেদা চিহ্ন বন্ধুবিনাশের নিদান। ১১৬।

ছেদা চিহ্ন বামবক্রা হইলে আত্মীয় জনের সহিত কলহ সজ্মটন, দক্ষিণবক্রা হইলে ধনহানি এবং উদ্ধিগামিনী হইলে বন্ধু বিচ্ছেদ করে। ১১৭।







मूलम्।

श्रद्धः काकपदाकारो दृश्यते यो मलाश्रितः।
स मृत्युमादिशत्याशु धनं वासग्रद्धं हरेत्॥ १९८॥
सम्माग्रं भम्नधारञ्च दलहीनश्च वर्त्तुलं।
कान्तिहीनञ्च यदज्ं दोषाय न ग्रणाय तत्॥ ११८॥
भिद्मश्वान्तिकरः चासः स चासं जनयेद् धुवं।
एवं दोषा गुणाः प्रोक्ता वज्राणां सोमभूभुजा॥ १२०॥

सर्जमा।

को दाग कौएके पांच्योक समान होए, चौर वही दाग मिलन होए। उसे काकपद चयेव कहते हैं, जो खदमो ऐसा हीरा पहेरे, उस्का सर्वेनाश होए, चौर मौड़ होए। ११८।

जिस् हीरेका आगेका हिस्सा, अथवा कोही किनारा युटा होए, और जो हीरा दलहीन अर्थात् पल्वा, तेजहीन और देखनेसे गोलाकार, यही हीरा वड़ा अथेवी, और तर तरके अथेवका पयदा कर्नेवाला है। ११८।

जिस् सवव्से चीरेको ट्रा समजकर सक् पयदा चौए, उस्को चास कच्ते हैं, और चासयुक्त चीरा चमेसा सव कामोमे चास अर्थात् भय देवे, सोमराज परिष्डतोने दूसी तरहसे चीरेका सिफत और अयेवको लिखा है। १२०।



- 118. The spot which is like the claw of a crow as well as dirty, is called *kákapada*. Death and ruin are near the man who wears a diamond marked with *kákapada*, and a stranger shall lord it over his home.
- 119. That diamond, the top or any side of which has been rifted, which does not show a leaf-like arrangement of parts, which is devoid of lustre and which is globular, is not only void of any good property, but is positively productive of a variety of evils.
- 120. The mark the existence of which in any diamond imparts to it an air of apparent brokenness, is denominated *trása*. Such a diamond always gives rise to fear. These good and bad qualities of diamonds have been described by Rájá Soma.

অনুবাদ।

হীরকস্থিত যে দাগ কাকের পাদের চিচ্ছের অনুরূপ, অথচ মলিন, তাহাকে কাকপদ দোষ কহে। যে ব্যক্তি কাকপদ-দোষ-তুষ্ট হীরক ধারণ করে, তাহার সর্ব্বনাশ, বাসগৃহ পরিত্যাগ, এমন কি মৃত্যু পর্যান্ত আসন্ন। ১১৮।

যে হীরকের অগ্রভাগ বা কোন একধার ভগ্ন, যাহা দলশূত অথচ কান্তিহীন, দেখিতে গোলাকার, সে হীরক অতি নির্দ্তণ এবং নানা দোষের আকর। ১১৯।

যে চিহ্নারা হীরককে ভগ্ন বলিয়া ভ্রান্তি জন্মে, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসদোষান্বিত হীরক সর্বাদা সর্বা বিষয়ে ত্রাস উৎপাদন করে। সোমরাজকর্তৃক হীরকের এই সকলপ্রকার গুণদোষের বিষয় উল্লিখিত হই-য়াছে। ১২০।







मूचम्।

एकमिप यस भृद्धं विद्वितमवनोक्यते विश्वीणस्वा।
गुणवद्पि तम्न धार्थं वम्नं त्रेयोऽधिभिभवने ॥ १२१ ॥
स्फाटिताग्रविश्वीणभृद्धारं मनवर्णेः पृषते क्षेतमध्यं।
निष्ठ वज्रस्तोऽपि वज्रमाश्च त्रियमन्यात्रयनाशं विधन्ते ॥१२२॥
यस्यैकदेशे चतजावभासो यदा भवे क्षोत्तिवर्णचिनं।
न तम्न कुर्याद्पि वज्रमाश्च सुरुश्यस्य मृत्योर्पि जीवितान्तं ॥१२३॥

तर्जमा।

जिस् हीरेका त्रामा टुटा, या विश्वीण होए, वह वद्धत् गुण्युक त्रवात् सव तारिफोंसे भरा होए, तभी वही हीरा त्रप्ना भाला चाहनेवालेको कभी स्रप्ने पात्र रस्ना मनासिफ नहि। १२१।

जिस् चीरेका त्रागेका हिस्सा फाटा, गृङ्ग टुटा त्रीर वीचका हिस्सा मलिन होए, ऐसा हीरा दुन्द्रके समान दौलतको नष्ट कर्नेबाला है। १२२।

जिस् हीरेका कोई हिस्सा लक्क के क्रिटेके समान निमान रख्ता होए, या कुल हिस्सा लक्क क्रिटेके समान भरा होए, वह हीरा आच्छे भाले श्रदमीका जल्द मीतका सवव्हें। १२३।



- 121. The diamond, the peak of which shews breaches, or which is decayed, no man who seeks his welfare should keep in his house, although it should be otherwise furnished with every perfection.
- 122. A diamond, the face of which is cracked, whose top is rent, and whose centre is full of dirt, can deprive even Indra of His highest Heaven.
- 123. If any diamond is marked with a blood-red spot, or if it is throughout red-spotted, it brings a speedy death to the most hale man.

অভুবাদ।

যে হীরকের শৃঙ্গ ভগ্ন বা বিশীর্ণ, তাহা অশেষ গুণযুক্ত হইলেও নিজহিতাভিলাষী ব্যক্তি কদাচ গৃহে রাখিবে না। ১২১।

যে হীরকের অগ্রভাগ ফাটা, শৃঙ্গ বিশীর্ণ, এবং মধ্য-ভাগ মলপূর্ণ, সেই হীরক ইন্দ্রের ইন্দ্রত্ব পর্য্যন্ত অন্য ব্যক্তির করতলগত করিতে দক্ষম। ১২২।

যে হীরকের কোন অংশ রক্তবর্ণ চিচ্ছে চিহ্নিত অথবা সমুদায় অংশ লোহিতবর্ণে চিত্রিত, সেই হীরক অতি স্তম্থ ব্যক্তিরও আশু মৃত্যুর কারণ হয়। ১২৩।





प्रसम्।

प्रथमं गुणसम्पदास्युपेतं प्रतिवद्धं सस्पैति यत्सदोषं ।

खनमाभरणेन तस्य राज्ञो गुणकीनोऽपि मणिन भूषणाय ॥१२८॥

यस्य चते भवेच्छोयो दाको वा ज्वर एव वा ।

तच चिमिचिमायेत तद्द्युं दष्टसुच्यते ।

कर्कमं गुक् यद्वज्ञं न तद्वारयते नृपः ॥ १२५ ॥

चिकोणं कलकाय स्याच्चतुष्कोणं भयावकं ।

पञ्चकोणे भवेनमृत्युः षट्कोणं मुभमादिशेत् ॥ १२६ ॥

तर्जमा।

जो हीरा पहिले ग्रणयुक्त समभा जाय, और फेर सोनेसे जड़वानेसे उस हीरेमें अयेव पयदा होए, अर्थात् वह पाण और वह चमक बाकी ना रहे, तो ऐसा हीरा गहनेसे जड़वानेके लायेक नहि, किस्लियेके अयेवी बस्तु कभी भूषणके योग नहिं। १२४।

जिस् हीरेके जखन पर केंग्यानेसे जखमने शोथ पयदा होए, बुखारमे दाहकी छद्धि और अङ्ग चिम चिम करे, वह होरा नेहाएत खाराफ होए, दूस कारण उनको मकानमे रखना मनासिफ नहिं; और जो हीरा ओजनमे भारी, नेहाएत हाम्बार, वज्जत क्षेत्र, वह हीरा काजाको किसी तरहसे पहेरना उचित नहिं। १२५।

तिनकोणा हीरा अगड़ेका, चौकोणा हीरा बद्धत् तरहके खौपका, पांचकोणा हीरा मौतका कारण होए, खौर क्रकोणा हीरा मङ्गल करनेवाला है। १२६।





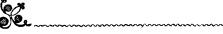
- 124. The diamond which at first appears possessed of good qualities, but which on being set on gold, &c., betrays defects, should never be selected for ornamentation; since a thing devoid of good properties should never be used for such a purpose.
- 125. A diamond the touch of which causes swelling in a wound and an increased sensation of burning in a fever and which brings on a sensation of fainting, is a bad gem and must not be treasured. The diamond which is rough is not acceptable to kings, although it may be weighty.
- 126. A three-cornered diamond gives rise to quarrel, a four-cornered one occasions various fears, a five-cornered one brings death, but a six-cornered diamond is productive of good.

অञ্বাদ।

যে হীরককে প্রথমে গুণযুক্ত বলিয়া প্রতীয়মান হয়, কিন্তু স্থবর্ণাদি দ্বারা জড়িত হইলে দোষাপ্রিত হইয়া পড়ে, এরূপ হীরক দ্বারা কদাচ অলঙ্কার নির্মাণ করাণ কর্ত্ব্য নহে, যেহেতু গুণহীন বস্তু কখনই স্থূমণের উপযুক্ত নহে। ১২৪।

যে হীরকের স্পর্শে ক্ষতে শোথ, জ্বরে দাহর্দ্ধি হয় এবং অঙ্গ চিম চিম করে, দে হীরক অতি ছফ্ট, স্থতরাং তাহা গৃহে রাখা কর্ত্তব্য নহে। এবং যে হীরক পরিমাণে গুরু, কিন্তু অতিশয় কর্কশ, দে হীরক নৃপতিদিগের অগ্রাহ্থ। ১২৫।

ত্রিকোণ হীরক কলহের, চতুক্ষোণ হীরক নানা ভয়ের, পঞ্চোণ হীরক মৃত্যুর এবং ষট্কোণ হীরক মঙ্গলের নিদান। ১২৬।







मूचम्।

दिदले कलही नित्यं चिदले सखनायनं।
चतुईले सखानाप्तिः शोकश्च पञ्चमे दले । १२७॥
घड्दले राजतो भीतिमृत्युः सप्तदले तथा।
चष्टदलं भनेच्छुद्धं वजुमित्याच पानकः॥ १२८॥
विकायं निपदङ्करोति मलिनं धन्ते ग्रुचं कर्वशं

दु:खं स्ने हिविलिप्तमत्तकरणं स्थावक्किव क्रो शक्तत्। रेखाकाकपदाङ्किविन्दुसहितं स्थानमृत्यवे देहिनां वजुं वजुविचचणसु विभ्रयात्तसाहिचार्थे ख्वयं ॥ १२८॥

तर्जमा।

श्रीनपुराणके मतसे दोदलका श्रीरा भगड़े का कारण, तिनदलका श्रीरा सखका नाम करनेवाला, चौदलका श्रीरा सख देनेवाले, पांचदलका श्रीरा मोक पयदा करनेवाला। १२७।

क्रदलका चीरा राजभय करनेवाला, सातदलका चीरा मौतका कारण और अष्टदलका चीरा बद्धत् आच्छा है।१२८।

चमकहीन हीरा आपदका सवन, मिलन हीरा गम देनेवाला, नाहाम्बर अर्थात् उचा नीचा हीरा दुःख देनेवाला, कम पाणि हीरा खफकान होनेका कारण, खामवण हीरा बद्धत दुःख देनेवाला, और चिर, काकपद और किटादार हीरा मौतका कारण है; दूम्लिये पहिले खुव आच्छि तरहे परख करके बाद उम्को धारण करना मनासिफ है। १२९।



- 127. A two-layered diamond, (says the Agni Purána,) brings about quarrel, a three-layered one is destructive of happiness, a four-layered diamond is productive of it, and a five-layered diamond occasions grief.
- 128. A six-layered diamond causes fear to kings, a seven-layered diamond is mortal,* while an eight-layered one is surpassingly pure.
- 129. Since a shadeless diamond is fraught with danger, a dirty diamond with grief, a rough diamond with unhappiness, an unfeeling diamond with intoxication, a black diamond with various troubles and a rekha-marked, a vindu-marked, or a káka-pada-spotted diamond, with death, it behoves a man to wear diamonds after minute examination.

অহ্বাদ।

অগ্নিপুরাণের মতে দ্বিদল হীরক কলহের কারণ, ত্রিদল হীরক স্থ্যনাশক, চতুর্দল হীরক স্থ্যদায়ক, পঞ্চল হীরক শোকজনক। ১২৭।

ষড়্দল হীরক রাজভয়ের নিদান, সপ্তদল হীরক মৃত্যুর হেতু এবং অফ্টদল হীরক অতি বিশুদ্ধ। ১২৮।

ছায়াহীন হীরক বিপদের হেতু, মলিন হীরক শোক-জনক, কর্কশ হীরক ছঃখদায়ক, স্নেহহীন হীরক মত্তার কারণ, শ্যামবর্ণ হীরক নানাক্রেশকর এবং রেখা কাকপদ ও বিন্দুযুক্ত হীরক মৃত্যুর নিদান; অতএব অগ্রে বিশিষ্টরূপে বজ্রের পরীক্ষা ক্রিয়া পশ্চাৎ তাহা ধারণাদি করা কর্ত্ব্য। ১২৯।

^{*} Used literally ; L. mortis, death ; Sanskrita, mri, to die.





मूलम्।

श्रुजापि च दोषेण लच्चालच्चेण दृषितं।
तम्ब्याद्वसमं भागं वज्ञं लभते वा न वा । १३०॥
प्रकटानेकदोषस्य खल्यस्य महतोऽपि वा।
स्वमूल्याच्छतमो भागो वज्रस्य न विधीयते॥१३१॥
स्मृष्टदोषमलद्वारे वज्ञं यद्यपि हस्वते।
रक्षानां पविकस्यां मृल्यन्तस्य भवे ब्रघु॥१३२॥
ग्रुळ्योभिने धन्ते त्यो सुवतीभिरयं मणिः।
जठरे वज्रस्यकां द्गभेसासां विनस्त्वति॥१३३॥

तर्जमा।

जो हीरा घोड़े अर्थेवसे अथेवी है, और बह अथेव देखनेमे आये जाना आये, लेकिन उस्हीरेका दाम वे अथेव हीरेके आधे दाममें बरावर भी नहि हो सक्ता।१३०।

जो हीरा बद्धत् अथेवने अथेवी है, और बह सव अथेव बद्धत् थोड़ा होए, या ज्यादा होए, उस हीरेका दाम वैअथेव हीरेके मोकाबेलमे शतभागके बरावर नहिं है। १३१।

जिस् गईंनेमे श्रयेवी हीरा जड़ा होए, वह सब गहेना श्रगर देखनेमें बद्धत भाला होए, मगर उसका दाम बद्धत कम होगा। १३२!

खाराव चीरा गर्भिणी स्त्रीके लिये बज्जत् दुःखदायी चै, द्रस कारण अयेवी चीरेके पाण रखनेसे गर्भ गिर जानेका खीफ चै। १३३।





- 130. It is doubtful whether those diamonds that are slightly defective, are even half as valuable as flawless ones, although their defects should escape the eye.
- 131. The worth of those diamonds that possess many bad qualities, although all of them of a trifling nature, is not even a hundredth part of the value of a sterling diamond.
- 132. The value of such ornaments as are set with impure diamonds is small, although the ornaments themselves may otherwise be very fine.
- 133. Defective diamonds are very dangerous to youthful women under conception: the contact of such gems may lead to abortion.

অমুবাদ।

যে হীরক অতি সামান্য দোষদূষিত, এবং সেই দোষ লক্ষ্যই হউক বা অলক্ষ্যই থাকুক, তাহার মূল্য নির্দোষ হীরকের অর্দ্ধপরিমিত হয় কি না হয় সন্দেহ। ১৩০।

যে হীরক অনেক দোষাশ্রিত, এবং সেই সকল দোষ অতি সামান্তই হউক বা অধিক হউক, তাহার মূল্য নির্দ্দোষ হীরকের শতভাগের এক ভাগ মাত্রও হইতে পারে না। ১৩১।

যে অলঙ্কারে দোষাগ্রিত হীরক সংযুক্ত থাকে, সেই অলঙ্কার অতি উৎকৃষ্ট হইলেও তাহার মূল্য অতি সামান্ত হইয়া থাকে। ১৩২।

ছুষ্ট হীরক গর্ভিণী স্ত্রীলোকদিগের পক্ষে অত্যন্ত দোষা-বহ, যেহেতু তাদৃশ হীরকসংদর্গে তাহাদিগের গর্ভপাতের অধিক সম্ভাবনা। ১৩৩।





म्चम्।

अवसा पद्मरागेष तथा गोमेदकेन च।
बैद्र्यं स्क्रिटकास्याञ्च काचेश्वापि एथग्विधेः॥१३॥
प्रतिरूपाणिं कुर्व्वन्त वज्रस्य कुण्यना नराः।
परीचा तेषु कर्न्नत्या विदङ्गिः स्वपरीचकैः॥१३५॥
चारोक्केष्ठनणाणेस्य कार्यं तेषां परीचणं।
चयते णाणसंघर्षात् चूर्णतां याति चूर्णितं॥१३६॥
चारास्तं लेपयित्वा तु रौद्रे चैन परिचिपेत्।
कृषिमं याति वैवर्णं अस्वज्ञातिदीय्यते॥१३७॥

तर्जमा।

लोहा, माणिक, गोमेद, लगुनिया, स्कृटिक श्रीर हर तरहका काच, इस सब घीजांके जिर्यये श्राच्छे कारिगर लोक फरेवी हीरा बानाते हैं, इसलिये हीरा खरिदनेके समे श्राच्छे जहरीश्रोंके द्वारा हीरेका परीचा कर्ना मना-सिफ हैं। १३४। १३५।

चूणा चादि ज्ञारसे, घिसनेसे चौर प्राणसे इन् तिन चीजों में चीरेकी परीचा घोति घे, फरेवी घीरा घोनेसे चूणा चादि ज्ञारके संयोगसे चूर घो जायेगा, चौर घिसनेसे चौर प्राणसे जलद घिस् जायेगा, लेकिन चासल घीरा घोनेसे कभी घटे, वाहेगा नर्डि, चर्यात् समान रहेगा। १३६।

चार और श्रम दोनको मिलाकर शिरेपर लेप करके भूपने गुस्राकर पाणिसे घोडाले तो भुठा शीरा मयला हो जावेगा, लेकिन श्रापल शीरा दुस्मालेके देनेसे श्रीर भी चमकदार हो जावेगा। १३७।



134—135. Skilful lapidaries make use of iron, the ruby, the gomeda (agate?), the lapis lazuli, crystal, and glass of various colors, in fabricating false diamonds; therefore, before buying diamonds, they should be first tested by a skilful judge of precious stones.

136. There are three ways of testing a diamond; 1st, by mixing it with ashes; 2ndly, by rubbing; and, 3rdly, by whetting a weapon over it. A false diamond is reduced to powder by the first test, and wears away by the second and the third,—changes which can never be produced in real diamonds.

137. Again, smear a diamond with a mixture of ashes and acid, and dry it in the sun; and if it is a false diamond, it will show loss of lustre on being washed, but a real one will receive additional brilliancy.

অনুবাদ।

লোহ, পদ্মরাগ, গোমেদ, বৈদ্য্য, ক্ষটিক এবং বিভিন্ন বর্ণের কাচ, এই সকল বস্তুবারা স্থানিপুণ শিল্পী ব্যক্তিরা হীরকের প্রতিরূপ অর্থাৎ কৃত্রিম হীরক প্রস্তুত করিয়া থাকে, অতএব হীরক ক্রয় করিতে হইলে বজ্রকুশল স্থপরীক্ষকদারা অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ ক্রয় করা কর্ত্ব্য। ১৩৪।১৩৫।

ক্ষারসংযোগ, ঘর্ষণ ও শাণ এই ত্রিবিধ উপায়ে হীরকের পরীক্ষা হইয়া থাকে, হীরক ক্রিম হইলে চূর্ণাদি ক্ষার-সংযোগে চূর্ণ হইয়া যায়, এবং ঘর্ষণ ও শাণ দ্বারা ক্ষয়প্রাপ্ত হয়, কিন্তু প্রকৃত হীরক কদাচ উক্ত পরীক্ষায় বিকৃতভাব ধারণ করে না। ১৩৬।

ক্ষারযুক্ত অম হীরকে লেপন করিয়া রোদ্রে শুষ্ক করত ধোত করিলে কৃত্রিম হীরক বিবর্ণতা প্রাপ্ত হয়, কিন্তু অক্ব-ত্রিম হীরক পূর্ব্বাপেক্ষা অধিকতর দীপ্তিশালী হইয়া উঠে। ১৩৭।





मूचम्।

प्रथियां यानि रहानि ये चान्ये लीक्ष्यातवः।
सर्व्वाणि विलिखेदजं वज्रं तैने विलिखते । १३८॥
युक्ता सर्वेरलानां गौरवाधानकारणं।
वज्रे त तद्वेपरीत्य श्रूरिभि: परिचन्यते ॥ १३८॥
जातिरजातिं विलिखति जातिं विलिखन्त वज्र कृष्विन्दाः।
वज्रं वेज्रं विलिखति नान्येन विलिखते वज्रं । १८०॥

तर्जमा।

जमीनपर जित्ने किसिमके रत्न श्रीर लोडा बडगैरड सक्त चीज है, उन तामाम चीज डीरेसे कटित है, लेकिन डीरा किसी चीजसे कट निड सक्ता । १३८।

रत्नपर्ची पण्डितोंके मतके अनुसार भारीपन, सव रत्नोका उमदाका कारण है, लेकिन हीरा इसके खेलाप तारिफका सवव है, अर्थात् हीरा कद्मे बड़ा और ओजनमे कम होना तारिफका सवव है। १३१।

चक्रचिम चर्यात् मांचे हीरेके जरियेमे क्रविम चयात् भुठा हीरा कट जाता है, चौर चामल हीरा कुरुविन्द चयवा चामल हीरेके जरियेमे कट जाता है, लेकिन चौर किसी चीजमें नहि कटेगा। १४०।





- 138. The diamond can make scratches on every other hard substance, but itself is not susceptible of such impression by ever so hard a thing.
- 139. Ancient authorities in the science lay down heaviness as the most valuable quality of all gems, but this does not apply to diamonds; *i.e.*, the less the weight of a diamond in proportion to its bulk, the greater is its value.
- 140. An unreal diamond can be scratched by a real one, as also the latter by a kuruvinda,* or by a real diamond, but not by anything else.

অহুবাদ।

পৃথিবীতে যতপ্রকার রত্ন বা লোহাদি কঠিন পদার্থ আছে, সকল বস্তুই হীরকদারা অঙ্কিত হইতে পারে, কিন্তু অন্ত কোন পদার্থ দারাই হীরককে অঙ্কিত করিতে পারা যায় না। ১৩৮।

রত্নত্ত্ববিৎ পণ্ডিতদিগের মতে গুরুতাই দকল রত্নের গোরবের কারণ, কিন্তু হীরকে তদ্বৈপরীত্যই অধিক প্রশং-দনীয় অর্থাৎ হীরক আকারে বৃহৎ হইয়া পরিমাণে যত লঘু হইবে, ততই তাহার গোরব বৃদ্ধি হ'ইবে। ১৩৯।

অকৃত্রিম হীরকদারা কৃত্রিম হীরক অঙ্কিত হয়, এবং প্রকৃত হীরক কুরুবিন্দ বা অকৃত্রিম হীরকদারাই অঙ্কিত হইয়া থাকে, তদ্ভিন্ন অন্য কোন বস্তুদারাই অঙ্কিত হইতে পারে না। ১৪০।



^{*} A kind of ruby.



मू चम्।

वजुाणि सुक्तामणयो ये च केचन जातयः।
न तेषां प्रतिवद्वानां भा भवत्यू द्विगामिनी । १८९ ॥
यम्मूल्यं वाद्वाणे प्रोक्तं पादेनानेन वाद्धजे।
श्वनेनैव क्रमेणेव मणिमूल्यं विधीयते । १४२ ॥
चतुर्विधमिदं वजुं यदुक्तं जातिभेदतः।
चतुर्विधेनृपतिभिर्धार्यमाणमनुक्रमात्।
चतीऽन्यथा धृति: कुर्याद्रोगशोकमयं तथा । १८३॥

तर्जमा।

हीरा, मोति, माणिक वहरीर ह त्रगर वन्द जड़ात्रो होए, तो उसकी किरण उपरको ना जावेगो। १८१।

वास्त्रण हीरेको जो दाम होगा, चित्रवर्ण हीरेका चारचाना दाम घट जावेगा, वैद्यवर्ण हीरेका चाधा दाम चौर ऋद्रवर्ण हीरेका चौथाद दाम होगा। १४२।

ब्राह्मणवर्ण हीरा ब्राह्मणको, चित्रवर्ण हीरा चित्रको, वैद्यवर्ण हीरा वैद्यको और स्टूवर्ण हीरा स्टूको पहेरना चाहिए, उस्के खेलाप विमारी, रञ्ज, गम, खौफ्का सवब है। १४३।





- 141. When a diamond, a pearl, &c., set on gold or any other precious metal, look downward, their rays do not radiate upwards.
- 142. The price of a Kshetriya diamond is one-fourth, that of a Vaisya diamond one-half, and that of a Sudra diamond three-fourth less than the price of a diamond of the Brahmin class.
- 143. If a king wearing a diamond belongs to the same caste that it belongs to, the circumstance is productive of good; the reverse brings about disease and grief.

অনুবাদ।

হীরক, মুক্তা এবং অপরাপর যে কোন মণি স্থবর্ণাদি-দ্বারা প্রতিবদ্ধ হইলে অর্থাৎ তাহাদের নিম্নবদ্ধ করিলে তাহাদিগের কিরণ কথনই উর্দ্ধগামী হয় না। ১৪১।

ত্রহ্মবর্ণ হীরকের যে মূল্য হইতে পারে, ক্ষজ্রিয়বর্ণ হীরকের তাহার একপাদ ন্যুন, বৈশ্যবর্ণ হীরকের দ্বিপাদ ন্যুন এবং শুদ্রবর্ণ হীরকে ত্রিপাদ ন্যুন মূল্য হইয়া থাকে। ১৪২।

ব্রাহ্মণাদি চারি জাতীয় হীরক ব্রাহ্মণাদি চারি জাতীয় নৃপতিকর্ত্তক ধৃত হইলে শুভ ফল প্রসব করে, তদৈপরীত্যে রোগ, শোকাদি ভয়ের নিদান হয়। ১৪৩।







श्रथ वज्रमारणविधि:।

मूलम्।

चामुद्धं कुरते वर्षं कुष्टं पार्षं व्यथां तथा।
पाग्डुतां पङ्गरत्वञ्च तस्मात् संभोध्य मारयेत्। १८८।
गृष्टीत्वाच्चि भुभे वद्धं व्याघृषिकन्दोदरे चिपेत्।
माष्टिषीविष्ठया विप्तां कारिषाम्नौ विपाचयेत्॥१८५॥
वियामायां चतुर्यामं यामिन्यन्तेऽस्वमूचके।
सेचयेत्पाचयेदेवं सप्तराचेण भुध्यते॥१८६॥

हीरेका मारनेका उपाय।

तर्जमा।

श्रमुद्ध हीरा श्रीमधमे व्यवहार करनेसे कुछ, पार्ख का वेदना, पार्खुरोग श्रीर खञ्जता होए, दूसलिये पहिले हीरेको संशोधन करके पीके श्रीमधमे व्यवहार करना चाहिए। १४४।

शुभ दिनमें हीरेको काएटीकारीरसमें भिजाकर भंद्रसका विष्ठा लेप देकर घुंटेका आगसे दग्ध करना मनासिक है। १४५।

तामाम रात वही प्रकारसे दम्धकर फजोरमे घोड़े का मूतमे भिजाकर आगमे दम्ध करा उचित है, यही प्रकारसे सात दिन दम्ध करनेसे हीरा संशोधित हो जागा। १४६।





THE PROCESS OF REFINING A DIAMOND.

TRANSLATION.

- 144. Impure diamonds when used in medicine lead to leprosy, pleurisy, jaundice and lameness. It is therefore highly advisable to refine a diamond before using it medicinally.
- 145. The process is on some auspicious day to dip a diamond in the juice of kantakári* and then to burn it in a fire made by dried pieces of the dung of cow and buffalo.
- 146. The burning should be carried on for a whole night; in the morning the diamond should be put under horse's urine, and again burnt. By this process of burning being continued for seven days together, the diamond will be refined.

হারকমারণবিধি।

অনুবাদ।

অশুদ্ধ হীরক ঔষধে ব্যবহার করিলে তদ্ধারা কুষ্ঠ,পার্শ-বেদনা, পাণ্ডুরোগ ও পঙ্গুতা জন্মে, অতএব অগ্রে হীরক সংশোধন করিয়া পশ্চাৎ ঔষধে ব্যবহার করা কর্ত্ব্য। ১৪৪।

শুভ দিনে হীরককে কণ্টীকারীরদে ডুবাইয়া মহিষের বিষ্ঠালিপ্ত করিয়া ঘুঁটের আগুণে পুড়াইবে। ১৪৫।

সমস্ত রাত্রি উক্তপ্রকারে দগ্ধ করিয়া প্রাতঃকালে অশ্ব-মূত্রে ভিজাইয়া পুনরায় অগ্নিতে দগ্ধ করিবে, এই ভাবে সাত দিন দগ্ধ করিলে হীরক শুদ্ধ হ'ইবে। ১৪৬।









मूचम्।

चिक्रुसैन्धवसंयुक्ते चिपेत् काये कुलत्यजे।
तप्तं तप्तं पुनवेज्यभवेद्गस्त चिमप्तधा ॥ १४७ ॥
स्वायः प्रिष्णां वलं वीर्यं वणं सौखं करोति च।
सेवितं सर्व्वरोगम्नं मृतं वज्ञं न संभयः ॥ १४८ ॥
व्याघीकन्दद्रवे चिप्ता मप्तधा प्रिटते पचेत्।
मगद्द्रकं कांस्यजे पाचे निग्रह्य स्थापयेत् सुधी ॥१४८ ॥

तर्जमा।

हिक्क चौर सैन्धव नेमजसंयुक्त माषकलाद्दका क्वायमें भिजाकर एकिश बार तप्त करनेसे हीरा भस्म ही-जागा। १४७।

संशोधित चीरा खदमीका आयु, वदनका पृष्टि, वल, वीर्थ, रङ्ग खौर सख दक्कि समुदायका दृद्धि खौर मळे-प्रकार विमारीका शान्ति करेगा। १४८०।

पिंचला हिरिको काएटीकारी गाक्क रसमे दुवाकर सात वार पुठ पाकमे (एक मिट्टिके कटोरिमे जो चीज मस्म करना हो, वह रखकर दुसेरे मिट्टिके कटोरेसे वन्द करके माट्टि चौर गोवर मिलाकर खुम लेप करके चागमे ज्वलानेकी पुटपाक कहते हैं) पाक करना चाहिए, बाद उसके एक कांसेके बन्तनमे एक मेढक रखना चाहिए। १४६।





147. Then immerse it in a gruel made of kaldya,* into which assafætida and saindhava salt† also enter as ingredients, and lastly heat it repeatedly twenty and one times. By this means, the diamond will be reduced to ashes.

148. The imbibition of a purified diamond conduces to longivity, general development of the body, strength, energy, beauty of complexion and happi-

ness, and effects cure from every distemper.

149-150. The process of burning a diamond is as follows:—Put the diamond in the juice of kantakári, place it in an earthen-pot, and placing another over it, smear the two with hard clay and cow-dung, then burn the whole; this should be repeated seven times. Then steep the

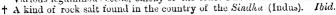
অভুবাদ।

হিঙ্গ ও সৈদ্ধবলবণসংযুক্ত কলায়ের কাথে ভিজাইয়া একবিংশতিবার পুনঃ পুনঃ তপ্ত করিলে হীরক ভস্মবৎ হইয়া যাইবে। ১৪৭।

সংশোধিত হীরকদেবনে আয়ু, শরীরের পুষ্টি, বল, বীরত্ব, বর্ণ ও স্থথ এই সমুদায়ের রন্ধি এবং সর্বব্যকার রোগের শান্তি হয়। ১৪৮।

প্রথমতঃ হীরককে কণ্টীকারীরসে ডুবাইয়া সাতবার পুটপাকে (এক খানি খুরী বা তদাকার কোন মুৎপাত্রে কোন বস্তু রাখিয়া অপর একখানি তাহাতে কুজাকারে আজ্হাদন করিয়া আঠালমাটা ও গোময় ইত্যাদির লেপ দিয়া সেই পাত্র অগ্লিতে দগ্ধ করার নাম পুটপাক) পাক করিতে হয়, পরে একখানি কাংস্থপাত্রে একটা মণ্ডুক ধরিয়া রাখিবে।১৪৯।

^{*} Various leguminous seeds, chiefly of the order Phaseolus. Williams.









मुखम्।

स भीतो मूचयेत्तच तन्मूचे वज्ञमावपेत्। तप्तं तप्तञ्च वज्जधा वज्जधीवं मृतिभवेत्॥१५०॥ रसे यच भवेद्वज्ञं रसः सीऽमृत उच्यते। भस्मीभावगतं युक्ता वज्जवत् कुक्ते तनुं॥१५९॥

तर्जमा।

वह मेटक खीफ करके उस्वननमें मूत देगा, बाद उस्कें उसी मूतमें वह ज्वला ज्ञया हीरा भिगोना होगा, सौर फेर ज्ञागमें ज्वलान होगा, दूस तरहसे वह हीरा खाक ज्यात् भसा हो जायेगा। १५०।

हीरेके संयोगसे जो दाश्रोया तैयार कि जाती है, वह श्रमृतके समान है, दूर्स्लिये वही दाश्रोया खानेसे बदन हीरेके समान मज्दुत् होएगा। १५१।

इति चीरेका वयान।







diamond in frog's urine held in a pot composed of zinc and copper, and heat it over and over in fire. The diamond will then have been entirely burnt, and can be reduced to powder.

151. Those medicines into the composition of which the diamond dust enters, are like ambrosia; and the imbibition of these imparts adamantine strength to the limbs.

অনুবাদ।

মণ্ড্ক ভীত হইয়া সেই পাত্রে মৃত্র পরিত্যাগ করিবে, সেই
মৃত্রে পূর্ব্বপুটপাকদগ্ধ হীরক উল্লিখিত মণ্ড্কমৃত্রে ভিজাইয়া পুনঃ পুনঃ অগ্নির উত্তাপ দিলেই হীরক দগ্ধ প্রস্তরবৎ চূর্ণাকারে পরিণত হইবে। ১৫০।

হীরকভম্মসংযোগে যে সকল ঔষধ প্রস্তুত হয়, তৎসমু-দায় অমৃতসদৃশ, সেই ঔষধ সেবনে দেহ বজের স্থায় দৃঢ় হয়। ১৫১।

ইতি হীরক।







THE DIAMOND.

Its properties.

HE Diamond might appropriately be called the king of gems. Whether, in respect to beauty. lustre, transparency, hardness or density, there is no other stone yet discovered that can surpass it. In fact it is the hardest of all substances—it resists the action of the file and can only be cut by its own dust. It is known in Sanscrit as the bajra and in the West, was called, in times of old, the Adamant; both the terms signifying hardness. The origin of this precious stone is lost in the mist of antiquity. The imagination of poets has supplied the data which history has failed to afford. It is said that "Diamond was the name of a beautiful youth of the Island of Creta, one of the attendants of the infant Jupiter, in his cradle. The God who placed, among the celestial bodies, the nymphs and goat that had reared him, could not leave this youth subject to the ills 'that flesh is heir to.' Diamond was transformed into the hardest and most brilliant substance in nature"

All the opinions that have been collected as to the origin and formation of the Diamond can be placed under two heads, (a) that it is formed immediately from carbon or carbonic acid by the action of heat: (b) that it is formed from the gradual decomposition of vegetable matter. Its spe-







cific gravity is about 3.5; its cleavage, very perfect: its refraction, simple; it is transparent and translucent: infusible, and unassailable by acid. Doubts were entertained as to its combustibility, but experiments made by scientific men, on various occasions, have led to the discovery of the fact that it was only by entirely shutting out the air and therefore the oxygen with which the carbon combines, that the Diamond could be preserved from burning; whereas, by simply letting in the air of which oxygen is a constituent part, it would burn just as well as common coal. The temperature must be very high to burn a whole Diamond. Small Diamonds and Diamond-dusts can be burnt up in a much lower degree of temperature. The crystalline form of the Diamond is either octrahedron (as found in India) or rhombic dodecahedron (as found in Brazil). Its magnifying power being greater than that of glass, it is sometimes used for microscopic purposes. It possesses, addition to its strong refracting properties, the power of reflecting the coloured rays of light. becomes phosphorescent, on its being exposed to sunshine and remains so until it is removed or even when covered with cloth or leather or paper. It is known to be a non-conductor of electricity, but by friction, however, both in the rough and polished state, it becomes positively electric, though only for a short time.





Where found.

THE ancient authorities seemed to agree in considering India to be the place from which Diamond was first supplied to them, but none of them could point out the particular locality where it was first discovered. Pliny says very vaguely that "the gem-producing rivers are the Acesines (Jenaub) and the Ganges." Dronysius Periegetes enumerates the Diamond amongst the numerous gems picked up in the river-beds by the natives of India. as anciently understood, lying to the east of Mount Paropanisus and Ariana. All that Mahomed Ben Mansur knew of the Indian Diamond mines was the fable, that "in the eastern part of India, there is a deep valley inhabited by serpents, where the Diamond is produced, but some believe it to be gotten in the mines of the Jacut (Ruby)."

Amongst the many fables describing the mode in which Diamond could be obtained, is one which says that when Alexander visited the mountain Zulmeah (called by others, Sarandip) where the inaccessible valley of Diamonds is situated, he directed pieces of flesh to be thrown in; vultures picked these up with the precious stones attached to them and dropped them on various parts of the earth, in the course of their flight. Marco Polo, who travelled in India, in the beginning of 13th century, gives accounts of the manner in which Diamonds were then obtained—which agree materially with the tale given above. The first authen-







tic and detailed account of the Indian mines is known to have been written by Jean Baptiste Tavernier, a merchant-jeweller, who had travelled in India in the 17th century. He is known to have visited three Diamond mines; the first being that of Raolconda, a place about five days' journey from Golconda and eight or nine from Visapore; the others being those of Coloor and Sumbulpore. People give Tavernier the credit of being the first European that had visited the Golconda mines. But it is really due to one Methold who had visited them before him, in 1622. Several other mines have since turned up. Karl Ritter has divided the Diamond-producing countries of India into five groups:

1st. The Cuddapah group, on the Pennar River. Diamonds are found in Cuddapah, Condapetta and Ovumpully, Landur, Pinchetgapuda and still further beyond the Pennar valley as far as Gandicotta and according to some, even Gutidrug. The Diamond-beds in the Ovumpully mines are of varying width and the stones are generally rounded. Those found still further west are said to be the best.

2nd. The Randial group, between the Pennar and the Kistna, near Bangapally. The Diamondbeds here are only about a foot thick. Most of the Diamonds of this district lie loose and their forms are of the double pyramid and dodecahedra.

3rd. The Ellore group, on the lower Kistna or the Golconda group. It is worth while disabusing





the minds of many of the impression that Golconda produces Diamonds. Golconda proper no mines, nor any, in its immediate vicinity. stones were found at the base of the Neela-mulla mountains in the neighbourhood of the Kistna and Pomar Rivers; they were then brought to Golconda in a rough state, and there cut and polished. This place becoming the principal mart, it was commonly supposed that the gems were found close by. The Fort at Golconda was the storehouse of the great Diamonds in the Nawab's dominions. The discovery of the mine, which has made Golconda so famous, is attributed to a poor shepherd who came across what he thought a pretty pebble, in the course of tending his flocks. This he bartered to another for a little rice. After passing through several hands, it fell, at last, into those of a merchant who at once knew what it was and discovered the mine, after considerable trouble in searching. It has been mentioned before that Tavernier visited the mines of Raolconda. place comes within the province of this group. Its position is towards the middle tributary of the Kistna. There are other mines to the eastward, on the lower Kistna. The most celebrated amongst these, is the one called "Coloor" by the Persians, and "Gani" by the natives, situated about 15 miles north-west of Masulipatam. This was also visited by Tavernier and was described by him as being the birth-place of the "Great Mogul," which was







said to have weighed $787\frac{1}{2}$ carats in its rough state and 297 after it was cut.

4th.—The Sumbulpore group, north of the Godavery, on the central tributary of the Mahanuddy. This Diamond district extends to the immediate vicinity of Sumbulpore only and between the Rivers Mahanuddy and Brahmine. In the year 1818, the year in which Sumbulpore was annexed to the British territories, a Diamond was found here which weighed 84 grains, and although of only the third quality it was said to have been sold for Rs. 5,000.

5th.—The Panna group in Bundelcund, between the Rivers Sonar and Sone. The Diamond beds in this group lie near Bengal, Behar and Allahabad on the south bank of the Ganges. The most productive Diamond mines in this group were, in 1860, at the village of Sukariah, situated about 20 miles from Panna. Four kinds of Diamonds were found here; 1st Motichul, clear and brilliant; 2nd Manik, verging in color to green; 3rd Panna, with a faint orange tint; 4th Bansput, dark-colored.

There are also Diamond mines in Siberia, Brazil, South Africa, Australia, Borneo, Sumatra, Java, and the Celebes Islands. It had been the theory of Pliny and other ancient naturalists that Diamonds were generally to be found in the gold beds, and this has most remarkably been borne out by facts. Upwards of 50 Diamonds were said to have been found in the gold mine of Adolph, (Siberia), near the Ural Mountains (1830 to 1833).







The discovery of the Diamond mines of Brazil which occured in 1730, was, like that of the Indian mines, the result of chance. Some miners searching for gold in the districts of Serro do Frio, came across certain pebbles of peculiar hue and lustre, which, when carried home, were given to children and used as counters in card play. They fell soon after into the hands of an officer who had spent some years at Goa in the East Indies. Struck with their symmetry and weight, he caused some of these stones to be sent to Lisbon; the Dutch Consul at which place, having examined them carefully, pronounced them to be genuine Diamonds. The Diamond district of Serro do Frio is about 60 miles in length and 27 in breadth. Diamonds have also been found in the remote provinces of Goyazes and Matto Grosso. At one time the prejudice against the Brazilian stones was so strong that the merchants were obliged to export them to India and thence to Europe in order that they might pass for Indian Diamonds. The places which yielded the greatest quantity of Diamonds were Diamantina (in the province of Minas Geräes), Bahia, (the old capital of Brazil,) and the beddings in the Paraguay and its many tributaries.

In 1840, M. Hericart de Thury announced to the Academie des Sciences that Diamonds had been discovered in the River Gumel, in the Algerian province of Constantine, Africa,—mingled with golddust, brought down by the stream. One specimen







weighing 3 carats was bought for the Ecole des Mines, Paris; another of 5 grains for the Musée de L'Histoir Naturelle, (Museum of Natural History) and the 3rd, by the Marquis de Drée. discovery of the Cape Diamonds is connected with a story very much the same as that of Diamonds of other places. Amongst the number of pebbles used as playthings by a child of one Mr. Jacob (a Dutch farmer who had settled near Hope Town), was one pretty stone whose brightness attracted the attention of the farmer's wife. This was afterwards shewn by Mrs. Jacob to a neighbour, named Schalk Van Nickerk, who requested Mr. J. O'Reilly, (a hunter and trader, then passing through the interior of the country,) to ascertain its nature. This pebble being sent through Mr. Boyes to his friend Dr. G. W. Atherstone, of Graham's Town, that excellent mineralogist boldly declared it to be a real Diamond. This was in March 1867, when the Universal Exhibition in Paris was about to open. The first opportunity was taken to present it at the Exhibition, where it remained for the whole period it was open and was, at its close, purchased by Sir Philip Wodehouse, then Governor of the Colony, (and afterwards the Governor of Bombay,) for the sum of Rs. 5,000. The weight of this Diamond was known to be $21\frac{3}{16}$ carats. Several other fields have since been discovered, of which some lie in the Colony of Griqualand, west, which has come under British rule since 1871.





Australia was generally known to be the land of gold, but now it bids fair to be the land of Diamonds too. New South Wales was the only place in Australia which had yielded a sufficient quantity of Diamond, such as to invite exploration. a certain report written in 1851, Mr. E. H. Hargraves, and the Revd. W. B. Clarke, referred to some specimens of gold and to a number of gems including what they called rather vaguely, "a small one of the Diamond kind," which was found in Reedy Creek, near Bathurst. But it was chiefly the Revd. gentleman named above who first drew public attention to the Diamonds of New South Wales. Four specimens were brought to him from the Macquaire River, near Sutton's Bar. in September 1859, and a fifth from Burrendong. in October. In the mean time he had collected Diamonds from Pyramul and Calabash Creeks. was in July 1869, that a company, called that of the Australian Diamond Miner's, began in right earnest the work of hunting after Diamonds. few years ago a Diamond field has been opened up near Binjera, in the New South Wales. This town is situated on the Horton (popularly known as the Big River) and is about 400 miles north of Syd-In 1852 some Diamonds were discovered near Echuca, about 20 miles south-east of Adelaide. In 1862 the discovery of a Diamond in the Ovens district (in Victoria,) was announced by Mr. George Foord. It was a transparent yellow







crystal, with perfect edges, weighing about 2 grains.

The first Australian Diamond ever brought to England was presented by Sir Thomas Mitchell to the Museum of Practical Geology in Jermyn Street. This small stone weighs $\frac{3}{4}$ of a carat and was found near Ophir, west of Bathurst, New South Wales.

The Diamond mines of Borneo are all on the west side of the mountains known as the Ratoos Range.

About the year 1840, some Diamond beds were discovered in the district of Dolodoulá in the Island of Sumatra.

COLORED DIAMONDS.

The Hindus divide Diamonds into four classes, according to their castes. Those that are of clear and pure water belong to the *Brahmana* class; those that are clear and are of the color of honey, to the *Kshetriya*; the cream-colored, to the *Vaisya* and the greyish-white, to the *Sudra*. Diamonds of several colors have been found, principal among which are the Blue, Red, Green, Olive, Black, Firecolored and the Yellow.

The Blue Diamond is a thing of great rarity and, consequently, of very great value. The first Blue Diamond on record was the one bought by Tavernier







in India, in 1642, and sold to Louis XIV. It weighed in the rough, $112\frac{1}{4}$ carats and $67\frac{1}{8}$, when cut and kept in the French Regalia. In 1792, it was abstracted from the Garde-Meuble, where it was kept with the rest of the French Regalia, after they had been seized. All trace of this stone was lost since that period till 1830 when a Blue Brilliant was found in the possession of one Mr. Daniel Eliason, which was perfectly identical with the lost stone in quality and color. It was afterwards traced to Mr. Henry Thomas Hope and was then known as the Hope Diamond, weighing $44\frac{1}{4}$ carats. This difference in weight with the original stone is thought, by some conjecturers, to have been due to reduction by cleavage. smaller part weighing 6 or 7 carats (most assuredly the cleavage of the larger one) turned up in the market in April, 1874. It was purchased in Geneva at the sale of the late Duke of Brunswick's jewels and now passes by the name of the "Blue Drop Diamond."

The only specimen of a red Diamond known to English jewellers is the one bought by Mr. Joseph Halphen of Paris, from a London firm.

A beautiful green stone of 80 grains is said to have fetched Rs. 360, at the sale of Marquis de The King of Saxony is in possession of a green Diamond which forms the button to his state The finest specimen of a Diamond of this color was obtained for Rs. 2,000, about 20 years ago.





It was afterwards sold for Rs. 3,000. It subsequently fell into the hands of a jeweller in Bond Street, who sold it to an American gentleman for Rs. 6,000. Mr. Charles Drayson is its present owner and is known to be quite unwilling to part with it.

Black Diamonds of very great beauty sometimes come from Borneo. They are so remarkably hard that the ordinary Diamond dust cannot make the slightest impression on them. They can be cut or polished by using their own dust. A coal-black Diamond was exhibited at the World's Fair of 1851, by Mr. Joseph Meyer. It weighed 350 carats. A black Diamond was seen about nine years ago, at Charles Nephews & Co., Jewellers, of Calcutta.

The yellow Diamonds are the most common of all.

Mode of Cutting-Indian and European.

THE Diamond, as mentioned before, can only be cut by itself in the form of a fine powder, which is generally prepared from defective stones and from the refuse in cleaving and cutting. This being put into a mortar of hardened steel is beaten until it is fine enough for use. Reference to the fact that Diamond is made to cut itself, is made in the touching verses composed by Charles I, on the night after his condemnation.

"With mine own power, my majesty they wound, In the king's name the king himself's uncrowned; So doth the dust destroy the Diamond."





The art of Diamond-cutting seems to have had its origin in India and that, at a very early period. Indirect evidences might be adduced to support this fact. Garcias ab Horto, (writing in 1565,) remarks that the Indians preferred the Diamonds of the "old rock," particularly those in their natural state, (which they called "Naifes,") to those that were polished by human art. Tavernier in visiting the Roalconda mines in 1665, found a large number of Diamond-cutters at work there. Each of them was furnished with a wheel of steel about the size of a dinner-plate. They worked on only one stone at a time but did so with great rapidity. The principal consideration which guided the Indians in cutting Diamond was that it should lose as little of its size as possible and they would rather leave it in an irregular shape than diminish it to any great extent-a practice, in direct opposition to the system now adopted in Europe.

The discovery of the art of cutting and polishing Diamond by means of its own dust, is attributed to Louis de Berquem, of Bruges, who is known to have constructed, in 1476, a polishing wheel in which Diamond-dust was used instead of Corundum, which the Chinese and Hindus had hitherto employed. But there are several instances to prove that Diamond-cutting was known in Europe, previous to this time. The clasp of the royal cloak of King Charlemagne was set with Diamonds. In the year 1290, a corporate body of gem-polishers







and cutters was formed in Paris; and in 1373. there were Diamond-polishers in Nürnberg. 1434, Guttenberg learned gem-cutting and polishing of Andreas Drytzehen of Strasbourg. Amongst the jewels of Louis, Duke of Anjou, exhibited in the years 1360-1368, were several Diamonds; one of which was cut into the shape of a shield; another, in the form of a round mirror; a third, in that of a lozenge, &c. &c. &c. Of the pupils of Louis de Berguem, some went to Antwerp, some to Amsterdam, and others to Paris. The Diamondcutting made considerable progress in this last place, under the patronage of Cardinal Mazarin. He had ordered twelve Diamonds of the French Crown to be newly cut and these were henceforward known as the "twelve Mazarins."* At the present time, Diamond-cutting is a flourishing trade in Holland and is chiefly in the hands of the Jewish inhabitants. Diamonds are now cut in a variety of forms, the principal among which are the Brilliant, Rose, Table, and the Lasque.

The Brilliant form is said to be the crowning invention in the art of Diamond-cutting. It is the form most esteemed, as it exhibits the peculiar lustre of the stone to the best advantage. But in this there is a larger waste of the material than in

^{*} After they had disappeared after the Revolution of 1830, no one knew what became of them. At the recent betrothal of King Alphonso with Princess Mercedes, an Amsterdam merchant came to Madrid with twelve Diamonds which, he said, he was commissioned to sell by an owner who wished his name to be kept secret. Competent authorities have, upon careful examination, pronounced them to be the long lost Mazarins.







any other mode. This style of cutting was introduced by Vincenzio Peruzzi (or Vincente Perggi,) of Venice, in the latter end of the 17th century. "The Brilliant is formed of two truncated pyramids by a common base; the upper pyramid being much more deeply truncated than the lower; the upper side of the stone presenting a table of 32 facets inclined under different angles, and the underside, 25 facet. The correspondence between the upper and lower facets is arranged so as to multiply the reflection and refraction." Some explanation is necessary to render the technical names of the several parts of a cut Diamond intelligible to the lay reader. "The plane surface at the top is called the table; the bottom plane is called the culet or culette; the junction of the upper truncated pyramid with the lower is the girdle; and the lower pointed portion is called the parilion. The facets are small triangular spaces or planes." The Brilliant is said to be single, double or old English cut (otherwise called the star single-cut), according to the number of facets. The English cutters make the girdle rather sharp but the Dutch make it broader. Brillonéts are those stones which are cut as Brilliants on the surface but have neither culette nor girdle. These are very rare.

The "Rose" cut has been in use since 1520 and resembles an opening rose-bud. It is formed by covering the rounded surface of the stone with equilateral triangles, placed base to base, making





the figure of a rhomb. The number of facets together with their position determines the different names of the Rose. Thus 24 facets make a Dutch Rose; the same number, but less raised, a Brilliant Rose; 36 facets, a Rose Recoupée &c. The circular stones are best suited for "Rose" cutting.

The Table-cut is made of those stones which, with considerable breadth, are of very trifling depth. It is produced by a series of diminishing four-sided planes below the girdle.

Lasques are formed from flat or veiny Diamonds and are said to be manufactured in India. The Indian cut has according to some, an upper part, lower part, and girdle. Its usual form is that of a single-cut Brilliant. But as the effects produced are not of much consequence, the stones are generally re-cut.

The point-cut was well known to Kentman who wrote in 1562. Some precious stones may either be cut as four-sided pyramids, or are so formed by polishing the faces of the octahedron and making them exactly true and regular. This style is only found in old ornaments.

Engraving.

According to Blum, the discovery of the art of engraving the Diamond is assigned to Ambrosius Caradosso, a Milanese, and engraver to the Mint of Pope Julius II. He is said, in the year 1500, to have





executed upon a Diamond the figure of a Father of the church. But Paolo Morigia gives the credit of the discovery to Trezzo, the famous cameo-artist of Milan and asserts that his first attempt was the Coat of Arms of the Emperor Charles V. Clement Birago, a pupil of his, is known to have engraved upon a Diamond a portrait of Don Carlos, intended as a betrothal present to Anna, the daughter of the Emperor Maximilian II. He is also said to have engraved on Diamond the Spanish Arms as a signet for the same prince. One Jacobus Thronus (believed to be a Hollander) engraved on a Diamond, the Arms of Mary, Queen of Scots. Among the Hope precious stones, there were several engraved Diamonds. One of these had the bust of the Emperor Leopold Ion a large Table-Diamond. Costanzi, who flourished at Rome in the beginning of the 18th century, is known to have executed several engravings on Diamonds, prominently amongst them, a Leda and the heads of Antonius and Nero.

In the collection of Her Most Gracious Majesty, our Empress, is preserved the signet-ring of Charles II, when he was the Prince of Wales; the device of which is the ostrich plumes between the letters C and P, very neatly cut upon a large yellow Diamond, a table $\frac{1}{2} \times \frac{7}{8}$ inch in dimensions, quaintly fashioned into a heater-shaped seven-sided shield. Louis Siries, gold-smith to Louis XV, is also said to have done some engravings, one of which is reported to be a very minute head of Julia, (daughter







of Titus,) executed upon the upper table of a regularly cut Brilliant.

The price of Diamond. Its flaws and defects; mode of testing.

THE price of Diamond, as of any other commodity, depends entirely upon the law of supply and demand. It is therefore well nigh impossible to fix a price which would be a safe guide to the intending purchaser, for all times. Approximate prices can, however, be given, when the market is supposed to be normal. In no other object of commerce, there are so many faults and imitations, of which the inexperienced should beware, as in Diamonds and other precious stones. The value depends materially upon the degree of perfection in which the articles are found when offered for sale. Amongst the most frequent faults are (1) feathers, i.e., little rents or fissures in the inside of the stone. (2) clouds, i.e., gray, brown, and white specks, which look very much like clouds. These give great deal of trouble when working the stone. (3) sands, or little seed-like bodies within the stone, of white, brown and red color. These are also called dusts, when very fine and found in large number in a stone.

A Diamond, wanted to be sold to the best advantage, must be perfectly free from the faintest tinge of color of any sort; must have no flaws, or







specks or fissures in any part; must be bright and lively and free from what is technically called "milk" or "salt," which are semi-opaque imperfections in the body of the stone. To ascertain if any of the above flaws exists, the stone should be breathed on until its lustre is temporarily destroyed and then the imperfections will be apparent. stone must also be well-proportioned and properly Even to the least experienced, the lustre of a Diamond when cut is sufficient to establish its identity. Some colorless Topazes, Emeralds, Sapphires and the white Zircon have sometimes been passed off as Diamonds. If the surface of the stone be the least scratched by the action of a fine file, it is not a Diamond. The rays of the sun easily pass through other gems, but in the Diamond they are refracted by the surface, which causes the superior brilliancy. According to Mr. Milburn, if the coating of a rough Diamond be smooth and bright with a little tinge of green in it, it is not bad; but if there is a tincture of yellow with the green, it is a soft, greasy stone, and will turn out Though the specific weight of the Diamond is nearly the same as that of the Topaz, the one can be distinguished from the other by its electrical properties. The Topaz retains its electric powers several hours after it has been developed by friction, whereas the Diamond loses it in the course of half an hour. The Diamond can, by its weight, be distinguished from colorless Corundums,







whose weight exceeds that of the former in the proportion of 8 to 7.

The jewellers of old used the "tincture" test to distinguish the real Diamond from the spurious, of which so many were then current, as the white Sapphire, the Citrine Beryl, and the Crystal cut into a pyramid. This tincture was a varnish made of ivory-black and mastich applied to the back of the stone, which, if it was a real Diamond, became all the more brilliant on account of this back ground; if any other gem, it became dull and lustreless showing the black through its substance. Some used the oil exuding from a roasted grain of wheat darkened with ivory-black, others backed the stone with a bit of black silk. The "Novas Minas" white Topaz of Brazil, known there as the "Slave's Diamond," is now the only stone which has any chance of being passed off for a Diamond. Though it is very hard and brilliant, it very much lacks "the Adamantine lustre and iridescence."

The terms, first water, second water, mean only first and second quality. Perfect Diamonds should be as clear as drops of the purest water; and they are of the second and third water, according to the degree of clearness in them, until decidedly yellow or brown, when they come under the category of colored stones. These colored Diamonds, on score of their rarity, are sold at fancy price.

Diamonds are generally valued per carats and it is necessary to explain the term. The word is





probably derived from the name of a bean, the fruit of a kind of Eruthina, which grows in Africa. tree which gives this fruit is termed by the natives "Kuara" or the sun. These fruits, when dried, were afterwards imported into India and here used for weighing the Diamond. They have now been universally adopted.

4 grains make 1 carat.

... 1 penny-weight. 6 carats or 24 grains

... 1 ounce troy. $151\frac{1}{2}$ carats

But a carat is not of the same weight in all countries; for instance, in England it is equal to 205,4090 milligrams; in France, 205,5000; in Borneo, 105,000; in Madras, 207,3533, &c. &c.&c.

The following is an approximate price-list as given by standard authorities.

Diamonds below 2 grains.

Inferior, from ... £ 4 to £ 6 per carat. Medium ... £ 6 to £ 8 Good ... £ 8 to £10 Fine ... £10 to £12 If over 2 grains, Fine £12 to £15 Over 3 grains £15 to £20 ,, Of one carat

£20 to £23

But the valuing of rough Diamonds is not to be made according to the above standard. The form and proportion of the crystal must first be taken into consideration, for, on these only, the loss of weight in cutting chiefly depends. Then, care must also be taken to distinguish the degrees of color and







the purity of the specimen. The best forms to select would be the octrahedral and the rhombododecahedral. In valuing large rough Diamonds and specially those that came from the Cape, the fact should always be remembered that tints of color may be brought out in the cutting of a stone, which do not at all appear in its rough state; perfect polish and the power of reflection natural to the stone intensify any tint of yellow existing in it.

The Supernatural and Medicinal Properties attributed to the Diamond.

THE mythology of all nations in the world attributes supernatural influence to almost every thing in nature. Trees and fields, temples and stones, mountains and rivers,—all were supposed to be the abode of good or evil spirits. Anselm Bœce De Boot, physician to the Emperor Rodolph and Maximilian II, wrote in 1664, as follows: "From their purity, beauty, and brilliancy, it is most probable, gems were selected as receptacles for good spirits, even as filthy, stinking and frightful places are usually the abodes chosen for evil and unclean spirits." Diamond being of all stones, the purest, hardest and most brilliant, it was naturally considered to be the most powerful in spiritual influence. was consecrated to all that was holy and heavenly, and was known to have been a powerful charm, and, when under the influence of the planet Mars,





productive of great success. For many centuries past it was thought to be a most potent talisman against poison, pestilence, witchery, insanity, evil spirits and night-mare. It was esteemed a safeguard to virtue. Though it had the power of preventing evils, as above stated, on external application, (i.e. if worn,) it had a quite disastrous effect, if taken internally. Diamond-dust had such a fatal poisonous property that nothing could save the unfortunate who swallowed it. The Diamond was also supposed to bestow victory, fortitude and strength of mind. It softened wrath and strengthened wedded love; hence it was called the stone of reconciliation. It was also an infallible test of conjugal fidelity. A Diamond placed under the pillow of a married lady, without her knowledge, would make her reveal, during sleep, any secrets of her life, which she might have to conceal from her husband. Though it was believed to be incombustible, its lustre and other properties were supposed to be affected by heat. Hence, perhaps, the ancient practice of taking Diamond rings off the finger at bedtime, and putting them in a cup of cold water or on a marble, or some other cool surface. To the Ancients, Diamond represented inexorable justice and immutable fate. Hence the judges of the Hades were described as having hearts and bosoms of Adamant. The clouds which covered Destiny were also described as being of Adamant. To the moderns, it is a symbol of inno-







cence, constancy, faith, strength, &c., &c. A gem, (supposed to have been a Diamond), worn in the girdle, by Aaron, the High Priest, had, according to a Jewish legend, marvellous properties. would become dark and dim, if brought into contact with a man, actually guilty: if the accused was really innocent, it would shine on with increased brilliancy. If the sins of the Hebrews were to be punished with death, the stone would put on a bloody color. But the most absurd and unique virtue, attributed to Diamond-and to no other gem-was the power of multiplying its Bœtius De Boot makes serious menspecies. tion of a lady who possessed two hereditary Diamonds, which produced several others and thus left a generation.

CELEBRATED DIAMONDS.

The Koh-i-noor.

PERHAPS there is no other jewel in the world which is so much renowned for its antiquity and for the interesting romance with which it is connected as the Koh-i-noor. It is so old that some attribute its ownership to Karna, the king of Anga, who first discovered it near Masulipatam, in the bed of the Godavery, 5000 years ago. Other traditions speak of Rajah Vikramaditya of Oujien (56 B. C.), as having been the happy possessor of it. All subsequent trace of this stone was lost till it was taken





from the king of Malwa by Ala-ooddeen, in 1304. After the defeat of the Pathans by the Moguls in 1526, it remained in possession of the latter till the invasion of Nadir Shah, When Nadir Shah came to take possession of Delhi, Mahamood Shah, the then Emperor, had to give up every valuable thing in his treasury, except this jewel, which he used to keep concealed in his turban. A woman in the harem betrayed this fact to Nadir, who, strongly bent upon having it, planned a grand festival in which both the conqueror and the conquered were to meet and swear friendship. Nadir Shah proposed an exchange of turbans and thus managed to get possession of the stone. It was he who gave it the name Koh-i-noor, or the "mountain of light." From him it descended to his son, from whom Ahmed Shah, the founder of the Cabul dynasty, succeeded in getting it, by professing friendship in his time of distress. Shah Shujah, the son and successor of Ahmed Shah, being driven out of his kingdom by his brother, Mahmood, took away the Koh-i-noor with him and made it the companion of his exile. Runjeet Sing, the celebrated "Lord of the five rivers," contrived to get him at Lahore, where he was at once put to prison and given to understand that his release could be effected if he would part with the jewel. Suffering with his wife and family, all sorts of privation and misery at the hands of Runjeet, Shah Shujah at last consented to make over the thing to him. This was done on







the 1st June, 1813. Struck with the brilliancy of the stone, Runjeet asked him, "at what rate do you value it;" to which he replied, "good fortune: and that is always the property of those who had vanquished their enemies." The Diamond was now set in a bracelet and was always worn by Runjeet. People attached bad luck to the possessor of this stone, for it would appear that all who had it in their hands subsequently came to grief, and an attempt was therefore made to make it over to the idol Juggernath of Puri. This was never done and it was occasionally worn by his successors. the murder of Shu Sing, it was deposited in the Lahore treasury, until Dullip Sing, (the son of Runjeet), was stationed at Lahore with an English Regent. When Punjab was annexed to the British Crown, all the state-jewels of Lahore were confiscated by the East India Company. It was stipulated that the Koh-i-noor should be presented to the Queen. It reached Her Majesty on the 3rd June 1850 and then weighed 186 carats. original weight, when it was with Arungzebe, was 793 carats. This reduction was due to the unskilfulness of Hortensio Borgio, a Venetian lapidary, who had been entrusted with the cutting of it. The Emperor had been so much displeased with his work that instead of paying for all his labors, he dispossessed him of his property and was with great difficulty persuaded to leave him his head. stone created quite a sensation in the great





Exibition of 1851, where it was valued at 14,00,000 of Rupees. The re-cutting of this stone being thought necessary, Herr Voorsanger of Amsterdam was selected to do it. The operation (conducted by steam) which commenced on the 6th July, was completed at the end of 38 days of 12 hours each, and is said to have cost 80,000 Rs. The Koh-i-noor has now assumed the form of a regular cut Brilliant, weighing $106\frac{1}{8}$ carats and is one of the principal jewels in the British Crown.

The Great Mogul.

This stone is often confounded with the Koh-inoor. It is reported to have been found in or about 1650, in the Coloor mines, a place about 7 days' journey from Golconda. Meer Joomla, by birth a Persian, was the Grand Vizier and General to the King of Golconda. He had amassed enormous wealth, (principally by farming, under other names, the Diamond mines of the place,) and thus made himself the eye-sore of his master, who had on one occasion openly threatened his life. The Vizier sought and obtained the aid of Prince Aurungzebe, then Governor of the neighbouring provinces, and with his co-operation, surprized the King of Golconda and was about to make him surrender when the Prince was re-called by his father the Emperor Shah Jehan. Meer Joomla ingratiated himself into the favor of the great Emperor by making him magnificent presents, amongst





which was the "Great Mogul." Tavernier relates that he saw this Diamond at the Court of Aurungzebe, and that it weighed at that time 787 carats. It was at this stage of its history that the stone has come to be confounded with the The same story about the cutting Koh-i-noor. by Borgio, about Nadir Shah's trick in obtaining it, &c., is repeated in connection with this Diamond. Some conjecture that Tavernier has described one large stone as having been seen by him in the Court of Aurunzebe. If there had been another of the same weight and size, it must have surely been noticed by him. Hence it is thought that the Koh-i-noor and the Great Mogul are merely convertible names. Others suppose that the Great Mogul was a personal present to the Emperor Shah Jehan and most naturally it remained in his possession when he was in prison,—at the time of Tavernier's visit, and that consequently that traveller had no opportunity of examining it. They further believe in its existence amongst the regalia of the Persian Crown and in its having been designated there as the "Derya-noor," or "the ocean of light." But the drawings of the Shah's Diamonds which have lately been sent up to England, do not confirm this assertion. There has another theory been started which makes Borgio cut up the big stone into three; the one of which is now known as the Koh-i-noor; the other, as the Great Mogul, and the third was captured amongst the jewels of some petty Indian





Chief. But the description which Tavernier gives of the character of the stone he saw, differs materially from the actual character of the Koh-i-noor. "It was circular, rose-cut, very deep, of fine water, with but one little crack externally and one flaw internally and the work upon it that of an European lapidary; whereas the Koh-i-noor was in outline an irregular ellipse, facetted to no definite pattern, very flat, exhibited no more water than a bit of rock crystal, had several flaws, besides a large deficiency or fracture at one end and rude grooves cut in the sides, whilst all the work upon it was of that peculiar character, which the least experienced eye would detect at once as that of a Hindu Diamond-cutter."

There is one Diamond of the name of *Derya-noor* which is said to be in the possession of Nawab Abdool Gunny of Dacca, East Bengal, but whether it is identical with its great name-sake, we are not in a position to state.

The Pitt or Regent Diamond.

If not the largest, the Pitt or Regent Diamond is generally looked upon as the most perfect and beautiful Diamond in existence, remarkable alike for its shape, proportion and fine water. It weighed 410 carats in its original state. According to the story with which its history is connected, it was found by a slave at Puteal (about 135 miles







from Golconda) and kept concealed in the calf of one of his legs which he had purposely wounded and bandaged, for its reception. An English sailor promised to find a purchaser for it, provided he was paid half the value. But bent upon having the whole of the proceeds to himself, he lured the poor slave on board his ship and pitched him over the water. This Diamond was sold by him to a celebrated Parsee merchant named Jamchand, for the sum of 10,000 Rupees. Jamehand sold it. in 1701, to Mr. Thomas Pitt (grand-father of the Earl of Chatham,) the then Governor of Fort St. George, Madras, for 1,25,000 Rupees. The operation of cutting it into a perfect Brilliant, which was finished in two years, reduced its weight to 1367 carats and cost him Rs. 50,000; 35,000 of which. however, was recovered by selling the fragments. The Duke of Orleans, Regent of France, bought it of Pitt for 13,50,000 Rupees. This Diamond was stolen from the Garde-meuble in 1792, but was restored to its possessor most mysteriously. The Republic then pledged it to a Berlin merchant from whom it was again redeemed. The Emperor Napolean I. used to wear it in the pommel of his sword and always considered it to be the kev-stone to all his future greatness. It was shown in the French Exhibition of 1855.

The Orloff or Amsterdam Diamond.

This stone formed, according to one account, one of the eyes of a Hindu God, and was stolen away





by a French Grenadier of Pondicherry, who had, with that object in view, taken refuge with the Brahmins and professed their faith for some time. It was afterwards sold for Rs. 20,000 to an English sea-captain who resold it to a Jew for 1,20,000 Rs. He. again, sold it to the Armenian merchant Shafras from whom it was purchased at Amsterdam. in or about 1772, by Prince Orloff, for presentation to Catherine II, at 9,00,000 of Rupees and a life-annuity of 40,000 Rupees and the grant of a Russsian nobility to the seller. Another account savs that it was one of the stones taken away by Nadir Shah from the Moguls; that it had a prominent place in his throne; and that it had, after his assassination, passed into the hands of one of his Affghan Generals and thence to the Armenian merchant Shafras. This stone resembles in its outline the "Great Mogul," as described by Tavernier, so closely, that, but for the difference in the weight, it may be taken for that long lost Diamond. third account supposes it to have been brought to Russia by Lazarus Lazareff, the head of the Armenian family of that name, and grand-son of Manouk Lazareff, treasurer to Shah Abas II. Hence it is called by some the "Lazareff" Diamond. It is now placed in the Russian Imperial sceptre and weighs 1941 carats, and, like the Koh-i-noor, has the underside flat and is rose-cut. Its size is about that of a pigeon's egg. The water is of a rather yellowish tinge.







The Nassuck Diamond.

This stone was originally found among the spoils captured from the Mahrattas at the conquest of Deccan, under the command of the Marquis of Hastings. It was then as large as a good-sized walnut and weighed $89\frac{3}{4}$ carats. But when re-cut, in London, as a Brilliant, by order of its proprietor, the Marquis of Westminster, it weighed $78\frac{3}{4}$ carats. It is very bright and pure but is very badly shaped. The East India Company had sold it to Messrs. Rundell and Bridge, who, on their retirement, sold it by auction to a jeweller for 72,000 Rs., though it was valued at three lacs.

The Nizam.

This stone is said to have been found at Golconda and is now almost in its primitive condition. It weighs 340 carats. It was by some ominous accident broken as under in the year of the Indian Mutiny.

The Shah of Persia.

Cosroes, the younger son of Abass Mirza Shah, of Persia, presented this stone to Emperor Nicholas of Russia. It weighs 86 carats and is perfectly pure and brilliant. It is only partially cut; many of its natural octahedra being preserved. The interest of this stone is enhanced by the Persian







inscription it bears of its former owners, engraved as follows:—

EK-BEK SHAK,
NIZIM SHAK,
FETH ALI SHAK,

Lords of Irostan.

Its shape is that of a long prism.

The Pacha of Egypt.

ALL that is known of this stone is that it was found in the possession of Ibrahim Pacha. It weighs 40 carats; is of an octagonal form, Brilliant-cut and of very good quality.

The Mattam Diamond.

This stone belongs to the Rajah of Mattam, Borneo, and is at present the largest Diamond known; its weight being 367 carats. It was found at Landak, Borneo, in the year 1787. It is eggshaped; is of pure water and has a small indentation at the short end. Notwithstanding the many battles fought for it, this precious stone is still in the possession of the Rajah. The Dutch Governor of Batavia offered for it five lacs of Rupees, and two men-of-war, with stores and ammunitions complete; but the owner refused to part with it on any account, considering it to be a talisman, on the possession of which depended the fortune and hapiness of his family. The Malayese believe that all kinds of disease can be cured by means of the water in which this Diamond has been steeped.



The Sancy Diamond.

THE early history of the Sancy Diamond is not minutely traceable. According to some, it came from India and, in 1479, fell into the hands of the King of Portugal, Don Antonio, who, on the occasion of his visit to England, made with the purpose of securing assistance in prosecuting his claims to the throne, which was then in the possession of the Spaniards, pledged it with Queen Elizabeth for £5,000 sterling. To avoid further importunities from the Portugese Pretender for more money, the Queen returned the Diamond to him, giving up all claims to the sum she had advanced. This stone was subsequently sold by him to Nicholas de Harlay, Baron de Sancy, a Huguenot gentleman. From this owner the stone has assumed the name "Sancy." It was borrowed of the Baron by Henry IV of France. The messenger sent in charge of this valuable stone was waylaid and murdered by robbers, but, acting up to previous arrangements, he managed to elude them, by swallowing it. It was afterwards taken out of his stomach by the Baron, in whose family it remained for more than a century. It was next traced to James II of England, who, in his exile (1688) carried it to France. There it was sold to Louis XIV for 2,50,000 Rupees. Louis XV wore it in the clasp of his hat, at his coronation. In the French revolution of 1792, along with various





other Crown jewels of France, the Sancy was lost, until 1830, when it was found in the possession of a French merchant. In 1838, the Prince Paul Demidoff bought it at 7,50,000 Rupees. In 1865 Messrs. Garrads of London purchased it of the Demidoff family, for the late Sir Jamsetjee Jeejeebhoy of Bombay, at two lacs of Rupees.

This stone is almond-shaped, of very fine water and weighs $53\frac{1}{2}$ carats. The cut is evidently Indian.

Charles the Bold's Diamond.

According to some, the Sancy is quite a distinct thing from what is called Charles the Bold's Diamond. Those who confuse the one with the other, say that the Sancy, after it was brought from India, fell first into the hands of Charles the Bold, Duke of Burgundy, and then into those of the king of Portugal. Those who want to establish a separate indentity for "Charles the Bold's Diamond," affirm that this was one of the three Diamonds which Charles the Bold had given to Louis de Berquem to be experimented upon in rose-cutting. After the defeat at Granson, the Duke's Diamond was found by a common soldier, enclosed in a valuable box. Prefering to have the latter, the soldier threw away the stone, but subsequently changing his mind, picked it out from under a waggon and sold it for a florin to a priest who, in his turn, sold it to a citizen of Berne for







Jacques Fugger, a famous merchant, three francs. of the Nuremburg family, bought it of the Bernese Government. From this family it came into the hands of Henry VIII, whose daughter Queen Mary, brought it, in her dower, to Phillip II. We have already noticed that a large Diamond was pledged by Don Antonio with Queen Elizabeth, and from this portion of the history, the Sancy, (which was evidently the stone pledged by Antonio) is confounded with the Burgundian Jewel. It was a matter of utter impossibility for the latter to have passed into the hands of Antonio-one, who was known to have been the mortal enemy of Phillip's. By a strange chance, it came back to the greatgrand-son of its original owner, Charles the Duke of Burgundy. Its present whereabouts known.

The Florentine Brilliant.

This stone was, according to a tradition, bought for a trifle at a curiosity stall in Florence, being then considered as nothing more than a yellow crystal. The history of this stone is sometimes confounded with that of Charles the Bold's. The same story regarding its being found by a soldier and sold by him to a priest is also repeated in connection with the history of this stone. The fact is, Charles the Bold had three Diamonds of very great beauty and value, and it appears that the history of the two is confused with one another. The third is the Sancy. We have already noticed the







story in connection with what we have called Charles the Bold's Diamond. The story about the other stone, which we will designate as the Florentine Brilliant differs from that of the other, from the point, where the gem was sold by the priest. Instead of its being purchased by Fugger (as in the case of the other stone), the story makes it come into the hands of a rich Bernese merchant. Bartholomew May. In 1482, it was sold to a Genoese, who, in his turn, sold it to Ludovico Sforza the Moor, Duke of Milan, for 14,000 ducats. After the fall of the house of Sforza, this stone came into the possession of Pope Julius II, who presented it to the Emperor of Austria. It is also called the Grand Duke of Tuscany or the "Austrian Yellow," owing to its decidedly yellow color, notwithstanding which, it is valued at 10,50,000 Rs. It is cut as a double-rose and weighs $139\frac{1}{2}$ carats.

The Braganza.

This stone was discovered in Brazil, in 1741, and weighed, in its rough state, 1680 carats. It is of the size of a hen's egg, of deep yellow color and is reported to be valued at 58,35,00,000 Rupees. But doubts are entertained as to its being a Diamond, it being generally believed to be a white Topaz, and as the Portuguese Government, of whose Crown Jewels it forms a part, would not suffer it to be cut or even examined, there is very little chance of the doubts being cleared up.







The Pigott Diamond.

This stone was taken away from India by Lord Pigott. Over fifty years ago it was sold in a lottery for three lacs of Rupees and was subsequently bought by Messrs. Rundell & Co. for 60,000 Rupees. When sold to the Pacha of Egypt, it fetched 3 lacs of Rupees again. It is Brilliant-cut, of a beautiful shape and weighs $82\frac{1}{4}$ carats. The name of the present owner is not known.

The Hope Diamond.

A DETAILED account of this stone has already been given under the heading of "Coloured Dia-This beautiful and most important blue monds." Diamond was supposed to have been taken from India by Tavernier and sold to the French Government, wherefrom it was stolen, during the Revolution. It was subsequently traced to Mr. Eliason and from him to Mr. H. T. Hope. Its original weight was 112_{10} carats; when stolen from the French Regalia, it was 67; and being subsequently re-cut as a Brilliant and thereby reduced by cleavage, (which has given us its counter-part, the blue Drop Diamond,) it weighed 44½ carats. figured a great deal in the Great Exhibition of 1851.

The Eugènie Brilliant.

This perfect Brilliant was purchased by the late Emperor Napolean III, and given to the Empress







Eugènie. We are not certain whether it is still in her possession, as the greatest portion of her valuable jewelry has been sold to His Highness the late Maharajah of Puttiala, through Messrs. Hamilton & Co., Jewellers, of Calcutta. It is of an oval shape and blunt at one end and weighs 51 carats.

The Cumberland Diamond.

This stone was bought by the City of London for a lac of Rupees and presented to the Duke of Cumberland, after the battle of Culloden. It was one of the stones claimed by the Hanover Crown, to whom it has been restored by our Most Gracious Majesty. Its weight is 32 carats.

The Star of the South.

This is the largest Diamond ever found in Brazil. It was found in July 1853, by a poor Negro who was at work in the mines of Bogagen, in the province of Minas-Geräes. When rough, it weighed 254½ carats, but the cutting of it into a Brilliant has reduced it to 125 carats. It is a Diamond of the purest water and under light exhibits a lovely rose-tint. It was purchased by M. Halpen, or according to some writers, by Mr. Coster of Amsterdam, who is also reported to have cut it. It was shown in the London and Paris Exhibitions.

The Polar Star.

This Brilliant was at one period owned in England, but is now to be found among the Russian





Crown Jewels. It is remarkable for its purity and lustre, and is said to weigh 40 carats.

Other large Diamonds.

The Portuguese Crown possesses many large and brilliant Diamonds, foremost among which is a Brazilian stone found in 1775 by a Negro, in the bed of the River Abaité, near Rio Plata. The following is the romance connected with the discovery. Three Brazilians, convicted of some high misdemeanour were banished to the interior of Brazil, for life. These unfortunates used to beguile their time by searching for valuable matter. One day they came to the River Abaité, the bed of which had lain dry for sometime, owing to scarcity of rain. they chanced to see a Diamond, nearly an ounce in weight, which, with the help of a priest, was taken to the Governor of Villa Rica. All the officers of this place having been satisfied to the nature of the stone, the Governor restored the exiles to freedom and had the gem sent to Rio de Janiero and thence to Lisbon. Its weight was then 138½ carats. Some conjecturers connect this story with the discovery of the "Star of the South," with which they identify this stone.

Some very large Diamonds have come from the Cape. One was the "Star of South Africa," weighing in the rough $83\frac{1}{2}$ carats and after cutting, $46\frac{1}{2}$. The largest stone yet discovered here is what is now famous as the "Stewart Diamond," which







weighed in the rough state 2883 carats. It was consigned to Messrs. Pittar Leverson & Co., who have also in their possession the so-called "Fly Diamond" which was also discovered in this place by one Antonie. The "Dudley Diamond" weighing about 46 carats is another important stone, come from the Cape. It is triangular in shape, very brilliant, perfectly free from color and very difficult of distinction from an old Indian stone. was sold by Messrs. Hunt and Roskell to the present Earl of Dudley.

The Brazilian Government is in possession of some very large and curious stones.

The Spanish Government is also very rich in Diamonds and other jewels.

In the Russian Treasury is a brilliant Ruby-colored Diamond of 10 carats, bought by Paul I, for 1,00,000 roubles.

Mr. Dresden, a London merchant, possesses a drop-shaped Diamond; one of the finest stones at present in the market. It was lately found at Brazil; is perfectly free from flaws and has extraordinary brilliancy. It weighs $76\frac{1}{2}$ carats.

In the "Green Vaults" at Dresden, there is a green Diamond which once belonged to Augustus the Strong. It is remarkably beautiful and weighs 481 carats. Here are also some very beautiful parures, and four very valuable yellow Brilliants, the largest of which weighs 1171 and the smallest $52\frac{1}{2}$ grains respectively.







There are two large Diamonds with the Turkish Government, one of which is of 84 and the other of 147 carats in weight.

There are several Diamonds of more or less brilliance and weight, in Burmah and China; also in the possession of some of the native princes and noblemen, in India (especially at Hydrabad, Baroda and Puttiala.) There are some very beautiful and costly Diamonds in Bengal, particularly, some with the Maharajah of Burdwan, Nawab Abdool Gunny C.S.I. of Dacca* and Maharani Surnomoye of Cossimbazar.† Some of the rich families in Calcutta have Diamonds, conspicuous alike for their size and brilliance; amongst which may be mentioned the stones set in finger-rings, belonging to the estates of Babu Kally Kissen Tagore, Coomars Raj Coomar Roy and Kally Kissen Roy, and the late Babu Khelut Chunder Ghose. There are some very good Diamonds in the Mullick Family. There are also some valuable Kanthás or necklaces, to be found with the natives of this country, amongst which may be cited those in the possession of Rai Dhunput Singh Bahadoor of Azimgunj, Rai Budridas Mokeem (Jeweller to His Excellency the Viceroy and Governor-General of India) and of the estate of the late Babu Khelut Chunder Ghose.





^{*} Used by the Nawab's son as an armlet.

[†] Also with Joshee jee of Benares, and in the estate of the late Juggut Sett of Moorshedabad.

[‡] This Diamond shows a rosy color.

Several remarkable Diamonds are to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Jotcendro Mohun Tagore Bahadoor, of Calcutta. Amongst those that set in are rings may be tioned the "Tagore Brilliant," a Diamond about 55 Ratis* in weight, of the purest water and very great brilliance, free from any flaws whatever: the "Sukh-tara" (or the Morning Star), very white and of a round shape: the Arundhati (the Sanskrit name for a certain star), flawless and of exquisite beauty and purity; and the Banga-tárá, (or the star of Bengal,) rose-cut, of great lustre, and of a lovely rose-tint; without the slightest spot or flaw in it. There is a brilliant Cape Diamond, (also set in a ring,) circular in shape and weighing about 34 Ratis. The large Diamond of about 50 Ratis, which is set in the Seerpaich or head-ornament of the Maharajah is a specimen of rare beauty. A splendid greenish Diamond, belonging, according to the jewellers, to the Bunsput species, (which are believed to bring good luck to the owner,) bought of the late Sooklal Johury, adorns the crown of the Maharajah's family idol. There is also in the Maharajah's estate a magnificent kanthá, consisting of 19 brilliant Diamonds, the largest of which weighs about 37 Ratis and the smallest, about 6. It has been valued by the jewellers at 80,000 Rupees.





^{*} A Rati is one-eighth less than a carat.



There is also in the possession of the Hon'ble Maharajah a red Diamond, called the "Cingalese Red," set in a ring, and weighing about 10 ratis. The stone is so red that no layman would know it for anything else but a Ruby. But, in fact, it is a rare specimen of a Diamond, conspicuous alike for its brilliancy and flawlessness, and without having the faintest tinge of what are called the "milky" imperfections, so common in the Ruby. It is said to have been discovered in a mine at Cevlon, and to have remained for sometime in the possession of a respectable family of that place. Johurlal Mokeem, son of the late Boodh Sing Mokeem of Delhi, had this gem brought to him by a Chulia (petty dealer), and has subsequently sold it to the Hon'ble Maharajah.





श्रय माणिकंत्र।

मूलम्।

मिन्नी रावणगङ्गायां सिंहले जन्म नीर्तितं। चेत्राणि चीणि तस्य स्युर्गाणिकास्य जगुर्नुधाः ॥ १५२ ॥ सिंहले तु भवेद्रकां पद्मरागमनुत्तमं। पीतं कालपुरोङ्ग्तं कुक्विन्दिनित स्मृतं॥ १५३॥ च्याक्षेत्रच्चायममुं सौगत्धिकं विदुः। तुम्बुरे क्षायया नीलं नीलगत्धि प्रकीर्त्तितं॥ १५॥॥

माणिकका वयान।

तर्जमा।

रत्नपार्ची पण्डित लोक कहते हैं, सिन्धु, रावणगङ्गा श्रीर सिंहल देश इन्ही तिन जगहों में माणिक पयदा होता है। १५२।

कोई कोई पण्डित कहते हैं, के सिंहल, कालपुर श्रीर तुम्बुर देश यही तिन जगहोमें माणिक की खान पाद जाति है, उसीमेंसे सिंहल देशमें जो माणिक पयदा होता है, वह वज्जत् उत्तम, श्रीर स्नुख रङ्ग, कालपुरमें जो माणिक पयदा होता है, उस्का पीला रङ्ग, श्रीर उस्की कुरुविन्द कहते हैं; श्रार श्रशोक फुलके पञ्चवके समान रङ्गदार होए, तो उस्को सौगन्धिक वोन्ते हैं; श्रीर तुम्बुर देशमें जो माणिक पयदा होता है, उस्का रङ्ग नीला होता है, श्रीर उस्को नीलगन्धि कहते हैं। १५ ३ १९ ४ १





RUBY.

TRANSLATION.

152. According to some authorities, the ruby is found in Ceylon and the lands bordering upon the Indus and the Rávana Gangá.

153—154. According to others, ruby quarries are found in Ceylon, Kálpur and Tumbura. The rubies of Ceylon are beautifully red; those of Kálpur are yellow, and are called kuruvinda (rubicelle); and those of Tumbura are furnished with a blue shade and are hence called nilagandhi (violet ruby). That ruby which shoots a gleam green as the leaf of the asoka goes by the name of saugandhika (spinel).

মাণিক।

অনুবান।

কোন কোন রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিত কহেন, সিন্ধুনদ, রাবণ গঙ্গা ও সিংহল দেশ এই তিন ক্ষেত্রে মাণিক্য বা পদ্মরাগ উৎপন্ন হয়। ১৫২।

কেহ কেহ বলেন, সিংহল, কালপুর ও তুদ্ধর দেশ এই তিন স্থানেই মাণিকের আকর দেখা যায়; তন্মধ্যে সিংহল-দেশাৎপন্ন মাণিক দেখিতে অতি উত্তম এবং রক্তবর্ণ; কালপুরে পীতবর্ণ পদ্মরাগ জন্মিয়া থাকে; এবং তাহাকে কুরুবিন্দ কহে; যে পদ্মরাগ অশোকপল্লবের ন্যায় ছায়া-বিশিক্ট, তাহাকে সোগন্ধিক কহে; তুদ্ধর দেশজাত মাণিক নীলচ্ছায়াবিশিক্ট এবং নীলগন্ধি বলিয়া উল্লেখিত হয়। ১৫৩। ১৫৪।





मूलम्।

उत्तमं सिंचलोझ्तं निकष्टं तुम्ब्रोझवं। मध्यमं मध्यमं ज्ञेयं माणिक्यं चेचभेदतः ॥ १५५ ॥ वन्धुकगुञ्जासकलेन्द्रगोप-

जवाननास्टक्षमवर्षशोभाः। भ्याजिषावो दाद्मिनीजवर्णी-

स्वापरे किंगुकप्ष्यभासः ॥ १५६॥

तर्जमा।

सिंहल देशमें जो माणिक पयदा होता है, वहीं सबसे उनदा है, और तुम्बर देशमें जो माणिक पयदा होता है, वह वज्जत खाराप और कालपुर देशका मध्यम और जगहों के बदलनेसे माणिक तिन किसका होता है। १५५।

माणिकमेसे वज्जत्से माणिक केत्ने वन्धूकके पुल, केत्ने घुधंची, केत्ने वीरवज्ज्ञटी, केत्ने कनेलपुल, केत्ने लीको समान रङ्गदार छोते हैं, और केत्ने वर्ड चमकदार स्नानारके दानेके समान, केत्ने पलाश्रपुलके समान



155. The rubies of Ceylon are good par excellence, while those of Tumbura are at the bottom of the scale, the rubies found in Kálpur occupying the middle position. Rubies vary in value in accordance with the place where they are respectively found.

156—159. Of rubies, some are like the bandhúka* flower, some are like the gunjá berry, some like the cochineal, some like the China rose, some like blood, some like the seeds of the pomegranate, some like the flower of the butea frondosa,

অনুবাদ।

সিংহল দেশে যে মাণিক জন্মে, তাহাই সর্কোৎকৃষ্ট; তুন্মুরদেশোৎপন্ন পদ্মরাগ সর্কানিকৃষ্ট; এবং কালপুরোদ্ভূত মাণিক মধ্যম বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে। ক্ষেত্রভেদে মাণিক উত্তম, মধ্যম ও অধম এই তিনপ্রকার হইয়া থাকে। ১৫৫।

পদারাণের মধ্যে কতকগুলি বন্ধৃক (বাঁধূলী) পুষ্পসদৃশ, কতকগুলি গুঞ্জার (কুঁচের) ন্যায়, কতকগুলি
ইন্দ্রগোপকীটের সমান, কতকগুলি জবাকুস্থমের
ন্যায়, কতকগুলি রক্তের ন্যায়, কতকগুলি দাড়িদের বীজের ন্যায়, কতকগুলি পলাশপুষ্পসদৃশ,



^{*} A species of plant.



मुखम्।

सिन्दूररक्तोपलकुक्षुमानां
लाचारसस्यापि समानवर्णाः।
सान्द्रेऽपि रागे प्रभया खर्येव
भवन्ति लाचास्पुटमध्यशोभाः॥१५७॥
कुस्रमनीलद्युतिरागमित्रप्रत्यत्रलाचारसतुष्यभासः।
तथापरे गोच्युरकस्टकारीपुष्पाचिषो चिक्कुलवन्तिषोऽन्ये॥१५०॥
चकोरपुंस्कोकिलसारमानां
नेचावभासद्यतयस्र केचित्।
श्रन्थे पुनर्नातिविपृष्पितानां
तुष्यत्विषः कोकनदोदराणां॥१५०॥

तर्जमा।

केत्ने सिन्दूरके समान, केत्ने लालकमलके, समान, केत्ने रोलीके समान, केत्ने महावरके समान, केत्ने गहेरे स्नुख, खौर गहेरे महावरके समान, केत्ने कुसुमफुलके समान, केत्ने नीलापनिलये द्वये महावरके समान, खौर केत्ने गोचुर खौर कर्रावारी पुलके समान, केत्ने द्रंग्ररके समान, खौर केत्ने वकोर, को किल, सारसपचीके खांखके समान, खौर केत्ने कम्खिले द्वये लाल पद्मापुलके पेटके समान, होते हैं। १५६।१५७।१५८।१६८।



some like red lead, some like the red lotus, some like saffron, some like alakta,* some like deep blood, some like deep alakta, some like the kusuma flower, some like alakta with a shade of blue, some like the flower of asteracantha logifolia and kantakárì,† some like vermilion, some like the eyes of the Greek partridge, cuculus Indicus, or the Indian crane, and some like the interior of the half-blown red water lily.

অন্বাদ ৷

কতকগুলি সিন্দ্রের সমান, কতকগুলি রক্ত পদ্মের ভায়, কতকগুলি কুন্ধুমের তুল্য, কতকগুলি অলক্তের সদৃশ, কতকগুলি গাঢ় রক্তের ভায়, কতকগুলি গাঢ় অলক্তের ভায়, কতকগুলি কুন্থুমকুন্থুমের সমান, কতক-গুলি ঈষং নীলের ছ্যুতিমিশ্রিত অলক্তের ভায়, কতক-গুলি গোক্ষুর ও কন্টীকারীপুস্পদৃশ, কতকগুলি হিঙ্গুলের ভায়, কতকগুলি চকোর, কোকিল ও সারস পক্ষীর চক্ষুর সমান, এবং কতকগুলি নাতিপ্রস্ফুটিত কোকনদ (রক্তকুমুদ) পুস্পের উদরের ভায় বর্ণবিশিষ্ট হইয়া থাকে। ১৫৬।১৫৭।১৫৮।১৫৯।





^{*} The red resin of certain trees.

⁺ Vide antè.



मृलम्।

प्रभावकाठिन्यग्रहत्वयोगैः

प्रायः समानाः स्कटिकोद्भवानां।

यानीलरकोत्पलचारभासः

सौगन्धिकाखा मणयो भवन्ति॥१६०॥

यो मन्दरागः कुक्विन्दजेषु

म एव जातः स्फटिकोट्भवेषु।

निर्म्चिषोऽन्तर्वे ज्ञनीभवन्ति

प्रभाववन्तोऽपि न तत्ममानाः॥ १६९॥

ये तु रावणगङ्गायां जायन्ते कुरुविन्दवः।

पद्मरागसमं रागं विश्वाणा न स्क्टाचिषः ॥ १६२॥

तर्जमा।

सीगत्थिक मणि चमकमे सितमे, श्रीर भारीपन्मे श्राक्सर स्फटिकसे जो माणिक पयदा हीता है, उसके सनान है, श्रीर उस्का रङ्ग थोड़े नीलापनिलये द्वये लाल कमल फुलके समान है। १६०।

जो कुरुविन्द थोड़े रङ्गदार होए, वह स्फिटिकसेभी पयदा होता है, अगर वह रङ्गमे कमभी होए, लेकिन उस्के भितरका तेज एसा ज्यादा है, के वज्जत, रङ्गदार स्पीर कुटदेनेवाला अर्थात् स्रतिप्रभाविशिष्ट माणिक उस्के समान नहिं होता है। १६९।

रावणगङ्गामेसे जो कुरुविन्द पयदा होता है, वह माणिकके समान स्नुख रङ्गदार होता है, लेकिन माणिकके समान दीप्तिमान नहिं। १६२।







- 160. The saugandhika resembles the crystal in brightness, weight and hardness; and its color is like that of the red-lotus dashed with blue.
- 161. Of kuruvinda rubies, that which is reddish, owes its origin to crystal; still its inner lustre is such as even to surpass the brightest padmarága.*
- 162. The kuruvindas which are produced in the Rávanagangá, are red like the padmarága, but are not so bright.

অমুবাদ।

সোগন্ধিক মণি প্রভাব, কাঠিন্য ও গুরুত্বে প্রায়ই ফার্টিকোদ্রব পদ্মরাগের সমান এবং তাহার বর্ণ ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত রক্তোৎপলের সদৃশ হয়। ১৬০।

কুরুবিন্দের মধ্যে যেটা অল্পরিমাণে লোহিতবর্ণ হয়, সেটাও স্ফটিক হইতেই জন্মে, তথাপি তাহার অন্ত-র্গত তেজ এত অধিক হয় যে, অতি প্রভাবিশিষ্ট পদ্মরাগও তাহার সমান হইতে পারে না। ১৬১।

রাবণগঙ্গাতে যে সকল কুরুবিন্দ উৎপন্ন হয়, তাহার। পদ্মরাগের সমান লোহিত্য ধারণ করে, কিন্তু তদ্রূপ দীপ্তি-শালী হয় না। ১৬২।





^{*} A kind of ruby.



मूलम।

वस्त्रजीवि शिखगडीकं इन्द्रगोपोडुएष्पकं। रक्ताखं कुद्धिमञ्जीव पर्णं सीमन्तकं तथा॥१६३॥ गीरिकाखं सूर्यसंज्ञं द्रुमामयमधीनरं। महाराजनगन्धाखं गोह्यरं कगटकारिकं॥१६८॥

तर्जमा।

माणिकका रङ्गका अनुसार जो जो नाम है, वही सव नीचुमे लिखा जाता है। ज्यासाः-जिसका रङ्ग बन्धूजीव-फुलके समान, उसको बन्धूजीवि, जिसका रङ्ग घुंघचीके समान, उसको शिखरहीक ; जिसका रङ्ग दन्द्रगोप कीटफे समान, उसको श्रन्द्रगोपि ; जिसका रङ्ग कनेलफुलके समान, उसको श्रोड़ पुष्पक ; जिसका रङ्ग खने समान, उसको रक्ताख ; जिसका रङ्ग श्रानारके दानाके समान, उसको कुट्टिम ; जिसका रङ्ग पलाश्रफुलके समान, उसको पण ; और जिसका रङ्ग पलाश्रफुलके समान, उसको कहते है। १६३।

जिसका रङ्ग गेरीमाहिके समान, उसको गैरिक;
जिसका रङ्ग जाफरानके समान, उसको सूर्यमं इ ; जिसका
रङ्ग लाह्याके समान, उसको द्रुमामय; जिसका रङ्ग कुसुमफुलके समान, उसको महाराजनगन्ध; जिसका रङ्ग
गोह्यरके फुलके समान, उसको गोह्यर; और जिसका रङ्ग
कर्याकारीफुलके समान, उसको कर्यकारिक कहते
हैं।१६४।



163. Rubies have different appelations according to their colors. That which is like the bándhuli flower, is called bandhujíbi, that resembling the gunjá berry, is called sikhandika, that which is like the cochineal, is called indragopi, that which resembles the China rose, is called odrapushpaka, that which is like blood, is called raktákhya, that which is like the seed of the pomegranate, is called kuttima, that which is like the kinsuka flower, is called parna, and that which is like vermilion, is called simantaka.

164. That ruby the color of which is like mountain slime, is called gairikákhya, that which is like saffron, is called súrjasanga, that which is like lac. is called drumámaya, that which is like the kusuma flower, is called mahárájanagandhi, that which is like asteracantha longifolia, is called gokshura and that which is like the solanum jaquini, is called kantakárika (Almandine Ruby.)

শ্বর্বাদ। মাণিক্যের বর্ণগত নাম প্রদর্শিত হইতেছে। যাহার বর্ণ বাঁধুলী পুষ্পের সদৃশ, তাহাকে বন্ধুজীবি; যাহার বর্ণ গুঞ্জাসদৃশ, তাহাকে শিখণ্ডীক; যাহার বর্ণ ইন্দ্র-গোপকীটের সদৃশ, তাহাকে ইন্দ্রগোপি; যাহার বর্ণ জবা-ফুলের ন্যায়, তাহাকে ওড়ুপুষ্পক; যাহার বর্ণ রক্তের সদৃশ, তাহাকে রক্তাখ্য; যাহার বর্ণ দাড়িমবীজের তুল্য, তাহাকে কুট্টিম; যাহার বর্ণ কিংশুকপুপোর সদৃশ,তাহাকে পর্ণ এবং যাহার বর্ণ দিন্দুরের ন্যায়, তাহাকে সীমন্তক বলে। ১৬০। याहात वर्ग देगतिकमृम, ठाहारक देगतिकाथा; याहात वर्ग

কুকুমের ন্যায় তাহাকে দূর্য্যশংজ্ঞ; যাহার বর্ণ লাক্ষাদদৃশ, তাহাকে ক্রনাময়; যাহার বর্ণ কুস্তমফুলদদৃশ,তাহাকে মহা-রাজনগন্ধি; যাহার বর্ণ গোক্ষুরপুস্পাদ্রণ, তাহাকে গোক্ষুর; যাহার বর্ণ কণ্টীকারীপুপ্সসৃদ্শ,তাহাকে কণ্টকারিক বলে।১৬৪





मूचम्।

मिणरागं चकोराचं कोकिलाचं तथैव च।
सारसाचं कोकनदं माणिकां परमं विदुः।
एवं वज्जविधं विप्र माणिकां भृवि जायते॥ १६५॥
वर्णानुयायनस्तिषामन्द्रदेशे तथापरे।
प्रजायन्ते तु ये केचित् मृत्यन्ते समवाप्रुष्ठः॥ १६६॥
तथैव स्फिटिकोत्थानां देशे तुम्बुरसंज्ञके।
समरागाः प्रजायन्ते खल्यमूल्या हि ते स्मृताः॥ १६९॥

तर्जमा।

जिसका रङ्ग हिङ्गलके ममान, उसको मणिराग; जिस्का रङ्ग चकोर पद्योको आंखके ममान, उसको चकोराद्य; जिसका रङ्ग कोयेलके आंखके समान, उसको कोकिलाद्य; जिसका रङ्ग सारसपद्योके आंखके समान, उसको सारमाद्य और जिसका रङ्ग सालुकफुलके समान, उसको कोकनद कहते हैं। जमीनपर यही प्रकारसे बद्धत्तरहेका माणिक पयदा होता है। १६५।

अन्ध्र देशमे जो माणिक पयदा होता है, उस्मेसे जिसका जिस्तरहका रङ्क होए, उस्का एैसा दाम होता है। १६६।

तुम्बुर देशमे स्फटिकसे मणिकी तरह जो माणिक पयदा होता है, उस्का दाम वज्जत् कम होए। १६७।



- 165. The ruby the color of which is vermilion, is called manirága, that which resembles the eye of the Greek partridge, is called chakaráksha, that which is like the eye of the cuculus Indicus, is called kokiláksha, that which is like the egg of the Indian crane, is called sárasákhya, and finally that which is like the red-lotus, is called kokanada. The earth produces a splendid variety of the kinds enumerated above.
- 166. The Andhra country* produces rubies resembling the kuruvinda of Rávanagangá. These have the same value as kuruvindas.
- 167. The padmarágas of Tumbura, which resemble in color crystaline padmarágas, are of small worth.

অমুবাদ ।

যে মাণিকের বর্ণ হিঙ্গুলের ন্যায়, তাহাকে মণিরাগ; যাহার বর্ণ চকোরপক্ষীর চক্ষুর সদৃশ, তাহাকে চকোরাক্ষ; যাহার বর্ণ কোকিলের চক্ষুসদৃশ, তাহাকে কোকিলাক্ষ; যাহার বর্ণ সারসপক্ষীর চক্ষুর সদৃশ, তাহাকে সারসাক্ষ এবং যাহার বর্ণ কোকনদ পুষ্পের উদরের ন্যায়, তাহাকে কোক-নদ বলে। পৃথিবীতে এইপ্রকার বহুবিধ মাণিক জন্মিয়া থাকে। ১৬৫।

রাবণগঙ্গাসমুদ্রুত কুরুবিন্দের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট যে অপর কতকগুলি মণি অন্ধ্র দেশে জন্মে, তাহারাও কুরুবিন্দের সমানমূল্যে বিক্রীত হয়। ১৬৬।

তুরুর দেশে স্ফটিকোদ্ভব পদ্মরাগের সমান বর্ণবিশিষ্ট যে পদ্মরাগ জন্মে,তাহার মূল্য অতি অল্প হইয়া থাকে। ১৬৭।

^{*} The modern Telingana. Its people are called Andara by Pliny.





मूलम्।

वर्णिधिकां गुरुत्वच सिम्धता समता शुभा।
अचिषाना महत्ता च मणीनां गुणसंग्रहः ॥ १६८॥
माणिकास्य प्रवच्यामि यथाजातिचतुष्टयं।
बद्धाचित्तुयवैष्याच शूद्रश्चाच यथाक्रमं ॥ १६८॥
पद्मरागो भेवद्विप्रः कुरुविन्दस्तु वाज्जः।
सौगन्धिको भवेदेखो मांसखर्डस्तथान्ताजः॥ १७०॥
शोणपद्मसमाकारः खद्राङ्कारमप्रभः।
पद्मरागो दिजः प्रोक्तश्चायाभेदेन सर्वदा॥ १७१॥

तर्जमा।

ज्यादा रङ्ग, भारी, चमकेला, समान, ग्रुभलह्यण. कुट और कदमे वड्गा, यही सवरत्नका वड्गा खास ग्रुण है। १६८८।

जिस् प्रकार मनुष्यको ब्राह्मण, चित्रय, वैश्व और श्रुट्र, यही चार जात होति है, उसी प्रकार माणिकभी चार प्रकारकी जात है, आजक आलंक उसका लचण कहते हैं। १६९।

माणिक ब्राह्मणवर्ण, कुरुविन्द चिविन्छ, सौगन्धिक वैद्यवर्ण और मांसखर्ण्ड (अर्थात् कुटेड्ये मांसके समान) भूद्रवर्ण कहा जाता है। १७०।

किसि किसि पण्डितके मतके अनुमार ब्राह्मणवण् माणिक लालकमल, खयेरकाठके अङ्गारके समान वर्ण-विशिष्ट होता है। १७१।



- 168. Heaviness, coolness, evenness, lustre, thickness, deepness of color and auspiciousness are the principal good qualities of gems.
- 169. The four-fold division into castes obtains also among rubies. The characteristics of each class I shall now describe.
- 170. The padmarága (Oriental Ruby) is reckoned a Vipra (Brahmin), the kuruvinda (Rubicelle) a Khetriyá, the Saugandhika (Spinel) a Vaisya, and the Mansa-khanda (Balas Ruby) a Súdra.
- 171. Some say that the Vipra rubies emit a shade red like the color of the red-lotus or the red-hot charcoal of the *Acacia Catechu*.

অহ্বাদ।

বর্ণাধিক্য, গুরুত্ব, স্নিগ্ধতা, অবন্ধুরতা শুভলক্ষণ, দীপ্তি এবং স্থূলতা এই গুলি সামান্যাকারে রত্নের প্রধানগুণমধ্যে পরিগণিত। ১৬৮।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র এই জাতিচতুষ্টয়ভেদে মাণিক্যও চতুর্বিধ হয়, ক্রমে তাহাদের লক্ষণ বলা যাই-তেছে। ১৬৯।

পদারাগ বিপ্রজাতি, কুরুবিন্দ ক্ষজ্রিয়জাতি, সোগন্ধিক (নরম) বৈশ্যজাতি এবং মাংসথও (লাড্লী) শূদ্রজাতি বলিয়া কথিত হয়।১৭০।

কেহ কেহ বলেন, বিপ্রজাতি পদারাগ হইতে রক্তপদা বা খদিরকাণ্ঠের অঙ্গারের ন্যায় ছায়া নির্গত হয়। ১৭১।





मृजम्।

युद्धासिन्दूरवत्स्वनागरङ्गसमप्रभः ।
दाद्भिनेकुसमाभामः कुरुविन्दस्त वाद्धजः ॥१७२॥
हिङ्गुलाशोकपुष्पाभमीषत्पोतन्तु लोहितं ।
जवालाचारसप्रायं वैश्वं सौगन्धिकं विदः ॥१७३॥
श्रारक्तकान्तिहीनस्र चिक्कणस्र विशेषतः ।
मांसखण्डसमाभो यो सोऽन्ताजः पापनाश्रनः ॥१७४॥

तर्जमा।

चिविष कुर्वावन्द घृषंची अर्थात् युद्धाः, सिन्दूर, वन्धूक-युष्यः, नारङ्गी और आनारके फुलके समान रङ्गदार होता है।१७२।

वैद्यवर्ष सौगन्धिक इंग्रर, श्रशोकका फुल, श्रीर छोड़ा पीलापनलिये ज्ञये स्नुख, कनेलफुल श्रीर महावरके समान रङ्गदार होता है। १७३।

श्रुद्रवणका मांसखग्र कान्ति चीन, चिक्कण, घोड़ा स्राचीमायेल रङ्ग देता है। १७8।†

^{*} कस्यचिन्मते रक्तश्वेतो भवेट्विपस्वतिरक्तस्तु चित्त्यः। रक्तपोतो भवेदेश्यो रक्तनीचस्तयान्यजः॥

[†] कोरेको मतमे ख्खी सफेरीमायेच ब्राह्मणवर्ण, बद्धत् धुखी चानियवण, खुखीपीचापनचियेद्धये वैश्ववर्ण, खौर खुखीनीचापनचियेद्धये भूदवर्ण ॥



- 172. The Kshetriya ruby casts forward a shade resembling in hue a $gunj\acute{a}$, vermilion, or the flower of the bandhuka, the orange, or the pomegranate.
- 173. From the Vaisya saugandhika comes out a shade like vermilion, the flower of the asoka, the China rose, or alakta; or a red lustre tinctured with yellow.
- 174. A Sudra mánsakhanda emits a reddish, unbeautiful, and glossy shade resembling a piece of flesh.*

অহুবাদ।

ক্ষত্রিয়জাতি কুরুবিন্দ হইতে গুঞ্জা (কুঁচ), সিন্দুর, বাঁধ্লী, নাগরঙ্গ ও দাড়িমের পুষ্পদদৃশ ছায়া বহির্গত হয়। ১৭২।

বৈশ্যজাতি সোণিন্ধিক হইতে হিঙ্গুল, অশোককুশুম, ঈষৎ পীতের আভাযুক্ত লোহিত, জবাপুষ্পা, ও অলক্তকের ন্যায় ছায়া বাহির হয়। ১৭৩।

শূদ্রজাতি মাংসথণ্ড হইতে ঈষৎ রক্ত, কান্তিহীন, চিক্কণ, এবং মাংসথণ্ডের সদৃশ ছায়া নির্গত হয়। ১৭৪।†

[†] কাহার মতে পদ্মরাগের মধ্যে যেটা রক্তর্যেত-মিশ্রিত-বর্ণবিশিষ্ট, দেটা ব্রাহ্মণজাতিমধ্যে; যেটা অত্যন্ত-লোহিতবর্ণ, দেটা ক্ষত্রিয়জাতি-মধ্যে; যেটা রক্তপীত-মিশ্রিত-বর্ণযুক্ত, দেটা বৈশ্বজাতিমধ্যে এবং যেটা নীললোহিত-মিশ্রবর্ণশালী, দেটা শ্রুজাতিমধ্যে পরিগণিত।



^{*} The Ruby which is red-white, is a *Brahmin*, that which is deep red, is a Kshetriya, that which is red-yellow, is a Vaisya, and finally that which is red-blue, is a Súdra.



माणिकास्य क्रायादय:।

माणिकास्य समाखाताष्ट्रायाः घोड्ण कीनिताः। गुणाञ्चलार चास्याता चष्टी दोषा मुनीखरैः ॥ १७५॥ काया स्थात् पद्मरागस्य रक्तकोकनद्प्रभा। खद्योतानिकपोताचिकोकिलानेचसन्निभा ॥ १७६॥ सारसाचिचकोरस्य मिन्नभैवन्तु सप्तधा । एता: शुभफलाष्ट्रायाः सिंहलोत्यमहामणे: 1 १७७॥ सिन्दूरलोभ्रपुष्पामा ग्रुञ्जाविंग्रुकसिन्धः। कार्योक्ता: कुरुविन्दोस्तु चतस्रः परिकीत्तिताः । १७८ । अधना चीरसंकाया कु कु मोदक सिना। ईषद्रका भवेच्छाया सौगँन्धिकमणेरियं ॥ १७८॥

माणिकका क्राया वगैरह।

तर्जमा।

रत्नपारची परिखत माणिकके मध्ये घोलप्रकारकी काया, चारप्रकारका ग्रेण और आटप्रकारका खरेब कहे गरे हैं। १७५।

सिंइलदेशके माणिकमे लालकमल, भगनगनी अर्थात् खद्योत, आग, नवुतर, कोयल, सारम और चकोरके आंखके मनान क्राया निर्मत होता है, और यही सातप्रकारकी काया गुभदायक है। १७६। १७०।

कुरुबिन्द मणिमे सिन्दूर, लोध्रपुष्प, गुञ्जा और पलाग्र-फ्लके समान काया निर्मत होती है। १७८।

सीगन्धिक मणिमे दुध, रोलीमिलेझ्ये जलके समान, और योड़ा सुखीमायेल काया निकेलती है, उस्के मध्ये दुधके समान काया दौतलको नाम करती है। १७९।





Shades and other Qualities of Rubies.

TRANSLATION.

175. The authorities mention sixteen kinds of shade, four good and eight bad properties of rubies.

176—177. The rubies of Ceylon emit a gleam like the red-lotus, the glow-worm, fire, or the eye of the pigeon, the *cuculus Indicus*, the Indian crane or the Greek partridge. All these shades are auspicious.

178. The Kuruvinda shoots a shade resembling red lead, the gunjá berry, or the flower of symplocos racemosa or of the butea frondosa.

179. The saugandhika gem scatters a gleam either pale-red or like milk or the water colored by the crocus Sativus;—of these, the milky lustre blights wealth.

মাণিকের ছায়াদি।

অন্বাদ।

রত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা মাণিক্যদম্বন্ধে ষোড়শপ্রকার ছায়া, চারিপ্রকার গুণ ও আটপ্রকার দোষ নির্দেশ করিয়া-ছেন। ১৭৫।

সিংহল-দেশীয় পদ্মরাগ হইতে রক্তপদ্ম, খদ্যোত, অগ্নি, কপোত, কোকিল, সারস ও চকোরের চফুর ন্যায় ছায়া বহির্গত হয়; এই সপ্তবিধ ছায়াই শুভজনক। ১৭৬।১৭৭।

কুরুবিন্দ হইতে সিন্দূর, লোধ্রপুষ্পা, গুঞ্জা ও কিংশুক-পুষ্পা সদৃশ ছায়া নির্গত হয়। ১৭৮।

সোগন্ধিক মণি হইতে জুগ্ধ, কুন্ধুমের জল ও ঈষৎ রক্তের স্থায় ছায়া বিকীর্ণ হয়,তন্মধ্যে তুগ্ধচ্ছায়া ধনহানিকর। ১৭৯।





मूलम्।

नीलोत्मलदलच्छाया लोडकान्तिसमप्रभा।
नीलगन्धिमणेः प्रोक्ते दे च्छाये रत्नकोविदेः॥१८०॥
वालाकिभिमुखं कत्ना द्रपणे धारयेन्मणिं।
तच कान्तिविभागेन छायाभागं विनिर्धित्॥१८९॥
वालाकिकरसंस्पर्णाद्यः शिखां लोडितां वमेत्।
रज्जयेदाश्रमं वापि स महाग्रण उच्यते॥१८५॥

तर्जमा।

नीलगन्धिमणिमे नील कमल श्रीर लोडेके समान काया निकेलती है । १८०।

पद्मराग बगैरह मणिको एक खुब साफ आदूनापर रखकर ग्रुवहको सूर्यके सामने रखनेसे वही घोल प्रकारकी काया उस्मेसे प्रकाश होगी। १८८१।

गुवहके सूर्यके किरणके स्पर्भसे जिस् माणिकमेसे
लालरङ्ग किरणकर तामाम मकानको लालरङ्ग करदे,
वही माणिक महागुणविशिष्ट अर्थात् वेलकुल वेअयेव
और खुव हैं। १८२।



- 180. The *nilagandi* shines in a halo like the blue lotus or iron.
- 181. When the ruby is placed over a mirror and is then exposed to the morning sun, the glass will flash with a lustre composed of all the above-mentioned shades.
- 182. That ruby which, when exposed to the sun 'new risen,' radiates red rays or paints the whole house with crimson, is surpassingly fair.

অহুবাদ।

নীলগন্ধি মণি হইতে নীলোৎপল ও লোহের সদৃশ ছায়া বহির্গত হয়। ১৮০।

পদ্মরাগ মণিকে একখানি দর্পণে স্থাপন করিয়া বালার্কা-ভিমুখে ধারণ করিলে তাহা হইতে উল্লিখিত ষোড়শবিধ ছায়া সেই দর্পণে প্রতিবিদ্বিত হইবে। ১৮১।

প্রাতঃসূর্য্যের কিরণসংস্পর্শে যে পদ্মরাগহইতে লোহিত-বর্ণ শিখা উদ্গীর্ণ হয়, অথবা যাহা সমস্ত আশ্রমকে রঞ্জিত করে, সেই পদ্মরাগই মহাগুণসম্পন্ন। ১৮২।





मूचम्।

दुखे शतगुणे चिप्तो राज्यवेद्यः समन्ततः ।

वमेच्छिखां लोहितास्वा पद्मरागः स उत्तमः ॥ १८३ ॥

श्रम्भकारे महाघोरे यो न्यसाः सन्महामणिः ।

प्रकाशयित सूर्याभां स श्रेष्टः पद्मरागकः ॥ १८४ ॥

पद्मकोषेतु यो न्यस्तो विकाशयित तत् चणात् ।

पद्मरागवरो स्त्रेष देवानामपि दुर्लभः ॥ १८५ ॥

यो मणिह स्थते दूरात् ज्वलद्गिसमच्छविः ।

वंशकान्तिः स विज्ञे यः सर्व्यसम्पत्तिकारकः ॥ १८६॥

तर्जमा।

जो माणिक अपनेसे शौगुण ज्यादा दुधमे डालदेनेसे सब दुधको लालरङ्ग करदे; अथवा दुधके अन्दरसे लाल-शिखा बाहेर करें, बही माणिक नेहायेत् उमदा होता है। १८३।

जो माणिक आधिरेमें सूर्यके समान तेज प्रकाश करे, वह बद्धत् उत्तम, और खौळल दरजेका है। १८४।

जो माणिक कमलके फुलके कलिपर रखतें ही कमलको खेाला देगा, वही माणिक सबसे उमदा है, और देवता खेंाको दुर्लभ है। १८५।

जो माणिक दूरसे आगके समान देखलादू देवे, उसकी वंशकान्ति कहते हैं और उस माणिकके दारा सब-प्रकारकी सम्पत् हासिल होती है। १८६।



- 183. That padmarága which, on being cast into a quantity of milk a hundred times its bulk, makes the white mass one entire sheet of red, or sends out a red flame, is nonpareil.
- 184. That padmarága which, like the sun, can destroy even Egyptian darkness, is supremely excellent.
- 185. That padmarága which, when placed on the lotus-bud, anon makes it blossom, is Perfection's self—and is hardly attained even by the Gods.
- 186. The padmarága which is perceptible from a distance like a flame, is entitled vansakánti,—it leads to wealth.

অञ্বাদ।

যে পদ্মরাগ স্বীয় পরিমাণের শতগুণ ছুগ্নে নিক্ষিপ্ত হইয়া সমুদায় ছুগ্ধকে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত, অথবা লোহিত বর্ণ শিখা উদ্গীরণ করে, সেই পদ্মরাগ অতি উত্তম বলিয়া প্রসিদ্ধ। ১৮৩।

যে পদ্মরাগ অতি প্রগাঢ় অন্ধকারেও সূর্য্যের স্থায় আভা প্রকাশ করে, তাহা অতি শ্রেষ্ঠ। ১৮৪।

যে পদ্মরাগ পদ্মের কলিকার উপর স্থাপন করিবামাত্র তাহা তৎক্ষণাৎ প্রক্ষাটিত হয়, সেই পদ্মরাগই দর্ব-শ্রেষ্ঠ, এবং দেবতাদিগেরও ফুর্লভ। ১৮৫।

যে পদারাগ দূর হইতে জ্বলন্ত অগ্নির শিখার স্থায় দৃশ্য-মান হয়, তাহাকে বংশকান্তি কহে, এবং তদ্ধারা দর্ব-প্রকার সম্পত্তি লাভ করা যায়। ১৮৬।





मूचम्।

नीलीरसं दुग्धरसं जलस्वा ये रञ्जयन्ति दिशतप्रमाणं। ते ते वथा पूर्वमातप्रश्लाः

सीभाग्यसम्पत्तिविधानदायका: । १८७ ॥ माणिकास्य गमाखाता ऋष्टी दोषा सुनीश्वरै:। चचणं क्रमग्रसोषां वच्छामि यव्रतो दिज ॥ १८८॥ दिच्छायत्वं वीरूपतं समोदः कर्करन्तथा। चग्रोमनं कोक्तिलञ्च जड घूम्रामिधञ्च वै ॥ १८८॥

तर्जमा ।

जो माणिक अपने प्रमाणसे दोशो गुण नीलरङ्ग जल, श्रीर दुध श्रथवा फकत् जलमे डालदेनेसे दुक्की तिन चिजोंको लालरङ्ग कर दें, तो दर्जे वदर्जे वेस्तर है, चार्यात् नीलरङ जलको स्रुख करनेवाला चौळल दर्जेका माणिक हैं, और दुधको सुख करनेवाला दोयेम दरजेका माणिक है, श्रीर फकत् जलको स्रुख करनेवाला मेयम दर्जेका माणिक है। श्रीर यह तिनी माणिक दौलतके कारण है। १८७।

रत्नपारची परिखतोने माणिकका जो आट किसिमका अयेव कहा है, उस्की तपसीलवयान किजाती है। १८८।

हिच्छायल, विरूपल, समोद, बद्धर, अशोमन, कोकिल, जल और धूम यही आटिकिकिसिमका अयेव इमेचा माणिकमे देखा जाय। १८८।





- 187. All those padmarágas that, on being thrown into a quantity of milk or of water pure or blue two hundred times their bulk, crimson the liquid, conduce to prosperity though they differ among themselves as regards worth.
- 188. I shall now describe the eight bad properties of rubies, which have been enumerated by the authorities.
- 189. Dwi-chchháyatwa, virúpatya, samveda, karkara, asovana, kokila, jara, and dhumra, are the defects commonly found in rubies.

অন্বাদ।

যে সকল পদারাগ স্বীয় পরিমাণের দ্বিশত গুণ নীলীরস, ছুগ্ধ অথবা জলের মধ্যে নিক্ষিপ্ত হইলে উল্লিখিত বস্তুত্রয়কে লোহিতবর্ণে রঞ্জিত করিয়া তুলে, তন্মধ্যে পূর্ব্ব পূর্ব্বগুলি পর পরগুলি অপেক্ষা অধিক প্রশস্ত এবং সমুদায়গুলিই সম্পত্তিকারক। ১৮৭।

রত্ন-পরীক্ষকেরা মাণিক্যের যে আট প্রকার দোষ নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন, সেই অফবিধ দোষের নাম ও লক্ষণ ক্রমশঃ বিব্বত করা যাইতেছে।১৮৮।

দ্বিচ্ছায়ত্ব, বীরূপত্ব, সম্প্রেদ, কর্ক্কর, অশোভন, কোকিল, জড় ও ধূম এই অক্টবিধ দোষ সচরাচর মাণিক্যে দৃষ্ট হয়। ১৮৯।

700

मृतम्।

कायादितयसम्बन्धात् हिच्छायं वन्धुनाशनं । वीक्षपं विपदत्तेन साणिक्येत पराभवः ॥ १८० ॥ सम्मेदो भिन्नभित्युक्तं शस्त्रघातविधायकं । कर्क्षरं कर्क्षरायुक्तं पश्चन्धुविनाशकत् ॥ १८१ ॥ दुम्धे नैव समालिप्तं लम्बलीपुटमुच्यते । च्याभेमनं समुद्दिष्टं माणिक्यं वज्जदुःखकत् ॥ १८५ ॥

तर्जमा ।

जिस् माणिकमे दोिकिनिमकी काया निक्ले, उसको हिच्छाय कहते हैं, दिच्छायका माणिक वन्धको नाम्र करता है; जिस् माणिकमे पचीके पांचीका निमान होए, उसको वीरूप अथेव कहते हैं, वीरूप माणिक मालीकको सव जागे हार देता है। १८०।

जो माणिक हिककतमे टुटा निर्हं है, मगर भङ्गभाव मालुम होता है, उस्को समोद खयेय कहते हैं, समोद माणिक मालीकको प्रस्ताघातके भयसे क्रुटा निर्हं सक्ता। माणिकमे जो कङ्करसा देखा जावे, उसे कर्कर कहते हैं, कक्कर माणिक, पशु खौर बन्धुको नाग्र करता है। १८९।

जिस् माणिकमे दुधके समान मालुम होता हो, उसको अग्रोभन अर्थेव कहते हैं, अग्रोभन माणिक बड़ा दुःख-दायी है। १८२।



- 190. The padmarága which emits a two-fold shade is called a dwi-chchháya. A dwi-chchháya ruby is the death of friends. That ruby which bears a mark like a bird's foot, is called a virúpa. A virúpa gem always brings humiliation to its master.
- 191. A samveda ruby is one which shows a mark like a rift. This gem renders its owner liable to blows from a weapon. A karkara ruby bears in its bosom a gritty fragment. It causes the death of friends and is also fatal to domestic beasts.
- 192. That padmarága which naturally appears as if it were immersed in milk, goes by the name of asovana; this gem is the source of a multiplicity of evils.

অনুবাদ।

যে পদ্মরাগ হইতে দ্বিবিধ ছায়া নির্গত হয়, তাহাকে দ্বিচ্ছায় বলে, দ্বিচ্ছায় পদ্মরাগ বন্ধুনাশক, যে মাণিকে পক্ষীর পদ্চিহ্ন দৃষ্ট হয়, তাহাকে বীরূপ বলে, বীরূপ মাণিক্য স্বামীকে সর্বত্র পরাভূত করে। ১৯০।

ভঙ্গভাবকে সম্ভেদ বলে, সম্ভেদদোষা প্রিতমাণিক্যস্বামী শস্ত্রাঘাতের ভয় হইতে মুক্ত হইতে পারেন না, পদ্দরাগের মধ্যে যে কর্কর (কাকর) দৃষ্ট হয়, তাহাকে কর্কর
বলে, কর্করযুক্ত পদ্মরাগ পশু ও বন্ধু-বিনাশক। ১৯১।

পদারাগকে ছুগ্ধে অভিষিক্ত করিলে যেরূপ আকার ধারণ করে, স্বভাবতঃ যে পদারাগ তদ্রূপ, তাহাকে অশোভন বলে, অশোভনদোষশালী পদারাগ বহু ছুঃখের আকর। ১৯২।







मूजम्।

मध्विन्द्समच्छायं कोकिलं परिकौर्त्तितं। आयुर्वेचीयशे इन्ति सदीषं तन्न धारयेत्॥ १८३॥ रागहीनं जदं प्रोत्तं धनधान्यविनाशकत्। धूम्रं धूम्रममाकारं वैद्युतं भयमावहेत्॥ १८८॥ र्रहग्दोषयुतो निन्द्रा मणयो मूल्यवर्जिताः। श्रिप प्राप्ता न ते धार्या ग्रन्हे शोभनमिच्छता ॥ १६५ ॥

तर्जमा।

जिस माणिकमे सहदके क्रिटेके समान हो, उसकी कोकिल अयेव कहते हैं, कोकिल माणिक उमर, दौलत श्रीर नाम्बरीको नाम करता है। इस कारण ऐना साणिक कभी पहेरना मनासिफ निर्हे। १६३।

जो माणिक रङ्गदार निर्हं, उसको जड़ कहते हैं, ज द चयेवय्क्त का माणिक धन चौर धान्य नाम करता है; धुंये ऐसे रक्षके माणिकको धूम्र कहते हैं, धूम्र स्रयेवका माणिक विज्ली गिराता हैं। १९४।

जो सव अयेव उपर वयान कियेगये, यही सव अयेव-दार माणिक नेष्ठायेत अयेवी और निन्दाके योग है, चौर वज्जत्कम किमत, ऐसे माणिक सुप्त मिल्नेसेभी अपने भालाद चांहेनेवाले कभी अपने पाश मकानमे ना रखेगा। १८५।



- 193. The mark in a ruby which looks like a drop of honey, is called a *kokila*. A *kokila* ruby is inimical to life, wealth and fame, and must be shunned.
- 194. The quality of being discolored is called jara. A jara padmarága causes loss of wealth. The color of a padmaraga which looks like smoke, is called dhumra.* A dhumra-colored padmarága renders one liable to lightning-stroke.
- 195. The above-mentioned rubies are worthless and pernicious, and should never be treasured up, even were they to be had for the gathering.

অञ্বাদ।

পদ্মরাগের উপরিভাগে যে মধুবিন্দুর ন্যায় দাগ লক্ষিত হয়, তাহাকে কোকিল বলে, কোকিলদোষবিশিষ্ট মাণিক্য আয়ু, লক্ষ্মী ও যশ বিনাশ করে, অতএব তাদৃশ পদ্মরাগ কদাচ ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে। ১৯৩।

পদ্মরাগের রাগহীনতাকে জড় কহে, জড়যুক্ত মাণিক্য ধনধান্যাদি বিনাশ করে, ধূত্রের ন্যায় বর্ণকে ধূত্র বলে, ধূত্র-বর্ণ পদ্মরাগ বজ্রপাতের ভয় উৎপাদন করে। ১৯৪।

উল্লিখিত দোষাশ্রিত মণি অতিশয় নিন্দনীয় এবং মূল্য-হীন, এবস্থিধ রত্ন অনায়াসলভ্য হইলেও আত্মহিতেচ্ছুগণ কদাচ তাহা গৃহে রাখিবেন না। ১৯৫।





^{*} Literally, smoke.



मूजम्।

श्रोभादितयवन्तो ये मणयः चितिकारकाः। उभयच पदं येषां तैरेव स्थात् पराभवः॥ १८६॥ ये कक्कराष्ट्रिमलोपदिग्धाः

प्रभाविसुकाः पक्षा विवर्णाः ।

न ते प्रयक्ता मणयो भवन्ति
समासतो जातिगुणैः समस्तैः ॥ १८७ ॥
दोषोपसृष्टं मणिमप्रवोधाद्
विभक्ति यः कञ्चन कञ्चिदेकं ।
तं वन्धुदुःखाय सवन्धुवित्तनामादयो दोषगणा भजन्ते ॥१८८॥

तर्जमा ।

जिस् माणिकको शोभा दोकिसिमकी है, अर्थात् कभी कोइ रङ्ग, और कभी किसि तरहे का देख्लाइ देता है, वह वज्जतही लोक्शान करनेवाला है और जिस्के दो जगहमे पद्योके पांचोका निशान हो, उसका हार्नेका कारण है। १८६।

जो माणिक कर्करा अर्थात् कर्करदार, केंद्रा अर्थात् केदवाला, मिलन, अर्थात् मयलाः प्रभाचीनः, अर्थात् दीप्ति-चीनः, कर्क्कण अर्थात् खुर्धराः, और विवर्ण अर्थात् वेरजः, ए सा माणिक अगर उत्तम जातः, अथवा और गुणोसे भूषित चोः, लेकिन कभी आच्छा निष्ट । १९७।

अगर कोइ आद्मी अज्ञान और लाइल्मीसे अयेवी माणिक पहेरे, तो जकर उस् आद्मीको भाइ, और दौलत वर्गेरहके नामका दुःखभीग कर्ना होगा।१८८।



196. Those rubies which send out a two-fold shade, bring about loss; and those which are marked with a bird's foot in two several places, are the cause of defeat.

197. Those which bear gritty fragments and are indented, dirty, lack-lustre, rough and discolored, are certainly unlucky, although they may be otherwise good and may belong to a superior caste.

198. If through ignorance, a person happens to wear a defective ruby, loss of friends, destruction of wealth *et cetera*, are the inevitable consequences.

অনুবাদ।

যে সকল মণির শোভা দ্বিবিধ, তাহারা অতিশয় ক্ষতি-কারক, এবং যাহাদের ছুই স্থানে পক্ষীর পদ-চিহ্ন থাকে, তাহারা পরাভবের কারণ। ১৯৬।

যাহারা কর্ক রযুক্ত, দচ্ছিদ্র, মলিন, প্রভাহীন, কর্ক শ ও বিবর্ণ, তাহারা উত্তমজাতি বা অন্যান্য গুণসমূহে ভূষিত হইলেও কদাচই প্রশস্ত নহে। ১৯৭।

যদিকোন ব্যক্তি অজ্ঞানতঃ দোষদূষিত মণি ধারণ করে, তাহা হইলে সে ব্যক্তিকে অবশ্যই বন্ধুবিত্তনাশাদি তৃঃখ ভোগ করিতে হইবে। ১৯৮।





सापत्रमध्येऽपि कताधिवासं प्रमाद्रह्माविप वर्त्तमानं।

न पद्मरागस्य महाग्रुणस्य मत्तरिमापत् ससुपैति काचित्॥१८८॥

दोषोपसर्गप्रभवास ये ते नोपद्रवासं समभिद्रवन्ति।

ग्रणीः समुख्याः नकलै रुपेतं यः पद्मरागं प्रयतो विभक्ति॥ २००॥

चर्चाल एकोऽपि यथा दिजातीन समेत्य भूरीनिप इन्ति यतात्। तथा मणीन् भूरिग्रणोपपद्मान् शकोति विद्रावयितं विजातिः ॥२०१॥

तर्जमा।

जिस्के मकानमे वेखयेवी माणिक रहे, वह चाद्मी चार सब्दा चौतरफा दुस्मनके रहनेवाले मकानसे रहे, अथवा वज्जत् तरहकी तक् निपमे पड़े, तोभी उसको कोद्र श्राफत् पकड़ निंह सिता। १८८।

जो चाद्मी सर्वेग्रणसम्पद्म चर्यात् तामाम वस्फों भराइद्या एक माणिक पहेरे, और उस्के साथ भी माणिक अध्वदार पहेरे, तो उस्का कुच लोक्शान निह हो सक्ता। २००।

किसि पिएडेंनों के मनसे एसाभी कहा है, के एक चार्ग्डाल जिस् तरइसे भी घाजार ब्राह्मणको दृषित करदेता है, उसी प्रकारसे एक विजाति रत्न भी भी सर्वेग्रणसम्पद्म रत्नको दृषित कर्ना है। २०१।



- 199. The man who keeps in his house a sterling padmarága, can with perfect safety, constantly live in the midst of enemies, and is impervious to the attacks of adverse fortune.
- 200. He who wears a padmarága of matchless virtues, need not apprehend any mischief from the foul touch of bad padmarágas without number.
- 201. According to some, as the contact of a single chandála* suffices to contaminate ever so many Brahmins, even so one impure gem serves to pollute pure gems ad infinitum.

অহুবাদ।

যাহার গৃহে দণ্ডণ পদ্মরাগ থাকে, দে ব্যক্তি যদি
দর্বদা শক্ত-পরিবেষ্টিত স্থানে বাদ করে, অথবা নানা
প্রমাদে পতিত হয়, তথাপি কোন আপদ তাহাকে কখনই
আক্রমণ করিতে দমর্থ হয় না। ১৯৯।

যে ব্যক্তি সর্বাগুণসম্পন্ন একখানি পদ্মরাগ ধারণ করে, সমস্ত দোষদূষিত শত শত পদ্মরাগেও তাহার অনিষ্ট সাধন করিতে পারে না ।২০০।

কাহারও মতে এক জন চণ্ডালের সহবাদে যেমন শত সহস্র ব্রাহ্মণ দূষিত হইয়া থাকেন, সেইপ্রকার একথানি বিজাতি রত্নও শত শত সর্ব্বগুণসম্পন্ন রত্নকে বিদ্রাবিত করিতে সক্ষম হয়।২০১।

^{*} The generic name for a man of the lowest and most despised of the mixed tribes, born from a Sudra father and a Brahmin mother.





मूलम्।

जात्यस्य सर्वेऽपि मणेन जातु

विजातयः सन्ति समानवणीः।

तथापि नानाकरणायमेवं

भेदप्रकारः परमः प्रदिष्टः ॥ २०२ ॥

गुणीपपद्मेन सहाववड्डो

मणिने धार्थी विग्रणो विजात्यः।

न कौसुभेनापि सञ्चाववड्डं

विदान् विजातिं विश्वयात् कदाचित्॥ २०३॥

गुञ्जाफलप्रमाणस्य दश सप्त चिग्रञ्जकान्। पद्मरागस्तुलयति यथापूर्वं महाग्रणः ॥ २०४॥

तर्जमा ।

सव तर इसे विजाति मणि कभी सजात मणिके समान वर्ण हो निह सका, वद्धत् तरहके खानोके भेदसे रङ्गके हिसावसे थोड़ा फरक होता है। २०२।

विजाति मणि सव तरहके ग्रुणसम्पद्ममणिसहित एक जगह जड़े याने सेभी पहेर्ना मनासिफ निह है, पिक्डित लोग कहेते हैं, विजातिमणि कौस्तुभमणिके सातमेभी पहेर्ना मनासिफ निह। २०३।

गुड्याफलके समान माणिक श्रोजनमे तिन, श्रथवा सात, या दश गुड्याके बरावर हो सका है, उस्मेसे जो जिस् कदर जरादा श्रोजनी होगा, वह गुणमे जरादा है। २०४।





- 202. The colors of defective rubies are never like those of good rubies, yet to a certain extent they differ one from the other in color in accordance with their respective mines.
- 203. Bad rubies should never be worn, although set along with the best rubies—nay, should they happen to be in company with *Kaustuva** itself.
- 204. Padmarágas which resemble in shape a gunjá berry, may weigh three, seven or ten gunjás, and the heaviest is the most precious.

অञ্বাদ।

দর্বপ্রকার বিজাতি মণি কখনই স্থজাত মণির সমান বর্ণ প্রাপ্ত হয় না, কিন্তু নানা আকরভেদে তাহাদের বর্ণগত কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভেদও লক্ষিত হয়।২০২।

বিজাতি মণি দর্বপ্রেকার গুণসম্পন্ন মণির দহিত একত্র সম্বদ্ধ হইলেও ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে, এমন কি পণ্ডিতেরা বলেন, বিজাতি মণি কৌস্তভ্রমণির দহিত আবদ্ধ হইলেও তাহা পরিত্যাগ করিবে। ২০০।

গুঞ্জাফলের সমান আকারবিশিষ্ট পদ্মরাগ ওজনে তিন, সাত ও দশ গুঞ্জাপরিমিত হইতে পারে, তন্মধ্যে যাহা ওজনে যত অধিক ভারী হইবে, তাহা তত গুণশালী বলিয়া প্রসিদ্ধ। ২০৪।

^{*} The name of a celebrated jewel obtained with thirteen other precious things at the churning of the ocean. It was suspended on the breast of Krishna.









मृषम्।

कोष्टुकोलफलाकारो बादमाष्टी विगुष्प्रकान्।
पद्मरागसुलयित यथापूर्वं महाग्रणः ॥ २०५॥
वदरीफलतुल्यो यः सूरिद्ङ्नवमाषकः।
धाचीफलसमिल्वंग्रहिंग्रतिदाष्टमाषकः ॥ २०६॥
तथाचफलतुल्यो यो विक्कपचैकमाषकः।
तास्त्रुलीफलमानो यस्तुस्तिहेरकतोलकः॥ २०९॥

तर्जमा।

क्रष्टुफल अर्थीत् भ्याकुलको ममान बड़ा माणिक च्याजनमे वार, चयवा चाट, चयवा दी गुच्छाके प्रमाण चीता ही। २०५।

जिस्का कर वयेरके समान है, उसका राज खोजनमें बार, दश खीर नी मावा है, जो देखने में खामले के फलके समान है, वह खोजनमें चिश्र, विश्र खथवा बील मावातक है। २०६।

रौद्राचिक फलके समान माणिक तिन, अथवा दे अथवा एक माधा डोए, ताम्बूलीफलके समान ओ माणिक डोए, वह ओजनमे चार, तिन, दी सीर एक तीला डो सका है। २०७।







205. Padmaragas resembling the fruit of Kroshtu (Terminalia Catappa), may weigh two, eight or twelve gunjás.

206. That padmarága which is plum-shaped, weighs nine, ten or twelve máshás,* that resembling the fruit of the Emblic Myrobalam in shape, weighs sixteen, twenty or thirty máshás.

207. A rudrákshya-shaped† padmarága weighs one, two or three máshás; a támbuli-shaped‡ padmarága weighs from one to four tolás.

অনুবাদ।

শেয়াকুলের স্থায় আকারবিশিষ্ট পদ্মরাগ ওজনে বার, আট ও তুই গুঞ্জাপরিমিত হয়। ২০৫।

যাহার আকার দামাত কুলের তায়, তাহার ভার বার, দশ ও নয় মাষা; যেগুলি দেখিতে আমলকীফলের তায়, দেগুলি ওজনে ত্রিশ, কুড়িও ষোল মাষা হইয়া থাকে।২০৬।

রুদ্রাক্ষফলসদৃশ পদ্মরাগের ভার তিন, ছই ও এক মাষা; তামূলীফলসমানাকার পদ্মরাগ ওজনে চারি, তিন, ছুই ও এক তোলাপরিমিত হয়। ২০৭।



^{*} A particular weight of gold, = five krishnalas = \frac{1}{15}th suvarna (the weight in common use is said to be about seventeen grains Troy).

Williams.

[†] The berry of a kind of tree, Elmocarpus Ganitrus.

‡ The berry of a plant of the same name.



विम्बीफलसमाकारो वस्रषड् द्शतोलकः। चातः परं प्रमाणेन मानेन चन लभ्यते। यदि लभ्येत पुर्ण्येन तदा सिद्धिमवात्रुयात् २०८॥ केचिज्ञाकतराः सन्ति जात्यानां प्रतिरूपकाः। विजातयः प्रयत्ने न विदांसानुपलङ्घयेत् । ५०८ । स्रो इप्रदिग्धो न च यो विभाति यो वा प्रमृज्य: प्रजचाति दीप्तिं।

चाक्रान्तमूडीं च तथाङ्गलिभ्यां यः कालिकां पार्श्वगतां विभक्ति। तं क्रचिमं जातिविचीनरतं

दूरात्त्राजेत् भूमिपतिः खलभ्यं ॥ ५१० ॥

तरजमा ।

जिस्का कद विम्बफलके समान होए, उस्का श्रोजन दश, त्राट, क्य ताला हो सक्ता है; दूससे ज्यादा वड़ा त्रौर क्रोजनमे भारी माणिक पायां निह जाता, लेकिन किसि भाग्यवन्तके नसीवसे दूस्से ज्यादा चीजनका माणिक मिले, तो वह तामाम वस्तुमे मिद्रिकी हासिलकर मक्ता है । २०८।

केत्ने विजाति रत्न सुजाति रत्नके समान दिलवर अर्थात् मने। ज्ञ होते हैं, लेकिन पिष्डित लोग दुम् किसिमके रत्ने लागकरनेका कहते हैं। २०१।

जो माणिक चमकदार होकर प्रकाश ना पावे, चौर जिस्का कापड़े से साफ कर्नेसे पहेकि रेसी चमक कम हो जाय, और दो अङ्गुलीसे पकडकर उठानेसे कालापन देखलाइ देवे, रें से किसिमका माणिक क्वचिम अर्थात् फरेवी और विजाति कहलाता है, उस्को सुफ्त पानेसेभी एक्टेरना मनासिफ निक्त । ५१०।







- 208. That padmarága which is like a vimba,* weighs six, eight or ten tolás—this is the maximum of weight. If any man by good luck happens to obtain a heavier padmarága, he will succeed in whatever he undertakes.
- 209. Some vicious rubies are as beautiful as good ones; but the authorities advise us to shun them carefully.
- 210. That pdmarága which is lack-lustre, or which loses its former brightness on being rubbed by cloth, and which betrays a dark shade on its sides on being held between two fingers, is a false and vicious gem, and should never be worn even when it is selling for a song.

অনুবাদ।

যাহার আকার বিশ্ব (তেলাকুচ) ফলের তুল্য, তাহার ভার দশ, আট ও ছয় তোলা হইয়া থাকে। ইহার অধিক রহদাকার বা গুরুভার পদারাগ পাওয়া যায় না, যদি কোন পুণ্যবানের ভাগ্যে ঘটে, তবে তিনি সর্ব্ববিষয়ে সিদ্ধি লাভ করিতে পারেন। ২০৮।

কতকগুলি বিজাতি রত্ন স্থজাতির স্থায় মনোজ্ঞ হইয়া থাকে, কিন্তু পণ্ডিতেরা তাদৃশ রত্নকে অতিযত্নপূর্বক পরি-ত্যাগ করিতে বিধি দেন। ২০৯।

যে পদারাগ চাক্চিক্যশালী হইয়া প্রকাশ পায় না, যাহাকে বস্ত্রাদিদারা উত্তমরূপে মার্জন করিলে পূর্ব্ব প্রভা পরিত্যাগ করে, ছুইটা অঙ্গুলিদ্বারা ধারণ করিলে যাহার পাথে কালিমা দৃষ্ট হয়, সেই পদারাগ কৃত্রিম, বিজাতি, তাহা অতি স্থলভ হইলেও কখনই ধারণ করিবে না।২১০।

^{*} The bright-red gourd of a plant (Momardica Monadelpha).





मुखम्।

स्रप्राणश्चित सन्दे शाणायां परिष्ठ वेते ।
स्रुवातकमसुत्ये न लिखेदापि परस्परं ॥ २११ ॥
ष्ट श्ची प्रयात्यान्योभावान् गरिमाणं न सुन्नति ।
स स्रोयः गुद्धजातिस्तु स्रोयात्यान्ये विज्ञातयः ॥ २१२ ॥
कुर्वानन्दं तथा वस्रुं विसुन्धान्येन केनिचित्।
न शक्यं लेखनं कर्त्तं पद्मरागेन्द्रनीलयोः ॥ २१३ ॥
यन्मूल्यं पद्मरागस्य मगुणस्य प्रकीत्तितं ।
तावन् मूल्यं तथा शुद्धे कुर्वान्दे विधीयते ॥ २१४ ॥

तर्जमा।

कोद्रप्रकारके परीचा कर्नेसेभी अगर सन्देह दूर ना होता, शानके यन्त्रपर घिस्नेसेही फरेवी और आमल माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, अथवा आसल माणि-कसे घिस्नेसे फरेवी माणिकका हाल मालुम हो जायेगा, अर्थात् कट जायेगा। ५११।

जो माणिक थिम्नेसे श्रीरभी उमदा हो श्रीर श्रोजनमें कम ना होए, वही माणिक श्रासल है, उस्के सेवाय सव माणिक विजातिमें सुमार किये गहे हैं। २१२।

कुरुविन्द और घीरेके सेवाय किसि जातका रत्न माणि-कको कट निच्च सक्ता। २१३।

सर्वेग्रणसम्य च चर्यात् सव तारिफोसे भरा ज्ञया माणि-काका जो मूल होता है, वही किमत वेच्ययेव कुरुविन्द-कीभी होति हैं। २१८।





- 211. Should other tests fail in dispelling doubt, the reality or otherwise of a padmarága will be indubitably ascertained by rubbing it upon a whetstone or with a padmarága of tested genuineness. A false padmarága will receive scratches from the process.
- 212. That padmarága which shines out the more, the more it is rubbed, and which is moreover not light, is a pure gem; the others are impure.
- 213. Excepting kuruvinda and diamond, no gem can make scratches upon either the padmarága or the indraníla.
- 214. A genuine kuruvinda is worth as much as a padmarága furnished with every quality.

অহুবাদ।

অন্যান্য পরীক্ষাদ্বারা সন্দেহ দূর না হইলে শাণ-যন্ত্রে ঘর্ষণ করিলেই পদ্মরাগের কৃত্রিমাকৃত্রিমত্ব প্রকাশ পাইবে, অথবা স্থপরীক্ষিত অপর একখানি পদ্মরাগের সহিত পর-স্পার ঘর্ষণ করিবে, তাহা হইলে কৃত্রিমথানি অঙ্কিত হইবে।২১১।

যে পদারাগ অত্যন্ত মৃষ্ট হইলে অধিকতর শোভা পায়, এবং পরিমাণে লঘু না হয়, সেই পদারাগই শুদ্ধজাতি, তদ্বৈপরীত্যে বিজাতিমধ্যে পরিগণিত হয়। ২১২।

কুরুবিন্দ এবং হীরক ভিন্ন অপর কোন জাতীয় রত্ন পদ্মরাগ ও ইন্দ্রনীলকে অঙ্কিত করিতে সমর্থ হয় না। ২১৩।

সর্বগুণসম্পন্ন পদারাগের যৎপরিমাণে মূল্য নির্দ্দিষ্ট হয়, বিশুদ্ধ কুরুবিন্দেরও সেই পরিমাণে মূল্য হইয়া থাকে।২১৪।





मूचम्।

सगुणे कुरुविन्दे च यावन्मूल्यं प्रकीतितं।

तावन् मूल्यचतुर्थां प्रचीनं स्थाद्वे सगन्धिके ॥ २१५ ॥

यावन्मूल्यं समास्थातं वैश्ववर्णे च स्रुरिभः ।

तावन्मूल्यचतुर्थां ग्रं चौयत स्रू जन्मिन ॥ २१६ ॥

वर्णदीप्तुगपपद्मं चि मणिरत्नं प्रशस्यते।

ताभ्यामौषदिप स्रष्टो मणिर्मूल्यात् प्रचीयते ॥ २१७ ॥

सन्देचो यदि जायेत क्रिक्ने सच्जेऽपि वा।

स्रव्योन्यं घषेयेद्रतं क्रिक्नं तिदिभिद्यते ॥ २१८ ॥

तर्जमा।

वेश्रयेव कुरुविन्दको जेत्ना दाम होगा, सौगत्धिकका दाम उस्से चार श्राना कम होगा, श्रर्थात् कुरुविन्दका दाम श्रगर एक रोपया होए, तो सौगन्धिकका दाम वारे श्राना होगा। २१५।

वैद्यवर्ण माणिकका जो दाम होगा, ग्रुट्रवर्ण माणिकका उस्मे चार आना कम होगा। २१६।

सव किसिम्का जवाहेरात् क्रुट चौर रङ्गसे उम्हा होता है, चौर द्रसिकि जरामि किमसे उस्का हासभी कम हो जाता है। २१७।

त्रगर कि सि रत्नको समभकार सक् पयदा होए. तो एक माचा रत्नसे घिम्ना चाहिए, तो भुठारत चुर हो जाये गा। २१८।





- 215. A saugandhika is worth three-fourth the price of a kuruvinda.
- 216. A súdra padmarága is, according to the authorities, worth three-fourth the price of a Vaisya padmarága.
- 217. All gems derive their value from their lustre and their color; accordingly, gems which are found wanting in these two essentials are of small worth.
- 218. When doubts arise as to the reality of a gem, the infallible test is to rub it with another gem of tested worth. A false gem will be reduced to fragments under the process.

অনুবাদ।

বিশুদ্ধ কুরুবিন্দের যত মূল্য হইবে, স্থগন্ধিকের মূল্য তাহার তিনের চতুর্থাংশ হইয়া থাকে। ২১৫।

পণ্ডিতেরা বৈশ্যবর্ণ পদ্মরাগের চতুর্থাংশহীন মূল্য শূদ্র-জাতি পদ্মরাগের মূল্য নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২১৬।

সর্ব্যপ্রকার রত্ন দীপ্তি ও বর্ণান্তুসারে প্রাশস্ত্য লাভ করে, সেই বর্ণ ও দীপ্তি হইতে ঈষৎপরিমাণে ভ্রফ হইলে তাহার মূল্যও অল্ল হইবে। ২১৭।

যদি কোন রত্নকে কৃত্রিম বলিয়া সন্দেহ জন্মে, তবে একথানি অকৃত্রিম রত্নের সহিত ঘর্ষণ করিবে, তাহাতে কৃত্রিমথানি চূর্ণ হইয়া যাইবে।২১৮।





मूलम्।

सर्वेवचणसम्पूर्णे पद्मरागे गृष्टे स्थिते। अध्वमेधफलं तस्य वित्तमायुर्जयं वसेत्॥ २९८॥

तर्जमा।

सर्वेल चणाक्रान्त एक पद्मराग श्रथित माणिक मकानमें रहनेसे अश्रमेधयत्त्रका फल लाम श्रनायास प्राप्त होता है, श्रीर उस्से धन, उमरकी दृद्धि श्रीर जय लाम होता है। २१८।

इति पद्मरागका वयान।





219. The treasuring up of a padmarága furnished with every perfection is as meritorious as the celebration of the Aswamedha* jajna, and leads to wealth, success and long life.

অনুবাদ।

দর্বলক্ষণাক্রান্ত একখানি পদারাগ গৃহে থাকিলে অশ্বমেধ্যজ্ঞের ফল অনায়াদে প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং তাহাতে ধন, আয়ুর্বন্ধি ও জয় লাভ হয়।২১৯।

ইতি পদারাগ।

The Horse Sacrifice a celebrated ceremony, the antiquity of which reaches back to the Vedic period. Vide hymns 162 and 163 in the first Mandala of the Rig Veda. In later times its efficacy was to entitle the sacrificer to displace Indra from the dominion of Swarga. In it, the horse was generally, if not always, immolated.





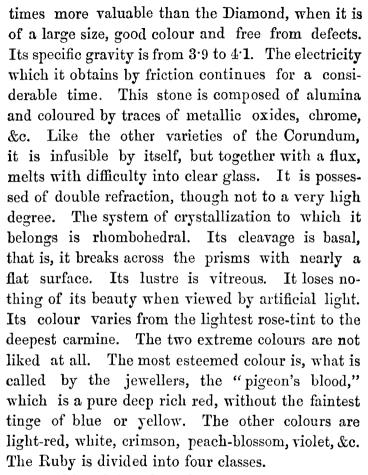


THE RUBY.

Its Properties.

HE Ruby is perhaps the hardest substance known, next, of course, to the Diamond. It is a variety of the Corundum, which name (derived from the Sanskrit korund,) is used to denote the class of aluminous stones generally; and particularly a species or subdivision of that class. the crystalline form (which is generally rough and deformed), the Corundum appears in compact masses and in aggregates of grains of different sizes. the different varieties of the Corundum derive their names from their colour. Thus, the crimson red Corundum is called the Oriental Ruby; the colourless, white Sapphire; the azure-blue, Oriental Sapphire; the indigo blue, indigo Sapphire: the violet, Oriental Amethyst; the yellow, Oriental Topaz &c. &c. &c. Count Bournon was the first European who had classified the Corundums into different heads (in 1802.) But the Eastern nations have however adopted the different designations for several centuries past. The first and most important variety of the Corundum is the Rubythe coarsest being the Emery, which is used for polishing metals, gems, marble, &c. It is some-





1st.—The Oriental Ruby, called by Pliny the Indian Carbuncle, is the best favorite and most valuable of all. Its chemical properties have been described under the general heading. Theophrastus speaks of it as being incombustible and having the appearance of a burning coal when held up to the sun. Hence the name "Anthrax" (or "live coal,")





given to it by the Greeks. The ancient writers, both of the East and West, have described it as having the power of shining in the absence of all light. The fact is, that the Ruby can be rendered phosphorescent by exposing it to sunshine for sometime or by putting it in a close crucible, heated to a certain degree.

2nd.—The Spinel Ruby is of a fine lively red hue, with a cinnam on tint about it, but is very inferior to the true Ruby in brilliance. It is found in granular lime-stones; is transparent and translucent and receives its red tint from chromic acid. It belongs to the cubic system of crystallization and is almost found in octrahedral crystals. It does not acquire electricity either by friction or heat; is possessed of simple refraction and is infusible before the blow-pipe. It is distinguished from the Ruby by its peculiar formation and inferior hardness. Its specific gravity is from 3.5 to 3.8. It is called by the natives of India the Lal Rumani or the Pomegranate Ruby.

3rd.—The Balas Ruby is of a pale rose-colour and is of the same composition as the Spinel. According to the Persian tradition, the mines of these stones were not discovered until after an earthquake which rent the mountain in two. Their inferior hardness prevented people from taking them as the real Rubies. The ancient Greeks connect the origin of the name "Balas" Ruby with the word "Palatius," as they supposed it to be the matrix or







palace in which the true Ruby was found. Probably, the name is derived from the mountain "Ballaheia" in India, which, according to Marco Polo, used to supply this stone. The old French name "Rubin de Balais" adds weight to this assertion. The name Balas may have originated from the word "Ballen" or king—the Phrygian name for a certain fiery stone. Chardin attributes the origin of the name to "Balachani," the stone of "Balachan" (Pegu)—the Persian name for the Ruby. Some say that the original of the term "Balas" Ruby is the ancient name of Beloochistan, Badakschan or Balaschan.

4th.—The Rubicelle is an inferior variety of the Spinel and is of a yellowish red color.

The Rubies are often found in company with Sapphire, Zircon, oxide of tin, magnetic iron, Topaz, &c. Where Rubies and Sapphires are met with, gold is almost certain to be present.

Where found.

THE finest Oriental Rubies come from Burmah, Siam, India and Ceylon. Rubies are also found in Hohenstein on the Elbe, in the rivers Rhine and Danube; Espailly in Auvergne and Iser; in Bohemia; France, Brazil, Australia, Borneo, Sumatra, &c.

The most beautiful of these stones are those that come from Burmah. The mines are very strictly guarded and rendered difficult of access to the Europeans. They are a royal monopoly, extreme care being taken to prevent the stones getting







out of the country. The excessive fondness of the King for these stones has earned him the title, "Lord of the Rubies." Whenever any particularly large stone is found, a procession is sent with great eclat to meet it. When Pegu, the "father-land of Rubies," was annexed to the British Crown in 1852, it was thought that the English Government would be richer by its acquisition. But whether on account of the dangers in the shape of wild beasts that surround the Rubyvielding countries, or some other cause, Government has been sadly disappointed. inhabitants of Burmak believe that Rubies ripen in the earth, that they are at first crude and colorless, and that, as they ripen, they become yellow, green, blue and last of all, red-which is the sure sign of perfect ripening. The Burmese law prohibits the sale of Rubies in the market and makes it compulsory on the discoverer of stones of a certain weight (100 ticals) to make them over to the Government, under pain of death. To avoid this dangerous law, the finder often breaks up the large stones into small pieces; thus causing more loss to the Government than he gains. The Rubies that come out of Burmah must be either stolen ones or passed out through the agency of private individuals.

The Rubics that come from Ceylon are generally found in the beds of rivers.

Some pretty-looking Rubies have been found for many years in Badakshan, a part of Tartary.







Some were also found on the slopes of the Oxus, near to Shushan and Charan. The natives of these places are under the impression that Rubics always occur in pairs. If they chance to find out one, they are sure to conceal it until the other is found, failing which, they will break it in two.

Many Rubies have been found in the gold washings in Australia, but most of them are taken no notice of, being considered as Garnets. Some, however, of very good quality have found their way into the London market.

The Spinel Rubies are found in rolled pebbles in alluvial deposits and the beds of rivers in Ceylon, Ava, Mysore, Beluchistan, and other Eastern countries; in Meronity in Bohemia and in Libenburgen; in the region between Amity and Andover in North America: also in the Ovens River in Victoria and in the Pearl Rivers of New South Wales and other parts of Australia. Blue Spinels are found at Aker in Sweden; also in Forland and Straskan in Moravia; in Antwerp and Cevlon. These are translucent and generally contain three to four per cent. of iron. The Chloro-Spinels or green Spinels are found in the Ural Mountains. Black Spinels or Ceylonites, (also called Pleonaste by Haüy,) have been found in Ceylon, Bohemia, in the River Iser, in the Tyrol, at Andernach on the Rhine. in Russia and in several places in the United States, where also the brown Spinels are found in abundance. The specific gravity of the Pleonaste







is from 3.5 to 3.8. The principal thing in its composition is aluminum and about 10 per cent. of protoxide of iron. It is infusible before the blow-pipe and with borax forms into an iron-colored glass. The automalite or zinc Spinel is found in Sweden. The white Spinel is found at La Riccia near Rome. Some also come from Brazil mixed with Diamonds.

The Balas Ruby has been described by Marco Polo as being chiefly found in the Balascea or Ballahia (on the upper Oxus,) where they were found below the surface soil, and from which place, he had, in the latter half of the 13th century, made a collection.

Mode of Cutting.

The Ruby is cut by means of Diamond powder on an iron wheel or skaif, and polished on a copper one with tripolis and water. In the East, Corundum is used for cutting, but the work is not flat and sharp. The usual form of cutting is the mixed or half-brilliant, although silky and imperfect stones are often cut en cabochon—a cut by which the stone receives one or two convex faces, with or without facets at the base. The Asteriated Rubies, that is, those that have a six-pointed star across the crystal, formed by a silky imperfection in the gem, are also cut en cabochon and particular care is taken to get the centre of the star as nearly







as possible in the middle of the gem. Such stones, if possessed of good colour, fetch very high price in the market.

The Spinel is cut on an iron wheel, with Emery or Diamond powder and polished on a copper one. The form is generally the mixed-cut. The colour of this stone becomes deeper by being heated.

The Ruby, as known to the Ancients.

THE Ruby is spoken of in the book of Job and in the Proverbs, in the Bible. The breast-plate of the High Priest, which was composed of twelve stones, included the Ruby, then known as the Carbuncle. The fact of its having been well known to the ancient Greeks and Romans admits of no question whatever. The Anthrax of Theophrastus and the Indian Carbuncle of Pliny are, beyond doubt, Rubies According to Pliny, the Ethiopians used to increase the lustre of Rubies by steeping them in vinegar for 14 days. Though this process added to their splendour for the same number of months, they were afterwards rendered softer and more brittle. Ælian, an ancient natural-historian, relates how a certain widow named Heraclea, had tended a young stork and cured one of its fractured legs and how the bird, in token of its gratitude for her kindness, presented her with a Lychnis (Ruby). But the question as to why of all others the Lychnis was selected for the present, is best answered by the







assertion of Philostratus, according to whom, storks were in the habit of placing these stones in their nests as amulets against serpents, and therefore as a fitting reward for the valuable services rendered by Heraelea, such a useful thing was presented to her. In an account of the statue of the Syrian Goddess (Astarte), Lucian speaks of her, as wearing on her head a gem called Lychnis (lamp-stone,) which used to light up the temple throughout the night. Epiphanius, speaking of Carbuncle, says, "when worn, it is impossible to conceal it, for notwithstanding whatsoever clothes it may be covered over with, its lustre shows itself outside its envelope, whence it is called Carbuncle." The Oriental nations speak of Rubies and other precious stones as illuminating the place in which they were kept.* In China, Rubies have been used from the earlist times for ornamenting the slippers of women, and in India, for being set into cups, vases, sword-handles or pipe-mounts and other ornamental things.

Engravings.

Ancient intaglios and cameos, tengraved on this stone, are still in existence, some of which are said

engraving can be executed on almost all sorts of stones.





^{*} There is a belief existing in India that Rubies grow in the head of * There is a belief existing in India that Rubies grow in the head of serpents and that they can be obtained by throwing a lump of cowdung over them, when the serpents occasionally take them out of their heads to illumine the place where they search for food, and in order that flies and insects might gather round them, attracted by the light. It is popularly believed that these stones are so valuable, owing to their rarity, as, to be called "the wealth of seven kings."

† Intaglios have the design sunk below the surface; in cameos, the subjects are in relief, or raised above the surface. Both these kinds of engaging can be executed on almost all sorts of stones.



to have been done, 500 years B. C.,—a period when the Greeks had attained the acme of artistic excellence. A large oval slightly convex stone, of the real pigeon's-blood colour, in the Devonshire parure, has a "Venus Victrix" engraved upon it. also exists a full-length figure of Osiris in half-relief. Then there are a gorgon's head and a head of Pertinax, engraved on Spinels; and the head of a Bacchanite, upon a Balas. The earliest example of an engraving executed in the Middle Ages, has been discovered in the Spinel of the Marlborough It is a beautiful stone, 3 of an inch cabinet. square, upon which is engraved a head in front face, wearing a crown, resembling very much that of Henry VI, as found upon his great seal. Italians have left many engravings on the Ruby, amongst which may be mentioned an intaglio, of a head of Thetis, capped with a crab's shell, at present in the possession of the Rothschilds; and a cameo of a head of Serapis in front face, found in the Hope cabinet of precious stones. Amongst the collection of cameos of our Most Gracious Majestv. is one having the head of Louis XII, engraved upon a fine stone of considerable size,—a specimen of the art after the Revival. Dominico dei Camei engraved upon a Balas of the size of a shilling, the intaglio portrait of Ludovico il Moro. Orleans cabinet had a Ruby engraved with an intaglio head of Henry IV, with the date 1598. Chardin who, in 1666, examined a Ruby, amongst the







Crown jewels of Persia, describe it as being as big as a hen's egg cut in half. The upper part of this stone bore the name "Chaic Sophy," cut upon it by its former master who had considerably marred its beauty by so doing. Pistrucci executed a beautiful front face of Diana on a Ruby, about \(\frac{1}{2} \) inch long.

The Price of the Ruby; its Flaws and Defects;
Mode of Testing.

The jealous care with which the best Oriental Rubies are kept by the King of Burmah, renders them difficult of access to the public and makes them sometimes more valuable than the Diamonds. The ancients put a very high price upon the Rubies. In the present day, fine Rubies under $\frac{1}{2}$ a carat, if English cut, cost from £ 4 to £ 10; if Indian cut, from £ 1 to £ 4.

A Ruby of one carat is worth from £ 14 to £ 20 Ditto $1\frac{1}{2}$ ditto ditto " 25 to " Ditto 2 ditto ditto , 70 to , ditto ,, 200 to ,, 250 Ditto 3 ditto Ditto 4 ditto ,, 400 to ,, 450 ditto Stones of greater weight than 4 carats, being rarities, fetch fancy price.

Rubies with flaws and specks, or having any silky or milky appearance, either on the table or beneath it or which are too deep or too pale in colour, are now much depreciated in value. A pale Ruby of 4 carats might be worth less than £ 12. It is true







that there are many Rubies in the market but these are of inferior quality and cannot command the same value as the true Oriental Rubies that come from Burmah and Siam.

The value of the Spinel and Balas Rubies varies chiefly according to the demand, character and cut of the stones, and sometimes, to caprice and fashion. At the present time the value of small Spinels ranges from 5 to £10 per carat.

Medium size of fair color, 20 to £ 40 per carat Large ,, 60 ,, £100 ,,

As an instance of the uncertainty of the value of the Spinels, a stone weighing 40 carats, clear and of good quality, was sold in 1856 for £400; in 1862, it fetched £80 by public auction, and was lately sold for £240.

So is the case with Balas Rubies; for example, a dark rose-red Balas of 10 millimetres, square-cut and polished as a brilliant will fetch 300 francs; while a pale rose of like character and size will sell for 20 francs only. A specimen of 5 carats will occasionally realize £50. At the sale of the Marquis of Drée, a Ruby of 10 grains sold for £56.

In order that the pivots of watches may turn with greater precision, they are set in small Rubies perforated for the purpose; but these small jewels, about the size of millet grains, though very useful, are not of much value, owing to their abundance.

To test a perfect Ruby, it has to be placed on the same sheet of paper on which the fresh blood of a





pigeon has been dropped. The perfection of the stone can then be ascertained if it exactly agrees with the blood in color. The Spinels or Balas Rubies have often been passed off as true Rubies: but with any one acquainted with the physical and chemical properties of these stones, the deception would not succeed. The hardness and specific gravity of the true Ruby is much greater than those of the others. An unset stone can easily be tested by taking its specific gravity; a set one would, if a true Ruby, be scratched by Diamond only but would scratch all other stones; if a Balas or Spinel, it would be scratched by a Sapphire. Then the refraction would point out the nature of the stone. In the case of the true Ruby, it would be double (though in a small degree,) but in that of the Spinel or Balas, it would be absolutely simple. The Brazilian pink Topaz is often made to imitate the Ruby by placing it in a crucible with sand and heated till it gets the requisite color. But it differs essentially from the real Ruby in its character. Its specific gravity is from 3.4 to 3.6, whereas that of the Ruby is from 3.9 to 4.1. It is 8 in the scale of hardness, while the Ruby is 9, i. e., next to Diamond, which has the full standard number 10.

The Garnet is sometimes made to pass for the true Ruby. The Garnet, however, pure and brilliant, will appear black and opaque, if held so as to reflect the light directly; while the Ruby would







retain its transparency and true color. Sometimes Garnets backed up by Ruby foils have been mistaken for Rubies. The Parisian traders have recently hit upon a plan by which they can, without the use of foils, give to pale valueless Rubies the best color they should have. They fill up the inside of the setting with Ruby-enamel, which gives a deep tinge to the entire stone enclosed The Rubies are also imitated in paste, which can only be detected by touching them with the emery-stone (cote). The artificial gems will appear softer and brittle, inferior in weight and, in some cases, showing silvery air bubbles in the interior. The Rubies are sometimes infected with white spots but these are removed by burning.*

The Spinel is also mistaken occasionally for the Garnet and more frequently for the Jacinth owing to similarity of color. But both these stones are of inferior hardness: while the Spinel would scratch quartz readily, these would, but slightly. Then, the Jacinth has double refractive power in a very high degree, whereas the Spinel has simple refraction.

The Marvellous and Medicinal Powers attributed to the Ruby.

Each precious stone was supposed to have been gifted with special powers. The pharmacopæa of

^{*} The Indian jewellers, however, in spite of great care and labor, have not yet succeeded in entirely removing these spots from the stones.







the ancients had, among its most potent remedies. a very costly compound called the "Five Precious Fragments" which consisted of powdered Rubies, Topazes, Emeralds, Sapphires, and Hyacinths. But as the patients were not likely, nor were they competent, to analyze the chemical properties of the mixture, it generally happened that the physicians used to pocket the real gems, by substituting false ones in their place. The Oriental Ruby, or the Carbuncle of the ancients, whether used externally or internally, was an antidote to poison and plague; it drove away sadness, evil thoughts, wicked spirits, night-mares and diverted the mind from sensuality. It was also used as an amulet against all illness. It would warn the wearer of the approach of any misfortune, by a change of color to blackness and would not resume its original brightness until the peril had passed away. To confirm the above, we can not resist the temptation of reproducing here the following apparently authentic story related by Wolfgang Gabelchover, a German philosopher, as quoted by Tollius: "It is worthy of notice that the true Oriental Ruby presages to the wearer by the frequent change and darkening of its color that some inevitable loss or misfortune is not far off: and in proportion to the greatness of the coming evil, so doth it assume a greater or less degree of darkness and opacity—a thing which I have heard repeatedly from people of the highest eminence and have, alas! experienced in my own person.







For, on December 5th, 1600, as I was travelling from Stutgard to Cal-wam in company with my beloved wife Catherine Adelmann, of pious memory. I observed most distinctly during the journey that a very fine Ruby, her gift, which I wore set in a ring upon my finger, had lost, once or twice. almost all its splendid color and had put on dullness in place of brilliancy and darkness in place of light: the which blackness and opacity lasted not for one or two days only, but several: so that being beyond measure disgusted thereat, I took the ring off my finger and locked it up in my trunk. Whereupon I repeatedly warned my wife that some grievous mishap was impending over either her or myself, as I foreboded from the change of color in my Ruby. Nor was I wrong in my anticipation, inasmuch as within a few days she was taken with a fatal sickness that never left her till her death. And truly after her decease, its former brilliant color again returned spontaneously to my Ruby."

Celebrated Rubies.

TAVENIER speaks of a Ruby seen in the possession of the King of Visapore, India, weighing 50 carats and of very fine quality. The best Oriental Rubies, as we have said before, are rare in the market, being monopolized by the King of Burmah, who is reported to be the owner of a Ruby, of an extraordinary quality and of the size of a pigeon's egg.





But no Europeans have hitherto been allowed to have a look at it. The king of Ada has a perfect Ruby of the size of a small hen's egg, which he uses as an ear-drop. One of the largest Rubies in the Crown jewels of France, adorns the Order of the Golden Fleece and is cut into the form of a dragon with extended wings. There was a remarkable Oriental Ruby of the size of a pigeon's egg, in the Crown of the Empress Catherine of Russia, known to have been presented to her by Gustavus III of Sweden, when on a visit to St. Petersburg, in 1777. There was one in Paris, seen by Fartiére, which weighed $406\frac{1}{2}$ carats. There are several Rubies of good size and quality among the Crown jewels of Austria. It is related by Gesner that Catherine of Arragon used to wear a ring set with a stone which became luminous at night and which was therefore conjectured to be a Ruby. Two remarkable genuine Rubies were sent to England from Burmah in 1875. The sale of these two stones caused great excitement at Burmah and the fact of two stones of such extraordinary quality appearing simultaneously created not a little sensation in England. One was a dark-colored stone, cushion-shaped and weighing 37 carats, and the other, a blunt drop shape of $47\frac{1}{15}$ carats. Both were put in the hands of Mr. James N. Forster of London for recutting. The former was reduced to $32\frac{5}{16}$ and the latter to $39\frac{9}{16}$ carats. Both of these have found purchasers in the Continent, the smaller





fetching over a lac of Rupees. The largest Ruby seen in India by Garcias did not exceed 24 carats; it was bought by a prince in the Deccan for 156tb. weight of gold.

Rudolf II possessed a Ruby as big as a small hen's egg, bequeathed to him by his sister, the Queen Dowager of France; it was about 100 carats in weight and was reported to have been originally valued at 66,000 ducats. But modern mineralogists have pronounced this to be a Spinel.

In the front of the Crown of our Most Gracious Majesty is the famous Ruby (now pronounced to be a Spinel) said to have been given to Edward the Black Prince by Don Pedro (King of Castile,) after the battle of Najera (near Vittoria,) in 1367. It was afterwards worn upon his helmet by Henry V, at the battle of Agincourt, 1415. It is an irregular oval, pierced through the middle, according to the usual oriental fashion; the upper part of the perforation being concealed by a small Ruby. Two large Spinels taken from India in 1861 were shown in the Exhibition of 1862. The one that was exhibited by Messrs. Hunt and Roskell, was a cabochon-cut, octagon-shaped stone, of perfect color and free from flaws. It originally weighed 197 carats and after being cut by Mr. Forster, 81 carats. The other Spinel was also of the same shape and color, originally weighing $102\frac{1}{4}$ carats, and after being recut, 72½ carats. One Spinel collected by Dr. Heron, is said to be 49th; being in 3 pieces





and containing cavities filled up by crystals of Corundum. In the list of the French Crown jewels taken in 1791, we find, amongst others, one Spinel Ruby of $56\frac{3}{4}$ carats, worth 50,000 francs. A specimen of a blue Spinel, a thick oblong stone, was in the possession of Messrs. Pittar Leverson & Co. It was an Indian-cut stone, weighing 37% carats and after being recut (by Mr. Forster,) 25 carats. It was originally sent from India as a Sapphire and having been afterwards found out to be a Spinel, the purchaser returned it to the merchant, who at once wrote to the consigner in India. The statement not being believed, the merchant had it cut and upon its identity as a Spinel being established, sold it for a much higher sum than it had fetched as a Sapphire. Tavernier tells us that he counted on the Great Mogul's throne, 180 large Rubies varying in weight from 100 to 200 carats and one single gem that weighed $2\frac{1}{3}$ ounces. These were, however, Balas Rubies. In the catalogue of the French Crown Jewels, of 1791, mention is made of two Balas Rubies, one of which, weighing $20\frac{3}{3}$ carats, was valued at 10,000 francs and the other, weighing $12\frac{3}{5}$, at 3,000 francs.

Charles the Duke of Burgundy, had lost several valuable stones at Granson. Among these were 3 Rubies called the "three brothers" and two called "La Hotte et la Balle de Flandres." James I, in sending some jewels to his son, mentions the "three brethren." The similarity of the name





leads many to identify these as the Rubies once belonging to the Duke.

Sir James Melville, in his Historic Memoirs. says that Queen Elizabeth showed him "a fair ruby, great, like a racket ball." Runjeet Sing is said to have owned a large Ruby weighing 14 tollahs. with the names of Aurungzebe, Ahmed Shah and several other kings engraved upon it. Robert de Berquem mentions that when Josephus Barbaro had (in 1472) an audience with Yussum Cassam, the king of Persia, (at whose Court he was an ambassador for the Venetian Republic,) he was shown a hand-kerchief, filled with the most valuable of precious stones. Amongst these was a table cut Balas Ruby, of, at least, a finger's breadth, of the most beautiful colour and weighing 2½ ounces. De Berquem also speaks of 3 great Rubies, belonging to a Parisian of great rank. The one had once been set in a gold crown covered with gems, with which Pope Stephen V, (who came to France in 817) crowned the King of France, Louis le Debonnaire, as Emperor. This Ruby was in the shape of a Lozenge and weighed 129½ carats. other was egg-shaped and weighed 2443 carats. It was given to Charles, Duke of Anjou, by the Neapolitans, in 1264. The third, weighing 209 carats, had belonged to Anne, Duchess of Brittany who married Charles VIII in 1491. How these monster stones came into the hands of the Parisian nobleman and what became of them subse-







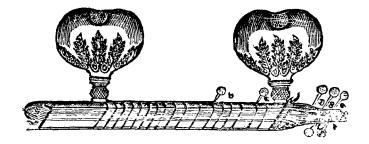
quently are not known to us. It is said that when Peter the Great left England, he presented the King with a "rough Ruby, which the greatest Jewellers of Amsterdam (as well Jews as Christians) valued at £2,000 sterling."

Some very good Rubies are to be found in India. A fine Oriental Ruby was recently bought of a Burmese merchant (at 22,000 Rupees), by Sir Salar Jung, on one occasion of his visit to Calcutta. The estate of the Paikpara Raj family (in the suburbs of Calcutta) has in its possession a large Ruby, set in a ring, and free from flaws. Another Ruby of a good size, also set in a ring is to be seen with Rai Luchmeeput Sing Bahadoor Azimgunj. Babu Hurruck Chand of Moorshedabad has with him a Ruby of the true "pigeon's blood" color. A large Ruby is to be seen in the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor, set in a ring and having some Chinese letters, forming the name of God engraved There is also one large Ruby of the on its back. size of a pigeon's egg lengthwise cut in half, set in one of his watch-chains. It weighed about 500 Ratis in its rough state, and has, upon being cut. been reduced to about 300 Ratis. There is also one beautiful Ruby of about 93 Ratis, set in another watch chain of the Maharajah's.













भ्रथ वैद्रय्यम्।

मूलम्।

स्विद्दरे गिरे: कस्य तथै वोत्स कृदेशतः।
स्वित्यकाप्रदेशे च वैदृर्यस्थाकरो भवेत्। २२०॥
पद्मरागसुपादाय मणिवणि हि ये चितौ।
सर्व्यास्तान् वर्णशोभाभिवेदृर्यमतुगच्छिति। २२०॥
सितस्र धूससङ्काशमीषत्कृष्णत्विषस्भवेत्।
बेदृर्यं नाम तद्रवं रत्नविद्विद्दर्यमतुगं । २२०॥
तेषां प्रधानं शितिकण्डनीलं
यद्दा भवेदेणुदलप्रकाशं।
साग्रपचप्रतिमित्रयो ये
न ते प्रशस्ता मणिशास्त्वविद्वः॥ २२५॥

वैद्रय्ये अर्थात् लगुनियेका वयान।

तर्जमा।

किसि किसि पाचा इसे नरीवकी जमीनमे, वीचके चिस्से और चोटीपर लग्गुनिया पाया जाता है। २२०। पद्मराग वगैर इज चेरातमे जिस्तर हका रङ देख्ला द्र देता है, वही सब रङ्ग वैद्वया अर्थात् लग्गुनियामेभी होता है। २२१।

उस्के सेवाय सफेद रङ्ग, वेंग्रणी रङ्ग और घोड़ा सेयाद्र, यही तिन रङ्ग लग्रुनियामे देख जाते हैं। १२२।

रत्नपारची पण्डितलोक कहते हैं, के जित्ने किसिमका लग्निया है, उसमेसे जो रक्त मोरेके गले और वांशके पत्तके समान हैं, वही प्रधान है। और जिस्का रक्त नीलकण्डपचीके परके समान है, वह श्राच्छा नहिं। २२३।



THE CAT'S-EYE.

TRANSLATION.

220. CAT'S-EYE quarries are found at the top, or the mid region of certain mountains, as well as in their vicinity.

221—222. All those colors that shine in the padmarága and other gems of a like nature, are also seen in the Cat's-eye. Besides these, we find white, smoke-colored and gray cat's-eyes.

223. Of Cat's-eyes, those which in color resemble the peacock's neck or the bamboo leaf are first-class, while those resembling the wing of the nila-kantha* bird are of small worth.

देवपूर्या ।

অহুবাদ।

কোন কোন পর্ব্বতের সন্নিহিত প্রদেশ, মধ্যভাগ ও অধিত্যকা প্রদেশে বৈদুর্য্যের আকর লক্ষিত হয়।২২০।

পদারাগপ্রভৃতি রত্নসমূহে যে সকল বর্ণ দৃষ্ট হয়, সেই সকল বর্ণ ই বৈদূর্য্যমণির অনুগামী; তদ্ভিন্ন শুক্ল, ধূমল ও ঈষৎ কৃষ্ণবর্ণবিশিষ্ট বৈদূর্য্য দেখা যায়। ২২১। ২২২।

মণিশান্ত্রবিৎ পণ্ডিতেরা কহেন, যতপ্রকার বৈদ্র্য্য আছে, তন্মধ্যে যে গুলির বর্ণ ময়ুরের কণ্ঠ অথবা বংশ-পত্রের সদৃশ, সেইগুলি প্রধান, এবং যাহাদের বর্ণ, নীল-কণ্ঠ পক্ষীর পক্ষের তুল্য, তাহারা প্রশস্ত নহে। ২২৩।





^{*} A species of gallinule or water-hen. (?)



मूचम्।

वस्न चिन्यविद्र शूद्र जातिभेदा चतुर्विधं।
स्वचणं भवेद्रवं वैदृष्यं नाम भूमितः ॥ २२४ ॥
सितानीनो भवेदिपः सितारक स्व बाज्जः।
पीतानीन स्व वैद्यः स्यादीन एव हि शूद्रकः ॥ २२५ ॥
एकं वेणुपना सको मनक चा मायूरक एट त्विषा
मार्ज्ञारे चणिष ज्ञन्त च्छिविजुषा च्चे विधा च्छायया।
यद्गाचं गुकतां द्धाति नितरां स्विध्यन्तु दोषोषितं
वैदृष्यं विश्वदं वदन्ति सुधियः स्वच्छ च तच्छोभनं ॥ २२६ ॥

तर्जमा।

जिस्तर इसे मनुष्यके ब्राह्मण, चित्तु, वैश्व और श्रद्र चार जात होते हैं, उसी तरहसे लशुनियामें भी चार जात है। और यही चार जात सुलचणाकान्त लशुनिया जमी-नसे पयदा होता है। २२४।

थोदा नीलापनिलयेक्यये सफेद रङ्ग लशुनिया ब्राह्मण जात है, थोदा सुखीमायेल मफेद रङ्ग लशुनिया चिन्न् जात है, थोदा नीलापनजरिदमायेल लशुनिया वैश्व जात है और नीलरङ्ग लशुनिया श्रद्र जात है। २२५।

वांशका नया पत्ता, मोरका गला, विञ्चीकी आंख, दुन्हीं तिन चीजोंके समान लशुनियाकी छाया देखि जाति है, और जो लशुनिया खोजनमें भारी, और वज्जत् सिक्ध, वेखवेब, निर्माल खौर खच्छ हो, पिएडत लोक उसको अति शुभलचण कहते हैं। २२६।



224. The earth produces all the four castes of Cat's-eye redolent of lucky signs.

225. A white Cat's-eye furnished with a blue gleam (say the authorities), is a Brahmin, a white Cat's-eye with a gleam of red, is a Khetriya, a yellow Cat's eye with a blue lustre, is a Vaisya, and a purely blue Cat's-eye is a Sudra.

226. Cát's-eyes possess a shade like the color of a fresh bamboo leaf, peacock's neck, or a cat's eye. Those Cat's-eyes that are heavy, deliciously cool, flawless, smooth and otherwise faultless, the authorities consider to be very lucky.

অনুবাদ।

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র এই জাতিচতুইয়ভেদে চতুর্বিধ স্থলক্ষণাক্রান্ত বৈদ্র্য্য-মণি ভূমি হইতে জনিয়া থাকে। ২২৪।

ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ বৈদূর্য্য ব্রাহ্মণজাতি, ঈষৎ লোহিতের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ বৈদূর্য্য ক্ষত্রিয়জাতি, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত পীতবর্ণ বৈদূর্য্য বৈশ্যজাতি ও বিশুদ্ধ নীলবর্ণ বৈদূর্য্য শূদ্রজাতি বলিয়া কথিত হয়। ২২৫।

বংশের নৃতন পত্র, ময়ুরকণ্ঠ ও মার্জারের চক্ষু এই তিন বস্তুর ন্থায় ছায়া বৈদূর্য্যে দৃষ্ট হয়, এবং যে সকল বৈদূর্য্য ওজনে ভারী, অত্যন্ত স্লিগ্ধ, দোষবর্জ্জিত, নির্মাল ও স্বচ্ছ, পণ্ডিতেরা তাহাদিগকে অতি শুভ-লক্ষণযুক্ত কহেন। ২২৬।





मूचम्

ष्ट्रं यदात्मना खच्छं खच्छायां निक्रवाधानि । स्कुटं प्रदर्शयेदेतहैदूर्यं नात्यमुच्यते ॥ २२७ ॥

ऋष वैदूर्यगुगाः।

मार्ज्जारनयनप्रस्थं रसोनप्रतिमं हि वा।
किलिलं निर्मालं व्यक्तं वैदूर्यं देवभूषणं ॥ २२८॥
स्तारं घनमत्यक्तं किलिलं व्यक्तमेव च।
वैदूर्याणां समास्याता एते पञ्च महाग्रणाः ॥ २२८॥
उतिरिज्ञव दीप्तिं यत् मुतारिमिति गद्यते।
प्रमाणतास्यं गुरु यत् घनमित्यभिधीयते ॥ २३०॥

तर्जमा।

कसौटीपर घिस्नेसे जिस् लगुनियेकी खच्छता धौर साफाइ जरादातर होति जाय, वही लगुनिया आसल है। २२७।

लगुनियेका गुगा।

विज्ञीकी यांख और लहमुनके समान, कलिल, निम्नाल और व्यक्त लमुनिया देवताचेंकि लायेक हैं। २२८०।

सुतार, घन, ऋत्यच्छ, कलिल और व्यङ्ग, यही पांच किसिमका लग्नुनिया बद्धत् ग्रुणसम्पद्ध है। २२९।

जिस् लग्नुनियामें श्राभा निक्ले, उसे सुतार कहते हैं, जो कदमे कोटा, लेकिन श्रोजनमें भारी, उस्को घन कहते हैं। २३०।



227. That Cat's-eye which on being rubbed over the touch-stone attains additional lustre and smoothness, is sterling and excellent.

Qualities of the Cat's-eye.

- 228. That kalila or byanga Cat's-eye which is like a veritable cat's-eye, or a garlic, and which is perfectly smooth, is a gem worthy of the acceptance of the gods themselves.
- 229. Sutára, ghana, atyachchha, kalila and byanga are the five best kinds of the Cat's-eye.
- 230. The Cat's-eye which sparkles beautifully, is called *sutára*; that which combines small bulk with heaviness, is called *ghana*.

অহুবাদ।

ক্ষপাধাণে মুফ হইলেও যে বৈদ্র্য্যের স্বচ্ছতা ও ছায়া অধিকতর উজ্জ্বলভাবে প্রকাশ পায়, সেই বৈদূর্য্যই উৎকৃষ্ট বলিয়া প্রশিদ্ধ ও অকৃত্রিম। ২২৭।

देवपूर्यग्रत छन।

মার্জার-নয়ন বা রদোনের প্রতিরূপ, কলিল, স্বচ্ছ ও ব্যঙ্গ বৈদুর্য্য দেবভোগ্য। ২২৮।

স্থতার, ঘন, অত্যত্ত, কলিল ও ব্যঙ্গ এই পঞ্চিধ বৈদূর্য্য । মহাগুণসম্পন্ন। ২২৯।

যে বৈদুর্য্য হইতে দীপ্তি উদ্গীর্ণ হয়, তাহাকে স্থতার কহে, যাহা প্রমাণে অল্প, কিন্তু ওজনে গুরু, তাহা ঘন নামে বিখ্যাত। ২৩০।





मू सम्।

क्लाइ विचीनं तदत्य च्छमिति की तिर्ततं। व्रह्मस्वकलाकारस्य बली यव दश्यते । २३१ ॥ किल्लं नाम तद्रवं सब्बेसम्पत्तिकारकं। विश्विष्ठाञ्जन्त् वैद्वर्यः व्यक्जमित्यभिधीयते ॥ २३२॥

ऋष बैदूर्यदोषा।

शक्तरं कक्कं रं चासः कलक्को देच दूत्यपि। एते पच महादोषाः वैद्वयाणामुदीरिताः ॥ २३३॥ णक्षायक्तमिव यत्पृतिभाति च णक्ष[े]रं। सार्थे खरं यत् तज्ज्ञे यं कक्षरं वन्धुना गर्ने ॥ २३४ ॥

तर्जमा ।

कालक त्राद अधिवासे खाली लगुनियेकी अत्यक्क काइते हैं, जिस् लश्नुनियासे चन्द्रकल्यों ऐसा चञ्चल सूत देखलाइ दे, उस्कों कलिल काइते हैं, कलिल लग्न-निया नव सम्पत्का कारण है। २३९।

जिस् लगुनियेका आधा अङ्ग काटा मालुम हो, उस्को व्यक्त कहते हैं। २३२।

लसुनेका ऋयेव।

कर्कर, शक्कर, चास, कलङ्क और देह लश्नियामे यही पांच किसिमका अयेव हैं। २३३।

जो छुनेमे खुरधारा, उसे कर्कर कहते हैं, कर्कर लगुनिया भाद्रचोंको नाण करता है, और दुधिया लगुनियाको मझ र कहते हैं। २३४।



231. That Cat's-eye which is free from such defects as kalanka etc., is called atyachchha; that which shows a lustre resembling the Brahminical thread and aye twinkling like the moonbeam, goes by the name of kalila. This is the veritable cornucopia.

232. That which manifests a variety of parts and sides, is entitled byanga.

Defects of the Cat's-eye.

233. Karkara, sarkara, trása, kalanka and deha are the five defects belonging to this class of gems.

234. A Cat's-eye which is hard to the touch, is called karkara; and that which contains grits, is called sarkara. A karkara Cat's-eye brings about loss of friends.

অহুবাদ।

কলক্ষানিদোষবিহীন বৈদ্র্য্যকে অত্যচ্ছ বলে। এবং
যাহাতে চন্দ্রকলার ন্যায় চঞ্চল ভ্রশ্বত্ত লক্ষিত হয়,
তাহাকে কলিল বলা যায়, কলিল বৈদ্র্য্য সর্ব্বদম্পত্তির
নিদান। ২৩১।

যাহার অঙ্গ বিশ্লিষ্ট, অর্থাৎ অঙ্গ প্রত্যঙ্গ পৃথক্ বলিয়া বোধ হয়, তাহার নাম ব্যঙ্গ। ২৩২।

देवपूर्यग्रं प्राप्त ।

কর্কর, শর্কর, ত্রাস, কলঙ্ক ও দেহ, বৈদূর্য্য মণিতে এই পঞ্চপ্রকার দোষের বিদ্যমানতা দেখা যায়। ২৩৩।

যাহার স্পর্শ অতি কটিন, তাহার নাম কর্বর, এবং শর্করাযুক্ত বৈদূর্য্যকে শর্কর কহে, কর্কর বৈদূর্য্যে বন্ধুবিনাশ করে। ২৩৪।







म्चम्।

भिन्नस्वान्तिकरस्वासः स कुर्यात् कुलसं चरं।
विबद्धवर्णी यस्त्राक्षः कलङ्कः चयकारकः।
मलदिग्ध द्रवाभाति देची देचिवनायनः॥ २३५॥
गिरिकाचः शियुपालः काचः स्कृटिकस्व भूमिनिभिन्नाः।
वैदूर्य्यमणेरेते विज्ञातयः सिन्नभाः सन्ति॥ २३६॥
लिख्याभावात्काचं लघुभावाच्छियुपालकं विद्यात्।
गिरिकाचमदीप्तत्वात् स्कृटिकं वर्णीच्जुलनेन॥ २३७॥

तर्जमा।

जिस् निशानके जिरिये में लशुनिया टुटा मालुम हो, उसको चाम कहते हैं, धास अयेवका लशुनिया कुलका नाश करनेवाला है, और जिस् लशुनियेके मध्ये दुस्रा रक्त खेलाप मालुम हो, उसको कलक्त कहते हैं, कलक्त अयेवका लशुनिया आद्मीका नाश करनेवाला है; और जिस्को मध्ये मयला मालुम हो, उस्को देह कहते हैं, देह अयेवका लशुनिया आद्मीका शरीर नष्ट करता है। २३५।

गिरिकाच, शिशुपाल, कांच और स्माटिक दक्की चीजांके दारा भुठा लशुनिया वानाता है। ५३६।

हीरे के से बाय और चीजके जिर्यसे जो ना कटे, वह काच, हाल्का होने से शिशुपाल है, दीप्ति ना रहने से गिरिकाच और ज्यादा उज्ज्वल होने से स्फटिक समस्ना चाहिये। २३७।







235. That mark in a Cat's-eye which looks like a break, is a trdsa. It destroys family dignity. That which shows conflicting colors, is called kalanka. Such a gem is destructive. A deha Cat's-eye bears dirt within it. This gem wastes the body.

236. Girikácha, Sisupála, glass and crystal are made use of in fabricating false Cat's-eyes.

237. A false Cat's-eye, if it is made of glass, is detected by being scratched by the diamond alone; if it is made of sisupála by its lightness; if of girikácha, by its want of lustre, and finally if of crystal, by its excessive gloss.

অহ্বাদ।

যে চিহ্নারা বৈদ্র্য্যকে ভগ্ন বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসযুক্ত বৈদ্র্য্য কুলক্ষয়-কারক। যাহার মধ্যে বিরুদ্ধ বর্ণ লক্ষিত হয়, তাহাকে কলঙ্ক বলে, কলঙ্কদোষ মসুষ্যের ক্ষয়কারক, এবং যাহার মধ্যে মলা থাকে, তাহাকে দেহ কহে, দেহে দেহক্ষয় করে। ২৩৫।

গিরিকাচ, শিশুপাল, কাচ ও স্ফটিক এই সকল পদার্থ দারা ক্বত্রিম বৈদূর্য্য মণি প্রস্তুত হইয়া থাকে। ২৩৬।

হীরক ভিন্ন অন্য কোন বস্তবারা অঙ্কিত না হওয়াতে কাচ, লঘুতা বারা শিশুপাল, অদীপ্তিহেতু গিরিকাচ ও অধিকতর উজ্জ্বল বর্ণ বারা স্ফটিক প্রকাশিত হইয়া পড়ে। ২৩৭।







मूलम्।

जात्यस्य मर्वस्य मणेसु याहक्

विजातयः सन्ति समानवणीः।

तथापि नानाकरणानुमेय-

भेदप्रकारः परमः प्रदिष्टः ॥ २३८ ॥

स्खीपनच्यत्र सदा विचार्यो

ह्ययं प्रभेदो विद्वा नरेण।

स्रेइप्रभेदो लघुता सतुत्वं

विजाति लिङ्गं खल मार्वे जन्यं ॥ २३८ ॥

कुश्रलाः कुश्रलैः प्रयुज्यमानाः

प्रतिवड्डाः प्रतिसत्त्रियापयोगैः ।

ग्रुणदोषममुद्भवं लभन्ते

मणयोऽर्थान्तरमृत्यमेव भिन्नाः॥ ५४०॥

तर जमा।

भुठा जवाहेर अगर वेरक और कदम साचिके समान हो, लेकिन तरह तरहके परी चाके दारा उस्का हाल आयल मालुम हो सका है। २३८।

रत्नपारची परिष्ठत से हप्रभेद, लघुता, कोमलता दक्की सब विजातिनिशानवे जरियेमे अनायाम सजात मणिका विचार कर मक्ते हैं। २३८।

सोणेमे जड़नेसे दस्तकारीके श्रयेवसे विड्या रह्नभी खाराप है, श्रीर श्रोसाद कारिगरके हातका जड़ाज्ज्या वज्जत् कम कदर रह्नभी उम्दगीको पाता है। २४०।







- 238. Even when a false gem resembles in color a real one to a degree, still there are characteristic differences between the two, which legibly mark out the one from the other.
- 239. Persons well versed in the science can easily distinguish a mendacious jewel from a genuine one, by its lightness, softness, gloss etc.
- 240. Much depends upon the art with which a gem is set on gold or any other precious metal,—indeed so much that a gem of really superior order may be shorn of half its lustre by the vicious skill of the goldsmith, while another of far less worth may gain in brilliancy from the skill with which it is set.

অনুবাদ।

সর্ব্যপ্রকার বিজাতি মণি স্থজাত মণির সমান বর্ণ-বিশিষ্ট হইলেও নানাপ্রকারে তাহাদের পরস্পর ভেদ প্রমাণী-কৃত হইতে পারে। ২৩৮।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা স্নেহপ্রভেদ, লঘুতা, কোমলতা প্রভৃতি বিজাতি চিহ্নদারা অনায়াদে স্কুজাত মণির বিচার করিতে পারেন। ২৩৯।

মণিসমুদায় স্থবর্ণাদি ধাতু সম্বন্ধ হইলে শিল্পীর শিল্প-দোষে উত্তম রত্নও অতিজ্বন্য এবং শিল্পনৈপুণ্যদ্বারা অতি সামান্য রত্নও অতি উত্তমরূপে প্রতিভাত হয়। ২৪০।







मुखम्।

यदिन्द्रनीलस्य महाग्रणस्य
सुवर्णसंस्थाकलितस्य मृत्यं।
तदेव वैदृष्ट्यमणेः प्रदिष्टं
पलदयोन्मापितगौरवस्य ॥ २४१ ॥
जयति यदि सुवर्णं त्यागहीनो यदा वा
बद्धविधमणिहारी भूपितवां यतिवां।
दथदपि भृतदोषं जातु वैदृष्टं रक्षं
प्रतिश्रतफलक्ष्यः पातमेध्यत्यवस्यम् ॥ २४२ ॥

तर्जमा।

महाग्रणसम्यद्भ एक तोला दुन्द्रनीलका जो मूल होता है, ग्रणशाली दोपल लग्रुनियेका वही दाम है। २८९। त्यागशील अथवा वज्जप्रकार मणिधारी अर्थात् वज्जत् तरहका जवाहेर परहनेज्ञये राजा अथवा जितेन्द्रिय सन्नामी कोदकेंचें। न हो, अयेवदार लग्रुनिया पहेरनेसे जकर पतित होना होगा। २८२।

इति लगुनियाका वयान।



- 241. A Cat's-eye weighing two palas* is worth as much as a very good padmarága weighing one tolá.†
- 242. A vicious Cat's-eye paves the way for the sure ruin of the wearer, be he a self-denying individual, a king accustomed to wear gems of all sorts, or an ascetic who has learned to restrain his senses.

অনুবাদ।

মহাগুণসম্পন্ন এক তোলা ইন্দ্রনীলের যাদৃশ মূল্য হইয়া থাকে, গুণশালী ছুই পল বৈদূর্য্যের তদ্রূপ মূল্য হইতে পারে। ২৪১।

ত্যাগশীল বা বহুপ্রকার মহামণিসম্পন্ন ভূপতি অথবা জিতেন্দ্রিয় সন্ন্যাসী, যিনি হউন না কেন, সদোষ বৈদ্র্য্য ধারণ করিলে অবশ্যই তাঁহাকে অধঃপাতিত হইতে হইবে। ২৪২।

ইতি বৈদ্ধ্য।





^{* (}Equal to four karshas = $\frac{1}{100}tolas$.)

⁺ Vide antè.



THE CAT'S-EYE,

Its Properties.

ME Cat's-eye is a rare variety of the Chrysoberyl, of extreme hardness and is characterized by the remarkable play of light in a certain direction, probably caused by a peculiarity in its crystallization. This ray of light, or in the jeweller's language, this "line," shines in well-polished stones with a phosphorescent brilliance. This stone is found of various colours, ranging through all the shades of yellow, brown, green, and very rarely, black. No matter what the ground colour of the stone may be, the "line" is always white and more or less iridescent. The gas-light or full sun-light, which renders the line more vivid, displays the lustre to the best advantage. The most popular colours are the clear apple green and the dark olivethese forming splendid black grounds over which the line appears in beautiful contrast. When held towards the light, the stone resembles the contracted pupil of the eye of a cat. Its peculiar beauty lies in the mysterious gleaming streak which moves from side to side as the stone is turned. The specimens most liked by the Indians are those of a dark olive colour, having the ray so bright on each edge as to appear double. The hardness of the







Cat's-eye is 8.5 in the scale; it being scratched by the Sapphire, Ruby, &c. Its specific gravity is 3.8. It is infusible before the blow-pipe alone, but is not affected by acids. It contains about 80 per cent. of alumina and 20 of glucina and colouring matter (protoxide of iron). It belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization. Its lustre varies from being almost perfectly transparent to almost opaque. It possesses a double refraction and acquires electricity by friction and retains it for several hours.

Where found.

This gem is found in rolled pebbles in parts of North America, Brazil, Moravia, the Ural Mountain, India, but chiefly in Ceylon together with Sapphire.

Mode of Cutting.

THE Cat's-eye is generally cut in Ceylon, en cabochon. The Chrysoberyl of which it is but one variety, is cut on a copper wheel with Emery and polished with Tripoli.

Its Price; Flaws and Defects; Mode of Testing.

THE Cat's-eye is much used in jewelry for rings and pins and is never engraved upon. Its value chiefly depends on its size and beauty. The varie-





ties of colour do not affect the value very much; some people like one colour, some, another. To fetch a good value, the line should not only be perfect and brilliant but it should be well-defined, not very broad and should run evenly from end to end across the middle of the stone. It has always been very highly prized by the Indians and the Cingalese. The value has of late considerably increased, owing to the fancy which the Europeans have begun to take to it. A ring-stone may be worth from £10 to £100 or upwards. There are some large stones in the market said to be valued at more than £1,000.

The jewellers have frequently confounded the true Cat's-eye with another stone of the same name which is a variety of the Quartz, and have often sold the one for the other. Even by the least experienced, the Quartz Cat's eye can be distinguished from the true one, by its inferior hardness and want of brilliance. The colour of the Quartz Cat's-eye is of various shades of yellow and brown only. Its hardness is from 6 to 6.5. It can only scratch glass. Its specific gravity is 2.65. It melts with soda into a clear glass and is soluble in fluoric acid. The chemical composition is of 48 parts of Silicium and 51 of Oxygen with a small amount of oxide of iron and lime. It is usually set with a black or gold foil to add to its play and brilliancy.







Marvellous Powers.

THE fact of the gleaming streak shifting from side to side as the stone is turned, has led the superstitious to believe it to be the abode of some evil spirits. It was dedicated by the ancient Assyrians to their god Belus and was called, on this account, the oculus Beli and by others, the "wolf's eye." It is regarded by some nations as a sacred stone and used as a charm against witch-craft.

Celebrated Cat's-eyes.

The largest Cat's-eye (also the "Hope") is hemispherical and $\frac{1}{2}$ inch in diameter. In 1815 it was captured from the King of Kandy (Ceylon), with whom it had been an object of great pride. It has attained a celebrity for many centuries past and appears to be the identical stone mentioned by Ribiero, in his History of Ceylon, as belonging in the 16th century to the Prince of Ura. It is mounted in massy pure gold and set* with Rubies (cut en cabochon), in the Eastern fashion. A very large-sized Cat's

^{*} The late King Victor Emmanuel had many peculiarities one of which may be related in a few words. It appears that His Majesty each year allowed one of his toe-nails to remain uncut through the year, and on New Year's Day he cut off his projecting nail which was always about an inch in length. A jeweller cut and polished this piece of nail, which acquired the appearance of the stone known as a "cat's eye," and framed it in a rim of gold set round with diamonds. The King each year presented this jewel to his mistress, the Countess Mirafiori, who already possessed fourteen of these novel ornaments. The fifteenth had been cut by the late King on the 1st January 1878, and as His Majesty died on the 9th of that month, the jeweller had not had time to polish and mount it. It has since been conveyed to the Countess by King Humbert.—The Indian Mirror, 15th June 1878.





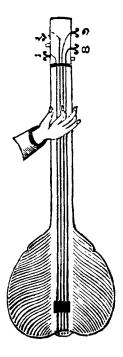
eye was once seen with one Pundit Lutchminarain, who had at one time refused an offer of Rs. 10,000 for it. It has afterwards been bought by a zemindar of Mymensing, East Bengal, for Rs. 6000. Babu Than Sing Boyed of Moorshedabad has a good Cat's-eye of a black color. Rai Budridass Mokeem has, in the shape of a kanthá, a collection of Cat's-eyes of various shades and tints. There is a very large Cat's-eye, about the size of a pigeon's egg, set upon a pán-dán, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. It is of a brownish color and shows the "line" to great advantage.

















श्रथ मुक्ता ।

मूचम्।

नागेन्द्रजीमूतवराष्ट्रशङ्खमत्स्यािष्ठशुक्तुरङ्गवनेणुजािन।
सुक्ताफलािन प्रथितािन लोके
तेषान्तु शुक्तुरङ्गवमेव भूरि ॥ २४३ ॥
धाराधरेषु जायेत मौक्तिकं जलिबन्दुिमः।
दुर्लभं तन्मष्टारलं देवैसाद्वीयते अवरात्॥ २४४ ॥
दुर्भाष्टिकोलमत्स्यानां शोर्षे मुक्ताफलोङ्गवः।
त्वक्सारशुक्तिशङ्खानां गर्भे सुक्ताफलोङ्गवः॥ २४५ ॥

मतिका वयान।

तर्जमा।

हाथी, मेघ, यूकर, यञ्ज, मक्लि, मांप, सिप और वांग्र दून् सव वस्तुमें मोति पयदा होता है। यह दुनियामें मस्द्वर है, लेकिन दन सवमेसे वाकसर मोति सिपमें ज्यादा पयदा होता है। २४३।

मेघ होकर जलके बुंदने जरियसे जो मोति होता है, उस्की महारत्नमें गिन्ति होति है, श्वादमीको वज्जत् दुर्लम है, देवता लोक श्वाकाशहीमें उस्को ले लेते हैं। ५८८।

हाथी, सांप, शूकर श्रीर मक्ति दून् सबके मस्तकमें श्रीर वांश, सिप स्रीर शङ्घके पेटमें मोति होता है। ५८५।





PEARL.

TRANSLATION.

- 243. It is generally believed that the Pearl originates in elephants, clouds, boars, conch-shells, fish, serpents, oysters and bamboos—of which oysters have the largest share in their production.
- 244. The Pearl which originates in a water-drop from the clouds, is a gem of the first rank and a rarity;—the gods appropriate it from the sky.
- 245. Pearls originate in the heads of elephants, boars, serpents and fish, in the hollows of bamboos, and in the wombs of oysters and conch-shells.

মুক্তা।

অভুবাদ।

হস্তী, মেঘ, বরাহ, শছা, মৎস্থা, সর্পা শুক্তি এবং বংশ এই সকল পদার্থেই যে, মুক্তা জন্মে, ইহা লোকপ্রসিদ্ধ, তন্মধ্যে শুক্তি হইতেই অধিক পরিমাণে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪৩।

মেঘ হইতে জল-বিন্দুদারা যে মুক্তা জন্মে, তাহা মহা-রত্নমধ্যে পরিগণিত, উহা মনুষ্যের পক্ষে অতিত্বর্লভ, দেবতারাই আকাশ হইতেই গ্রহণ করেন। ২৪৪।

হস্তী, দর্প, বরাহ ও মৎস্থা ইহাদিগের শীর্ষদেশে এবং বংশ, শুক্তি ও শহা ইহাদিগের গর্ভমধ্যে মুক্তা জন্মিয়া থাকে। ২৪৫।







मू लम्।

गजाहिनं सुदुष्प्राप्यं मौतिकं तपमा विना। मौतिकं लभ्यते श्रेष्ठमाकरेषु कलौ चिषु॥ २४ई॥ वेधान्तु शुक्त्यङ्गतमेव तेषां शेषाण्यभेद्यानि वदन्ति तज्जाः। मतङ्गजा ये तु विशुद्धवंश्वा-स्ते मौतिनानां प्रभवाः प्रदिष्ठाः ॥ २४७ ॥ त्वक्सारनागेन्द्रतिमिप्रसूतं यक्तुन्न यन वराहजातं। प्रायो विमुक्तानि भवन्ति भागा शसानि माङ्गल्यतया तथापि ॥ २४८॥

तर्जमा।

इायी और सांपने मस्तकमे जो मोति पयदा होता है, विना तपस्याके वह मोति वज्जत् दुनेभ है, आव वांग्र, सिप चौर शङ्घमे उम्दा उम्दा मोति पयदा चीता है। २४६।

पिंचले जो किसिम मोतिकी वयान कि गर, उस्मेसे सिपका मोति बेधा अर्थात् उसी जातका मोति वेधा जाता है, उमकेसेवाय औरजातका मोति खबेध, अर्थात् वेध हो निह सक्ता, पाणि वर्षणसे जो मोति पयदा होता है, वही सव मोति प्रधान है। २४७।

वांश, हाथी, तिमि मक्रलि, शङ्ख और शूकर दन सवमे जो मोति पयदा होता है, यही सब मोति आवदार निष्ट होता है, लेकिन मञ्जलकायामे वद्धत् उत्तम है। २४८।



- 246. Those Pearls that are found in the heads of elephants and snakes, are rarely to be had except by devout austerities;—at present good Pearls are obtained from bamboos, oysters and conch-shells.
- 247. Of the kinds of the Pearl enumerated above, those derived from the oyster alone are penetrable, the rest being impervious. Those Pearls that originate in clouds, are the best of their sort.
- 248. The Pearls that are produced in bamboos, elephants, whales, conch-shells and boars, are generally lack-lustre, although they are of great use in auspicious rites.

অনুবাদ।

গজ ও দর্পের মস্তকে যে মুক্তা জন্মে, বিনা তপস্থায় তাহা অতিত্রপ্রাপ্য, অধুনা বংশ, শুক্তি ও শহা এই তিন বস্তু হইতেই উত্তম উত্তম মুক্তা প্রাপ্ত হওয়া যায়। ২৪৬।

পূর্ব্বে যে কয়প্রকার মুক্তার বিষয় উল্লেখ করা গেল, তন্মধ্যে শুক্তিজাত মুক্তাই বেধ্য, অর্থাৎ এই জাতীয় মুক্তাতেই ছিদ্র করা যাইতে পারে, তদ্তির অপরাপর জাতীয় মুক্তা অবেধ্য, অর্থাৎ তৎসমুদায়ে ছিদ্র করা যাইতে পারে না। মেঘ হইতে যে সকল মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহারাই সর্ব্বপ্রকার মুক্তার প্রধান। ২৪৭।

বংশ, হস্তী, তিমিমৎস্থা, শন্ধ ও বরাহ এই দকল পদার্থ হইতে যে দকল মুক্তা জন্মে, দেই দকল মুক্তা প্রায়ই তেজোবিহীন হইয়া থাকে, কিন্তু তথাপি মাঙ্গল্যকার্য্যে অতিশয় প্রশস্ত। ২৪৮।





मू सम्।

वच्चे गजपरी वायां गजजातिश्चतु विधा।
भी किनं तेषु जातं चि चतु विधमुदी व्यते ॥ २४६ ॥
वाह्मणं पीत गुक्तन्तु विज्ञां पीतरक्तकं।
पीत श्यामन्तु विश्वं स्थाच्छ्रद्रं स्थात् पीतनी नकं॥ २५०॥
कुक् ुटाण्डममं दनं मी किनं निविदं ग्रक्।
घनजं भानुसङ्गारं देवयोग्यममानुषं॥ २५९॥

तर्जमा ।

गजिवद्याके पिएडतोने डाथीकी चार किनिमकी तक -सिम् की है, अर्थात् उस्में ब्राह्मण, चिन्न, वैश्व और शृद्र चार जात कायेम की है, इस् कारण गजमोति चार किनिमका होता है। २८९।

जो मोति पोलापनिविज्ञें से, सफेट रङ्ग होए, वह बाह्मणव है, जो मोति पीलापनिविज्ञें सुख रङ्ग होए. यह हिन्यवण, जो मोति पीलापनिविज्ञें खामवण है, वह वैश्ववण चौर जो मोति पीलापनिविदे-ज्ञें नीलवण होए. बह यद्ववण है। २५०।

भेघसे पयदाङ्घये मोतिसे जो सुरगके अग्रहेश बरावर उसदा गोल, ठोम, चोजनसे भागी, चौर सूर्धके समान तेजकी खान, गैसा मीति देवताचे के भोगसे रहता है, मनुष्यदुर्लस है। २५१।

249. Persons who have studied the elephant with particular attention, have divided it into four classes, called after the names of the four cardinal divisions of the Hindus. Accordingly, Pearls derived from elephants are classed under four heads.

250. Pearls which are white and which emit a yellow lustre, are Brahmins; those which are red and possessed of the same lustre, are Kshetriyas; those which are black (lustre same), are Vaisyas; and those which are blue (lustre do.), are Sudras.

251. Of cloud-begotten Pearls, those which resemble in shape the hen's egg, which are beautifully circular, substantial, weighty and bright as the sun, are enjoyable by the gods and cannot be obtained by men.

জনুবাদ।

গজ-পরাঁক্ষক পণ্ডিতের। হস্তীকে ব্রাহ্মণাদি চারি জাতিতে বিভক্ত করিয়াছেন, স্ত্রাণ তদমুদারে গ্রেণ্ডে-পন্ন মুক্তাও ব্রাহ্মণাদি চতুর্বিধ হইয়া থাকে। ২৪৯।

বে সকল মূক্তা পীতের আভাযুক্ত শুরুবর্ণ, তাহার।
ব্রহ্মবর্ণ; ঘাহার। পীতের আভাযুক্ত রক্তবর্ণ, তাহার। করিয়বর্ণ; ঘাহার। পীতের আভাযুক্ত শালবর্ণ, তাহার। শুনুবর্ণ
বলিয়: পরিচিত। ২৫০।

নেমেংপন মুক্তার মধ্যে যে ওলি আকারে কুকটের অওসদৃশ, উত্তম গোলাকার, নিরেট, ওজনে ভারী এবং দ্যোর স্থায় তেজ্পুঞ্জ, তংসমুদ্যে দেবভোগ্য, মন্থায়ের অপ্রপ্রে। ২৫১।

मूलम्।

काखोजकुत्मित्रसूतं घाचीफलनिमं ग्रहः ।

श्रातिपञ्चरमच्छायं मौक्तिकं मन्दरीधिति । २५२ ॥

फणिजं वर्त्तुलं रस्यं नीलच्छायं महाद्राति ।

पुण्यहीना न पश्चन्ति वास्तुकेः कुलसम्भवं ॥ २५३ ॥

नाभ्येति मेघपमवं धरिचीं

वियद्गतं तिह्नुधा हरन्ति ।

श्रिच्चिं:प्रतानाद्यतिग्विभाग
मादित्यवद्ःखविभाव्यविष्वं ॥ २५8 ॥

तर्जमा।

श्वामदेशके बीचमे कस्वोजदेशमे जो हाथी पयदा होता है, उसके माथेमे जो मौति पयदा होता है, वह सब मोति श्वामलेके फलके समान, श्रोजनमे भारी, ज्यादा पीला, लेकिन कम श्वाव। २५२।

सांपसे जो मोति पयदा होता है, वह आच्छा गोल, देखनेमे आच्छा, थोडा नीलापनलियेक्तये और बक्तत् आवदार, पुण्यहीन आदमीको एँसा मोति आंखसेभी देखना नसीव नहिं होता। २५३।

मेघसे जो मोति पयदा होता है, वह कभी जमीन नहिं कृता, आकाशहीसे देवता लोग ले जाते हैं। उस्मोतिका एमा तेज है, के दोपहरको मूर्थके समान, उस्पर आंख नहिं ठहर सक्ति। २५४।



- 252. Those Pearls that originate in the head of the elephants of Khamboja in the country of Shyáma, are large as the fruit of the *Emblic Myrobulan*, heavy and more yellow but not more lustrous than the other kinds.
- 253. Pearls which originate in the crest of serpents, are beautifully round, and are embosomed in a blue halo of surpassing glory. These, persons void of merit are denied the privilege of even looking at.
- 254. Cloud-begotten Pearls never touch the earth, and are appropriated by the gods from the sky. They are clad in the mighty effulgence of the mid-day sun.

অনুবাদ।

শ্যামদেশের অন্তর্গত কম্বোজদেশ-জাত হস্তীর মস্তকে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকারে আমলকী ফলের ন্যায় রহৎ, ওজনে ভারী, অধিক পীতবর্ণ, কিন্তু অধিক তেজস্বী নহে। ২৫২।

দর্শজাত মুক্তা উত্তম গোলাকার, অতিরমণীয়, ঈষৎ নীলের আভাযুক্ত এবং অতিতেজস্বী; পুণ্যহীন ব্যক্তিরা এতাদুশ মুক্তা কথন চক্ষেও দেখিতে পায় না।২৫৩।

মেঘোৎপন্ন মুক্তা কদাচ পৃথিবী স্পর্শ করে না, শূন্য হইতেই দেবগণ তাহা গ্রহণ করেন, সেই সকল মুক্তার তেজ এত অধিক যে, মধ্যাহ্নকালীন সূর্য্যের ন্যায় অতি তঃসহ। ২৫৪।





म्सम्।

तेजसिरस्तृत्य ज्ञताशनेन्द्नचनताराग्रहमसम्बद्ध ।
दिवा यथा दीप्तिकरस्तयिव
तमोऽवगादास्विप तिन्नशास् ॥ २५५ ॥
विचिचरत्वद्यतिचारतोया
चतुःससुद्राभरणाभिरामा ।
मून्यं न वा स्थादिति निस्थयो मे
कृत्सा मही तस्य सुवर्णपूर्णा ॥ २५६ ॥
हीनोऽपि यस्तत्वभते कथ्यन्निदिपाकभागान्महतः शुभस्य ।
सापत्वप्रहीनः एथिवीं समग्रां
भनति तन्तिष्ठति यावदेव ॥ २५७ ॥

तर्जमा ।

मेघसे जो मोति पयदा होता है, वह प्रकाशमे आग, चन्द्र, नच्च, तारा और ग्रहगणको मन्द्र करदेता है, और वही मोति जिस् तरह दिनको प्रकाश पाता है, दुसी तरह गाढ़े आंधेरेमे रोसन रहता है। २५५।

उत्तम किरणविशिष्ट जवाहेरसे भरि चारेां ससुद्र-भूषित रत्नसे भरि तामाम ष्टथ्वीभी एक मेघे पयदा इत्ये मोतिके वरावरमे नहिं हो सक्ति। २५६।

बद्धत् छोटा आदमी नमीवके जोरसे किमी तरहसे एक मेघसे पयदा द्धया मोति पावे और जित्ने दिन वह मोति उस्के पाम रहेंगा, उत्ने दिन वह आदमी दम् तामाम एथ्वीपर राज करेगा। २५७।





255. They surpass in lustre, fire, the moon and stars, and are equally flaming in the light of day and the blackest night.

256. This world, ornamented by the four oceans,*
—the home of the most splendid gems of infinite variety, can scarcely equal in value one cloud-generated Pearl.

257. If by rare good fortune even a person belonging to the very lowest order comes in possession of such a Pearl, he shall reign paramount in this world so long as the gem is with him.

অনুবাদ।

মেঘপ্রভব মূক্তা তেজে অগ্নি, চন্দ্র, নক্ষত্র, তারা ও অত্যান্ত গ্রহণণকে পরাভব করে, এবং সেই সক্ষ মূক্তা দিবাভাগে বেমন দীপ্তি পায়, অত্যন্ত গঢ়োদ্ধকার রাত্রিতেও তদ্রপ দীপ্তি পাইয়া থাকে। ২৫৫।

বিচিত্র-জ্যুতি-রত্নপূর্ণ-চতুঃসমূদ্র-ভূষিতা রত্নপূর্ণ সমগ্র পৃথিবীও একটা মেঘজাত মুক্তার প্রকৃত মূল্য হয় কি না সন্দেহ।২৫৬।

অতিনীচলোকও ভাগ্যবলে কোনপ্রকারে একটা মেঘপ্রভব মূক্তা লাভ করিতে পারিলে যতদিন সেই মূক্তা তাহার হস্তগত থাকিবে, ততদিন সে ব্যক্তি এই পৃথি-বীতে একাধিপত্য করিতে পারিবে।২৫৭।

^{*} Our English readers are requested to remember that we go by our Shastras, and not by the far more advanced lights of European Science. As it is our most cherished object to give a peculiarly Indian air to the book, (which is all the more necessary, having regard to the authorities we follow) we have not scrupled to cast it in the mould of Sanskrita writers.



मूलम्।

न क्षेत्र ते त्व्हुभक्ष नृपस्य भागीयः प्रजानामपि जन्म तस्य । यद्योजनानां परितः शतस्य

सर्वाननर्थान् विसुधीकरोति ॥ २५०॥ जलज्योतिमक्जानां मेघानां चिविधस्मवेत्। जलाधिकेऽधिकं खच्छं कोमलं ग्रक्त कान्तिमत्॥ २५०॥ ज्योतिषं कान्तिमहृत्तं दुनिरीच्यं रविप्रमं। कान्तिमत्कोमलं दृत्तं माक्तस्विमलं लघु॥ २६०॥

तर्जमा।

मेघसे पयदाज्ञया मोति एैं सा निहिं है, के फकत उम्के मालिक हीका भाषा करे, बलके जिस् राजाके राजमे ऐसा मोति रहे, तो उमको ग्र-योजनतक टूर-रहनेवाली प्रजाका दुःख नाग्र करें। २५८।

पाणि, तेज, खौर हावा दून तिन तन्त्वके मिलनेसे मेघ
पयदा होता है, दूमीतरह मेघसे पयदाज्ञया मोति
तिनिकिमिमका होता है, खर्यात् किमीमे पाणि, किसीमे
तेज खौर किसीमे हावाका हिस्सा ज्यादा खयवा कम
रहता है, खर्यात् जिम् मोतिमे पाणिका हिस्सा ज्यादा
रहता है, वह बद्धत् साफ, उम्दा खोजनमे जाादा खौर
नेहायेत् रोमन है। २५९।

जिसमें तेजका हिस्सा ज्यादा होता है, वह ज्यादा चमकदार नेहायेत् गोल और सूर्यके तरहसे उम्पर आंख नहिं ठहरित; और जिसमे हावाका हिस्सा ज्यादा होता है, वह ज्यादा रोसन, गोल, वज्जत्साफ और खोजनमें हाल्का। २६०।





258. A cloud-begotten Pearl is a blessing not only to its owner;—but it shoots its blessed influence a hundred yojanas* beyond the precincts of the

domains of the king possessing it.

259. Clouds are produced by the union of three things;—water, energy and the air; accordingly, cloud-begotten Pearls are divided into three classes, agreeably to the preponderance of one or other of these substances. Those in which water forms the base, are very transparent, soft, weighty and highly agreeable.

260. Those in which energy preponderates, are beautifully round and perceptible from a distance like the sun; while such as are predominated over by the air, are agreeably tender, spherical,

highly transparent and light to a degree.

অমুবাদ।

মেঘোদ্ধব মুক্তা যে কেবল তৎস্বামীরই শুভজনক এমন নহে,যে রাজার রাজ্যে ঐ প্রকার মুক্তা থাকে, সেই রাজার শতযোজনদূরবর্নী প্রজাবর্গেরও সকলঅনর্থ বিনফ হয়।২৫৮।

জন, জ্যোতি ও বায়ু এই ত্রিবিধ পদার্থের সংযোগেই মেঘের উৎপত্তি, স্থতরাং উক্ত ত্রিবিধ পদার্থের আধিক্য অনুসারে মেঘোৎপন্ন মুক্তাও ত্রিবিধ হইয়া থাকে, যে মুক্তায় জলের ভাগ অধিক থাকে, তাহা অত্যন্ত স্বচ্ছ, কোমল, ওজনে ভারী ও অতিশয় কান্তিবিশিষ্ট হয়। ২৫৯।

যে মূক্তাতে তেজের ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্তি-বিশিষ্ট, স্থরত ও সূর্য্যের ন্যায় ত্রনিরীক্ষ্য এবং যাহাতে বায়ুর ভাগ অধিক থাকে, তাহা কান্তিবিশিষ্ট, কোমল, গোলা-কার, অতিনির্মাল ও ওজনে অতিলঘু হয়। ২৬০।

^{*} A Yojana is sometimes regarded as about equal to a European league (i. e., 4 or 5 English miles, but more correctly 4 krosas or about 9 miles according to other calculations 2½ English miles, and according to some 8 krosas)—M. Williams.



100 m

मृचम्।

वराष्ट्रशीवेष्ठभवं वरिष्ठं
तस्वैव दंष्ट्राङ्कुरतुत्स्ववर्णं।
कचित् कयञ्चित् सभुवष्रदेशे
प्रजायते ऋकरवद्दरिष्ठं ॥ ५६१ ॥
वस्तादिजातिभेदेन वराष्ट्रोऽपि चतुर्व्विधः।
तेषु जाता भवेन्मुका समासेन चतुर्व्विधा ॥ २६२ ॥
वास्ताणः शुक्कवर्णस्तु कोमलसार्थे एव च ।

चित्र्यः मुक्तरक्तस्तु स्पर्भे कर्कम एव च ॥ ५६३ ॥ वैद्यः स्थाच्छ्कपीतस्तु कोमलः कोलमिन्नभः।

प्रद्रः स्याच्छ् क्रानीलस्तु कर्केग्रः स्थाम एव च ॥ ५६४ ॥

तर्जमा।

शूक्तरके मस्तकमें जो मोति पयदा होता है, वह मोति शूक्तरके दांतके ममान सफेदवण होता है, लेकिन किमी किमी जगहमें शूक्तरके वदनके समान रक्त होता है। ५६९।

जिस्तरहे मनुष्यके ब्राह्मण, चिन्नु, वैश्व और ग्रुद्र चार जात है, उमीतरह ग्रूकरभी चार जातका होता है, और उसमे पयदाऊया मोतिभी चार जातका होता है। २६२।

त्राह्मणजातका मोति सफेदवर्ण और चेक्ना; ह्यान्नि-जातका मोति सफेदास्रुखीमायेल और कुनेमे ककेग्र। ५६३।

वैश्वजातका मोति सफेट पीलापनलिये ज्ञये चौर कुनेमें चेक्ना; चौर शूट्रजातका मोति सफेट नीलापनलिये ज्ञये चौर कुनेमे कर्कश। २६४।





- 261. Pearls which originate in the head of the boar, are generally white as the tusks of that animal;—rarely resembling in hue, the color of the boar.
- 262. As boars are divided into four orders denominated after the names of the four cardinal castes, even so are the pearls which are produced by them.

263-64. The Brahmin Pearl is white and soft to the touch; the Kshetriya one is red-white and hard; the Pearl of the Vaisya class is white-yellow and tender; while the Sudra Pearl is blue-white and hard to the touch.

অহুবাদ।

বরাহমস্তকে যে দকল মুক্তা জন্মে, তৎসমুদায় প্রায়ই বরাহ-দন্তের ভায় শুক্লবর্ণ হয়, তবে কোন কোন স্থলে কখন বা সেই বরাহের গাত্রের বর্ণের ভায় বর্ণবিশিষ্টও হইয়া থাকে। ২৬১।

ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে বরাহও যেমন চারিপ্রকার হয়, ততুৎপন্ন মুক্তাও তদ্রপ চতুর্বিধ হইয়া থাকে। ২৬২।

ব্রহ্মবর্ণ মূক্তা শুক্লবর্ণ ও কোমলস্পর্শ, ক্ষত্রিয়বর্ণ মূক্তা শুক্ল-রক্তবর্ণ ও কর্ক শস্পর্শ। ২৬৩।

বৈশ্যবৰ্ণ যুক্তা শুক্ৰ-পীতবৰ্ণ ও কোমলস্পৰ্শ, শূদ্ৰবৰ্ণ যুক্তা শুক্ৰ-নীলবৰ্ণ ও কৰ্ক শস্পৰ্শ ।২৬৪।







मूलम्।

कोलजं कोलसहर्यं तहं ष्ट्रामहमक्कितः। २६५॥
ये व्यवं मौकितं पुण्यविक्कितेः। २६५॥
ये व्यवं गार्झिमुखावमधपीतस्य मङ्कप्रवरस्य गोचे।
स्थान्मौकितानामिक तेषु जन्म
तञ्जचणं मम्मित कौत्तेयामः। २६६॥
स्थोनिमध्यक्कितितुस्यवणं
मञ्जादृहत्कोलफलप्रमाणं।
व्यव्ज्ञवं तेषु मुभं प्रदिष्टमुत्यद्यते यच गजेन्द्रकुम्भात्। २६७॥

तरजमा।

जी मौति वेरके फलके समान और शूकरके दांतके समान सफेद, ऐसा श्रुकरके जातका मौति देखनेमे बक्तत् श्राच्छा और पुरुष्टिन श्रादमीको निष्टं मील सक्ता । २६५।

जिस् शङ्घका बदन पीलारङ्ग घोए खीर सु काला-रङ्ग, ऐसेची शङ्घमें मोति पयदा घोता घै, दूस्लिये खाव उस्के जातके मोतिका घाल लिखा जाता घै। २६६।

शक्तुमें जो मोति पयदा होता ही, उसका कद बड़े बड़े वेरके समान ही, और उसका रङ्ग शक्तुके पेटके समान ही; शक्तुवाला मोति और हाथीके मस्तकका मोति सबमें अष्ठ और मङ्गल करनेवाला है। ५६७।



- 265. A boar-begotten Pearl resembling a plum in shape and the tusks of that animal in hue, is a most beautiful object in nature and is not to be obtained by a meritless individual.
- 266. Of conch-shells, those only that are yellow-bodied and black-mouthed produce Pearls. I shall now describe Pearls of this origin.
- 267. A Pearl that is derived from a conch-shell, is of the dimensions of a large plum, and is white as the inner surface of the coat of that shell-fish. Such Pearls as well as those produced by elephants, are the best of their kind and are productive of good fortune.

অন্থবাদ।

আকারে কুলের সদৃশ অথচ বরাহ-দন্তবৎ শুক্রবর্ণ বরাহ-জাত মূক্তা দেখিতে অতিরমণীয় এবং পুণ্যহীন ব্যক্তিবর্গের অপ্রাপ্য। ২৬৫।

শন্থের মধ্যে যেগুলির অবয়ব পীতবর্ণ এবং মুখ কৃষ্ণবর্ণ, সেই সকল শন্থেই মুক্তা জন্মিয়া থাকে, সম্প্রতি তজ্জাত মুক্তার বিবরণ বিরত করা যাইতেছে। ২৬৬।

শন্থ হইতে যে সকল মুক্তা জন্মে, তাহাদিগের আকার বৃহৎ কুলের ন্যায়, বর্ণ শন্থের উদরের ন্যায়, শন্থজাত ও গজ-কুম্ভজাত মুক্তাই সর্ব্বপ্রধান এবং মঙ্গলজনক। ২৬৭।







म्लम्।

वर्षांपलसमं दीप्तरा पाञ्चजन्यकुलोद्भवं ।
कपोतारा प्रमाणं तद्तिकान्तिमनो हरं ॥ ५६८ ॥
च्यांचित्रवादिकन च चे जाताः कस्वयः सुभाः ।
मौक्तिकं तेषु जातं हि सप्तविं चित्रभेदभाक् ॥ २६८ ॥
मुक्ता मुक्तपीतरका नौललो हितपि च्याराः ।
च्यांकर्वृदाः पाटला च नव वर्णा प्रकी किताः ॥ ५७० ॥

तर्जमा।

श्रुक्त मध्ये पाञ्चजन्य ग्रंख सबमे प्रधान ही, उस्के वंशमे जो शङ्ख होता ही, उस्का मोति कबुतरके अराहेके समान ही और खोले पाथरके समान सफेद, निक्सल, रोसन और देखनेंमे मनका हरनेवाला। २६८।

श्रिनी श्राद नचनमे मानाइश नचनतक् मानाइश किसिमका शङ्ख पयदा होता है, इमी तरहसे शङ्खसे पयदाद्या मोतिभी सानाइश किसिमका है।ता है।२६८।

ग्रङ्खसे पयदाडिये मोतिमे सफेर, काला, कमपीला, ज्यादा लाल, नीला, कम लाल, ज्यादा पीला, हालका खाकी और इटके एसा रङ्ग, इसी तरहसे नौकिसिमका रङ्ग होता है। २७०।



- 268. The conch-shell called panchajanya* is the best of its kind. The Pearls produced by it are like the pigeon's egg in size, and transparent as hail as well as white. These are exceedingly beautiful.
- 269. There are twenty-seven kinds of conchshells, produced by as many stars of the Aswini class; accordingly Pearls generated in them being marked out by distinctive qualities, are divided into twenty-seven orders.
- 270. A conch-shell Pearl is white, black, yellowish, crimson blue, reddish, deep-yellow, ashcolored or pale-red.

অমুবাদ।

শত্মের মধ্যে পাঞ্চজন্মই সর্ব্বপ্রধান, তদ্বংশজশদ্মোদ্রব মুক্তা আকারে কপোত-ডিম্ব-সদৃশ, করকার ন্যায় স্বচ্ছ, শুক্লবর্ণ, অতিশয়কান্তিবিশিষ্ট, দেখিতে অতিমনোহর।২৬৮।

অশ্বিন্তাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রে সপ্তবিংশতিপ্রকার শশু উৎপন্ন হয়, স্থতরাং শশ্বোদ্ভব মুক্তাও তদমুসারে সপ্ত-বিংশতিবিধ হইয়া থাকে। ২৬৯।

শন্তোৎপন্ন মুক্তার শুক্ল, কৃষ্ণ, ঈষৎপীত, গাঢ়-লোহিত, নীল, ঈষৎ-লোহিত, গাঢ়পীত, ঈষৎপাঁশুটে এবং পাটল এই নববিধ বর্ণ হইয়া থাকে। ২৭০।

^{*} So called because it is related to the five classes of beings, viz., gods, men, Gandharvas and Asuras, serpents and Pitris.—Williams.



मृलम् ।

महन्मध्यतघुकानैः सप्तविंगतिधा भवेत्।
क्रमतस्तेषु विद्ययं नद्यचेषु मनीविभिः॥ २७१॥
पाठीनप्रष्ठस्य समानवर्णं
मीनात् स्रष्टत्तं त्रघु नातिसूद्यां।
उत्पद्यते वारिचराननेषु
मीनाश्च ये मध्यचराः पयोधेः॥ २७२॥
गुद्धाफलसमं यत्तु मौक्तिकं तिमिनं त्रघु।
पाठनीपुष्ठमसङ्काणमस्यकान्ति सुवर्त्तुनं॥ २७३॥

तर्जमा।

चित्रिती चाद मानाइम नचनके मध्ये चित्रिती में लेकर चित्रे वाति यही नी नचन पेयदा ज्ञया मोति चोजनमें बज्जत भारी, मधा नचन के ज्येष्ठा नचनतक यही नी नचनजातका मोति पकत् चोजनी चौर मूलन्म च रेवती नचनतक् यही नी नचनजातका मोति चोजनमें चालका होता है। २०१।

जो मक्कि ससुद्रमे पयदा होति है, उस्के सुमें मौति पयदा होता है, मक्किजातका मोति बद्धत् गोल, देखनेमें कोटा, श्रोजनमें हाल्का और उस्का वर्ण वोयाल मक्कि पिठके ममान। २७२।

तिमि मक्रलिसे जो मोति पयदा होता है, उस्का डील घुंघटी अर्थात् गुञ्जाके ममान, श्रोजनमे बज्जत् हाल्का, पाटलीफुलके समान रङ्गमे उम्दा, देखनेमे उत्तम खौर कदमे गोल, लेकिन ज्यादा श्रावदार नहिं। ५७३।





- 271. The nine species of Pearls obtained from the first nine stars of the Aswini order from Aswin to Aslesá. are very heavy—those produced by the next nine from Maghá to Icshthwá are less so; while those produced by the rest from Mala to Revati are very light.
- 272. Pearls are also obtained from the mouth of sea-fish. Such pearls are singularly round, small and light, and in color are like the back of the sheat fish, (Silurus Boalis).
- 273. Those Pearls that originate in whales, are gunjā-shaped* and pātali-colored.† They are very light and agreeably round, but are not highly lustrous.

অনুবাদ।

অশ্বিন্যাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রের মধ্যে অশ্বিনী হইতে
অশ্লেষা পর্য্যন্ত এই নবনক্ষত্রজাত মুক্তা ওজনে অতিগুরু,
মঘা হইতে জ্যেষ্ঠা পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত মুক্তা ওজনে
গুরু এবং মূলা হইতে রেবতী পর্যান্ত এই নবনক্ষত্রজাত
মুক্তা ওজনে লঘু হইয়া থাকে। ২৭১।

যে সকল মংস্থা সমুদ্রে জন্মে, তাহাদিগের মুথে মুক্তা উৎপন্ন হয়, মংস্যাজাত মুক্তা অতিগোলাকার, আকারে ক্ষুদ্র, ওজনে লঘু হয়, এবং তাহার বর্ণ বোয়াল-মংস্যের পৃষ্ঠভাগের বর্ণ সদৃশ। ২৭২।

তিমিমংস্য হইতে যে মুক্তা জন্মে, তাহা আকায়ে গুপ্তার (কুঁচের) ন্যায়, ওজনে অতিলঘু, পাটলীপুপ্প-সদৃশ বর্ণবিশিক্ট, উত্তম গোলাকার, কিন্তু অধিক তেজ-বিশিক্ট হয় না। ২৭০।

⁺ A red and black berry of Abru's Precatorius forming the smallest (?) of the jeweller's weights averaging about 15 grains Troy.— Williams.





^{*} Patali is the trumpet flower, Bignonia Sauceolens .- Williams.



मुखम्।

वातिपत्तकपदन्द्वसिपातप्रभेदतः । सप्तप्रक्षतयो मीनाः सप्तधा तेन मौक्तिकं ॥ २०४ ॥ लिखस्तरणं वातात् आपीतं मृदु पित्ततः । सुक्कं ग्रक् कमोद्रेकात् वातिपत्तान्मृदुलघुः ॥ २७५ ॥

तर्जमा ।

वारं, पित्त, कफ; वार्यपित्त; कफपित्त; वायुकफ श्रीर वार्युपत्तकफ यही सात किसिमकी मछलिशी साव प्रकारकी होति हैं, इसवास्ते मछलिसे पयदाज्य्या मोतिशी सात तरहेका होता है। २७४।

जिस् मक्तिमें हावा ज्यादा होता, उस्से पयदा-ज्ञया मीति श्रोजनमें वज्जत् हालका, श्रक्णवण् ; जिस् मक्तिमें पित्त ज्यादा होता, उस्से पयदाज्ञया मीति हाल्का पीलारङ्ग, श्रीर जेरा ठोकरसे भट टुट् जावेगा ; जिस् मक्तिमें कफ ज्यादा होता, उस्का पयदाज्ञया मीति श्रोजनमें भारी, श्रीर सफेद रङ्ग ; श्रीर जिस् मक्तिमें वायुपित्त ज्यादा होता, उस्का पयदाज्ञया मीति श्रोजनमें बज्जत् हालका, श्रीर जेरा ठोकरसे टुट् जावेगा । २७५।



- 274. Fishes are divided into seven kinds, according to the preponderance of one, two, or all of the three vital properties—the air, bile and cold; and so are the Pearls produced by the finny kind.
- 275. Pearls which come from fish into whose composition the air principally enters, are exceedingly light and reddish brown; those produced by bilious fish are yellowish and brittle; those produced by fishes in which cold preponderates, are heavy and white; and those which originate in fish predominated over by the air and bile, are brittle and excessively light.

অত্নাদ।

বাত, পিত্ত, কফ; বাতপিত্ত; বাতকফ এবং বাতপিত্ত-কফ; এই সপ্তবিধ ধাতুপ্রাধান্যনিবন্ধন মৎস্য সপ্তবিধ হইয়া থাকে, স্থতরাং তজ্জাত মুক্তাও সাতপ্রকার হয়। ২৭৪।

বাতপ্রধান মংস্তজাত মুক্তা ওজনে অতিশয় লঘু ও অরুণবর্ণ; পিতাধিক মংস্তোদ্ভব মুক্তা ঈষং পীতবর্ণ ও ভঙ্গ-প্রবণ; কফস্বভাব মংস্তোৎপন্ন মুক্তা ওজনে ভারী ও শুক্র-বর্ণ এবং বাতপিতাধিক মংস্তদম্ভব মুক্তা ভঙ্গপ্রবণ ও ওজনে অতি লঘু । ২৭৫।





मूलम्। वातस्य याभवं स्थूलं पित्तस्य याजम च्छं। सव्विक्षिप्रयोगेण सान्निपातिकसुच्यते।

एकजा: गुभदाः प्रोक्तास्तया वै सान्निपातिकाः । २७६ ।

भीजक्रमं नीलविशुह्वदनं सब्दं भवेत् प्रोज्जानवण्योसं। नितान्तधौतप्रतिक स्परमान-निस्त्रिं ग्रधारासमवशोभंक । २७ ७। भुजक्रमास्ते विषवेगद्वाः त्रीवासुकेवणभवाः ष्टियद्या । क्षचित् कदाचित् खलु पुष्यदेशे

तिष्ठन्ति ते पर्यात तान् मनुष्यः॥ २७८ ॥

तर्जमा।

जिस् मक्कलिमे बायुकफ ज्यादा छोगा, उस्का पयदा-ज्ञया मोति कष्मे कुच बड़ा; जिस् मक्रलिमे पिन-कफ ज्यादा होगा। उस्का पयदाज्ञया मोति बज्जत् साफ भौर निमान ; जिस् मक्तिमे बायु पित्त कफ तिनो समान होगा, उसका पयदाक्रया मोति पूर्वलिखित तिन गुण्युक्त ष्टोगा; चौर दूसी सातिकासिम्की सक्तिके मौतिके सध्ये जो मीति एकधातुप्रधान अयवा सर्वधातुप्रधान महलिसे पयदा होए, वही शुभदायक है। ५७६।

सांपके मस्तकमें जो मौति पयदा होता है, वह उम्दा, गोल, बज्जत् साफ और जेनाति जह तलवारके बाट्के समान नीलारङ्ग । ५०७।

जिस् सपने मस्तनमें मोति पयदा होता है, वह बासुनि-बंग्रका सांप होता है, और ए ना नांप जमीनपर हरजगहे निह पयदा होता, कदाचित् किनी पविच देशमे ऐसा सांप पाया याता है। ५७८।





276. Pearls produced by fish predominated over by the air and cold, are rather large; those produced by fish in which bile and cold preponderate are very transparent; and those produced by fish into which the three substances enter in equal proportions, combine all the first-mentioned qualities. Of these, those only into the composition of which either one substance or all the three enter, are productive of good.

277. Pearls which adorn the serpent's crest, are finely round and highly shining; and reflect a beautiful blue halo like the flash of a polished sword.

278. Those serpents that bear Pearls on their head are the descendants of Vásuki*; these are not born everywhere, and are rarely seen by men in some sacred ground.

অমুবাদ।

যে মৎস্থে বাতশ্লেষার ভাগ অধিক, তত্ত্ৎপন্ন মুক্তার আকার কিঞ্চিৎ বৃহৎ হয়; পিত্তশ্লেষাপ্রধান মৎস্তজাত মুক্তা অতিশ্বচ্ছ এবং বাত-পিত্তকফাধিক মৎস্তোৎপন্ন মুক্তা প্রথমোক্ত ত্রিবিধ লক্ষণাক্রান্ত হইয়া থাকে। উক্ত সপ্রবিধ মুক্তার মধ্যে যে গুলি একধাতুপ্রধান বা সর্ক্রধাতু-প্রধান মৎস্থাইতে জন্মে, তাহারাই শুভজনক। ২৭৬।

ভুজঙ্গমস্তকজাত মুক্তা উত্তমগোলাকার, অতিশয় উজ্জ্বল, এবং শাণিত করবালের ধারের ন্যায় বিশুদ্ধ নীল-আভাযুক্ত হয়। ২৭৭।

যে সকল ভুজঙ্গের মস্তকে মুক্তা জন্মে, তাহারা বাস্থ-কির বংশসমুভূত এবং সে সকল সর্প পৃথিবীর সকল স্থানে জন্মে না, ক্লাচিৎ কোন পবিত্র প্রদেশে তাহাদিগকে দেখিতে পাওয়া যায়। ২৭৮।

^{*} Sovereign of the snakes.



मूलम् ।

पाणिजं वर्त्तुलं रस्यं नीलच्छायं महाद्युति । पुण्यहीना न पश्चन्ति वास्रकेः कुलसम्भवं ॥ २७१ ॥ भूगालकोलामलकोलग्रद्धा-

फलप्रमाणासु चतुर्विधासाः।

खुवस्यवाह्रद्भववेश्वशूद्राः

सर्पेषु जाताः प्रवरा**ख स**र्व्याः ॥ २८० ॥

प्राप्यापि रहानि धनं श्रियखा

राजित्रयस्वा महती दुरापा।

तेजोऽन्विताः पुण्यक्ततो भवन्ति सुकाफलस्यास्य विधारणेन ॥ २८१ ॥

तर्जमा।

सांवके मस्तकका पयदा उत्या मोति गोल, देख्नेमे खुब-सुरत, नीलरङ्गकी आभासिहत, बड्डत् रोमन, ऐसा मोति पुण्यहीन धादमीको आंख्से देख्नामी नसीब निष्ठ होता। २७८।

मांपके मस्तकमे जो मोति पयदा होता है, वहमी ब्राह्मण, चिन्नु, बैख और अद्भेत समान चारवणका है, उसमें जो ब्राह्मणवल होए, उसका कद खांकुलके पलके समान; जो चिन्न्वण, उसका कद आमलाफलके समान; जो बैखवल, उसका कद छोटे बैरके समान और जो अद्र-वण, उसका कद गुज्जाके समान है। २८०।

पुर्ण्यवान् त्रादमी वज्जत् रतः, धनः, लच्ची, या बज्जत् मुस्किलसे हासिलहो नेवाली राचलच्चीको हासिल कर्के जिस्तरहसे चमकति, पेशानी और नुराणी चेहारा होते है, उसी तरहसे सांपके मस्तक्का एक मोति धारण करनेसे तेजवान हो सक्ते हैं। २८१।





- 279. Persons void of merit cannot see the class of Pearls under description;—the exceeding brilliance and beauty of which are hidden from their view.
- 280. Such Pearls as are found on the head of serpents, are divided into four classes called after the names of the four principal castes. Of these, those which are Brahmins, resemble in form Shyá-kula*; the Kshetriya class are like the fruit of the Emblic Myrobalan; the Vaisya Pearls are like common plums; while the Sudra ones are gunjá-shaped.
- 281. The power which is attained by virtuous people through the possession of innumerable gems and great wealth, through ordinary prosperity or through regal good fortune, is attained by wearing one serpent-begotten Pearl.

অञ্বাদ।

ফণীর মস্তকোদ্তুত, গোলাকার, রমণীয়, নীলছায়া-বিশিষ্ট ও অতিতেজস্বী মুক্তা পুণ্যহীন ব্যক্তির নয়নগোচর হইবার নহে। ২৯৭।

দর্শমস্তকে যে দকল মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহারা ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্রভেদে চতুর্বিধ হইয়া থাকে। তন্মধ্যে যেগুলি ব্রহ্মাবর্ণ, দেগুলি শ্যাকুলের ন্যায়; যেগুলি ক্ষত্রিয়বর্ণ, দেগুলি আমলকীর ন্যায়; যেগুলি বৈশ্যবর্ণ, দেগুলি দামান্য কুলের ন্যায় এবং যেগুলি শূদ্রবর্ণ, দেশুলি কুঁচের ন্যায় হয়। ২৮০।

পুণ্যবান্ লোকেরা প্রচুর রক্ন, ধন, সামান্য শ্রী অথবা অতিত্বস্প্রাপ্য মহৎ রাজশ্রী প্রাপ্ত হইয়া যেরূপ তেজস্বী হন, একটী সর্পজাত মুক্তাধারণে সেইরূপ তেজস্বী হইতে পারেন। ২৮১।



^{*} A thorny shrub.

मूलम्।

नित्रासया रत्नविनिश्वयत्त्रीः

शुभे सुझर्ने प्रयतेः प्रयतात्।

रचाविधानं समहदिधाय

इसार्रीपविष्टं कियते यदा तत्। २०२॥

तदा महद्दुन्द्भितूर्वप्रघोषे-

धनेधनरावियतेऽनारीचं।

न तं भुजङ्गा न तु जातुधाना

न राचसा नापि च दुष्टलोका: ।

हिंसन्ति यस्याहिशिरःसम्त्यं

सुक्ताकलं तिष्ठति कोषमध्ये॥ २८३॥

भेकादिषुपि जायन्ते मणयो ये क्वचित् क्वचित्।

भीजक्रममणेखुल्यास्ते विश्वेया वुधोत्तमैः॥ २८४॥

तर्जमा।

जिस्वत कोइ आदमी रत्नपारचीके मतके आनुसार नेकसायेतमे सांपके मसकसे पयदा ज्ञये मौतिको मकानमे रख्ते हैं, उस्वक्तमे आकाश्रमण्डलमे घन घन दुन्धुमि बाले, की धुन होति हैं, इस् कारण जो आदमी खाजानेमें सांपका मोति रक्षे, वह आदमी कभी सांप, राज्ञस, निशा-चर और डाकु वगैरहसे भय नहि रस्ता। २८२।२८३।

किसि किसि जगहमें मेढ़क केभी मस्तक मोति होता है, पिएडत लोक उस् मोतिको भी संपक्त मोतिके समान कहते हैं। २८४।



282—283. When in an auspicious hour, a person carefully keeps such a gem in his house, in conformity with the instructions of the authorities, the skies resound with the sound of the *Dundhuvi*;* and such a person has nothing to fear from serpents, *Rákshasas*† and other demons, or from wicked people.

284. In certain places, Pearls are found on the head of frogs; learned men class these with serpent Pearls.

অনুবাদ।

যথন কোন ব্যক্তি রত্নপরীক্ষকদিগের অভিমত শুভলগ্নে সর্পোদ্ভব মুক্তা অভিযত্নপূর্ব্ধক গৃহে রক্ষা করেন, সেই সময়ে আকাশমগুলে ঘন ঘন ছুন্দুভিধ্বনি হইতে থাকে। এবং যে ব্যক্তির কোষমধ্যে সর্পমুক্তা থাকে, সে ব্যক্তি কথনই সর্প, রাক্ষদ, অপরাপর নিশাচর এবং ছুফলোক হইতে ভীত হয় না। ২৮২। ২৮৩।

কোন কোন স্থানে ভেকাদির মস্তকেও মণি জন্মিয়া থাকে, পণ্ডিতেরা সেই মণিকে সর্পমণির তুল্য বিবেচনা করেন।২৮৪।





^{*} A sort of large kettle drum.

⁺ Vide antè.



मूसम्।

सें इिलक्षपार लीकिक सीराष्ट्रतामुपणीपार मीकाः। कौवरपाण्ड्यविराटमिति सक्ताकराश्वाष्टी ॥ २८५ ॥ स्वात्यां स्थिते रवी मेघेर्मुक्ता ये जलविन्दवः। गीर्णाः श्रुक्तिषु जायन्ते तेस् का निर्मलित्वषः॥ २८६॥ स्थूला मध्यास्त्रथा सूच्या विन्दुमाना नुमारतः। भवन्ति सुक्तासाश्च मूर्व्यं स्थान्या नरूपतः॥ २८९॥ ४

तरजमा।

सिंचल, पारलीकिक (आब इसवक्रमे निष्ठ मालुम, के उस्का नाम केय हैं), सीराष्ट्र (सुराट), तास्रपर्णी (पश्चिम घाटपर्यतके पाश्च), पारसीक (पारस्य देश), की बेर (केलासपर्यतके निकट), पार्एप्र (ट्राबिड्के अन्तर्गत), विराट (मत्स्य देश), इसी आट जगहमे मोति पयदा होता है। २८५।

सूर्य जिस् समये खातीन च चमे रहता है, उस् समयमें जो सब जलकी बुंद सिपमें पड़ित है, उसी जलकी बुंदको दारा बद्धत् साफ अर्थात् बद्धत् रोसन मोति पयदा होता है। २८६।

जलकी बुंदे जिस् तरहकी बर्धेगी, उसी तरहेका मोतिभी होगा, अर्थात् अगर जलकी बुंद रित होगि, तो बड़ा मोति होगा, और मध्यम जलकी बुंदसे मध्यम मोति होगा भौर पत्लि बुंदसे कोटा मोति होगा। २८०।



285. Pearls are produced in the following eight places:—Sinhala,* Páralaukika,† Saurástra,‡ Tamraparní,¶ Párasíka,∥ Kauvera,§ Pándya** and Viráta.††

286. The Pearls that originate in water-drops falling upon oysters, when the sun rests on the Swát퇇 star, are flawless and bright.

287. The size of these varies in strict concomitance with the size of the water-drops—i. e. a large drop producing a proportionately large Pearl, and a small drop, a proportionately small one.

অনুবাদ।

দিংহল, পারলোকিক (অধুনা অজ্ঞাত নামে পরি-ণত) সোরাষ্ট্র (স্থরাট), তাত্রপর্ণী (পশ্চিম ঘাটের সন্নিহিত), পারদীক (পারস্থদেশ), কোবের (কৈলাস-পর্বতের সন্নিহিত), পাণ্ড্য (দ্রাবিড়ের অন্তর্গত), বিরাট মংস্থদেশ), এই অফস্থানে মুক্তা উৎপন্ন হয়।২৮৫।

দূর্য্য যে সময়ে স্বাতীনক্ষত্রে অবস্থিতি করেন, সেই
সময়ে যে সকল জলবিন্দু শুক্তিগর্ভে নিপতিত হয়, সেই
জলবিন্দু দ্বারা অতিনির্মাল এবং অতিতেজস্বী মুক্তা
জন্মে। ২৮৬।

রষ্টিবিন্দু সকল যে পরিমাণে পতিত হইবে, মুক্তাও সেই পরিমাণে জন্মিবে, অর্থাৎ স্থলবিন্দু দ্বারা স্থল, মধ্য-বিন্দু দ্বারা মধ্যমাকার এবং অতিসূক্ষ্মবিন্দুতে অতিক্ষুদ্র মুক্তা উৎপন্ন হইবে।২৮৭।

‡‡ The star Arcturus (as forming the fifteenth lunar asterism.)





^{*} Ceylon. † Cannot be identified now.

‡ Surat.—(Vide antè.) ¶ Near the Western Gháts.

| Persia. § Adjoining the Kailásha Mountain.

* Included in Drávira. †† Matsyadesha.



मुखम्।

सुसियं मधुरक्तायं मौकिकं सिंचली द्ववं।
पारली किकसमूतं मीकिकं निविदं गुरु ॥ २८८॥
तासपणीं भवं तासं पीतं पारससभवं।
देवक्तामञ्च रूचक्व की वेरी द्ववमौकिकं।
पाष्ट्रादेशी द्ववं पाष्टु सितं रूचं विराटलं ॥ २८८॥
स्कित्याख्यात् या शुक्ति स्तत्प्रसूति: सुदुलेभा।
तच जातं सितं स्वक्टं जाती फलसमं वरं॥ २८०॥

तर्जमा।

सिंचलदेशी मोति बज्जत् चमकदार और शाफ मीमके समान रङ्ग, पारलौकिक देशका पयदाज्ञया मोति बज्जत् ठीस और श्रोजनमें बज्जत् भारी। २००८।

तास्रपणी देशका पयदाक्तया मीति तांवेके रङ्ग, पारस्य देशका मीति पीला रङ्ग, कौवेर देशका मीति थोड़ा स्थाम रङ्ग और बड़ा कर्कश, पाग्ड्यदेशका मीति फिका सफेद, विराट देशका मीति शुक्तरङ्ग और कर्कश। २८९।

रिकाणी नामकी एक जात सिप पयदा होति है, लेकिन उस जातकी सिप बज्जत् कम है, उस्से जो मोति पयदा होता है, वह नैहायेत् खोसरङ्ग, सफेद श्रीर बज्जत् साफ श्रीर जायफलके समान वड़ा, इस् तरहेका मोति काविल इज्जत्के हैं। २१०।



- 288. A Cingalese Pearl is very cool to the touch, pure and honey-colored; a páralaukika Pearl is very substantial, and consequently heavy.
- 289. A Pearl of the *Támraparní* country is copper-colored; a Persian Pearl is yellow; a *Kauvera* Pearl is gray and frightfully rough; and a Pearl produced in *Pándya* is white and rough.
- 290. There is a particular oyster called *Rukmini*, which is very rare. The pearls found in it are white, transparent and large as nutmegs. They are much coveted.

অञ্বাদ।

সিংহলদেশীয় মুক্তা অতিস্লিগ্ধ এবং বিশুদ্ধ মধুর স্থায় বর্ণবিশিষ্ট; পারলোকিকোৎপন্ন মুক্তা অত্যন্ত নিরেট, স্থতরাং ওজনে ভারী হইয়া থাকে। ২৮৮।

তাত্রপর্ণীসমূভূত মুক্তার বর্ণ তাত্রের ন্যায়; পারস্যদেশীয় মূক্তা পীতবর্ণ; কোবেরদেশোদ্ভব মুক্তা ঈষৎ শ্যামবর্ণ ও অতিকর্ক শ; পাণ্ড্যদেশোৎপন্ন মুক্তা পাণ্ডুবর্ণ এবং বিরাট-দেশজাত মুক্তা শুক্লবর্ণ ও কর্ক শ হইয়া থাকে।২৮৯।

রুক্মিণী নামে একজাতীয় শুক্তি জন্মে, তজ্জাতীয় শুক্তি অতিত্র্লভ, তাহাতে যে মুক্তা উৎপন্ন হয়, তাহা শুরুবর্ণ, স্বচ্ছ ও জায়ফলের ন্যায় বৃহৎ হয়, এবং এ প্রকার মুক্তা অতিআদরণীয়। ২৯০।





700 B

मूलम् ।

कायावदर्मुलं रस्यं निर्द्शिषं यदि लस्यते । श्रमू त्यं तिदिनिह् ष्टुं रत्नलचणकोविदैः । दुलेमं नृपयोग्यं स्यादत्यभाग्ये ने लस्यते ॥ २८९ ॥ वद्मादिजातिभेदेन गुक्तयोऽपि चतुर्विधाः । तास मर्व्वास जातं हि मौक्तिकं स्याञ्चतुर्विधं ॥ २८२ ॥ व्राह्मणस्य नितः स्वच्छा गुकः स्विग्धः प्रभान्वितः । श्रारकः चित्रयः स्यूलस्रयाकणविभान्वितः ॥ २८३ ॥

तर्जमा।

रत्नपारची पिएडतें के मतके अनुसार उक्तम क्रुटदेने-वाला और गोल, देखनेमें रमणीय खीर वेश्रयेव मोति बद्धत् दुर्लम हैं; और वेकिमत् हैं, श्रीर राजाके योग्य हैं, उस्जातका मोति कम नसीवके योग्य निहं, बहुं एक वालमन्द प्रतापमानके योग्य हैं। ५६९।

जिस् प्रकारसे वास्मण, चित्ति, वैश्व और श्रद्ध चारजात होति हैं, उसी प्रकार सिपमेभी चारजात है, उस्से पयदा-ज्ञया मोतिभी चार जातका है। २१२।

जो मोति सफेद रङ्ग, साफ, श्रोजनमें भारी, चमक-दार श्रीर तेजस्वी होए, उस्को ब्राह्मणवर्ण कहते हैं; जो मोति सुखीमायेल, श्रीर देखनेमें बड़ा, सुख-रङ्ग श्रीर कुटदेनेवाला, वह मोति स्नानुवर्ण है। २८३।



- 291. According to the authorities, perfectly circular and chaste Pearls casting a beautiful shade, are rarely found and are of priceless worth, they being fit enjoyment for princes. Such Pearls are beyond the reach of unlucky individuals.
- 292. The four-fold division of caste holds also with oysters; accordingly oyster-begotten Pearls are of four kinds.
- 293. Such of these as are white, transparent, weighty, cool and shining, are reckoned Brahmins; those which are ruddy, and large and which possess a reddish light, are Kshetriyas.

অমুবাদ।

রত্মলক্ষণবিৎ পণ্ডিতদিগের মতে উত্তম ছায়াবিশিষ্ট, স্থলর গোলাকার, দেখিতে রমণীয়, অথচ নির্দোষ মুক্তা অতিত্র্লভ, অমূল্য এবং রাজভোগ্য, তজ্জাতীয় মুক্তা অঙ্গ্ল-ভাগ্য ব্যক্তিগণের অপ্রাপ্য। ২৯১।

ব্রহ্মাদি জাতিভেদে শুক্তি চতুর্ব্বিধ হইয়াথাকে, স্থতরাং শুক্তিজাত মুক্তাও চতুর্ব্বিধ হয়।২৯২।

যে সকল মুক্তা শুক্লবর্ণ, স্বচ্ছ, ওজনে ভারী, স্নিগ্ধ ও প্রভাবিশিষ্ট, তাহারা ত্রহ্মবর্ণমধ্যে গণ্য; যেগুলি ঈষৎ রক্তবর্ণ, আকারে বৃহৎ ও অরুণবর্ণ প্রভাবিশিষ্ট সেগুলি ক্ষজ্রিয়বর্ণমধ্যে গণনীয়। ২৯৩।





मूचम्।

वैश्वस्वापीतवणींऽपि सिग्धः खेतप्रभान्वतः।
श्रद्धः गुक्तवपुः सूचास्तया खूचोऽनितद्युतिः॥ २८४॥
वंग्रजं गणिसङ्कागं ककोलफलमाचकं।
प्राप्यते बद्धभिः पुण्यैसद्भां देवसमातं॥ २८५॥
पञ्चभूतससुद्रे कादंगः पञ्चविधो भवेत्।
सुकाः पञ्चविधास्तामां यथालचणसुच्यते॥ २८६॥

तर्जमा।

जो मोति कम पीलारङ्ग, चमकदार, मफेद और क्रुटदेने-वाला होए, उसकी वैद्यवर्ण कहते हैं, और जो मोति सादारङ्ग, लेकिन क्रोटा, और जो मोति कद्से वड़ा, लेकिन कालारङ्ग वह मूद्रवर्ण मोति हैं॥ २८४॥

वांग्रसे जो मोति पयदा होता है, वह देखनेमे चन्द्रके समान गुक्तवण और उन्का कद ककोलफलके समान वड़ा, इस् जातका मोति खास, कोइ कोइ लोक वज्जत् पुण्यके जोरसे दो एक पावे। २९५।

एखी आद पांच महाभूत खर्यात् माड्डी, पाणि, हावा, आग और आकाश इसी पांच तत्त्वके कमी वेशीसे वांशभी पांचप्रकारका होता है, इस् कारण वांश्रजातका मोतिभी पांचप्रकारका होता है। २८६।



- 294. Those Pearls that are yellowish and cool, and which are possessed of a white lustre, are Vaisyas; lastly of Súdra Pearls, some are white and small while the rest are black and large.
- 295. Pearls which originate in bamboos, are clear as the moon; and are like the kakkol* fruit in shape. They are generally enjoyable by the gods. Some through rare merit obtain possession of one or two.
- 296. There are five species of bamboos, on account of the preponderance in them of one or other of the five elements; consequently bamboo Pearls are classified under five distinct heads.

অমুবাদ।

যে সকল মুক্তা ঈষং পীতবর্ণ, স্নিগ্ধ অথচ শ্বেতপ্রভাবিশিক্ট, তাহারা বৈশ্যবর্ণমধ্যে পরিগণিত এবং শূদ্রজাতীয় মুক্তার মধ্যে কতকগুলি শুক্লবর্ণ ও ক্ষুদ্রকায়, এবং কতকভিলি কৃষ্ণবর্ণ ও বৃহৎকায় হইয়া থাকে। ২৯৪।

বংশজাত মুক্তা দেখিতে চন্দ্রের ন্যায় শুক্রবর্ণ, আকারে ককোল (স্থগন্ধি দ্রব্য বিশেষ) ফলের সদৃশ, এই জাতীয় মুক্তা প্রায়ই দেবভোগ্য, কেহ কেহ বহু পুণ্যবলে ছুই একটী প্রাপ্ত হইয়া থাকেন।২৯৫।

পৃথিব্যাদি পঞ্ছতের প্রাধান্যনিবন্ধন বংশ পঞ্চবিধ হয়, স্থতরাং বংশজাত মুক্তাও পাঁচপ্রকারের হইয়া থাকে। ২৯৬।



^{*} A fragrant fruit.



मूखम्।

पार्थिनो गुरुरच्छा च तैजसी तेजसा लघुः।

वायनी च चदुः स्थूला गागनी कोमला लघुः॥ २८७॥

स्थाया सिग्धा चर्च मुक्ता पश्चेताः प्रवरा मताः।

स्थासां धारणमाचेण व्याधिः कोऽपि न जायते॥ २८८॥

चतुर्धा मौक्तिके च्छाया पीता च मधुरा सिता।

नौला चैव समास्थाता रक्षतत्त्वपरीचकैः॥ २८८॥

तर्जमा ।

जिस् मोतिमे एखीका हिस्सा ज्यादा है, वह धोज-नमे भारी, चौर बद्धत् साम; जिस् मोतिमे तेजका हिस्सा जप्रादा है, वह धोजनमे हाल्का; जिस् मोतिमे हावाका हिस्सा ज्यादा है, वह योदा ठोकरसे टुट जाता है चौर कद्से वड़ा, चौर जिस् मोतिमे चाकाणका हिस्सा जप्रादा है, वह छुनेमे चाच्छा चौर चोजनमे हाल्का। १८९।

जिस् मोतिमे जलका चिस्सा ज्यादा है, वच चमकदार, सादा और साफ; यक्षी पांचजातके मोति पहेरनेसे किसी तरहकी व्याधि अर्थात् बदनके विमारिका खीफ नहिं। २८८।

रत्नपार्ची पण्डित पीला, मधुके समान रङ्ग, मुक्कवर्णचीर नीलवर्ण, यही चारप्रकारका चाभा मोतिकी काइते हैं। २९९।



- 297. Earthy Pearls are heavy and spotless; energy-begotten Pearls are very light; airy Pearls are exceedingly brittle and thick; skyey Pearls are very soft and light.
- 298. Watery Pearls are cool and eminently white. All these kinds are superior; and the wearing of them wards off disease.
- 299. Authorities in the matter of gems mention four kinds of shade as belonging to Pearls;—viz., the yellow, the honey-colored, the white and the blue shade.

অনুবাদ।

পার্থিবী মুক্তা ওজনে ভারী ও অতিনির্মাল, তৈজদী মুক্তা ওজনে অতিলঘু, বায়বী মুক্তা অতি-ভঙ্গুর ও স্থূল, গাগনী মুক্তা অতি-কোমল অথচ ওজনে লঘু। ২৯৭।

জলীয়া মুক্তা স্নিগ্ধ, অত্যন্ত শুক্লবর্ণ হইয়া থাকে, এই পঞ্চবিধ মুক্তাই অতিশ্রেষ্ঠ এবং এই সকল জাতীয় মুক্তা ধারণ করিলে কোনপ্রকার ব্যাধিভয় থাকে না। ২৯৮।

রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা পীত, মধুর, শুক্ল ও নীল এই চারি-প্রকার ছায়া মুক্রাতে নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন। ২৯৯।







मू सम्।

पीतां लक्षीप्रदा क्हाया मधुरा बुद्धिवद्धिनी। युक्का यथस्त्ररी क्हाया नीला सीमाग्यदायिनी॥ ३००॥ सितक्काया भवेदिपः क्वानुयवार्करिक्षमान्। पीतक्काया भवेदिक्षः युद्रः क्रष्णक्विक्षतः॥ ३०९॥

त्रथ सुता-गुणाः।

सतारञ्च सरमञ्च खक्कञ्च निर्मालन्तया। घनं सिम्धञ्च सक्कायं तथास्मुटितमेव च। त्रष्टौ गुणाः समास्थाता मौक्तिकानामश्रेषतः ॥ ५०२।

तर्जमा।

पीला त्राभायुक्त मोति दौलतका ज्यादा करनेवाला है; मधुके समान त्राभाविशिष्ट मोति बुद्धिको देनेवाला, गुक्कवर्ण त्राभायुक्त मोति यशका ज्यादा करनेवाला है प्रौर नील त्राभायुक्त मोति सुभाग देनेवाला। ३००।

शुक्त आभायुक्त मोति वास्त्रणवर्ण ; प्रातःकालके सूर्य्यके समान आभायुक्त मोति चित्त्रवर्ण ; पीत आभायुक्त मोति वैद्यवर्ण और छला आभायुक्त मोति ऋद्रवर्णमे सुमार किया गेया है। २३१।

मोतिका गुगा।

स्तारतः स्टनतः स्वस्तः निर्माततः धनतः सिम्मतः स्वायतः श्रीर श्रस्पुटिततः यही श्राटमकारके गुण मोतिमे हाता है। ३०२।







- 300. The first brings on wealth; the second fosters the understanding; the next brings about fame; and the last is the harbinger of good luck.
- 301. A Pearl with a white shade belongs to the Brahmin, with a pale-red shade to the Kshetriya, with a yellow shade to the Vaisya, and with a black shade to the Sudra order.

Properties of Pearls.

302. A Pearl is named after the name of the quality which forms its distinctive feature; and eight sorts emerge as the consequence of this classification.

অञ্বাদ।

পীতৃচ্ছায়া লক্ষীরৃদ্ধিকারিণী, মধুরচ্ছায়া বুদ্ধিদায়িনী, শুক্লচ্ছায়া যশোবদ্ধিনী এবং নীলচ্ছায়া সোভাগ্যদায়িনী হইয়া থাকে। ৩০০।

শুক্লচ্ছায়াবিশিক্ট মুক্তা বিপ্রবর্ণ, তরুণ-অরুণচ্ছায়া-বিশিক্ট মুক্তা ক্ষজ্রিয়বর্ণ, পীতচ্ছায়াবিশিক্ট মুক্তা বৈশ্যবর্ণ এবং কৃষ্ণচ্ছায়াবিশিক্ট মুক্তা শূদ্রবর্ণমধ্যে পরিগণিত। ৩০১।

মুক্তার গুণ।

স্থতারত্ব, স্থরতত্ব, স্বচ্ছত্ব, নির্মালত্ব, ঘনত্ব, স্লিগ্ধত্ব, স্থান্থত্ব ও অস্ফুটিতত্ব, এই আটপ্রকার গুণ মুক্তায় বিদ্যান্য মান থাকে। ৩০২।







मृषम्।

तारकाद्युतिसङ्काशं स्तारिमिति गद्यते।
सक्तो वर्नुलं यन् स्टनं तिद्यगद्यते। ३०३॥
सक्तं दोषिविनिर्भृतं निर्मलं मलविर्भतं।
युक्तं तुलया यस्य तद्धनं मौतिकं वरं॥ ३०४।
श्रीतांशुविष्वसङ्काशं मौतिकं सिग्धसुच्यते।
कायाममित्वतं यच्च सक्कायं तिद्यगद्यते।
वणरेखाविष्ठीनं यत् तत् स्थादस्कृदितं शुभं॥ ३०५।
स्वेतकाचसमाकारं शुभागुश्रतयोजितं।
भाषराजप्रतिक्कायं मौतिकं देवभृष्वं॥ ३०६॥

तर्जमा।

जिस मोतिमे तारेके समान श्वामा निक्ने, वह सुतार; जो मोति गोलाकार, वह सुष्टन । ३०३।

जो मोति वेश्वयेव होए. उन्को स्वक्त कहते हैं, जो मोति मयला ना होए, उसको निम्मेल कहते हैं और जो मोति श्रोजनमें भारी होए, उसको धन कहते हैं। ३०४।

जो चन्द्रके समान किरणविशिष्ट ही, उस्को खिन्छ कहते हैं, जो मोति उत्तम कायाविशिष्ट अर्थात् उत्तम आभाविशिष्ट, उस्को सुच्छाय कहते हैं, और जो मीति साफ सुध्रा होए, उस्को अस्फ्टित कहते हैं। ३०५।

सफेद रङ्ग काचके समान, उत्तम किरणविशिष्ट, रोड़ मक्कलिके समान साभायुक्त, ऐसा मौति देवताचोंके गद्दनेके योग्य है। ३०६।



303. Those Pearls which throw out starry beams, are termed sútára; those which are entirely round, are called suvritta.

304. Those which are flawless, are called sach-chha (transparent); those in which dirt has no place, are called nirmala [dirtless]; those which are

weighty, are termed ghana [dense].

305. Those Pearls which are ray-darting like the moon, are called snigdha [cool]; those which cast a fine shade, are denominated suchchháya (finely shadowing); and finally those which are free from spots or breaks, are termed asfutita (not indented).

306. Such Pearls as resemble in color the white glass as are furnished with an excellent brightness, and as are possessed of a shade like the *rohita** fish, are fit ornaments for the gods.

অञ্বাদ।

যে দকল মুক্তা হইতে তারার ন্যায় আভা নির্গত হয়, তাহাদিগকে স্থতার, যাহারা দর্বতোভাবে গোলাকার, তাহাদিগকে স্থরত্ত কহে। ৩০৩।

যে সকল মুক্তা দোষবর্জ্জিত, তাহারা স্বচ্ছ; যাহারা মলবর্জ্জিত, তাহারা নির্মাল ও যাহারা ওজনে ভারী, তাহারা ঘন বলিয়া প্রসিদ্ধ। ৩-৪।

যে সমুদায় মুক্তা চন্দ্রের ভায় কিরণবিশিষ্ট, তাহারা স্নিগ্ধ; যে গুলি উত্তমছায়াবিশিষ্ট, সেগুলি স্থায় এবং যাহারা ব্রণরেথাদিবিহীন, তাহারা অফ্টুটিত বলিয়া বিখ্যাত।৩০৫। শ্বেত কাচের ভায়ে শুক্ল, উৎকৃষ্ট কিরণচ্ছটাবিশিষ্ট,

শেত কাচের ভায় শুক্ল, উৎকৃষ্ট কিরণচ্ছটাবিশিষ্ট, রোহিতমৎস্থের ভায় ছায়াযুক্ত মোক্তিক দেবতাদিগের ভূষণযোগ্য। ৩০৬।

^{*} Cyprinus Rohîta.



म्बम्।

र्म्रह्मस्वयुणोपेतं मौक्तिकं येन धार्यते। तस्यायुर्वेद्वते लच्चीः सर्व्यपापं प्रज्ञस्वति । ३०९ ।

प्रमाणवद्गौरवरिष्मयुक्तं

नितं सुट्टनं समसूचारन्षं ।

चक्रोतुरप्यावहति प्रमोदं

यन्मौक्तिकं तद्गुणवत् प्रदिष्टं ॥ ३०८ ॥

एवं समस्तेन गुणोदयेन

यन्मौक्तिकं योगसुपागतं स्थात् ।

न तस्य भन्नीरमनन्यजात-

मेकोऽपि दोष: समुपैति सद्यः ॥ २००॥ गुणवहुक् यहे हे मौक्तिकमेव तिष्ठति । चञ्चलापि स्थिरा भूत्वा कमला तच वन्तते ॥ ३९०॥

तरजमा।

उपरमे जिन् सव ग्रणोकी वात कि गेई है, वही सब गुणयुक्त मोति जे। आदमी धारण करे, उस्की उमर और दौलत दोनो वाड्ति हो, और मर्ब्स पापनाश होए। ३०७।

जो मोति चाजनमे भारी, उमदा, दीप्तिविधिष्ट, सफेद, गोल, समान चौर बारिकवेध सेवाय खरिददाके देखनेवालेकोभी चानन्ददेनेवाला है, ऐसा मौति सबसे चाच्छा है। ३०८।

जो मोति सवतरहे वेश्वयेव हैं, वडी मोति श्रपने मालेकका सब दुःखनाश करनेवाला हैं, श्रीर उस्के मालिकको कोद्र दुःख हो नर्डि सक्ता। ३०९।

जिम् घरमे वेद्ययेव मोति रहेता है, चञ्चल दौलत उस् घरमे सब्बेदा काल द्यचल रहित है। ३१०।







- 307. The wearing of such Pearls leads to longevity and wealth, and purges the wearer of every sin.
- 308. A Pearl which is heavy, lustrous, silvery, well-rounded, which is furnished with equal and minute openings and which is a delight not only to its owner but also to the observer, is the acme of perfection.
- 309. Those Pearls which are possessed of every valuable quality, shield their master from every evil, and suffer nothing harmful to come near him.
- 310. The house which contains a perfect Pearl, the ever-restless Laksmi* chooses to make her dwelling for ever and a day.

অञ্বাদ।

উল্লিখিত গুণসমূহে ভূষিত মোক্তিক যে ব্যক্তি ধারণ করে, তাহার আয়ু ও লক্ষীরৃদ্ধি পায় এবং সর্ব্বপাপক্ষয় হয়। ৩০৭।

যে মুক্তা ওজনে ভারী, উত্তমদীপ্রিবিশিষ্ট, শুভ্রবর্ণ, উত্তমগোলাকার, সমান অথচ সূক্ষারন্ধুযুক্ত, ক্রেতা ভিন্ন অপর ব্যক্তিরও প্রমোদবর্দ্ধন করে, সেই মুক্তাই সর্বাপেক্ষা উত্তম। ৩০৮।

যে সকল মুক্তা সমুদায় গুণযুক্ত, তৎসমূদায় নিজস্বামীর সমুদায় অনর্থ বিনাশ করে, এবং তৎস্বামীকে কোন দোষই স্পার্শ করিতে পারেনা। ৩০৯।

বে গৃহে গুণযুক্ত মুক্তা থাকে, স্বভাবচঞ্চা লক্ষ্মী সে গৃহে চিরকাল নিশ্চলা হইয়া থাকেন। ৩১০।





^{*} The goddess of wealth.



मूलम्।

चिन्ता न तस्याकरजा विशेषा '
क्षेप्रमाणे च यतेत विद्वान्।
न च व्यवस्थास्ति गुणागुणेषु
सर्वेच सर्व्वाकृतयो भवन्ति ॥ ३९१ ॥

ग्रथ सुक्ता-दोषा: ।

चत्वार: खुर्महादोषा: षण्मध्याच प्रकीर्त्तताः। एवं दश समाखातास्तेषां वद्यामि लच्चणं॥ ३९२॥ यचैकदेशे संलानः शुक्तिखण्डो विभाव्यते। शुक्तिलानः समाखातः स दोषः कुछकारकः॥ ३९३॥

तर्जमा ।

मोतिके पयदा इस्की जगहका देखना कुछ जकर निहं, उस्का अयेव, उत्तर, रङ्ग और रूप देखना चाहिए, ऐसा ना समभना चाहिए के फलाने जगहका पयदाज्ञया मोति आच्छा होता है, और फलाने जगहका पयदाज्ञया मोति व्राहोता है, वल्के सव जगहों में बुरा भाला दोनो प्रकारका मोति पयदा होता है। ३१९।

मोतिका अयेव।

रत्नपार्ची पिण्डितों ने मोतिके दशप्रकारके अयेव कहे हैं, उस्मेमे चारप्रकारके वर्डे अयेव और क्षप्रकारके मध्यम अयेव हैं, आलग आलग उस्का लच्चण लिखते है। ३१२।

जिस् मोतिके किसी रङ्घने सिपका टुकरा लागा रहे जाता है, उस्को ग्रुक्तिलान दोष्ठ कहते हैं, ग्रुक्तिलान अथेवका मोति पहेरनेसे कोड़की विमारि होति है। ३१३।





311. The consideration of origin is trivial in regard to Pearls; not so the consideration of form and other qualities: no source but it produces good and bad Pearls.

Defects of Pearl.

- 312. The authorities mention ten kinds of defects as belonging to Pearls; of which four are principal, the rest being of a less essential character. I will treat of these now.
- 313. If any part of an oyster remains fast attached to a Pearl, the defect is called *sukti-lagna-dosha*;* and brings on leprosy.

অমুবাদ।

মূক্তার আকারগত কোন বিশেষ বিবেচনা কর্ত্তব্য নহে, তাহার রূপ ও প্রমাণই বিবেচনীয়, কোন আকরবিশেষে যে শুভজনক বা অমঙ্গলকারক মূক্তা জন্মে, এমন নহে, সকল আকরে সকল রকম মুক্তাই জন্মিয়া থাকে। ৩১১।

মুক্তার দোষ।

রত্নবিং পণ্ডিতের। মুক্তাসম্বন্ধে দশবিধ দোষের উল্লেখ করিয়াছেন, তন্মধ্যে চারিপ্রকার দোষ মহাদোষ এবং ষড়্বিধ মধ্যদোষমধ্যে পরিগণিত, ক্রমশঃ তাহাদিগের লক্ষণ নির্দেশ করা যাইতেছে। ৩১২।

মূক্তার কোন একস্থানে শুক্তিখণ্ড সংলগ্ন থাকিলে তাহাকে শুক্তিলগ্ন দোষ কহে, শুক্তিলগ্ন দোষযুক্ত মুক্তা ধারণ করিলে কুষ্ঠব্যাধি হ'ইতে পারে। ৩১৩।

^{*} Literally, the defect incident to the fact of an oyster fragment being attached.







मूलम्।

मीनलोचनमङ्काशो दृष्यते मौक्तिके तु यः।
मीनाचः स तु दोषः स्थात् पुचनाश्वकरो धुवं ॥ ३९८ ॥
दीप्तिष्ठीनं गतच्छायं जठरं तिदृद्वेधाः।
दारिद्राजनकं यसात् तसात्तत्परिवर्ज्जयेत् ॥ ३९५ ॥
मौक्तिकं विद्रमच्छायमतिरक्तं विदुवेधाः।
तिसान् सन्धारिते चृत्युर्जायते नाच संशयः ॥ ३९६॥
उपर्श्वपरि तिष्ठन्ति वलयो यच मौक्तिके।
चिद्यनं नाम तस्थोकं सौभाग्यद्ययकारकं॥ ३९७ ॥

तर्जमा।

मोतिमे मक्क चित्रे चांखके पमान एकतरक्षका निणान रहेनेको मीनाच श्रयेव कहते हैं; श्रीर वह श्रयेब लेडुकेका नाण करनेवाला है। ३१४।

मोतिमे दीप्ति और आभा ना रहनेको जठर अयेव कहते हैं, जठर अयेवदार मोति पहेरनेसे दारिद्रा अर्थात् सुफ्लिसि होति हैं, इस कारण दूस्प्रकारका मोति कभी पहेरना मनासिफ नहिं। ३१५।

मोतिमे सङ्गेने समान खाभा निकेल्नेको चितरक चयेव कहते हैं, चितरक चयेवी मोतिको पहेरनेसे जक्र स्त्यु होए। ३१६ ।

मोतिमे जो कड़े के समान तिन रेखा होए, उस्को चिट्ट खयेव कहते हैं, चिट्ट दोषयुक्त मोति सुभाग नाम करता है। ३१७।





- 314. On certain Pearls, there are marks like the eye of a fish and these are hence called *mináksha*.* Pearls possessed of this defect bring about loss of sons.
- 315. When a Pearl is without lustre and shade, it is said to have the *jathara* defect. Such Pearls lead to poverty, and should not therefore be worn by any person.
- 316. When a Pearl has a shade like coral, the defect is called atirikta; this is inevitably fatal to the wearer.
- 317. The three bracelet-like streaks which are sometimes met with in Pearls side by side, are termed *trivrita*. They are destructive of good fortune.

অনুবাদ।

মুক্তাতে যে মংস্তের লোচনসদৃশ একপ্রকার চিহ্ন থাকে, তাহার নাম মীনাক্ষ, মীনাক্ষদোষ পুত্রনাশকর বলিয়া উল্লিখিত আছে। ৩১৪।

মুক্তাতে দীপ্তি ও ছায়া না থাকাকে জঠরদোষ বলে, জঠরদোষন্ষিত মুক্তাধারণে দারিদ্র্যদশা উপস্থিত হয়, স্থৃতরাং তাদৃশ মুক্তা কদাচ ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে। ৩১৫।

মুক্তা হইতে বিদ্রুমের স্থায় ছায়া নির্গত হওয়াকে অতি-রক্তদোষ বলা যায়, অতিরক্ত-দোষযুক্ত মুক্তা ধারণ করিলে অবশ্যই ধারকের মৃত্যু হইবে। ৩১৬।

মূক্তাতে যে উপরি উপরি তিনটী বলয়াকার রেখা থাকে, তাহা ত্রিরন্তদোষনামে অভিহিত, ত্রিরন্তদোষশালী মুক্তা সৌভাগ্য নাশ করে। ৩১৭।



^{*} Literally, the eye of a fish.



मूलम्।

श्वरतं मौतिकं यञ्च चिपिटं तिज्ञगद्यते ! मौतिकं ध्रियते येन तस्याकी तिभवेत्सदा ॥ ३१८ ॥ चिकोणं त्युस्तमाखातं मौभाग्य चयकारकं । दीघं यत्तत्वृशं प्रोत्तं प्रज्ञाविध्वं मकारकं ॥ ३१९ ॥ निभग्नमेकतो यञ्च क्रशपार्थं तदुच्यते । सदोषं मौतिकं निन्दां निकद्योगकरं हि तत् ॥ ३५० ॥ श्रद्भां गुणकी नञ्च स्वसम्यत्तिकां ॥ ३२१ ॥ श्रद्भां गुणकी नञ्च स्वसमूख्यञ्च मौतिकं ॥ ३२१ ॥

तर्जमा।

जो मोति गोल निह, उसको चिपिट कहते हैं, चिपिट मोति पहेरनेसे हमेगा खयश अर्थात् बदनामी हासिल होए। ३१८।

जो मोति चिकोण होए, उस्का नाम त्युस, त्युस अयेवको मोति पहेरनेसे सौभाग्य नाश होए और जो मोति लग्बा, उसे क्रश कहते हैं, क्रश अयेवको मोति पहेरनेसे विद्व जाय। ३१९।

ुं जो मोति कोद्र जगहमे टुट जाया उसको क्रणपार्श्व कहते हैं, दूमप्रकारका मोति बद्धत् खाराप खीर दूस् जातका मोति पहेरनेसे खादमीको खासकत् खाति हैं।३२०।

जो मोति वेलकुल गोल निर्हं, नानाप्रकारके बिमारी-बेंगिके अयेवेगि भराज्ञया, देखनेभी सुन्दर निर्हं और बज्जत् गुणहीन, ऐसा मोति सव तरह में दीलतका नाम करनेवाला, दूम्कारण उस्का दामभी बज्जत् कम होता है। ३५१।





- 318. That Pearl which is not perfectly circular, is called cipita. It brings its wearer to disgrace.
- 319. The Pearl which tends to be triangular, is called *trasra*. A *trasra* Pearl is inimical to good fortune. A large-sized Pearl is called *Krisha*. This Pearl is reputed to be fatal to knowledge.
- 320. A Pearl with a broken side is called Krisha-párswa, and brings on inactivity. It is a pest which should be carefully avoided.
- 321. A Pearl which is not faultlessly round, which is productive of a variety of diseases, which is not agreeable to look at, which is in short utterly void of any valuable quality, is destructive of every sort of wealth; its price is very small.

অমুবাদ।

যে মুক্তা সম্পূর্ণ গোলাকার নহে, তাহাকে চিপিট কহে, চিপিট মুক্তা ধারণে পদে পদে অকীর্ত্তিভাজন হইতে হয়। ৩১৮।

যে মুক্তা ত্রিকোণাকার, তাহার নাম ত্র্যস্ত্র, ত্র্যস্ত্র মুক্তা দোভাগ্যনাশক, এবং যে মুক্তা দীর্হাকার, তাহাকে রুশ বলে, কুশ মুক্তা জ্ঞানের মহা অন্তরায় বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে।৩১৯।

মুক্তার কোন স্থান ভগ্ন হইলে তাহাকে রুশপার্শ বলা যায়, তাদৃশ মুক্তা অতিনিন্দনীয় এবং তদ্ধারণে মনুষ্য একবারে নিরুদ্যোগী পড়িয়া পড়ে। ৩২০.।

যে মূক্তা সম্পূর্ণ গোলাকার নহে, নানা পীড়াকর দোষ-সঙ্কুল, দেখিতে রমণীয় নহে, এবং নিতান্ত গুণহান, সেই মূক্তা সর্ব্বপ্রকার সম্পত্তিবিনাশক, এবং তাহার মূল্যও অতিঅল্প হইয়া থাকে। ৩২১।







म्चम्।

मौित के यच मन्दे इः क्षित्र में सहजेऽपिवा।

परीचा तच कर्त्त व्या रत्न शास्त्र विशारदैः ॥ ३२२ ॥

यच क्षित्र मन्दे इः क्षित् मन्दि मोिति के।

उद्यो सनवणे से हे निशां तद्वासये ज्ञाने ॥ ३२३ ॥

परेद्यः प्रातकत्याय शुष्कवस्त्रोपवेष्ठितं।

इस्ते मौिति कमादाय वीडिभिस्रोपघषेयेत्॥ ३२४ ॥

यनु नायाति वैवर्ष्यं विद्येयं तदक्षत्रिमं।

क्षित्र में भङ्गमाप्तोति सहजञ्जातिदीप्यते ॥ ३२५ ॥

तर्जमा ।

मोति बनाया डोए, अथवा आसल डोए, मनमे सक डोनेसे रत्नपारची पण्डितके दारा उस्की परीचा कर्ना जक्र है। ३२२।

त्रगर किमी मोतिमे फरेबका सक छोए, तो उस् मोतिको एक रात गरम नेमक्मिलाज्जये पाणिमे भिगा-कर रख्ना चाहिए। ३२३।

सवेरे सुखे कापड़ ने रखकर और छोड़ा चाउन लेकर हातसे रगड़ना चाहिए। ३२४।

द्रमीतरके करनेसे आमल मौति खाराप ना होकर औरभी साफ होगा, और वनायाद्धया मोति उमीदम ट्टजावेगा। ३५५।



- 322. Whether a Pearl be real or false, whenever doubts arise concerning its genuineness, the authorities should be resorted to.
- 323. When doubts are entertained as to the genuineness of a Pearl, it should be placed in salt water for one night.
- 324-25. The next day, put it on a piece of dry cloth, and mixing it with a quantity of paddy, rub it with the hand, when if the Pearl is real, it will attain greater brightness, while if it is false, it will be broken to pieces.

অञ্বাদ।

মোক্তিক কৃত্রিমই হউক অথবা অকৃত্রিমই হউক, মনোমধ্যে দন্দেহ উপস্থিত হইলেই রত্নতত্ত্বিশারদ পণ্ডিত দ্বারা তাহার পরীক্ষা করা কর্ত্তব্য। ৩২২।

যদি কোন মুক্তাকে কৃত্রিম বলিয়া সন্দেহ উপস্থিত হয়, তাহা হ'ইলে সেই মুক্তাকে এক রাত্রি উষ্ণ লবণমিশ্রিত জলে ভিজাইয়া রাখিবে। ৩২৩।

পরদিবদ প্রাতঃকালে সেই মুক্তা শুক্ক বস্ত্রমধ্যে রাথিয়া কতকগুলি ধান্যের সহিত একত্র করত হস্তে ঘর্ষণ করিবে। ৩২৪।

এইরূপ প্রক্রিয়া দারা অকৃত্রিম মূক্তা বিবর্ণ না হইয়া অধিকতর ঔজ্জ্বল্য প্রাপ্ত হইবে, এবং কৃত্রিম মূক্তা তৎ-ক্ষণাৎ ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩২৫।



मूलम्।

चिपेत् गोमूचभाष्डेतु लबणचारसंय्ते। स्वेदयेत् विक्किना वापि चस्ते मौक्तिकमाददत्॥ ३५६॥ बौहे सुवेण संयोज्य मह येच पुनः पुनः। क्रचिमं भङ्गमायाति गचजञ्चातिदीयते॥ ३५७॥ म्नप्रमत्खपुटमध्यगतन्त् कत्वा पञ्चात् पचेत् तनु ततत्र वितानगत्या। शही ततः पयसि तहिपचेत् सुरायां पंजन्ततोऽपि पयसा श्चिनियालेन ॥ ३५८ ॥ ग्रद्धं ततो विमलवस्त्रनिघर्षणे न स्यान्मीति कं विमलमद् गुणकान्तियुक्तं। जम्बीरजातरसयोजनया विपक्षं कुर्यात् यथेच्छ मिच मौक्तिकमाण् विद्वं । ३२८॥

तर्जमा ।

नेमक्ति जाड़िया गौके मूचके भरे छये बर्चन मे मौतिको रखकर आगपर घोड़ा घोड़ा गरम करना होगा, बाद उसके हातसे उठाकर धानके क्रिलकेके सायमे धिसनेसे मोति टुट जार्नेगा, चौर त्रायल मोति वनायाज्ज्या **चौरभी साम रहेगा** । ३२६। ३२७।

पहिले मक्टिके पटी गरम करके उस्में मोतिको रखकर च्यागपर घोडा गरम करना चोगा, बाद उस्के दुध, सराप, या साफ पाणिमे आहेस्ते आहेस्ते पाकाना होगा, बाद उस्के सादे कापड़े में रखकर घिस्ना होगा, चासल मोति होनेसे बक्जत् साफ खौर खाव्दार होगा। मोतिको खगर लेमुके रसमे पाकामें, तो वेधने में बद्धत् आसानी होगि।३२८।३२८।

इति मोतिका वयान।







TRANSLATION.

326-27. This is another way:—Cast a Pearl in cow's urine mixed with salt; then gently heat it in fire; lastly placing it in a small quantity of chaff, rub it with the hand. By this process, a false Pearl will be reduced to fragments, while a real one will shine with greater light.

328-29. Enclose a Pearl in one of the hot lungs of a fish; then gently heating it in fire, boil it successively in pure milk, wine and water; next rub it with a piece of cloth, when it will look fresh and fair. A Pearl can be perforated after it has been boiled in lime juice.

অমুবাদ।

সলবণ গোমৃত্রপূর্ণ ভাণ্ডে মুক্তা নিক্ষেপ করিয়া অগ্নিতে অল্পপরিমাণে উত্তপ্ত করিতে হইবে, পরে হস্তে তুলিয়া তুষ-সংযোগে পুনঃ পুনঃ মর্কন করিলে কৃত্রিম মুক্তা ভাঙ্গিয়া যাইবে, এবং অকৃত্রিম মুক্তা অতিশয় উজ্জ্বল হইয়া উঠিবে। ৩২৬। ৩২৭।

প্রথমতঃ মুক্তাকে মৎস্তের অতি উষ্ণ পট্পটীর মধ্যে পূরিয়া অগ্নিতে অল্পরিমাণে উত্তপ্ত করিয়া পশ্চাৎ বিশুদ্ধ তুগ্ধ, স্থরা ও নির্মাল জলে ক্রমান্বয়ে সিদ্ধ করিতে হইবে। ৩২৮।

তৎপশ্চাৎ অতিশুভ্র বস্ত্রে ঘর্ষণ করিলে মুক্তা বিশুদ্ধ, অতি-নির্মাল এবং কান্তিযুক্ত হইবে। মুক্তাকে লেবুর রসে সিদ্ধ করিয়া তাহাতে যথেক্স ছিদ্র করা যাইতে পারে। ৩২৯।

ইতি মুক্তা।







THE PEARL.

Its Properties.

SHOUGH the Pearl cannot properly come under the province of precious stones, on account of its being animal product, it is held in great esteem by the jewellers and all lovers of gems. This beautiful gem is formed in the shells of oysters and mussels and is composed entirely of carbonate of lime and organic matter. It possesses a lustre peculiar to itself and called by its own name, pearly. It calcines by being exposed to heat and is easily affected by acid and fetid gases. The specific gravity is from 2.5 to 2.7. It is found of various shapes and colors and receives certain names according to its size and form. Those of extraordinary size are called Paragon Pearls; when of the size of the cherry, cherry Pearls; small, piece Pearls; smaller, seed Pearls; smallest, dust Pearls. Those of a long and oval form, pear Pearls; while the deformed ones are known as "baroques" Pearls. The Romans called the large ball-shaped Pearls, "Uniones"; the pea-shaped, "Elenchi"; the half ball-shaped, "Tympania;" and those possessed of the most beautiful color, "Exaluminate Margaritæ." The Saxon word Pearl signifies a gem or white speck. The oriental Pearls are seldom found of any other color than white and yellow, and are generally of a round or button form, while the



American, better known as the Panama, Pearls, are generally blackish or brownish and mostly long and drop-shaped.

Original formation of Pearls.

THE ancient authorities had started several curious theories as to the presence of Pearls within the ovsters. According to Athenœus, the Pearls were found in the flesh of oysters, just as the measles (tubercles), in the pork. Pliny and Diascorides supposed that the Pearls were the tears of fallen angels, or dew-drops from heaven, taken in by the ovsters, which opened at certain seasons to receive them; the size and quality varying according to the size and purity of the dew imbibed. Cloudy weather spoilt the colour, lightning stopped the growth and thunder made the shell-fish miscarry altogether. Valentine said that they were the eggs of female oysters, while Samuel Dale held, that they were a sort of calculus produced by hurt received. This last theory suggested to Linnæus the idea of creating the disease in the fresh water mussel of Sweden, and thus of manufacturing artificial Pearls. Artificial Pearl-oyster-beds were established in several rivers but the process by which the Pearls were formed was kept a secret. It was, however. ascertained that small holes were drilled in the shells of the living oysters into which some foreign matters were put. But the Pearls which were produced by this means were so small and the labor and cost incurred, comparatively so great,





that this ingenious invention was soon given up. In India a somewhat similar way of producing Pearls existed. Some of the shells of the large Pearl oysters have been found with brass wires inserted throughout their whole length, and the cavities in the interior proved that Pearls had been produced in consequence. The Chinese have succeeded in introducing within the living fish minute Pearl beads, strung on a string, or miniature idols of brass or stone, and in the course of a year these are found so completely covered with a pearly coating as to resemble true Pearls of fantastic figures. A few specimens of these are in the possesion of W. J. Ingram Esq., M. P. Pearls are looked upon, according to the most generally received opinion, as concretions arising from the superabundance of calcerous matter destined to form the shell, and in confirmation of this, it has been observed that the oyster is of the same brilliancy as the mother-o'-pearl that forms the inner coat of the shell. If a Pearl is cut, it will be found to be composed of a succession of laminæ like the onion and presents the same appearance in its substance as the shell. With the help of the microscope we find that the shells of all the oysters that produce Pearls have three layers. The outside layer, i.e., the outer skin, consists of thin scales or leaves, having no regular form: the second one, is composed of numerous small horny cells, (filled with a calcerous mass) in which the various pigments that give to







the shell such beautiful colors are deposited; the third and inner layer has a more foliated form and an uniform foundation, which looks like fine folds on the outside, and which produces, when the light shines upon it, the peculiar mother-o'-pearl lustre, that adds so much to the beauty of many shells. It is the soft and tender unevenness of its surface and not its material (which is nothing but lime) that gives the exquisite sheen to the mother-o'-pearl. Several naturalists account for the formation of Pearls, in the attempts made by the animal to get rid of some substance which has entered into its shell, by covering it with a deposit similar to the interior of the oyster-shell—commonly known as the mothero'-pearl. In some cases, a Pearl has been found, by bisecting, to consist of a series of layers or skins round a speck of some darker substance: in others, the middle of the Pearl has been found hollow and of a globular or spherical form; while in some others, it appears perfectly solid and of the same colour, texture and formation all through. The beautiful polish and consequent brilliance of a fine Pearl is the result of the friction of the soft body of the oyster for a long time. In most cases, the polish exists on the outer skin only, the inner layers being found dull as a fish's eye. In other cases, a Pearl of a hard exterior has been found to contain a fine and lovely kernel. The Pearls are situated either in the body of the oyster or loose between it and the shell, or lastly they are fixed to the latter by a kind





of neck. Sometimes the Pearl is a sort of wart, hollow inside, and is then called coq-de-perle and fetches but little value. It is said that Pearls take four years for their formation. There are two kinds of Pearls. The one highly valued is called the Margarita*(the sea Pearl oyster) or by its full name, "Meleagrina Margaritifera lamarck," which is a large ovster of 7 or 8 inches in diameter, with very thick shells, rather flat, and of a greenish black exterior; whilst the inside is of a very white colour, reflecting various hues and is known as the mother-o'-pearl. The other kind is called the Unio Margarita (River Pearl oyster). A kind of Pearl called the phantasy Pearl has sometimes been found in the market. These are Pearl substances which are taken out of the shells, consisting partly of mother-o'-pearl and partly of a pearly substance. A curious circumstance in connection with one of these pieces is mentioned by Barbot. "A French Pearl merchant, in Mexico, bought one of these pieces of a fisherman for a small sum of money, inorder to learn something of them. He was not a little surprised, on cutting it in half, to find a perfect, round Pearl inside, of purest water and brilliant lustre, weighing 14½ carats and which he sold sometime after in Paris for 5000 francs-about half of its value." Now-a-days, Pearls are fre-

^{*} The term Margarita is probably the Greek form of "Mukta," the Sanskrit name for Pearl, and not, as erroneously supposed by some writers, of "Marakata" which, in Sanskrit, means the Emerald.







quently peeled and have been found to contain a finer Pearl underneath.

Where found: Pearl fisheries.

Pearls were a mercantile commodity with the Phænicians and Babylonians. According to the author of the Periplus, Pearls were fished near Manaar, between Ceylon and India. Ceylon, the Taprobane of the ancients, also produced Pearls. According to Arrien, Hercules visited all the Indian ocean and found a Pearl with which he adorned his daughter Pandea. The story of this fishery is also mentioned by the companions of Alexander, when he came to India, and it is therefore clear that it existed prior to this time. There were some other Pearl fisheries also known to the ancients, in the Red Sea and the Coromandel Coast. the Red Sea were at that time considered very important, and were distinguished by the title "Exaluminatæ," i. e. clear as globules of alum. Under the Ptolemies and latterly under the Egyptian Caliphs, several merchants settled on the coasts and by following the Pearl-trade became considerably Pearls were also fished up in the Mediterrarich. The chief Pearl fisheries in the modern times are on the west coast of Ceylon, in the Bay of Manaar, in the Persian Gulf, in the Red Sea, in the Bosphorus, in the Sooloo Islands (near Borneo,) in Japan, Java, and Sumatra; near the island of Papua or New Guinea; in America, (both on the







Pacific and Atlantic coasts); and latterly, in Australia and the Fiji Islands. Some Pearls are also obtained in France, Scotland and Ireland; from the Ilz in Bavaria, the Battava in Bohemia and the Elster in Saxony; in Sweden; in the North of Russia and in Finland.

The Pearl fishery in Ceylon, which is one of the most productive ones, now belongs to the Colonial Government and is conducted by it. The Portuguese were the first Europeans who obtained firm footing in Ceylon (1506.) It was stipulated with the then ruler of the Island that he should pay them an annual tribute in the shape of spices and Pearls. The Portuguese fattened on this tribute for a long time till the Dutch obtained supremacy and seized upon the fishery (1640.) Under them, the natives were allowed every three years twenty alternate days to fish for themselves and every other day was for the Government; after which the produce was sold to the highest bidders. From 1760 to 1796, the fishery at the bank at Manaar was stopped by the Rajah in consequence of a dispute with the Dutch. When the English obtained possession of Ceylon, they had the benefit of the accumulation, which, when sold in 1798, fetched 14,00,000 Rs. clear. This profit might be realized if the fishing was confined to 20 days, every seven years. The fishing season is generally in March and April when the sea is calm and unruffled. Before the commencement of work, the banks are carefully







tested by experienced divers. A fleet of boats. sometimes consisting of 150, are sent out-each containing ten rowers and ten divers, besides a steerman and several "pillal karras," or shark-charmers, whose duty is to keep off sharks, by incantations. The latter people are indispensible in a fishing excursion, as without them no diver would agree to descend, and the Government is consequently obliged to keep them on regular pay. Other conjurors remain on the sea-shore, repeating their prayers until the return of the fleet. The divers go down into the sea, five at a time, the other five remaining on the boat till the first batch come up to refresh themselves for another plunge. people (Roman Catholics and mostly Hindus) who principally come from the Colang, on the Malabar Coast, get, in some cases, fixed wages but generally, by mutual consent, they keep $\frac{1}{4}$ of the produce to themselves and give $\frac{3}{4}$ to their employers. a preparation, they abstain from food and drink (except, occasionally, toddy) and rub their bodies over with oil, stuff cotton into their ears, compress their nostrils by means of an instrument made of horn, and bind over their mouths a sponge soaked in oil, which serves as a temporary proof against water. Then they sling a rope round their body and generally hang a heavy stone on their feet to hasten their descent. Some use a crescent-shaped stone which they fasten round their waist, in order to keep the action of the feet free; for some of these







people use the toes as nimbly in picking up the smallest things as any other could, with their fingers. These stones generally weigh 20 to 25 lbs each. With all these preliminaries, which are also attended with prayers and incantations, the divers go down, each seizing a rope with the right hand, and soon reach the bottom. By means of a sharp knife they loosen from the bank and collect as many oysters as they can and put them into bags, with which each of them is provided on his back. The time they can usually remain under water is from one to two minutes and the gain in that time is from 50 to 80 oysters. Some have been known to remain from 4 to 6 minutes. If any accidents happen while under water, either in the shape of loss of strength or the approach of a shark, they give a sign with their rope and are pulled up at once. Some of the divers are provided with a charm or amulet which they keep on their persons, wrapped in oil-cloth, while they go down. The Roman Catholic divers would not commence business until they get an assurance of their safety, from their own clergymen, and also seem to have firm faith in the ability of the conjurors in keeping the sharks away.* Continuous submersion into water tell fearfully on

^{*} In a paper published in the Transactions of the Royal Asiatic Society, Captain Stewart says that he insisted upon a shark-charmer to make a shark appear alongside of the vessel in which he (the Captain) was; but he declined to do so, saying that his business was to keep them away but affirmed positively his ability to do whatever he liked with them. "During the few days," to quote Captain Stewart, "that we were employed marking off the ground to be fished, a shark was seen and reported to me. I instantly sent for the shark-charmer to







the constitution of the divers, many of whom, on coming out, bleed at the mouth and nose. strongest of them can work only for a few years. These people can make 40 to 50 descents in a day. The adoption of the diving bell in the present times has made diving less dangerous, but unfortunately it is too dear to be of general use. With this a single diver can collect one to four thousand oysters in one season. On the return of the boats, they are unloaded and the oysters left, in closed pits or in closed vessels, to get foul, whereby most of them open of themselves. After this the Pearls are washed from the decayed oysters, in troughs, with salt water. Those shells that do not open of themselves are thrown on one side and made over to the clippers whose duty is to disengage them from the Pearls by means of a forceps and hammer. The part which sticks to the oyster has to be polished by means of a powder made of the Pearls themselves. The roundest and best of these Pearls are rendered fit to be strung with other Pearls, and some of them are used for setting in rings and brooches. The refuse is mixed with the sand Pearl and sold to make chunam (lime) for the consumption of certain Chinese grandees. oysters are, however, generally sold without being opened, in much the same form as a lottery, the

appear before me and desired him to account for permitting a shark to appear before me at a time when alarm might have a serious influence on the success of the fishery. He replied that I had frequently requested him to summon a shark to appear and he had therefore allowed this one the liberty, to please me."







profit of the purchaser depending on chance; for some oysters may contain Pearls worth 2000 or 3000 rupees each, while many may contain nothing At certain times, the Pearl oysters are seen floating about on the sea, as minute in shape as the spawn of fish. These are carried by the currents, around the coasts of Ceylon, where, owing to their increased size and weight, they sink and form the beds. The best Pearls are generally taken from the most fleshy part of the oyster near the hinge of the shell, but they are also to be found in all other parts of the oyster, and especially sticking to the Each oyster is supposed to contain one or more Pearls, or in some cases, none at all. times' an oyster is found to contain over a hundred Pearls of different sizes, known as the seed Pearls. The Ceylon Government derive a considerably large income from the fishery and take particular care of The beds having become exhausted, the fishery has been discontinued for some years.

Megasthenes, an officer of Seleucus, King of Syria, gives to the Western nations, the first account of Pearls found in the Persian Gulf. The Portuguse held mastery over the fisheries of this place during the sixteenth century; after which the native princes have regained possession of them. June to September is the best time for fishing, which is allowed freely, barring a small duty paid to the Sheik of the harbour. The sword fishes are great obstacles in fishing here. The sum annually realized by sale







comes from 30 to 35 lacs. The Pearls found here are much inferior to those of Ceylon and are commercially known as the Bombay Pearls—Bombay being the place to which they are chiefly sent.

The Red Sea fisheries are not so flourishing as they used to be in former days. Good Pearls are still to be found in the Island of Dhalak, opposite Massowa, on the Abyssinian Coast. The fishery, which is carried on by the Negroes, generally takes place from December to April; the average gain being one Pearl from five oysters.

The produce of the fisheries of the Sooloo islands and of Japan, Java, &c., generally goes to China.

The first Spaniards who landed in America, after its discovery, saw the aboriginal nations decorated with necklaces and bracelets of Pearls. New Cadix. in the little island of Cubagna, was the first place that rose to affluence, owing to the Pearl trade. The next fishery in importance was that of the Island of Santa Margarita or the Isle of Pearls. about three miles from Cubagna. The Pearls produced in this place were in size and beauty far superior to those of the other deposits. Tavernier had one of these Pearls, which weighed 55 carats and which was of a beautiful pea-shape and fine "orient." The third fishery was at Camogote, near the main-land. The fourth was in the River La Hacha, along the same coast. The fifth and last was at Santa Marta, about 180 miles from the River La Hacha. The last three fisheries



produced large Pearls, but they were mostly badly-shaped and had a leaden hue. Now-a-days, the fisheries in the Gulf of Panama and in California supply the best American Pearls. Pearls in the coast of New Jersey were discovered by a farmer, who, when fishing for oysters, came across one which contained a very large Pearl.

The rivers in Scotland produce many Pearls but they are generally small and deformed and liable to become black by wear. A large number of rose-tinted Pearls, much esteemed by the Parisian nobility, has been found here. These together with those found in Ireland are generally called Scotch or Brock Pearls; are possessed of a dull hue and are used for brooches and ornaments, strung with horse-hair or mother-o'-pearl, previously formed into the pattern designed.

The River Moldava in Bohemia annually produces from 300 to 400 Pearls, of the purest orient and of very good shape, besides several hundred deformed ones. The greatest portion of the banks are in the possession of the house of Schwartzenburg. Besides the Moldava, Pearls are also found in another small river called the Wattava. The oysters are not fished up from the river-beds but are picked up from the banks where they are thrown by the overflowing of this river.

The fishery of the Ilz yielded at one time a large income to the Bavarian Government, but owing to







bad management, it has now become almost entirely exhausted.

Mode of Boring and Polishing.

THE operation of boring, better conducted in India than elsewhere, must be performed slowly, particular care being taken that the Pearl does not break in halves. The Pearl should be held between two pieces of wood and drilled with a very fine drill, with a bow and string. Unbored Pearls are called "virgins," and in Persian, by the generic name, "Merwerid," and those that have suffered from wear, "widows," and in the Persian, "Lulu," In order to perforate the Pearls, which they intend to string, the Arabs take a piece of wood of a porous nature on the flat surface of which they make small spherical holes with a knife; into these holes they put the Pearls so that only a portion of each Pearl goes into the opening, and then the whole is placed in a little water. The Pearl being thus held tight by the wood which swells, a small iron drill, which is turned by means of a wheel, cuts the hole. The Pearl is then loosened and taken out by letting the wood dry. The cleaning, rounding, polishing and, sometimes, the drilling and stringing are performed by skilful Negro workmen. Pearls are polished and rounded (as found in the market) by means of their own dust; the portion taken from one Pearl in the process of cleaning it, serving to round and polish another. If worn next to skin, Pearls are







liable to lose their lustre. Redi who tried the experiment of restoring their original orient by making pigeons swallow them, found out that, after remaining in the stomach* for twenty hours, they have diminished in weight by one-third. Pearls also get discoloured by contact with acids, gases, foul weather and noxious vapours. The simplest and best remedy would be to wipe them, after being worn. with a clean linen and to keep them carefully covered with it, in a closed box. Pearls kept in dry, common magnesia, instead of the cotton wool generally used in jewel-cases, are according to some, never known to lose their brilliancy. Pearls, unlike precious stones, crumble into dust and lose their beauty in course of time. When the tomb in which the daughters of Stilicho were buried with all their ornaments, was opened, after a lapse of 1118 years, all the riches that had been put in were found in good condition except the Pearls, which had become so soft, that they crumbled into fragments when pressed between the thumb and the fingers.

Pearls as known to the Ancients.

THE beauty of the Pearl being entirely due to nature and being utterly incapable of improvement from art, it has, from the earliest ages, held the

^{*} A similar practice still obtains in India among the Mahomedan Pearl merchants who are in the habit of purchasing blackish Pearls at cheap price and making pigeons swallow them. These are afterwards taken out of the stomach by ripping it open, but the whitish lustre thus obtained lasts for a short time—just enough for them to be sold to advantage.







highest place amongst precious gems. The mythology of the Hindus ascribe the discovery or creation of Pearl to Vishnu and makes frequent mention of the gods and goddesses and of heroes as being adorned with it. It was held in great esteem by the ancient Persians, Egyptians, Babylonians, Medes, and other oriental nations of antiquity. The Persian nobles used to wear in the right ear a golden ear-ring containing Pearls. Ethiopian and Egyptian princes and nobles profusely used this gem. It is said that, according to an ancient law in India, any one who spoilt the Pearl and precious stones in boring, should not only make good the mischief but pay a fine of 250 panas, (a rana being, at the present time, equivalent to onesixteenth of a Rupce). It was also a great favorite with the ancient Chinese. 2300 years before the birth of Christ, Pearls were known to have been paid as tributes. When Pompey conquered Mithridates, he found in his treasury, besides several crowns of Pearls, one portrait of that king consisting of Pearls in mosaic. In his third conquest over the Asiatic princes (61 B. C.), Pompey took away a large number of jewels, 33 crowns of Pearls and the portrait of his own wrought in the same material. From this period, the taste for Pearls rose so extravagantly high in Rome as to bring down censure from the philosophers and authors of the time. Pliny says that it was the Romans only who gave to drop Pearls the name of "Unio," on account of the





difficulty that then existed in obtaining matches for those white round and brilliant things. Caligula wore slippers made out of Pearls, while his wife Lollia Paulina used, in her parure, Pearls to the value of 70,00,000 francs. Nero presented them in large numbers to his courtiers and adorned with them the sceptres and masks for his theatre as well as his couches. Julius Cæsar presented to Servilla, the mother of Marcus Brutus, a magnificent Pearl (received from Egypt as booty,) the value of which was then estimated at 990,000 francs. Romans used to decorate their temples and dwellinghouses with Pearls and the ladies used to hire them for personal use on festive occasions, if they had not a sufficient number of them in their possession. Clodius, the son of Æsop, the celebrated tragic actor, is reported to have swallowed, in a banquet, water in which Pearls were dissolved and, relishing the flavour very much, generously provided each of his guests with the same costly drink. Latterly on, Cleopatra laid a wager with Antony (who is well reputed for his extravagance) that she would spend 10 lacs of our money, upon a single dinner, and claimed victory when she had taken out of one of her ear-rings, one of the finest Pearls in the world. dissolved it in a cup of the strongest vinegar, and sipped the contents off. She was about to do the same with the other, when L. Plancus, the appointed umpire, snatched it off her hands, and declared Antony's defeat. After the death of Cleopatra and







the conquest of Egypt, this Pearl fell into the hands of the Emperor Augustus of Rome, who had it cut into two pieces and made into two ear-rings of the statue of Venus, in the Pantheon. A similar piece of folly was committed, in the modern times, by the princely English merchant Sir Thomas Gresham. The Spanish Ambassador at the court of Queen Elizabeth, had, before the Queen, been boasting of the revenue and riches of his master and of the noblemen of his country, when Sir Thomas, who was present, told him that his Sovereign had subjects who could spend on one meal, the whole of a day's revenue of the Spanish King together with that of all his grandees; and this he was prepared to show any day, on a wager. The Ambassador called on the merchant one day, without previous engagement, and dined with him, but finding only an ordinary meal, told him, "you have lost your wager." "Not at all," replied Sir Thomas, and, immediately pulled out from his pocket a box from which he took out one of the finest oriental Pearls, (for which he had often refused 15,000 £) and, after showing it to the Ambassador, ground it and drank the powder in a glass of wine, to the health of his Queen. It is said that one of the things which had excited the cupidity of Julius Cæsar in conquering Britain, was the somewhat exaggerated accounts he had heard of the Pearl fisheries that existed in or about the country. He is known to have been a great connoisseur in jewelry, and could tell the specific weight and value of a Pearl







by simply taking it in his hands. The Roman ladies were Pearls fastened to their finger-rings, and sometimes in their ears in clusters of two or three, which went by the name of "Crotalia" (rattles), on account of the rattling sound made by their clashing against each other. Mahomed Ben Mansur placed the Pearl on the top of the list, while the Romans placed it second, after the Diamond, to which they gave superiority, on account of its talismanic virtues and not, evidently, for beauty.

Price of Pearls; Imitations.

THE price of Pearls depends upon their form, texture (technically called "skin"), transparency (water) and lustre. It also depends upon national tastes for colour. In Europe, the white specimens, (and sometimes those with the bluish tinge), are most valued. To the Europeans, a perfect Pearl should be perfectly round or drop-shaped, seeming as if fashioned or turned into shape; should have a perfectly white colour; should be transparent in a slight degree; should be free from flaws or blemishes, and should have the lustre peculiar to this gem. The Indians, Arabians and the Chinese prefer those with the yellow tinge, which have this advantage over the white ones that they do not lose their lustre and tint by wear. To fix a standard price for the Pearls would only tend to mislead the buyer, for, like the Diamond, their value greatly





depends upon their shape. For example, a onecarat Pearl may be worth from 24/ to 40/; two-carat ones, if fine, from £6 to £8; and the value of the large and fine Pearls ranges from £2 per grain, up-It is easy to examine a single round or drop-shaped Pearl by itself, but not so, if they are strung in a row as in a necklace; for it becomes difficult to find out from the group the particular color of an individual stone,—the Pearl-stringer arranges them so ingeniously, with reference to gradation of color, that the tints, imperceptively blending with each other, make all appear to be of one hue. The yellow tint in the Pearl is said to be due to the decomposition of oysters which are sometimes left to open of themselves. The heat at the Straits of Manaar being greater and consequently the oysters naturally opening 5 or 6 days sooner than in the Isle of Bahrein (in the Persian gulf), the number of yellow Pearls found there is comparatively smaller than those that come from the latter place. Goa was the principal mart in which the Pearls were sold. The American Pearls, commercially called the "Panama Pearls," though appearing whitish (rather quick-silverish) at first sight, have almost invariably a sort of blackness under the skin. Like similar Pearls found in the Pacific and in Western Australia, these are sometimes worth from £1 to £10 per grain. Inferior coloured Pearls are often dyed black (with Hematite, and imported iron ore) or russet-brown, but the want of the true







pearly tint and lustre can be detected by even the most inexperienced. The black or bad-coloured Pearls are sold for good price, if they are of good colour and shape. Some people like the lead or plumbago tint, others, the shining greenish black. These would sell for 35/ to £6 per grain. The pink coloured Pearls are generally found in America and the West India Islands and are valued, according to their shape, quality and size, at £5 to £6 per grain. These are seldom found of regular shape, and when bad or deformed look somewhat like decayed teeth. Although called "pink," these are found of different colors, ranging from red to pale yellow, and frequently of a dull white, like a polished fish's eye. The grey Pearls being unfit for use in jewelry are not of much value. The specimen known as La Perle Roséi ranks the same with the clear white rose but the irregularity of its shape prevents its being used for personal ornaments. The pale pink Coral is sometimes cut and shaped like a Perle Roséi and offered for sale as a real Pearl, but an experienced eye would not take the glistening of the cellular structure of the Coral for the peculiar sheen of the Pearl. Jewellers sometimes make very large Pearls by applying, one on the other, two of the hemispherical rounded tubercles taken from the interior of a Pearl shell. The paste-makers of ancient times, notwithstanding their wonderful skill, did not think, or had not the ability, of counterfeiting Pearls. In 1680, one







Jacquire, a rosary-maker of Paris, observing the pearly lustre of the scales of the small river-fish called the bleak, struck upon the idea of filling therewith hollow glass spherules prepared with a glutinous fluid. The manufacture has flourished since that period, the Parisian jewellers exporting four lacs of Rupees worth of these counterfeit Pearls. Although some of the false Pearls are made solid and of fish-scales, and do not break easily, yet they are generally brittle and much lighter in weight than the real ones. Then again, the holes in the real Pearls are drilled very small and have a sharp edge, whereas in the spurious ones, they are larger and have a blunt edge. The deformed Pearls, called the "Barrok Pearls" (perles baroques, in French,) are sold for £10 to £200 per ounce, the value depending upon the quality, colour and size of the specimens. Pearls are split in halves, when they are used for setting in jewelry. Those that are flat on one side and convex on the other are mostly used and are called Button Pearls (perles boutons). These are worth about 25 per cent less than the round Pearls of the same size and quality. The round Pearls, (perfect, according to the given standard), fetch the highest price. The approximate value of one round Pearl of 10 grains would be from £10 to £11; one of 20, £40 to £50; one of 30, £80 to £100. Pearls above 30 grains are of rare occurrence and consequently of exceptional value. Pearls of rare







colour or of any fanciful tint or shade are, as a matter of course, sold at fancy prices. The value of Pearls generally has risen up since the last few years, owing, perhaps, to the stoppage of the fisheries at Ceylon. The mother-o'-pearl fetched a high value in the Middle Ages.

In Europe large Pearls are sold by carats, like Diamonds and other precious stones, but in Persia, they are weighed by the *abas*, which is $\frac{1}{8}$ less than the carat, and in India, by *ratis*, which is equivalent in weight to the *abas*. In Europe the ounce weight is used for weighing small and Baroques Pearls, Coral, Peridots and rough Garnets; an English ounce being equivalent to $151\frac{1}{2}$ carats and a Cologne ounce, to 72 carats.

The Marvellous and Medicinal Virtues of the Pearl.

From the earliest times the Pearls have come to be considered as emblems of purity, beauty, and nobility. In Bengal, they were at one time worn by virgins on their arms, as preservatives of virtue. The oneirocriticks or interpreters of dreams drew interpretations from Pearls. These had great medicinal effect, when taken internally. It is said that one of the medicines given to restore Charles VI to reason, was a decoction of Pearls and distilled water. In China and other oriental countries, they are used as medicines—being thought to possess the power of







curing syncope, flux of blood, &c. Large quantities of seed Pearls are used, even at present, in the composition of *Majoons* or electuaries, in the formation of which powders of several precious stones are sometimes used. The Majoon, (in which there is a large quantity of Pearls,) is much in use for its supposed stimulating and restorative qualities. The oriental potentates were supposed to burn Pearls and use the powder as *Chunam* with the beetle-leaves they chewed. Powdered Pearls were also considered a sovereign remedy in stomach complaints, but there is nothing in the gems or in the shells which can render any more beneficial service than that done by chalks or other anti-acids.

Celebrated Pearls.

ONE of the largest Pearls known at present is called La Perigrina or the Incomparable. It was brought from India in 1020 by Gongilius of Calais, who sold it to Philip IV of Spain in 1625. This gem is now said to be in the possession of the Russian princess Youssopoff and is valued at 80,000 ducats. It is pear-shaped and is of 106 carats in weight. According to some writers of jewelry, the shell of this Pearl was found by a Negro boy, in the Panama fishery. The Pearl was presented to Philip II and was valued by the jewellers of the time at 14,400 ducats. It was pear-shaped, weighed 134 grains and was "as big as the biggest pigeon's egg." According to these writers, the one which has become so much







celebrated by the name La Perigrina is a different gem altogether. De Boot mentions a Pearl belonging to Rodolph II, weighing 120 grains—" 30 carats that cost as many thousands of gold pieces." Napolean had one, weighing nearly 180 grains. Tavernier speaks of one perfect round Pearl weighing 36½ ratis, purchased by Aurungzebe. He also gives a drawing of a large pear-shaped Pearl bought by the Shah of Persia (in 1635) from an Arab coming from the Catifa fishery. It weighed 192 ratis and was valued at Rs. 5,60,000. It is above an inch in diameter and is still in the possession of the Royal family. The Imam of Muscat has one for which he is said to have refused 3,00,000 Rs. The Pearl, which the King of France gave to Madam de Mainton and which was offered for sale in 1819, weighed $27\frac{7}{8}$ carats. The famous necklace of the Empress Eugènie, consisting of a row of matchless black Pearls, fetched £4,000, after the removal of the Pearl forming the snap, which was subsequently sold, for 1,000 guineas, to form the centre of a bracelet. The Crown Prince of Prussia gave to his bride, the Princess Royal of England, a necklace of 32 Pearls, valued at 5,00,000 francs. The Marquis of Abercorn is said to possess a matchless drop Pearl of considerable size. The Municipality of Florence long gloried in the possession of a splendid single row of Pearls which was borrowed of them by the Grand Duchess, after the Restoration (in 1849). The Devonshire Cabinet possesses a large Pearl of the finest





orient, but of the Baroques nature, skilfully converted into the body of a very graceful mermaid. It is valued at Rs. 20,000. Another specimen of the deformed Pearl, made into a beautiful shape, now belonging to Col. Guthrie, is thus described: "Cinque-Cento pendant in the form of a syren; the head, neck and arms, of white enamel; the body, of a very fine and large Pearl Baroque, ending in scrolls and a fish's tail, beautifully enamelled and set with rubies. is represented arranging her hair, with a comb in her right hand; her left originally held a mirror. This splendid gem was brought from India; it is of fine Italian work of the 16th century. On the back is Fallit aspectus cantusque syrenæ and inscribed 'D. L. V. D. R.'" The initials can be interpreted as "Donum Ludovice Regis," i.e. presented by the king Lodovico, (the XII, of Lombardy). It is supposed that this jewel was brought by Tavernier and other jewellers, to India and sold to the Mogul Emperor. The Londenborough unicorn is modelled out of two big Baroques, mounted by figures of France and Victory in sisterly embrace. In the list of the jewels of Henry III, of England, mention is made of a Baroque resembling a head in relief. The curious articles of jewelry by Dinglinger, in the green vaults of Dresden, mounted in gold and enamel, are made of "Coq de perle." A Pearl of this nature, formed into the shape of a strawberry, was shown in the Exhibition of 1862 and was afterwards sold to an English merchant for a fabu-



lous sum, its intrinsic value being next to nothing.

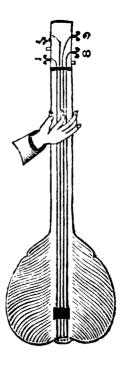
Pearls of great beauty and value are to be seen amongst the state-iewels of the Indian Princes, of which special mention can be made of those belonging to the Guikwar of Baroda and their Highnesses the Maharajahs of Gwalior, Holkar, Jeypore, &c. The estates of the late Juggut Settjee and of the late Babu Inder Chand, of Moorshedabad, have in their possession, Pearl necklaces of very great beauty and value. In Calcutta* there is a Pearl of extraordinary size in the possession of the Sett family. There are also some valuable ones with the Mullick family. Rajah Kally Kissen, the son of the late Raja Buddinauth, has a valuable necklace of Pearls and also some beautiful single Pearls. The late Rajah Prosonno Narain Deb of Sobha Bazar had a good collection. There is a Pearl of extraordinary size, nearly as big as a sparrow's egg, in the possession of the Hon'ble Maharaja Joteendro Mohun Tagore Bahadoor. There are also some very good Pearls and necklaces in his estate

Several specimens of Baroque Pearls have been seen in Calcutta, amongst which was one in the shape of a dog.

^{*} There are some very large and beautiful Pearls in the possession of Mr. David, a Jewish gentleman of Calcutta. A very good necklace, consisting of very large Pearls (valued at Rs. 1,25,000), was once seen in Calcutta in the hands of Panna Lal, a Bombay jeweller.











श्रव गोमेदः।

मूचम्।

हिमालये वा सिन्धी वा गोमेदमणिसम्भवः।
स्वक्ककान्तियं र: सिग्धो वर्णाक्यो दीप्तिमानिष ।
वलक्वः पिष्ठारो धन्यो गोमेद द्रति कोर्त्तितः । ३३०॥
चतुर्धा जातिभेदस्तु गोमेदेऽपि प्रकास्थते।
वाष्ट्राणः गुक्तवर्णः स्वात् चित्तृथी रक्त उच्यते॥ ३३९॥
चापीतो वैस्वजातिस श्रद्रस्वानील उच्यते।
काया चतुर्विधा स्वेता रक्ता पीतासिता तथा॥ ३३२॥

गोमेदका वयान।

तर्जमा।

हिमालय पर्ब्वत और सिन्धुनदमे गोमेद मणि पयदा होति है। खट्छ, ग्रुक, स्निग्ध, गहेरा रङ्ग, दीप्तिमान्, सफेद अथवा जरद्रङ्ग गोमेद बद्धत्तारिफके लायेक है। ३३०।

जिस् तरह में ब्राह्मण, चित्त्र, वैश्व और श्रुद्र चार जात होते हैं, उसी तरहे गोमेदभी चारिकसिमका होता है। मफेद रङ्ग ब्राह्मणजात, लालरङ्ग चित्त्रजात, थोड़ा पीला वैश्वजात और थेड़ा नीला श्रुद्रजात गोमेद होता है। सफेद, लाल, पीला और काला यही चारप्रकारकी काया इसी चारजातके गोमेदसे निकलित है। ३३१। ३३२।





GOMEDA.

TRANSLATION.

330. Gomeda is produced in the Himalaya and the shores of the Indus. A transparent, weighty, cool, deep-colored, shining, and white or green gomeda is worthy of the highest admiration.

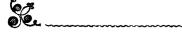
331—332. The Brahminical classification of castes obtains also with gomeda. The white gomeda is the Vipra; the red one is the Kshetriya; the yellowish one is the Vaishya; and the bluish one is the Sudra. These respectively cast the white, the red, the yellow and the dark shade.

গোমেদ ৷

অञ্বাদ।

হিমালয় পর্বত ও দিন্ধুনদে গোমেদ মণি উৎপন্ন হয়। স্বচ্ছ, গুরু, স্লিগ্ধ, প্রগাঢ়বর্ণ, দীপ্তিমান্, শুরু বা হরিদ্রোবর্ণ গোমেদ অতিপ্রশংসনীয়। ৩০০।

গোমেদেও ব্রাহ্মণাদি চারিপ্রকার জাতিভেদ আছে। শুক্রবর্ণ বিপ্রজাতি, রক্তবর্ণ ক্ষল্রিয়জাতি, ঈষৎপীতবর্ণ বৈশ্য-জাতি ও ঈষৎ নীলবর্ণ শূদ্রজাতিমধ্যে পরিগণিত। শ্বেত, রক্ত, পীত ও কৃষ্ণ এই চতুর্বিধে ছায়া উক্ত চারিজাতির হইয়া থাকে। ৩৩১। ৩৩২।







मूलम्।

युकः प्रभाद्यः सितवणेक्षः सिन्धो च्हुर्वातिमहापुराणः । स्वच्छस्त गोमेदमणिषृ तोऽयं करोति लच्ची धनधान्यद्वि । ३३३॥ लघुर्विरूपोऽतिखरोऽन्यमानः स्वेहोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि । करोति गोमेदमणिर्विनाग्रं

सम्पत्तिभोगाखिलवीर्य्यराभेः ॥५३४। ये दोषा चीरके भ्रयास्ते गोमेदमणाविष । परीचा विक्कतः कार्या गाणे वा रक्षकोविदैः ॥ ३३५॥

तर्जमा।

भारी, प्रभाविशिष्ट, सफेद रङ्ग, सिग्ध, कोमल बज्जत् पुराणा और खच्छ गोमेदसे बज्जत् दीलतकी वाड्,ित होति है। ३३३।

ष्टाल्का, वदस्तरत, ज्यादा खुरधरा श्रथवा कम खुर-धरा, श्रान्तिजनक, श्रथीत् सक् पथदा करनेवाला, श्रस्तिम्ध, मलिन गोमेद दौलत, भोग श्रीर वलको नाग्र कर्ता ष्टी। ३३४।

हीरेका जेत्ना अयेव कहा गया है, गोमेदमेभी वही सब अयेव पाना जाता है, रत्नपार्ची पिछत आग और आणसे गोमेदकी पहचान कर्ते हैं। ३३५।



TRANSLATION.

- 333. The wearing of a weighty, lustrous, white, cool, tender, very old, and transparent *gomeda* leads to prosperity.
- 334. A light, discolored, exceedingly rough, dilusion-creating, and cool yet dirty gomeda blights happiness and saps the foundations of energy.
- 335. Those defects that have been mentioned as belonging to the diamond, are also found in the gomeda. This gem is tested by fire or by whetting.

অমুবাদ।

গুরু, প্রভাবিশিষ্ট, শুক্লবর্ণ, স্নিগ্ধ, কোমল, অত্যন্ত পুরাতন ও স্বচ্ছ গোমেদ ধারণ করিলে অত্যন্ত শ্রীবৃদ্ধি হয়। ৩৩৩।

লঘু, বিরূপ, অত্যন্তথরস্পর্শ, ভ্রান্তিজনক, এবং স্লিগ্ধ অথচ মলিন ও খরস্পর্শ গোমেদ সম্পত্তি, সমূদায় ভোগ ও সমস্ত বীর্য্যের নাশকারী। ৩৩৪।

হীরকের যে সমস্ত দোষ উল্লিখিত হইয়াছে, গোমেদেও সেই সকল দোষ লক্ষিত হয়, রত্নবিৎ পণ্ডিতেরা অগ্নি বা শাণদারা গোমেদের পরীক্ষা করিয়া থাকেন। ৩৩৫।







मूचम्।

गुड्य गोमेदमणे सु मूल्यं
स्वर्णतो हैंग्रणमा जरेके।
पन्ये तथा विद्रमतुल्यमूल्यं
तथापरे चामरतुल्यमा जः। ३३६॥
स्कटिकेनैय कुर्व्यन्ति गोमेदप्रतिरूपिणं।

चतुर्विधानामेषान्तु धारणं पविसमातम् ॥ ३३७ ॥

तर्जमा ।

वेश्वयेव गोमेदका मूल, सबके मतके समान निर्धं होता, किसीके कौलके सुजिब श्वगर एक तोला गोमेद हो, दो तोला सोणा दाम उसका है। श्वीर किसीके कौलके सुजिब एक तोला सुङ्गेका जो दाम होगा, वही दाम एक तोला गोमेदका होगा। किसीके कौलके सुजिब चामरका समान दाम गोमेदका होगा। इहहै।

फरेबी सबदागर स्फ्राटिक्से गोर्मेंद बनाते हैं। ब्राह्म-णादि चारप्रकारका शीरा पहेरनेसे जी फल शोता है, चारप्रकारका गोमेंद पहेरनेसे वहीं फल शोता है। ३३७।

इति ग्रोमेदका वयान।





TRANSLATION.

- 336. Opinions are divided as to the price of a sterling gomeda, some maintaining it to be double that of a proportionate mass of gold, some holding it to be equal to that of a Vidruma, some making it equal to that of chámara.*
- 337. Fraudulent jewellers fabricate false gomedas with crystal. The good that is reaped by wearing the four classes of the diamond, is also obtained by wearing the four classes of the gomeda.

অমুবাদ।

বিশুদ্ধ গোমেদের মূল্য সকলের মতে সমান হয় না, কাহার মতে স্থবর্ণের দ্বিগুণ, কাহার মতে বিদ্রুমের সমান এবং কাহারও মতে চামরের সদৃশ হইয়া থাকে। ৩৩৬।

অসৎ বণিকেরা স্ফটিক দ্বারা কৃত্রিম গোমেদ প্রস্তুত করিয়া থাকে। ব্রাহ্মণাদি চতুর্জাতি বক্ত ধারণের যে ফল, চতুর্বিধ গোমেদ ধারণেও সেই ফল। ৩৩৭।

ইতি গোমেদ।

^{*} The bushy tail of the Bos Granniens, used as a fly-flap or fan and as one of the insignia of royalty.









THE ZIRCON, HYACINTH OR JACINTH.

Its Properties.

HE Zircon, Hyacinth or Jacinth and Jargoon are identically the same stone, differing only

in colour. The Greek name is "Wakinthis," Latin. "Hyacinthus," German, "Hyacinth," and "Ein breuneder Jacinth," French, "Jacinthe La Belle." The word Zircon is supposed to be derived from the Arabic word Zerk, which means a gem; the Hvacinth, from the Arabic Yakut which means the Ruby. The transparent and bright-coloured varieties are known as the Hyacinth or Jacinth: the greyish and smoke-coloured ones, (which are sometimes sold as inferior Diamonds,) as the Jargoon. The Jargoon again occurs of several colours and is seldom perfectly transparent. Bætius de Boot describes the varieties thus; "(1) there are some that flame like fire or are similar in colour to crimson or to natural vermillion. These the French jewellers call Jacinthe La Belle, and these they esteem the best. (2) Those with a yellow red colour. (3) Others are like unto Amber, so that they can hardly be distinguished from it, but by their hardness. These are of no great value, by reason of the atoms they contain, and the multiplicity of small bodies which are in them, which do hinder their transparency and translucency." Accor-







ding to Cardanus, "there is a fourth kind which have no redness at all in them, which are like to white pellucid Amber, and these are of least value." This gem belongs to the dimetric system of ervstallization. Its specific gravity is from 4:07 to 4.75. In the transparent varieties, the lustre is almost adamantine; in the opaque ones, it is vitrious. It varies in colour from red to yellow, brown, green, grey and white. Its number in the scale of hardness is 7.5; it having the power of slightly scratching quartz. Its cleavage is imperfect; its fracture conchoidal and brilliant. It is composed of zirconia, 66.8, silica, 33.2 and peroxide of iron, 1. Being heated it becomes phosphorescent, loses its colour and increases in specific gravity, but regains its normal properties when cool, and if reheated immediately after, the phosphorescence does not appear. It is infusible before the blow-pipe but melts with borax into clear glass. No acids but sulphuric can affect it, and that even, after long maceration. It possesses double refraction in a very high degree, specially the Jargoon of Ceylon. The Zircon is distinguished by its quadrilateral crystals, terminating at both ends in a pyramid, with the same number of facets.

Where found.

NICOLS, writing 226 years ago, speaks of the Zircons:—"They are found in Ethiopia, India and Arabia. The Arabs distinguish three kinds;



(1) Rubris Coloris; (2) Citrine Coloris; (3) Antimonii Coloris. Of these the worst is found in the river Isera, which is upon the confines of Silisia and Bohemia. The best and most excellent ones are brought from Cananor, Calicut and Cambia." Since this period, several places have been found which are known to contain Zircon. It is found in embedded and attached crystals in granite, Syenite and Gneiss and also in beds of rivers together with Garnets, in Ceylon, Pegu, India and parts of Europe and America. It has been found in small crystals in Syenite at Meissen and in the Plauenschen-Grund, (both near Dresden), and in dense basalt, in Siben-Giberge, in Prussia; in the rivers Espially : (France) and Iser (Bohemia); in the island of Harris, in the Pfitsch Thal in Tyrol; in Gaston, Pennsylvania and in Hammond, New York. It is also found in some volcanic places (and with many Volcanic or Plutonic stones), such as at Neide-Mindy, in porous millstone lava; in Pachersea, (in little white and red crystals), in volcanic bomb-shells and in the lava of Vesuvius.

Mode of Cutting and Polishing.

THE Zircon is seldom used in jewelry, but when it is necessary to prepare it for ornaments, such as rings, pins, ear-rings &c., it is ground in a leaden plate with emery powder, and polished on a plate of copper with powdered rotten stone. The Jargoon is generally cut in the form of a Rose







Diamond; i. e., flat at the bottom and pointed at the top; the Jacinth or Hyacinth, like a brilliant with a rounded table.

The Zircon, Jacinth or Hyacinth as known to the Ancients: Engravings.

Although this stone was well-known to the ancients, it is a matter of question whether the gem they called by this name was the same as the true Some suppose it to be the Lyncurium of Zircon. Its Hebrew name is Techyleth or Theophrastus. blue; hence, perhaps, Pliny called the stone known to us as the sapphire, by the name Hyacinthus. It was a great favorite of the ancient Romans, but is little worn at present. In the Paris Museum may be seen a splendid specimen of a very ancient engraving on a Zircon, representing Moses with the It is 54 millimetres in two tables of the law. length and 34 in width. Lord Duncannon is said to be in possession of a Zircon having the figure of an athlete engraved upon it. The modern Chinese use this gem profusely in decorating their gods.

Price of the Zircon; its Flaws and Defects:

Mode of Testing.

No standard prices can be given for the Zircon as it is seldom used for jewelry purposes. Formerly it commanded a very high price. A solitary specimen of a Zircon, if free from flaws and possessed of a fine colour, may fetch a high price, in the pre-







sent time. A perfect Zircon should be of a beautiful orange colour, with a shade of scarlet, quite clear and without flaws. To remove dark spots from the stone and to equalize its colour, it is sometimes very carefully burnt with sand and iron filings. The Jargoon that comes from Matura (in Ceylon) approaches the diamond so closely in lustre, that in the 18th century it had been supposed to be an inferior diamond and sold as such. The people of Ceylon call it the "Maturian Diamond." seldom found of large size—the maximum weight has not yet exceeded more than 12 carats. formerly much used in mourning ornaments. Zircon is sometimes confounded with the Essonite or Cinnamon stone, from which, however, it differs in its essential characteristics. While the specific gravity of the former is from 4.07 to 4.7, that of the latter is from 3.5 to 4.3. Then, in the scale of hardness, the former is 7.5, while the latter is from 6.5 to 7.5. Then there is a great deal of difference in the chemical composition of each. The latter has a large element of lime, magnesium and aluminum in it and is fusible before the blow-pipe, whereas the former is not. As to refraction, the Zircon possesses double, while the Cinnamon stone, single refraction. The Spinel is sometimes mistaken for the Jacinth, owing to similarity of colour in some of the specimens, but a reference to the distinguished characteristics of each will easily correct the mistake. To distinguish the Zircon from all





other stones of a similar nature, it should be looked at through a microscope in front of a strong light, and care must be taken to observe, whether it has a peculiar texture, called in French, *Ratinè* (nappy)—which has the appearance of water when spirit is poured into it. This cottony or "nappy" look is its special characteristic.

Marvellous Properties attributed to the Zircon.

In the Middle Ages, this gem was supposed to bring riches, honor and wisdom, and was considered a great charm for plague and wicked spirits. "One of these," says Cardanus, "he was wont to wear about him, for the purpose of procuring sleep, to which purpose it did somewhat to confer, but not much." It was also thought to be a safe-guard against lightning.









ऋष विदुमम्।

मुचम्।

स्रोतमागरमध्ये तु जायते वज्जरी तु या ।
विद्रुमनामरताख्या दुर्जभा वज्रकृषिणी ॥ ३३८ ॥
विद्रुमं नाम यद्रत्नं धारयन्ति मनीषिणः ।
व्रद्धादिजातिभेदेन तज्ञतुर्विधसुचात्ये ॥ ३३८ ॥
च्रक्षं प्रचरक्ताचं कोमलं स्विग्धमेव च ।
प्रवालं विप्रजातिः स्थात् सुखवेध्यं मनोच्चरं ॥ ३४० ॥

विदुम अर्थात् मुंगेका वयान।

तर्जमा।

सफेद ससुद्रकें मध्ये वज्ररूपिणी एक किसिमका लताकार रत्न पयदा होता है, उस्को विद्रुम ऋर्थात् मुंगा कहते है। ३३८८।

पिएटत लोक जिस् मुंगेके पहेरते हैं, वह मुंगा जिस् तरहे ब्राह्मण, चित्त्र, वैश्व और श्रद्ध चार जात होते हैं उसी तरह उस्कीभी चार जात होते हैं। ३३८।

खरगोपके चांखके समान सुख, कोमल चौर बज्जत् सिम्ध मुंगा ब्राह्मणजात है, ब्राह्मणजातका मुंगा देखनेमे बज्जत् चाच्छा है और जल्दि वेध होता है। ३४०।





THE CORAL.

TRANSLATION.

- 338. A cross-shaped gem resembling a plant is found in the White Sea. It is called *Vidruma*.
- 339. The Brahminical classification of castes has also been introduced among Vidrumas.
- 340. That, Vidruma which is red like the eye of the hare, tender and very cool, is the Brahmin. It is exceedingly beautiful and is easily penetrable.

বিক্রম ৷

অনুবাদ।

শেতসমুদ্রের মধ্যে যে বজ্ররূপিণী একপ্রকার লতাকার রত্ন জন্মে, তাহাকে বিদ্রুম মণি কহে। ৩৩৮।

পণ্ডিতেরা বিদ্রুমনামক যে রত্ন ধারণ করেন, তাহা ব্রাহ্মণাদি জাতিভেদে চারিপ্রকার হইয়া থাকে। ৩৩৯।

শশকের চক্ষুর ন্যায় অরুণবর্ণ, কোমল ও অতিস্নিগ্ধ প্রবাল বিপ্রজাতিমধ্যে গণনীয় এবং দেখিতে অতিমনোহর অথচ অনায়াসে বেধ্য। ৩৪০।







मूलम्।

जवावस्थूकसिन्दूरं दाडिमीकुसुमोपमं।
कठिनं देवेध्यमस्चित्यं चचजातिस्तदुच्यते ॥ ३४९ ॥
पलाशकुसुमामासं तथा पाटलसिद्धमं।
बैख्यजातिभवेत् स्चित्यं वर्णाढंर मन्दकान्तिमं॥ ३४२ ॥
रक्तोत्पलदलाकारं कठिनं श्रचिरद्युति।
विद्रुमं श्रद्रजाति: स्यादायुवेध्यं तथेव च ॥३४३॥
रक्तता स्वित्थता दाढंर चिरद्युति स्वर्णता।
प्रवालानां गुणाः प्रोका धनधान्यकराः पराः ॥ ३४४॥

तर्जमा।

कनेलका पुल, वांधूलीका पुल, मिन्ट्र अथवा आनारके पुलके समान स्रुख, सक्त, सुस्किल से वेध होनेवाला और असिग्ध मुंगा चित्त्रजात है। ३४१।

पनाश्रमुन श्रीर पाटनीमुनके समान स्नुख्रङ्ग, स्निग्ध श्रीर थोड़ा कान्तिविशिष्ट मुंगा वैश्वजात है। ३४२।

जो मुंगा लाल कमलके समान रङ्गदार, सक्त, जिस्की चमक थोड़े दिन रहे श्रीर जो बद्धत् जल्दि वेधा जाय, वह श्रद्रजात है। ३४३।

लालरङ्ग, सिग्धता, सक्त, कायेमरङ्ग और खुप्सुरत्, मुंगेका यही कदूएक खास ग्रुण है। और यही सब गुण-युक्त मुंगा धनधान्यकी टिड्डिकर्नेवाला है। ३४४।







- 341. That which resembles the China-rose, the bandhuli flower, vermilion or the pomegranate flower, which is impenetrably hard and which is not cool, is a Khsetriya.
- 342. That Vidruma which is like the Butea frondosa, or the trumpet flower, which is cool and slightly lustrous, is reckoned a Vaisya.
- 343. That Vidruma, the lustre of which is not enduring, which is like the leaves of the red lotus, which is hard yet easily penetrable, is a Sudra.
- 344. Yellowness, coolness, hardness, permanancy of lustre and beauty are the principal qualities of the Coral; and those Corals that possess them, are auspicious.

অমুবাদ।

জবা, বাঁধূলীপুষ্প, সিন্দূর অথবা দাড়িমের পুষ্পের ন্যায় রক্তবর্ণ, কঠিন, ছুর্ভেদ্য ও অম্মিশ্ব বিদ্রুমকে ক্ষত্রজাতিমধ্যে গণনা করা যায়। ৩৪১।

পলাশ ও পাটলপুষ্পাসদৃশ বর্ণাঢ্য, স্নিগ্ধ, অথচ অঙ্গ্র-কান্তিবিশিষ্ট বিদ্রুম বৈশ্যজাতিমধ্যে পরিগণিত। ৩৪২।

যাহার দীপ্তি অচিরস্থায়ী, যাহা রক্তোৎপলদলের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট, কঠিন এবং অনায়াদে বেধ্য, সেই বিক্রমকে শুদ্রজাতি বলা যায়। ৩৪৩।

লোহিত বর্ণ, স্নিগ্ধতা, দৃঢ়তা, চিরস্থায়ী কিরণ ও সৌন্দর্য্য, প্রবালের এই কয়েকটী প্রধান গুণ এবং এই সকল গুণশালী প্রবাল ধনধান্যকর। ৩৪৪।



मूचम्।

हिमाद्री यमु संजातं तद्रक्तमितिन हुरं।
तस्य धारणमाचेण विषरोगः प्रशास्यति । ३४५ ।
विवर्णता तु खरता प्रवाले दृषणहयं।
रेखा काकपदो विन्दुयया वक्केषु दोषकृत्। ३४६ ।
रेखा हन्याद् यशो लक्षीमावनः कुलनाश्रनः।
पट्ठलो रोगकृत् खातो विन्दुधनविनाशकृत्।
चासः संजनयेनु।सं नीलिका स्त्युकारिणी ॥ ३४० ॥

तर्जमा।

हिमालय पर्व्वतमे बद्धत् गहेरा लालरक्षका को मुंगा पयदा होता है, उस्को पहेरनेसे जहेरका रोगनाश होता है। ३४५।

वद्रकी, खुरधरापन यही दो मुंगेके प्रधान श्रयेव ही, दूस्केमेवाय चिर्, काकपद श्रीर क्रिट वगैरह हीरेमे जो श्रयेव होते ही, वही सब श्रयेव मुंगेमेभी श्रवसर होते ही। १४६।

चिर श्रवेवसे नाम्वरी श्रीर दौलतनाश शित है, श्रावर्त्त श्रवेव कुलनाश कर्ता है, परिवर्त्त श्रवेव विमारी पयदा करता है, किटाका श्रवेव दौलतका नाश कर्ता है, चास श्रवेव चास देता है श्रीर नीला श्रवेव मौतका कारण है। ३8%।



- 345. A deep red Coral is found in the Himalaya. The wearing of it leads to instant cure from poisoning.
- 346. Roughness and the quality of being discolored are the two primary defects of the Coral; besides which, there are Rekhá,* Kákapada, Vindu, and other defects found in Diamonds.
- 347. Rekhá blights fame and beauty, A'varta brings about loss of family dignity, Pattala leads to disease, Vindu to loss of wealth, Trása to fear and Nîlakáya to death itself.

অভ্বাদ।

হিমালয় পর্ব্বতে অতিগাঢ় লোহিতবর্ণ যে প্রবাল জন্মে, তাহা ধারণ করিবামাত্র বিষরোগ প্রশমিত হয়। ৩৪৫।

বিবর্ণতা ও খরতা এই ছুইটা প্রবালের প্রধান দোষ, তদ্ভিন্ন রেখা, কাকপদ ও বিন্দু প্রভৃতি বজ্রাপ্রিত দোষ সমূহও প্রবালের দোষমধ্যে গণনীয়। ৩৪৬।

রেখাতে যশ ও জী বিনষ্ট হয়, আবর্ত্তে কুলনাশ, পউলে রোগ, বিন্দুতে ধনক্ষয়, ত্রাসে ত্রাস ও নীলিকায় মৃত্যু হইয়া থাকে। ৩৪৭।









मूचम्।

मूल्यं गुह्वप्रवालस्य रूप्यदिगुणस्त्यते।
धारणेऽस्यापि नियमो जातिभेदेन पूर्ववत्। ३४८॥
विश्वपातिं विषमं विवर्णे
स्वरप्रवालं प्रवर्णन्त ये वा।
त स्त्यमेवास्त्रानि वे प्रशन्ति
सत्यं वदत्येष करो सुनीन्द्र:॥ ३४८॥

गौरवं खच्छता कान्ति: काठिन्यं रक्षजा गुणा:। विद्याव वज्रकाण्येषु गौरवं शोभनं भवेत्॥ ३५०॥

तर्जमा।

वैश्वयेव मुंगेका दाम उसके श्रोजनसे दुना खालिस् चांदी होगि, मुंगा पहेरनेका फल, जिम् तरह जातभेदके हिसाबसे सावेक लिखेड्य रक्ष देते हैं, उसी तरहसे मुंगाभी फल देता है। ३४८।

. कर नामे एक मुनिका वचन है, के जो आदमी वद्-सुरत्, विजाति, नीचा उंचा, वद्रक और सुरधरा मुंगा पहेर्ता है, वह आपनि मौत आप वोलाता है। ३४९।

गुरुता, स्वच्छता, कान्ति स्पीर कठिनताभी कोइएक रत्नके प्रधान गुण हैं, लेकिन हीरेकेसेवाय स्पीर स्त्रोंकी भारी होनेकी तारिफ हैं। ३५०।





- 348. The price of a faultless Coral is twice that of an equal quantity of pure silver. As in regard to other gems, the effects of wearing Corals vary in accordance with each of the four classes.
- 349. According to Kar, the celebrated sage, the man who wears an ugly, discolored and rough Coral, courts his own death.
- 350. Heaviness, transparency, beauty and hardness are the principal qualities of jewels. But the first holds with respect to diamonds only.

অমুবাদ।

বিশুদ্ধ প্রবালের মূল্য বিশুদ্ধ রোপ্যের দ্বিগুণ পরিমাণে হইয়া থাকে। প্রবালধারণের ফল, জাতি-বিভাগ-অনুসারে পূর্ববর্ণিত অপরাপর রত্নধারণের অনুরূপ। ৩৪৮।

করনামক মুনিপ্রবর বলেন, যে ব্যক্তি বিরূপ, বিজাতি, বন্ধুর, বিবর্ণ ও খরস্পর্শ প্রবাল ধারণ করে, সে আপনার মৃত্যু আহ্বান করে। ৩৪৯।

গুরুতা, স্বচ্ছতা, কান্তি ও কঠিনতা রত্নের এই কয়টী প্রধান গুণ, কিন্তু বজ্র ব্যতিরেকে অপরাপর রত্নের গুরুতাই অধিক গৌরবজনক। ৩৫০।







मूचम्।

रकानां रूपसास्यन्तु धूर्ताः कुळेन्ति युक्तितः ।
तेषां परीचां वच्यामि रक्ष्यास्त्रविचारिणीं ॥ ३५१ ॥
वक्षेण वेधयेदक्षं क्रचिमच्चे दिधीयते ।
क्रचिमं मौक्तिकं नस्येत् चालितं लवणाम्भसा ॥ ३५२ ॥
माणिक्यादीनि रक्षानि घषणान्तु परस्परं ।
योधयेद्रवित् प्राच्चः क्रचिमं शुद्धमेव च ॥ ३५३ ॥
त्यजित क्षितं रागं क्रचिमं तददीरितं ।
माईवं इस्यते घृष्टं च्चेयन्तत् क्रचिमं वुधैः ॥ ३५४ ॥

तर्जमा।

धूर्से तोत बृद्धियल कर्के मांचे रत्नके समान भुंठा रत्न तैयार कर मक्ते हैं, इस्कारण शास्त्रके प्रमाणके मोयाफिक रत्नकी परीचा लिखि जाति हैं। ३५१।

हीरेको दारा भूंठा हीरा नेतक झुप बेध हो जाता है, श्रीर भुंठा मोति जलमे लोण मिलाकर धोनेसे नष्ट हो जाता है। ३५२।

रत्नपारची पण्डित कहते हैं, के परस्पर धिस्नेसे माणिक चाद रत्नकी भुठाइ चौर मानाइ मानूम हो सिक्त है। ३५३।

ए से गाइकी काल वगैरहमे जिस्को पाणिमे देकर पाकानें पाणिका रङ्ग बदरङ्ग हो जाय, श्रीर उम् पाणिमे कस श्रा जाय, ऐसे जलमे जिस् रक्षको फेंक देने से उसका रङ्ग बदरङ्ग हो जाय, श्रीर घिस्नेसे नरम हो जाय, उस्को भुठा कहते हैं। ३५४।



- 351. Whereas fraudulent traders fabricate false gems, I will now describe the way of testing precious stones as laid down by the authorities.
- 352. A false diamond is easily penetrable by a real one; a false pearl is destroyed when washed in salt water.
- 353. The Ruby and other gems, say the authorities, are very well tested by rubbing one by the other.
- 354. When a false gem is put in any gruel, it loses its brilliance; and when rubbed becomes soft.

अञ्बाम।

ধূর্ত্তলোকেরা নানা কোশল অবলম্বনপূর্বক রত্নের প্রতিকৃতি প্রস্তুত করিতে পারে, অতএব শাস্ত্রান্ম্মত পরীক্ষা বলা যাইতেছে। ৩৫১।

কৃত্রিম বজ্র বজ্রদারা অনায়াদে বিদ্ধ হয়, কৃত্রিম মুক্তা লবণাম্বতে ধৌত করিলে নম্ট হইয়া যায়। ৩৫২।

রত্নতত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতেরা পরস্পর ঘর্ষণ দ্বারা মাণিক্যাদি রত্ন সমুদায়ের কৃত্রিমতাকৃত্রিমন্থাদি বিচার করিতে পারেন।৩৫৩।

কোন বস্তুর কাথে নিক্ষিপ্ত হইলে কৃত্রিম রত্ন পূর্ব্ব শোভা পরিত্যাগ করে এবং ঘৃষ্ট হইলে কোমল হইয়া পড়ে। ৩৫৪।





मूचम्।

एवं विचार्य रत्नानि की वे सिश्चतवान् नृषः।
चायुर्वेची जयं की तिं प्राप्तीति नाच संग्रयः॥ ३५५॥
प्रसन्नं की मलं सिग्धं सरागं विद्रुमं चितं।
धनधान्यकरं लोके विषात्तिभयना प्रनं॥ ३५६॥

तर्जमा।

राजा लोगोंको मनासिक है, इस्काय्देके मोताबिक रत्नको परीचा कर्के बाद उस्के रत्नको खाजानेमे रख्नेकी खाजा दें, इस् सबबसे उमर, दौजत और नाम्बरी बाह्रोग और फते हास्ति होगि। ३५५।

परिष्कृत, कोमल, खिन्ध और उत्तम वर्णविशिष्ट मुंगा भाद्मीचें।का हितकारी है धनधान्यकर्नेवाला भौर अहेरका रोग नाशकर्नेवाला है। ३५६।

इति मुंगेका वयान।









355. Princes should examine precious stones by these tests before depositing them in their treasury, so that they may enjoy long life and prosperity, and acquire success and fame.

356. A clear, soft, cool, and finely red Coral is auspicious, conduces to prosperity and is an antidote to poisoning.

অনুবাদ।

নৃপতিগণের কর্ত্তব্য যে, এই প্রণালীতে অগ্রে পরীক্ষা করিয়া পশ্চাৎ রত্ন সমুদায় কোষে স্থাপন করেন, তাহাতে তাঁহাদের আয়ু, লক্ষ্মী ও কীর্ত্তি বর্দ্ধিত এবং জয়লাভ হইতে পারে। ৩৫৫।

পরিষ্কৃত, কোমল, স্নিগ্ধ ও উত্তম রক্তবর্ণ বিদ্রুম লোকের হিতজনক, ধনধান্যকর ও বিষরোগবিনাশক বলিয়া বিখ্যাত আছে। ৩৫৬।

ইতি বিজ্ঞম।









THE CORAL.

Its Properties.

HE Pearl is one of the two animal products included amongst the precious gems. Coral, the other, is the production of gelatinous creatures, belonging to the family of "Polypi," of which there are many varieties. The variety known as "Isis Nobilis," (or the precious Coral,) is like a tree with leafless branches, the stem of which is sometimes seen to be as thick as a man's body, but generally about a foot high and an inch thick. "The calcarious axis of the 'Isis Nobilis' is distinguished by its size, hardness and capability of polish as well as by its beautiful red colour. has a sort of leathery covering in the cells to which the Polypi adhere. In the soft rind which surrounds the axis, there are small lime-needles and outside these the nets of the common canals which the little creatures weave." The sub-marine forests which are formed by the Coral grow to such an extent as to make islands and to seriously obstruct navigation. It was the belief of the ancients-a belief still shared in by many, in the present timethat the Coral is of vegetable origin; but modern science, with the help of the miscroscope, has discovered the form of the insects which produce this wonderful phenomenon of nature. The Polypi consist of a soft gelatinous substance, and when





they sit in their cells undisturbed, each of them is found to resemble an eight-cornered star, notched on each point and situated in a circle round the mouth, by means of which they catch their food and convey it to this opening. They are so peculiarly organized, that if one of them be touched, even in the slightest degree, all the separate molusks on the branch will form into one corporate body. Though the insects show, in this respect, a marvellous degree of sensitiveness, they have not yet been discovered to possess nerves or any of the five senses. In the case of the precious Coral, the food goes into a hole in the stomach and is there wellmixed with water and circulated in all directions in little vessels, and thus conveyed to the whole mass, which are all in communication with each other. Particles of plants, found in the water and little worms or insects, form their chief nourishment. They are very much averse to light and to a disturbance of the water, either of which is sufficient to make them recede to their cells. Corals are affected by heat and acids.

Where Found: Coral Fisheries.

THE Corals are found in many parts of the water-world, but those that are used for ornaments principally come from the Mediterranean and especially from the African Coast. The beds, (formed by the creatures themselves), in the clefts of rocks,







are evidently the result of very great labour, for, in some cases, they have been found 700 or 800 feet beneath the surface of the sea. The Coral fishery is conducted in many places, principally amongst which may be mentioned the coasts of Tunis, Algiers, Sicily, Corsica, the Red Sea and the Persian Gulf. Although it is chiefly carried on by the Italians and Maltese, it was first initiated by the French. In 1450, a French Company was established at Calle or Kalak, (a seaport of the African coast), the fishing at which place became their monopoly, on condition of their employing Provencal sailors only. In 1791, the fishery was thrown open to all who traded with the Levant and states of Africa. In 1794, however, the French ships were protected by a duty laid on those of all other nations. During the time England held possession of Calle (1802-1816), the fishery was pursued with great energy. In 1830, the Italians had, according to fresh arrangements, to pay a duty for it, while the French were exempted. But still the Italians predominated. The fishery, which begins in March and ends in the beginning of October, is conducted in the following way. "Two iron rods about 7 feet long and having 4 prongs, are bound crosswise together, and wrapped up in hemp about $\frac{1}{2}$ inch thick, and bound to this is a net-work bag. In the middle of the rods a weight of lead is fastened. This machine is let down by means of a cable and when drawn up







again, it catches the projecting Coral in the hemp which is gently brought to the surface." Each fishing boat consists of 13 sailors. Experienced divers can sometimes bring up a strong branch of the Coral. It is then cut into various lengths as required and sorted, according to their thickness, size and beauty.

Cutting and Boring of Coral.

THE Coral is principally cut into beads and boutons or pieces cut en-cabochon, into drops for ear-rings; also into leaves, flowers and various other forms; for making the carved ornaments, as seen in Naples and Genoa, into charms which are worn in bunches: sometimes into Cameos and into stick and whip-mounts and handles. It is bored by steel needles; in Italy it is done by hand. But Karl Hoffmann of Leipzig has rendered the operation much cheaper by inventing a machine for boring. The working on Coral is chiefly carried on in Marseilles, Leghorn and Genoa. In Leghorn about 300 persons are employed in conducting the operations and the Coral thereof is exported to India, Persia, China and Japan. The branches of the Coral are cut in such a manner as may be convenient and advantageous, according to their shape and freedom from flaws. They are afterwards ground into beads and polished with oil.

Engravings.

On account of its softness the Coral is often used for Cameo. At the sale of the Empress Eugènie's







jewels by Messrs. Cristie and Manson (1872), a very fine suit of carved Coral and gold ornaments fetched a very high value. Fine specimens of carved Coral are not at all rare.

Coral as known to the Ancients: Its uses.

According to a Greek tradition, the Coral was supposed to have sprung out of the blood dropping from the head of Medusa, which Persues had deposited on some branches near the sea-shore and which, on becoming hard, was taken by the seanymphs and planted in the sea. Pliny termed it "Dendrites" and "Corallum." It was dedicated by the Romans to Jupiter and Apollo.

The Coral is not so much liked in Europe as it was in former times. In the beginning of the present century, however, it was set in gold or silver and was used in ear-rings, bracelets, necklaces and baby-rattles in the nursery of the middle and upper classes of people. In the oriental countries it is held in great favour. The worm-eaten Coral and especially that of the dark red variety is in great demand in certain parts of India. One house of Naples is reported to export Rs. 80,000 worth of Coral to Calcutta, and India is said to spend 20 lacs of Rupees a year for the purchase of this commodity. Coral is very profusely worn by the Eastern nations in strings, on turbans and on the handles of swords and daggers. The Brahmins and Fakeers, use the Coral beads as rosaries to count their







prayers. The rich wear the red Coral on their head, throat and legs. Some writers say that there is scarcely to be found an Indian who does not wear Coral in some or other part of his body. The Chinese mix the red Coral with Jade beads and wear them as ornaments for the neck and head. It is also worn in Spain and in the West Indian Islands by the Negroes.

The Price of Coral: Its Imitations.

Coral is found of several colours, all shades of red and pink, green, brown, yellow, white and black. The last three varieties are not of much value. The most beautiful production is called the "flower of blood." The rose-tinted ones, on account of their resembling the fanciful shapes assumed by pink Pearls, obtain the highest price. These sell for £100 to £200 per ounce. A single large bead or drop will fetch £30 to £40. The next in quality is the pale-coloured one, which sells from £10 to £100 per ounce. The price of the other red varieties ranges according to colour, between £2 and £20 per ounce. The red Coral was once considered the most valuable. But present fashion awards the palm to the pink ones.

Th Coral is often imitated by bone, horn, and ivory, stained with cinabar—also by a composition of gypsun, gum and cinabar.







Marvellous and Medicinal Powers attributed to Coral.

In the most ancient times the Coral was held in great esteem. But at the time of Pliny, its influence was evidently not much appreciated, as in one of his works, he remarks that "formerly it was deemed excellent as an antidote to poison." In the Middle Ages, it regained its attributes, both as a medicine and as a charm. It was then considered as a powerful astringent and a talisman against enchantments, witch-craft, venom, epilepsy, assaults of Satan, &c. &c. &c. From an old work quoted by Brand, it appears that, "Witches tell that this stone withstondeth, lyghtenying and putteth it as well as whirl-windes, tempestes, and the stormes, from shippes and houses that it is in." Pierre de Rosnel says, that if worn by a man, it would deepen in colour and look lively; and would become pale and livid, if worn by a woman or by a man who is ill and likely to die. It would stop hemorrhage, if hung round the neck. Beetius de Boot says, that he was himself cured of a dangerous pestilential fever by taking six drops of tincture of Coral. Armand de Villenevee prescribes 10 grains of Coral, to be given to an infant, in its mother's milk, (provided this be the first child and its first food), in order to preserve it from epilepsy or any other fit, throughout life. In the modern times, the power of the red Coral in withstanding witchcraft is believed in some nurseries and







Corals are sometimes suspended round the necks of infants.*



^{*} Some women in India make their children swallow bits of Coral put within plantains, in the hope of ridding them of itches, &c.







अथ मरकतम्।

म्लम्।

तुक्ष्वविषयासोधिनमीपविषमस्यते।
भवेन्मरकतं रतं गुणो दोषोऽस्य कथाते॥३५७॥
तचाकठोरग्रक्षकण्टग्रिरीषपुष्पखद्योतप्रश्वरणादत्रग्रीवनानां।
कह्लारपचकम्जङ्गभुजाञ्च पच-

प्रान्तिविधे मरकताः गुभदा भवन्ति ॥ ३५० ॥ तस्मिन्मरकतस्थाने यत्किञ्चिद्रपणायते । तस्यव्यं विषरोगाणां प्रश्माय प्रचन्न्यते ॥ ३५० ॥

मरकत ऋषीत् पान्नेका वयान।

तर्जमा।

तुर्किदेशके समुद्रके करिव नीचि जंची जमीनमे पाना पयदा होता है; पानेका ज्ञनर और अयेव मुफस्सल वयान होता है। ३५७।

पाझे ने मध्ये यो कर्नेश अर्थात् खुरधरा निर्हं, श्रीर जिस्का रङ्ग मवुज शुगेके गले, शिरीषफुल, खद्योतकी पिठ, नद्ग घास, सेवार, कोद्ग फुलपात्ता और मयूरके पङ्घाके समान सवुज रङ्ग, यही सव बद्धत् श्राच्छा ही। ३५%।

पानेकी खानसे जो कुच पयदा होए, वह सब जहरके रोगको नाम कर्ता है। ३५९।



EMERALD.

TRANSLATION.

- 357. Emerald is produced in the undulating coast of the Black Sea belonging to Turkey. The good as well as the bad qualities of Emeralds will follow.
- 358. Those Emeralds that are smooth, and the color of which is like that of the parrot's throat, acacia sirisa, the glow-worm's back, new-born grass, Vallisniria Octandra, leaves of the water-lily or the peacock's tail, are auspicious.
- 359. Genuine Emeralds are infallible remedies for all cases of poisoning.

মরকত।

অমুবাদ।

তুরুকের সমুদ্রসনিহিত বন্ধুর ভূভাগে মরকত রত্ন উৎপন্ন হয়, মরকতের গুণ ও দোষ ক্রমশঃ কথিত হই-তেছে। ৩৫৭।

মরকতের মধ্যে যে গুলি কর্ক শ নহে, এবং বাহাদের বর্ণ শুকপক্ষীর কণ্ঠ, শিরীষপুষ্প, খদ্যোতপৃষ্ঠ, নৃতন তৃণদল, শৈবাল, কহলার (স্থাদি) ফুলের পত্র ও ময়ূরপুচ্ছের দদৃশ শ্রামল, সেই গুলি অতিশুভজনক। ৩৫৮।

প্রসিদ্ধ মরকতাকরে যাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তৎসমু-দায়ের দ্বারা সর্ব্বপ্রকার বিষরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। ৩৫৯।







मूखम्।

सर्वमन्त्रीषधगणेयेन्न शक्यं चिकित्सितं।
महाहिदं ष्ट्राप्रभवं विषं तत्त्रेन शास्यति ॥ ३६० ॥
श्रन्यदणाकरे तत्र यहोषेण विविद्धितं।
जायते तत्पविचाणासृत्तमं परिकीत्तितं। ३६० ॥
स्कतं संस्थानग्रणेः समरागं गौरवेण परिहीनं।
सवितः करसंस्पर्शाच्छवयति सर्व्वाश्रमं दीप्त्रा॥ ३६० ॥
हित्वा च हरितभावं यस्यान्तविनिहिता भवेदीप्तिः।
श्रिचरप्रभाप्रभाहतनवशादलमन्निमा भाति ॥ ३६३ ॥
यञ्च मनसः प्रसादं विद्धाति निरीच्चितमतिमाचं।
तन्तरकतं महागुणमिति रत्नविदां मनोहत्तः॥ ३६४ ॥

तर्जमा।

सांपका जहर सगर मन्त्र श्रीर दायासे दूर न हो, वह पानेके जरियसे नाग्र होता है। ३६०।

पाझेके खानसे अगर और कोदू दुस्रे किसिम्की वे-अयेव मणि पयदा हो, तो उस्को उमदा अथवा उत्तम कहते ही । ३६९।

जो पाझा गुणहीन और योजनमे बद्धत् हाल्का, सब जगह रङ्गमे वरावर सूर्यकी किरणसे स्पर्ध कर्के सब मकानको रोमन करे। यथवा जो रङ्गमे हाल्का, लेकिन उम्के भितरकी याभा जिस् तरह बिजनिके चमक नेसे घामके उपर देख्लाइ देति है, यथवा जिस्के देख्ने होसे मनमे बद्धत् खुमी हासिल हो, रत्नपार्ची परिह्तोंको मतके यमुसार वही पाझा नेहायेत् उम्दा है। ३६ २। ३६ २। ३६ १।





- 360. Such cases of snake-bite in which incantation and medicine are of no avail, are curable by Emeralds.
- 361. Even any other flawless gem assuming the form of an Emerald is highly prized.
- 362. An Emerald which is of one uniform color, although excessively light and devoid of any other good property, which illumines a place when exposed to the sun:
- 363. Which is not extremely green, yet the splendour of which looks like the lightning's play among fresh grass:
- 364. The sight of which instills the liveliest pleasure into the mind, is the very best of its kind.

অহুবাদ।

যে দকল দর্পবিষ কোনরূপ মন্ত্র বা ঔষধপ্রয়োগদারা নিবারিত না হয়, তৎসমুদায় মরকতদারা শমতা প্রাপ্ত হয়। ৩৬০।

মরকতের আকরে যদি অন্য কোনরূপ নির্দোষ মণি উৎপন্ন হয়, তাহাওউত্তম বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া থাকে।৩৬১।

যে মরকত গুণবিহীন ও ওজনে অতিশয় লঘু হইয়াও সর্বত্য সমান বর্ণবিশিষ্ট এবং সূর্য্যকিরণসংস্পর্শে সমুদায় গৃহ দীপ্তিমান্ করে। ৩৬২।

যাহা নিতান্ত হরিদ্বর্ণ নহে, অথচ তাহার অন্তর্গত বিহ্যুৎপ্রভা-প্রতিভাত নবতৃণদলের সদৃশ। ৩৬৩।

অথবা যাহা দৃষ্টমাত্রেই মনের মধ্যে নিরতিশয় আনন্দ উৎপাদন করে, রত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতদিগের মতে সেই মর-কতই অতি উৎকৃষ্ট। ৩৬৪।







मुसम्।

यसु भास्तरसंस्पर्शाद्वस्तन्यस्तो महामणिः।
रञ्जयेदात्वपादेसु महामरत्ततं हि तत्॥ ३६५ ॥
वर्णस्याति वज्जत्वात् यस्यान्तः स्वच्छितरणपरीधानं।
सान्द्रस्तिस्विवगुडं कोमलवर्ष्णभादिसमकान्ति ॥ ३६६ ॥
चलयोज्ज्वलया कान्तरा सान्द्रकरो विभासया भाति।
तद्पि न गुणवत् संज्ञानात्रोति हि ताहर्शीपूर्वा ॥ ३६७॥
चतुर्धा जातिभेदेसु महामरकते मणौ।
कायाभेदेन विज्ञेया चतुर्वणस्य लच्चणैः॥ ३६८॥

तर्जमा।

जो पाझा चातपर रख्नेसे मृत्य के किरणके लाग्नेसे अपने किरणको नेकाले, और चारा तरफको खुस्नमा करे, उस्पानेको मचामरकत कचते हैं। ३६५।

रक्षमे ने हायेत् गहेरा, और जिस्का वीचका हिस्सा माफ, घन, अर्थात् गहेरा रक्ष, स्निष्ध, और मयूरके पेंचिके समान कोमल किरणविशिष्ट, वही पान्ने मध्ये उत्तम पान्ना सुमार किया गया है। ३६६।

जो पाद्मा साफ रोमनविशिष्ठ, लेकिन बची रोसिन चगर चञ्चल हो,तो उस्को होनेने उस्का गुण पहिले वयान कियेक्जवे पाद्मेके समान निह्न है। ३६७।

जिस् तरहसे ब्राह्मण, चिन्न्य, वैद्य और प्रूट्र चार जात होते है, उमी प्रकार इस्मे महामरकत मिणमेभी चार जात है, काया भेद और तरह तरहके लच्चणके द्वारा चार जातका भेद मालुम होता है। ३६८।





365. The Emerald which when placed on the palm, and exposed to the sun, scatters light all round, is termed a Mahá Marakata.*

366. An Emerald, which owing to its deep green has a densely transparent centre, the home of cool and gentle rays of the color of the peacock's tail, is a sterling gem.

367. If an Emerald is lustrous, but if its lustre is unsteady, it can never equal the above-mentioned one in value.

368. Mahámarakatas are divided into four castes like the Hindus, each caste being recognized by certain peculiarities of shade and by other marks.

অহ্বাদ।

যে মরকত করতলে স্থাপিত হইয়াও সূর্য্যকিরণসংসর্গে নিজকিরণ বিকীর্ণ করিয়া চতুর্দ্দিক রঞ্জিত করে, তাহাকে মহামরকত কহা যায়। ৩৬৫।

বর্ণের বাহুল্যপ্রযুক্ত যাহার মধ্যভাগ স্বচ্ছ, কিরণ-বিশিষ্ট, ঘন, স্নিগ্ধ ও ময়ুরপুচ্ছসদৃশ কোমল-কিরণ-পরিপূর্ণ, তাহা বিশুদ্ধ মরকতমধ্যে পরিগণিত। ৩৬৬।

যে মরকত উজ্জ্বল-দীপ্তিবিশিষ্ট, কিন্তু সেই দীপ্তি যদি চঞ্চল হয়, তাহা হইলে তাহার গুণ পূর্কোক্ত মরকতের ন্যায় হইতে পারেনা। ৩৬৭।

মহামরকত মণির ব্রাহ্মণাদি চারিপ্রকার জাতিভেদ লক্ষিত হয়, ছায়াভেদ ও অন্যান্য লক্ষণদারা দেই চারি জাতি পরিজ্ঞাত হওয়া যায়। ৩৬৮।



[•] Literally, the Great Emerald.



मूलम्।

दोषाः सप्त भवन्तारस्य ग्रणाः पञ्चविधाः स्मृताः । भवन्ताष्ट्रविधा च्छाया मणेमरकतस्य हि । ३६९॥

श्रथ सरकतदोषाः।

अिक्सं रूविनित्युक्तं व्याधिकस्मिन् धृते भवेत्। विष्कोटः खादं शपीते धते शस्त्रहतो भवेत्। ३७०॥ सपाषाणे भवेदिष्टनाशो मरकते धृते। विच्छायं सलिनं प्रायो व्याधिस्तेन प्रजायते । ३७१ ॥

तर्जमा।

मरकत मणि अर्थात् पासेने सात प्रकारका अयेवः श्रीर पांच प्रकारका ग्रुण श्रीर श्राट प्रकारकी काया कहते है। ३६८।

पास्त्रेका अयेव।

जो खाभाविक सिग्ध निह, उस्को रूच कहते है, ए ना पाना पहेरनेसे विमारी होति है, श्रीर जो पाना किसी जगहे इल्दिका रङ्ग रस्ता है, उसको विष्कोट कहते हैं, विष्कोट पाद्मा पहेरनेसे प्रस्त्रधातसे मौत होति ह्र । *ई०*०।

पायरके टुक्रेके सहितवाला पाद्मा पहेरनेसे मनका अभिलाष नष्ट होता है, और जिस्की बाकार मलिन होए, उस्पानेको विच्छाय कहते है, एसा पाना होनेसे तरह नरहकी विमारी पयदा हो। ३७९।







369. Seven defects are mentioned as belonging to Emeralds, as also five good qualities and eight shades.

Defects of the Emerald.

- 370. An Emerald which is not cool, is called a Rukshma; it leads to disease. That which has a yellow spot, is called a Bishfota. Death from wounds inflicted by a weapon may be apprehended from wearing it.
- 371. An Emerald to which a stone fragment is inseparably attached, has a baleful influence. That which is dirty, is called a Bic'c'háya. Such an Emerald may bring on a variety of diseases.

অহুবাদ।

মরকত মণির সপ্তবিধ দোষ, পঞ্চপ্রকার গুণ ও অই-বিধ ছায়া নির্দিষ্ট আছে। ৩৬৯।

মরকতের দোষ।

যে মরকত স্বভাবতঃ অন্নিগ্ধ, তাহাকে রক্ষ কহে, তাদৃশ মরকতধারণে ব্যাধি হইয়া থাকে; যাহার একদেশ পীতবর্ণ, তাহার নাম বিক্ষোট, বিক্ষোট মরকত ধারণ করিলে শস্ত্রাঘাতে মৃত্যু ঘটিবার সম্ভাবনা। ৩৭০।

পাষাণখণ্ডযুক্ত মরকতধারণে ইফটনাশ হয়, এবং যাহার আকার মলিন, তাহাকে বিচ্ছায় কহে, তাদৃশ মরকত হইতে নানাব্যাধি উৎপন্ন হইতে পারে। ৩৭১।





मूचम्।

वर्करं ग्रवेरायुक्तं युचगोवभयप्रदं।
जठरं कान्ति हीनं स्याइं ष्ट्रिश्यो भयमादि ग्रेत्। ३७२॥
कुल्माषवणेधवले भृते चत्युभयस्मवेत्।
इति दोषाः समास्याता वर्ण्यन्ते माम्यतं ग्रुणाः ॥ ३७३॥

चय मरकतगुणाः ।
निमानं कथितं खच्छं गुक् स्थाद्गुक्तायुतं ।
सिग्धं रूचिविनिम्भीक मरजस्कमरेणुकं ॥ ३७४ ॥
सुरङ्गं रङ्गवज्जनिति पञ्च गुणाः स्मृताः ।
एतैर्युक्तं मरकतं सर्वेपापभयापत्तं ॥ ३७५ ॥

तर्जमा।

चिनि चर्यात् सफेद शक्करके चूरके समान चूरयुक्त पान्नेको कर्कर कहते हैं, कर्कर पान्ना आओलातको नाश करता है, और कान्तिहीन अर्थात् वेनुर पान्नेको जठर बोल्ते है, जठर पान्ना पहेरनेसे दांतकाट्नेवाले जानवरींका भय पयदा हो। ३७२।

उर्दीके दालके समान वर्णविशिष्ट श्रयात् रङ्गवाला पान्ना पहेरनेसे मौतका भय होए, यही सातप्रकारका श्रयव वयान किया गया, सम्पृति गुणका वयान करते है। ३७३।

पाचेका ग्रण।

निम्मलत, गुक्त, सिग्धत, अरजस्कात और सुरङ्गत यही पांच गुण पाने के प्रधान गुण है, यही सब गुण्युक पाना सब पापको नाम करता है। ३७४। ३७५।



372. An Emerald containing gritty fragments is termed a Karkara. It causes the death of its owner's son; an ugly Emerald is called a Jathara. A Jathara Emerald renders one liable to bites.

373. The Emerald, the color of which is like that of *Máshakalái*,* is fatal to its wearer. These are the seven kinds of defects pertaining to Emeralds. I shall now mention the good qualities.

Good Properties of the Emerald.

374—375. Purity, weight, coolness, freedom from dust, and beauty, are the five principal qualities of Emeralds. Such Emeralds cleanse men from all sin.

অফুবাদ।

শৰ্ক রাযুক্ত মরকত কর্ক র নামে অভিহিত, কর্ক র মর-কত পুজ্রনাশক; কান্তিহীন মরকতকে জঠর বলা যায়, জঠর মরকত দংষ্ট্রিভয়োৎপাদক। ৩৭২।

মাষকলাইয়ের স্থায় বর্ণবিশিষ্ট মরকত ধারণকারীর মৃত্যু আসন্ন। এই সপ্তবিধ দোষের বিষয় বলা হইল, এক্ষণে গুণের বিষয় বলা যাইতেছে। ৩৭৩।

মরকতের গুণ।

নির্দালস্ব, গুরুস্থ, স্নিগ্ধস্থ, অরজস্কত্ব ও স্থাদারস্থ এই পাঁচটী মরকতের প্রধান গুণ, এই দকল গুণযুক্ত মরকত সর্বাপাপক্ষয়কর। ৩৭৪। ৩৭৫।









मुचम्।

धनधान्यादिकरणे तथा सैन्यक्रियाविधौ। विषरोगोपशमने कम्मासायर्वणेष् च। शस्यते सुनिभियस्मादयं मरकतो मणिः॥ ३०६॥

श्रथ मर्कतक्काया।

वर्हिपिच्छ समाभासश्चासपद्यसमाः पराः।
हरित्काचिनभाश्चान्ये तथा श्वालमित्नभाः॥ ३७७॥
खद्योतप्रसङ्काशा वालकीरसमित्वषः।
नवशादलसच्छायाः शिरीषकुस्त्रमोपमाः॥ ३७८॥
एवमष्टी समास्याताश्वाया सरकताश्रयाः।
क्रायाभिर्युक्तमेताभिः श्रेष्ठं सरकतं भवेत्॥३७८॥

तरजमा ।

रत्नपारची पिण्डित कहते हैं, के धनधान्यादि ज्यादा करने केवास्ते लटाइको वक्त, जहरके रोगक्षेवास्ते और अध्यक्षेत्रेदके विधिके कम्म करणे समे उसी सब काममे पान्नेकी मणि वज्जत् श्राच्छि है। ३७६।

मयूरकी पुंच, नीलकण्ड पचीका पङ्घ, सबुज काच, श्रेवाल, भग्युगनीकी पिठ, शुगेके वाचे, नद्द घाम और शिरीषपुल, यही आटप्रकारकी काया पाद्मेमे देख्लाद देति है, और यही आट किसिमका कायाविशिष्ट पान्ना वज्जत् आच्छा है। ३७७। ३०८। ३७८।



TRANSLATION.

376. According to the authorities, the Emerald causes increase of wealth, brings about success in war, cures cases of poisoning, and renders successful the rites performed according to the Atharva-Veda.

Shades of the Emerald.

377—379. The shade of an Emerald is seen to resemble the hue of one or other of the following eight objects:—

The peacock's tail, the wing of the Nilakantha,* yellow glass, moss, the glowworm's back, the young of a parrot, fresh grass, or the Sirisa† flower. Emeralds which possess these shades, are superior.

অনুবাদ।

রত্নতত্ত্ববিশারদ পণ্ডিতেরা কহেন, ধনধান্যাদির্দ্ধি-করণে, যুদ্ধে, বিষরোগনাশনে এবং অথর্ববেদোক্ত কর্ম্মে মরকত মণি অতিপ্রশস্ত। ৩৭৬।

মরকতের ছায়া।

ময়ূরপুচ্ছ, নীলকণ্ঠপক্ষিপক্ষ, হরিদ্বর্ণ কাচ, শৈবাল, খদ্যোতপৃষ্ঠ, শুকশিশু, নূতন তৃণদল ও শিরীষকুস্থম, এই অফবিধ পদার্থের ন্যায় ছায়া মরকতে লক্ষিত হয় এবং এই অফপ্রকার ছায়াবিশিক্টমরকতই সর্বশ্রেষ্ঠ ৷ ৩৭৭৷ ৩৭৮৷ ৩৭৯৷





^{*} A blue-necked jay.

[†] Vide antè.



म्लम्।

शैवालवस्नरीक्सायं सरङ्गं चासविजतं।
श्वनिधं तत्मरकतं प्राद्धः सर्व्यविषापः ॥ ३८०॥
यत् सिन्धश्च षितं रत्मन्य न्मरकताद्भवेत्।
श्रेयस्कामेने तद्धार्थं क्रेतव्यञ्च कथञ्च न ॥ ३८९॥
कविमत्वं सच्चत्वं दृश्यते श्वरिभः कचित्।
धर्षयेत् प्रस्तरे व्यङ्गः काचस्तसाद्विपद्यते ॥ ३८२॥
लेखयेत्नौ चश्च द्वेगं नाथ विलेपयेत्।
सच्चः कान्तिमायाति क्रविमो मलिनायते ॥ ३८३॥

तर्जमा।

जो पाद्मा शेवारके समान कायायुक्त, वज्जत् सृन्दर-रष्ट्र और चासके अथेवसे वर्जित, पिएडत लोग उसको वेकिसत अर्थात् अन्मोल और तामाम जहराका नाश करनेवाला कहते हैं। ३८०।

पान्निके सेवाय दोस्रा रत्न टुट जानेने अपने भालाइ चाहेनेबाले उन्को कभी पहरेक्ने नहि श्रीर खरिटेक्ने निच। ३८९।

जो पाद्मा भुंठा मालुम होगा, उस्को किसी साझे पाद्मेने घिस्ना चाहिये,तवभुंठा पाद्मा टुट जावेगा। ३८२।

लौ हम्द्रजः (एक किसिम्के लो हेको कलमके उदिया जिस्से तालपचपर लिख्ते ही) से खत्देकर चूना लागा-नेके भुंठा पाद्मा मलिन हो जावेगा और आमल पाद्मा वज्जत्साफ होगा। ३८३।



TRANSLATION.

380. An Emerald which is furnished with a shade like moss, which is of a fine color and which is free from flaws, is a priceless gem, and is considered an antidote to poisons of all kinds.

381. Any gem excepting an Emerald found to be broken should not be worn;—nay, should not be

bought by one who has a care for his good.

382. Any Emerald which raises doubts as to its genuineness, should be rubbed against a real one, when the former, if false, will be broken.

383. Or scratch an Emerald with Lauhavringa,* and then smear it with lime. By this process a false Emerald will grow exceedingly dim, while a real one will attain additional brilliancy.

অহুবাদ।

যে মরকত শৈবালের ন্যায় ছায়াবিশিষ্ট, অতিস্থন্দর বর্ণযুক্ত এবং ত্রাসবর্জিত, পণ্ডিতেরা তাহাকে অমূল্য ও সর্ববিষনাশক বলিয়া থাকেন। ১৮০।

মরকত ভিন্ন অন্য রত্ন হইলে শ্রেমাইর্থী ব্যক্তি কখনই তাহা ধারণ, এমন কি ক্রয়ও করিবেন না। ৩৮১।

যে মরকতকে কৃত্রিম বলিয়া সন্দেহ হইবে, তাহাকে কোন অকৃত্রিম মরকতের সহিত ঘর্ষণ করিলেই কৃত্রিমথানি ভগ্ন হইয়া যাইবে। ৩৮২।

লোহভূদ্ন (একপ্রকার লোহলেখনী, উড়িয়ারা যাহা-দারা তালপত্রে লিখিয়া থাকে) তদ্ধারা অঙ্কিত করিয়া চূণ লেপন করিলে কৃত্রিম মরকত অত্যন্ত মলিন হইয়া যাইবে এবং অকৃত্রিম মরকত অধিকতর উজ্জ্ল হইবে। ৩৮৩।

^{*} The iron pen with which an Uriya writes on his palm leaf.







मूलम्।

भन्नातकः पूर्तिका च तदणस्यानुयायिनः ।

मण्मेरकतस्येते लचणीया विज्ञातयः ॥ ३८४ ॥
चौमेण वाममा घृष्टा दीप्तिं त्यज्ञित पूर्तिका ।
लाघवेनैव काचस्य शक्या कर्नुं विभावना ॥ ३८५ ॥

मुलया पद्मरागस्य यन्मूच्यमुपजायते ।
लभतेऽभ्यधिकं तस्मान्मणिमेरकतं शुभं ॥ ३८६ ॥

तथा च पद्मरागाणां दोषैर्मुख्यं विष्ठीयते ।

ततोऽस्मिन्नधिका ष्टानिद्धिकेरकते भवेत् ॥ ३८९ ॥

तर्जमा।

जिस्पान्नेका रङ्ग भेलाया पुंद्र शाकके समान है, बह विजातिमे समार किया गया है। ३८८।

रेशमी काएड़ से घिस्ने से पोतके ए सा रङ्गदार भंठा पाना अप्नेके चमक कोड़ देगा, और सवुजकाचका वनायाज्ञया पाना घालका घोनेसे अनायास मालुम घो जावेगा। २८५।

एक चादद माणिक, एक चादद पाद्वा चगर कोजनमें समान हो, तो पद्मरागसे पाद्मेका दाम च्यादा होगा। इद्रहै।

जिस् अयेवसे पद्मराग अर्थात् माणिकका हाम कम होता है, पान्नेका उस् अयेव होनेसे वज्जत् हाम कम होगा। ३८७।

इति मरकतका वयान ।





TRANSLATION.

- 384. An Emerald which resembles in color the $Bhel\acute{a}^*$ fruit or $Putik\acute{a}$ is not classed with first-rate Emeralds.
- 385. A putiká-colored† false Emerald on being rubbed with a piece of linen, will lose its brightness; and a false Emerald composed of yellow glass can easily be detected by its lightness.
- 386. If a Ruby and an Emerald weigh equally, the Emerald is the more precious.
- 387. That defect, the existence of which lessens the price of a Ruby, reduces that of an Emerald still more.

অনুবাদ।

যে সকল মরকতের বর্ণ ভেলা বা পৃতিকা শাকের সদৃশ, তাহারা বিজাতিমধ্যে পরিগণিত। ৩৮৪।

কোমবস্ত্রে ঘর্ষণ করিলে পূতিকার ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট কৃত্রিম মরকত স্বীয়দীপ্তি পরিত্যাগ করিবে, এবং হরিদ্বর্ণ কাচদারা কৃত্রিম মরকত প্রস্তুত করিলে লঘুভারতাদারা তাহা অনায়াসে উপলব্ধি হইবে l ৩৮৫ l

একখণ্ড পদ্মরাগ ও একখণ্ড মরকত যদি ওজনে সমান ভারী হয়, তাহা হইলে পদ্মরাগ অপেক্ষা মরকতের মূল্য অধিক হইবে। ৩৮৬।

যে দোষে পদ্মরাগের মূল্য অল্ল হইয়া থাকে, মরকতে সে দোষ থাকিলে তাহার মূল্য অত্যন্ত অল্ল হইবে। ৩৮৭।

ইতি মরকত।

^{*} A certain fruit with which Hindu washermen mark the clothes.

† A species of culinary plant.



THE EMERALD.

Its properties.

HE beautiful green color which the Emerald possesses has not been surpassed by any other gem. This color is in pleasing contrast with the lime-stone matrix in which the gem is found. Formerly it was supposed that the coloring matter of the Emerald was the oxide of chrome. but the quantity of chromic acid, obtained by Mr. Lewy, on analysis, was so small as to be inappreciable. He gives it as his opinion that the beautiful tint of the Emerald is produced by some organic substance, which, he imagines, is a carburet of hydrogen, similar to that termed chlorophylle, which constitutes the coloring matter in the leaves of plants. The Emeralds of the darkest tint contain the largest amount of organic matter; and it is remarkable as a test that at a low heat the Emerald loses the color and becomes white and opaque, whilst the minerals of which the coloring matter is chrome (as the chrome Garnet, "Uwarowite") remain unaffected by intense heat. possible that the organic coloring matter of the Emerald may be derived from the decomposition of the animals whose remains are now fos silized in the rock which forms the matrix of the gem. This rock, as stated before, is a lime-stone slightly bituminous, often black with white veins, and con-



taining ammonites and other shells. Mr. Lewy has also arrived at the conclusion that the Emerald has been formed in the wet ways, that is to sav. it has been deposited from a chemical solution. This stone has the same chemical properties as the Bervl or Aquamarine—except in color, which, in the case of the latter, is light blue or sea-green. It belongs to the hexagonal system of crystallization and is found in hexagonal prisms truncated at both ends. Its hardness is between 7:5 and 8 It is scratched by Spinel and can scratch Quartz with difficulty, (though specimens vary in this It is the lightest of all hyalines, its respect.) specific gravity being from 2.67 to 2.75, and its bulk is very large, compared to its weight-it being nearly double the size of a Sapphire of equal weight. It is transparent and its lustre is vitreous. It does not loose its beauty by artificial light. is so brittle and is so soft just when it is taken out of the mine, that it crumbles by friction, but hardens by being exposed to the air. On account of this softness, it loses somewhat of the intensity of its color by long use. It possesses double refraction, though in a very small degree and acquires positive electricity by friction. It generally remains unchanged before the blow-pipe, and if it changes at all, it becomes a shade cloudy. With borax it fuses into a pale green substance much like glass. Acids cannot affect it, but it can be slowly dissolved with microsmic salt, (salt of phos-





phorus). It is composed of silica 68.5; alumina, 15.75; glucina, 12.50; peroxide of iron, 1; lime, 25; oxide of chrome, 3, the rest being made up of traces of magnesia, lime and soda. Its cleavage is imperfectly basal.

Where found.

The Emerald is now to be found in all the four quarters of the globe.

Europe.—Emeralds of the finest quality have been found in the Ural and Altai mountains. The first Emerald, found in this place (in 1830), was discovered accidentally by a charcoal-burner, at the root of a tree in the district of Perni, (east side of the Ural). A regular working of the bed, which followed at once, resulted in the discovery of several good Emeralds, (one of which weighed $101\frac{1}{4}$ carats). The supply has now diminished. Several dark-green and six-sided stones are supplied by Salzburg in Austria. These are not so very transparent as they should be.

Asia.—Several beds of Emeralds are found on the Chinese borders of Siberia and in parts of Burmah, in sands, or beds of small rivers, mixed with pure gold and Spinel. It is a matter of question whether India has ever produced Emeralds. Some that are sent to Europe bear marks of unfinished cutting, (evidently performed by the Indian lapidaries,) and have to be recut there, in order, that they might have their proper beauty.







These are so very unlike in nature to those that belong to South America, that all conjecturers have been at a loss to account for their real locality. A large Emerald, of a medium-sized hen's egg, presented to the Queen Victoria, by the King of Oudh, is said to have been found in Burmah.

Africa.—Those found in Egypt are the most esteemed. Pliny mentions the rocks about Coptos, as containing the celebrated mines of old. According to Mahomed Ben Mansur (13th century), the Emerald mines were situated on the borders of the land of the Negroes, which are still in the possession of the Khedive* De Laet points out the same locality in the 17th century. The mines most known at present are in the mountain of the Sahara, and the beds of the river Harrach (in Algiers), where it joins the river Qued Bouman. Some large specimens have been found in the Dolomite mountains.

America.—This is the place from which the best Emeralds come. The conquest of Peru by the Spaniards has opened a rich field to merchant-jewellers. The conquerors got possession of several large-sized stones, one of which was as big as a pigeon's egg. A large number of Emeralds was taken from the temple of the Sun. When one of the Peruvian chiefs fell into the hands of the Spaniards, he had on his person a collar of Emeralds of large size and of

^{*} This word is evidently a form of the Sanskrit word Khitipa, which means literally, Ruler of the land.







great lustre. They also took possession of the large collection of Emeralds which had remained for centuries in charge of the priests of "Esmeralda"* -a large Emerald of the size of an ostrich's egg, which was supposed by the natives of Manta Valley to have been the abode of the goddess of the same and which was worshipped by them on occasions of high festivals, by the offering of as many of her own daughters (small Emeralds), as they could afford to bring. A Dominican friar, who accompanied the Spaniards, declared that the test of the true Emerald was its infrangibility. The ignorant soldiers, who knew nothing of the brittle character of the stones, began to put them to the test as dictated by the priest, by placing them under the hammer—the result being, as may be imagined, the indiscriminate destruction of a vast number of good and large Emeralds. It is said that the advice of the friar proceeded from interested motives, his object in diminishing the number of Emeralds obtained, being to sell those that he had collected for himself, to the best advantage. Most of the Emeralds now come from Santa Fé and the Tunka Valley, between the mountains of New Granada and Popagan. The Peruvians believed that the Eme-

^{*} Stevenson, in his "Residence in South America, Vol. II.," speaks of the neighbourhood of Las Esmeraldas, as follows; "I never visited it, owing to the superstitious dread of the natives who assured me that it was enchanted and guarded by an enchanted dragon, which poured forth thunder and lightning on those who dared to ascend the river!"







ralds ripened in the matrix just as the fruit does upon the tree; that it was first colorless, and became gradually green, that corner first, which faced the sun. In corroboration of this belief, Pierre De Rosnel, in his book published in 1664, speaks of a Peruvian, who had seen, in Cuzco, an Emerald, a corner of which was green, and the remainder purely white. Philip II. was desirous of obtaining this marvel, but unfortunately the owner of it had shortly before caused the white corners to be rounded off, thinking that this peculiarity detracted from its merit.

The Emerald as known to the ancients.

That the Emerald was known to, and much used by, the ancients, admits of no question whatever. It is called in Arabia, Zamarut; in Chaldean, Ismaragdon; in Greek, Smaragdos; in Latin, Smaragdus; in Spanish, Esmeralda; in French, Emerande; in Italian, Smeraldo. It will appear that the name has undergone but little change in its course through the various countries and that it is evidently derived from the Sanskrit term, "Marakata." Ornaments made of this stone have been excavated from Pompeii and Herculaneum. Similar ornaments have been found in the ruins of ancient Rome and on the Egyptian mummies. Theophrastus says that "the Smaragdus possesses also some peculiar properties, for, it assimilates the color of the water into which it is thrown







to its own color." "It is also good for the eyes; on which account, people wear ring-stones made of it, for the sake of looking at them." Pliny writes about it at great length. In one place he says ;—" It is said that the tomb of Hermias, a prince of that island, which stood on the coast near the Tunnyfishery, was surmounted by a marble lion, the eyes of which were made of these Emeralds, (a proof of their large size and little value), and shot forth such lustre upon the sea as to scare away the fish; nor could the cause for a long time be discovered, until the gems in the eyes were changed." The Emerald was for a long time called the Neronianus, on account of its being a great favorite of the Emperor Nero, who used to see the feats of the gladiators, through an eye-glass of Emerald.* Seneca speaks of Democritus of Thrace as having been possessed with the power of imitating the Emerald and of throwing the fire and color of this stone into a common pebble. Isidorus (Bishop of Seville, 630 A. C.) speaks of the Emerald thus:-"It surpasses in greenness all green stones and even the leaves of plants, and that it imparts to the air around it a green shimmer; that its color is most soothing to the eyes of those engaged in cutting and polishing the stone." Psellos, in the

^{*} Maximilian II. was credited with the possession of a ring set with an Emerald, by the reflection on which he discovered one of his courtiers helping himself to the contents of a gold cup, (filled with ducats—a present to the Emperor), while all were occupied in looking at a grand show, out of the windows of the reception room.





11th century, speaks of it:—"It is leek-green. playing easily into gold and blue, and that it has power, when mixed with water, to heal leprosy and other diseases." An Emerald mine, unquestionably known to the ancients, was discovered in the mountains of Zebarah, (near the Arabian sea.) by Monsieur Caillaud, a French traveller who had undertaken a scientific expedition, at the request of the Pacha of Egypt. He saw ropes, baskets, lamps, levers, tools and utensils of various kinds, lying about all over the place. The Persians used the Emerald, in preference to all other gems, for adorning their jewelled goblets. Ben Mansur says, "several bits of Emerald united together upon one surface, by means of mina (green glass) are called This was evidently borrowed of the Ro-The tradition of the Sacro Catino may have given the idea to the ancient nations. Sacro Catino was the celebrated Emerald dish. which the Queen of Sheba had, along with other gems, offered to Solomon, (who deposited it in the Temple,) and out of which Jesus Christ was said to have eaten the Last Supper. It was taken out of Palestine by the Genoese Crusaders in the 12th century, and was pledged by them for 9,500 livres: It was afterwards redeemed and placed in the church of San Lorenzo, guarded by Knights of Honor and exhibited once a year with great ceremony. It was then seized by the French and carried to Paris, where, after careful examination, it





was pronounced to be a piece of green glass. At the Congress of Vienna (1815), Victor Emmanuel, the King of Italy, insisted upon having the sacred dish, only for the purpose of restoring it to the church of San Lorenzo. The Italians say, that the substitution of the green glass for the real dish was made by the guardians of the sacred relic, before it was taken to Paris.

In the Middle Ages, the Emerald was used to ornament church treasures. In the tiara of the Popes, there was an Emerald, one inch long and $1\frac{1}{4}$ inch thick. There was also a brilliant Emerald in the Crown of Charlemagne.

Ben Mansur divides the Emerald into 7 classes, according to color:—I. The grass-green, (like the beautiful color of the little worms that are often seen in the grass.) II. The Basil-green. III. The Leaf-green. IV. The Verdigris-green. V. The Euphorbium-green. VI. The Myrtle-green. VII. The Soap-green, (which is the worst quality—pale, opaque, and resembling frozen oil.)

The Emerald has been in use amongst the Hindus from time immemorial. They use it profusely in ornaments and fancy articles. It is used as a pendant for the ear and bracelet for the arm. Ranjeet Sing used a bracelet made of one of the finest Emeralds known. Emeralds are often drilled through and strung together to form beads or noserings. They are used in snuff-boxes or as paperslice, hooka-pipe, &c.







Engravings on Emerald.

PLINY says, that on account of its beauty and costliness, "by the common consent of mankind, the stone was spared, being not allowed to be The fact is, that engraved real engraved." Emeralds are seldom met with. A very few can be mentioned. One bore the intaglio head of the Emperor Hadrian, another, that of his consort Sabina, a third, the heads of both facing each other. An intaglio head of the Solar Lion, in full relief, with open jaws, furious and life-like, was engraved upon an Emerald of a very fine color and lustre and of very great value. The Devonshire parure also shows a very large and beautiful Emerald cut into a Gorgon's head in high relief. The Persians were in the habit of engraving upon Emeralds the figures of eagles or beetles, believing in their power of procuring royal favors and of averting tempests. One of these charms had engraved upon it a head of Jupiter within a coiled serpent resting upon a crocodile, surrounded by the symbols of the The celebrated five Emeralds, which Planets. Fernando Cortez brought from the "Golden Castile" (America,) and gave as a wedding present to his bride in 1529, were wonderful specimens of Mexican ingenuity. "The first was in the form of a rose; the second is in that of horn; the third, like a fish with eves of gold; the fourth was like a little bell with a fine Pearl for the tongue; on the rim of





which was the inscription in Spanish, 'Blessed is He Who created thee.' The fifth, which was the most valuable, was a small cup with a foot of gold, and with four little chains of the same metal attached to a large Pearl as a button." Several texts from the Koran have been found on the Emerald. The Hindus have sometimes these stones carved into figures of idols. In his "Narrative of a voyage round the world in 1835-6-7." W. S. W. Buschenberger, M. D., mentions the following:-"In the temple of Boudha, in Siam, there is the figure of the god two feet high, said to be cut of a single This idol had two brilliants, flashing Emerald. light through the temple, in place of eyes, which cost in Brazil twenty thousand Dollars. The value of the whole god s inestimable. I doubted its genuineness, but Prince Momfani assured me it was an Emerald, and not a Beryl as I suggested."

The Cutting of Emerald.

THE Emerald is cut on a copper wheel with emery and polished on a tin one with rotten stone. It is generally trap-cut. The object of cutting it as a brilliant, with rounded tables, is to disguise flaws which would otherwise come to view. The Emerald can be cloven at right angles to its axis. Advantage is taken of this by the Indians, in whose ornaments flat stones of large size are often seen,—simply on this account.







The Price of the Emerald: its Flaws and Defects: Imitations.

In value, the Emerald ranks next to the Ruby. Latterly it has risen enormously in value and has become a great favorite, owing to its uniform pleasing effects, both by night and day. The price depends to a great extent upon its color; for example,

A light color, almost white, is worth 5/a carat.

Lightest green 20/ ,,

A fair body of color ... 100/ ,,

Good color, with flaws, from £10 to £15 ,,

Pure color and clear ... £20 to £30 ,,

Very fine dark color, velvety, and without flaws, as

£50 to £60 ,,

A perfect Emerald should be of a rich, soft, lively, pure, meadow green and without any flaws. But an Emerald without flaws is a rarity. Perhaps there is no other gem which suffers more from inequality of formation, color, transparency and from clouds and specks than the Emerald. The defect is inherent in the stone to such an extent that "an Emerald without flaws" has become a proverbial expression to mean unattainable perfection. Even the smallest Peruvian stone will show one or more specks when cut. In fact, the total absence of any flaws in it should put the would-be purchaser

on guard, as there is no other precious stone which can be more perfectly imitated in glass or counter-



high as





feited, nay, surpassed by paste. There were several pamphlets in Pliny's time, which gave directions for making counterfeit Emeralds. The Rock-Crystal had to be heated and plunged into Verdigris, dissolved in Turpentine. The Crystal became full of minute cracks, into which the coloring fluid entered and tinged the whole substance. Great care was taken in so forming the surface as not to shew these cracks prominently upon it. large flat Emerald, if so held as to reflect the light, will look as if it is silvered at the back; its green will disappear when its plane is brought to certain angle with the incident ray and in the same position it will exactly appear as a bit of looking-glass. This singular change is not to be observed in any other colored-stone. Ben Mansur says, that an Emerald can be distinguished from the Jasper, the Green Laal (Spinel) and the Mina (green glass,) by its polish. In fact, the lustre of the Emerald even in the palest specimens is such as to make it impossible to be mistaken for any other stone of similar color. The ancient glass Emeralds were far superior to the modern pastes, in color, lustre and hardness. A specimen of the former, found at Rome, had been recut and set in a gold ring. Some jewellers, whenever they come across a fine green paste, get it cut and facetted for a ring-stone and sell it for an Emerald to the inexperienced. The Cingalese are known to collect the thick bottoms of wine-bottles, out of which they cut very good







Emeralds, which they sell to the sailors. The Brighton Emeralds are made of similar stuff. The lapidaries of the place purposely throw away the broken bottles into the sea, where, through the attrition of the shingle, they become transformed into natural pebbles and thus bring to the clever artists a good profit.

Pebbles of Quartz are often mistaken for Beryls and vice-versa. If Emerald or Beryl, the fracture will be in planes; if Quartz, it will never be in a straight line but conchoidal.

Marvellous and Medicinal Properties.

This stone was dedicated to Mercury and was supposed to bestow wealth, eloquence and a knowledge of futurity. Used, as an amulet, about the neck, or set in a ring, it preserved women in child-birth and put evil spirits and vain terrors to flight. It was an infallible test of chastity and betrayed or punished its violation by flying into pieces. The following lines by Miss Landon was evidently suggested by this particular virtue of the stone:—

"It is a gem which hath the power to show, If plighted lovers keep their faith or no: If faithful, it is like the leaves of spring; If faithless, like those leaves when withering.

"Take back again your Emerald gem, There is no color in the stone; It might have graced a diadem, But now its hue and light are gone."





According to an ancient author, "he who dreams of green gems will become renowned and meet with truth and fidelity." Even in the modern times, the fall of an Emerald from its setting has been considered an ill-omen. When George III. was crowned, a large Emerald fell from his diadem. The superstitious attribute to this—the loss of America during his reign.

Being like all precious stones, " of a cold, dry nature," the Emerald had very potent medicinal virtues. Applied to the lips, it stopped hemorrhage. When hung round a child's neck, it prevented epileptic fits. It was a restorer of sight and memory. Where it failed to cure any disease or prevent any evils, it shivered into atoms, "being," says Bœtius de Boot, "as it were, bound to expel the evil or confess itself vanquished in the combat it sustains." He also gives directions for extracting out of Emeralds the coloring matter, which, taken internally, was considered a powerful remedy for many di-Amongst the medicinal virtues of the Emerald, he mentions its power of curing dysentry, epilepsy, venomous bites, and pestilential fevers, and gives the following prescription for them:-"Pound the Emerald in an iron mortar, sift the powder through muslin, then cover it with spiritus urina (Sal volatile); the spirit must be distilled off, leaving the powder of a grey color, but which will communicate that of the Emerald to spirits of wine."







Celebrated Emeralds.

THERE are few Emeralds which are known to possess any historic interest. A finger-ring, (diameter, $1\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inch), cut out of a solid piece of Emerald of the purest quality, with two Emerald drops and two collets set with Rose Diamonds and Ruby borders,—once belonging to the Emperor Jehangir of Delhi, whose name is engraved on itwas presented by Shah Suja to the East India Company, and was afterwards purchased by the late Lord Auckland, Governor-General of India. It is now in the possession of Hon. Miss Eden. There is also one in the possession of Duleep Sing, which is three inches long, two inches wide and $\frac{1}{2}$ an inch thick. It is of a rare beautiful color and with very few specks. It was, we believe, shown in the Great Exhibition of 1851. The Russian, Saxon, and Papal Crowns contain beautiful and large Emeralds. There is a Crystal of Emerald in the Austrian treasury which is said to weigh 2,000 carats. The Duke of Devonshire has one whose weight is nearly 9 ounces. It came from the Muzo Mines of New Granada, near Santa Fé di Bogota and was purchased by the Duke from Dom Pedro. It is two inches in diameter and is of the finest color. It is still uncut.

There are some very good Emeralds in Bengal, amongst which we may mention those that are in the estates of the late Rajah Chunder Nauth Roy, of Nattore, of the late Baboos Kally Coomar Tagore





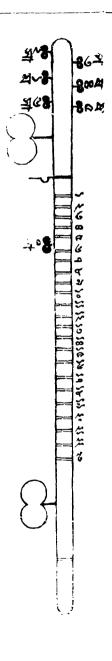
and Soobuldas Mullick of Calcutta. Amongst the jewels, belonging to the estate of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, is an Emerald of about 31 ratis and of exactly the same color as the green grass; another of about 9 ratis and a third of about 5, (the last, without any flaws whatever)—all set in rings. There is also a large stone set in a snuff-box and also one very beautiful paper-slice in the possession of the above Maharajah. One Emerald set in a ring, belonging to the estate of the late Hon'ble Prosonno Coomar Tagore, c. s. i., has engraved upon it, its owner's name in the Persian character. It is now in the possession of the Hon'ble Maharajah.













श्रथ पुष्परागः।

मूलम्।

श्रापीतपाण्डुक् चिरः पाषाणः पुष्परागमं ज्ञस्तु ।
कौकण्टको नाम स्थात् स एव यदि लो हितापीतः ॥ ३८८ ॥
श्रानी हितस्तु पीतः स्वच्छः काषायकः स एवो कः ।
श्रानी ल श्रुक्तवणः सिग्धः मो मालकः स्वगुणः ॥ ३८८ ॥
श्रायन्त लो हितो यः स एव खलु पद्मरागमं ज्ञः स्थात् ।
श्राप चेन्द्रनी ल संज्ञः स एव कियाः स्वनी लः सन् ॥ ३८० ॥
मूल्यं वैदृर्श्य मणेरिव गदितं स्वास्य रत्नशास्त्र विदा ।
धारण्य स्वत्र तिन्तु स्तीणां स्वतप्रदो भवति ॥ ३८१ ॥

पुष्पराग ऋषीत् पुख्राजका वयान ।

तर्जमा ।

योड़ा पीलापनिलयेडिये मनोहर, योड़ा सफेद रज़ पत्यरको पुष्पराग अर्थात् पुखराज कहते हैं, बही पुख-राज योड़ा पीलापनिलयेडिये लालरङ्ग होनेसे कौरण्डक कहलाता है, और योड़ा सुखीमायेल जरद् रङ्ग और खच्छ होनेसे काषाय कहलाता है, और योड़ा सुखी-मायेल सफेद रङ्ग और सिग्ध होनेसे सोमालक कह-लाता है, और बड़त् लालरङ्ग होनेसे पद्मराग कह-लाता है, और बड़त् नीला होनेसे दुन्द्रनील कहलाता है। ३८८। ३८८। ३८०।

रत्नपार्ची पिएडितलोग कहते हैं पुख्राजका मूल चौर पहेरनेका फल लग्नुनियाके समान है। खाम् कर्ते वांज स्त्री पुख्राज पहेरनेसे लेडकोबाली हो सक्ति। ३९९।



THE TOPAZ.

TRANSLATION.

388—390. A certain ash-colored stone having a beautiful yellowish shade, goes by the name of Topaz. If it is red with a yellowish shade, it is called *Kauruntaka*; if it is transparent and yellow with a pale-red lustre, it is called *Kasáyaka*; if it is cool and white with a pale-red shade, it is called *Somálaka*; if it is deep-red, it is called *Padmarága*; and finally, if it is deep-blue, it is called *Indraníla*.

391. In worth and use, (say the authorities) Topazes resemble the coral,—with this difference, that by wearing a Topaz, a barren woman can get a child.

পজারাগ ৷

অহুবাদ।

ঈষৎ পীতের আভাযুক্ত মনোজ্ঞ পাণ্ডুবর্ণ প্রস্তরকে পুষ্পার্বাগ কহে। সেই পুষ্পরাগ ঈষৎ পীতের আভাবিশিষ্ট লোহিতবর্ণ হইলে কোরুণ্টক নামে, ঈষল্লোহিতের আভাব্যুক্ত পীতবর্ণ ও স্বক্ত হইলে কাষায়ক নামে, ঈষং লোহিত্রের আভাযুক্ত শুক্লবর্ণ ও স্লিগ্ধ হইলে সোমালক নামে, অত্যন্ত লোহিতবর্ণ হইলে পদ্যরাগ নামে এবং অত্যন্ত নীলবর্ণ হইলে ইন্দ্রনীল নামে কথিত হয়।১৮৮।১৮৯।১৯০।

মণিশাস্ত্রবিৎ পণ্ডিতেরা কহেন, পুস্পরাগের মূল্য ও ধারণফল, বৈদুর্য্য মণির সদৃশ, বিশেষের মধ্যে পুষ্পারাগ ধারণ করিলে বন্ধ্যা স্ত্রীলোকও পুত্রবতী হইতে পারে। ৩৯১।







मूलम्।

शणपुष्पमः कान्ता खक्कभावस्तु चिक्कणः।
पुत्रदो धनदः पुण्यः पुष्परागमणिमेतः॥ ३८२ ।
देषत्पीतञ्च सक्कायं खक्कं कान्त्रा मनोच्दं।
पुष्परागं भवेक्कुद्धं कथितं रत्नकोविदैः॥ ३६३॥
ब्रह्मादिजातिभेदेन तिहन्ने यं चतुर्विधं।
काया चतुर्विधा तस्य सितापीतासितासिता॥ ३६४॥

तर्जमा।

भ्रामके फुलक समान कान्तिविशिष्ट, खच्छ, विक्रम, पुखराज बद्धत् पाक और दूमी तरहका पुखराज पहेरनेसे वेलेड्केवाला लेड्केवाला और वेधन दौलतवाला होता है। ३८२।

रत्नपार्ची पण्डितके मतके अनुसार घोड़ा जरद्रङ्ग, क्रायाविश्विष्ठ, स्वच्छ चौर मनोचर कान्तिविश्विष्ठ पुसराज उत्तम चै। ३८३।

जिस् तरहमे ब्राह्मण, चित्ति, वैश्व और खूद्र चार जात होते हैं, उसी तरह पुखराजभी चार जात होता है और वही चार किसिमके पुखराजसे सफेंद्र, जरद्, थोड़ा सफेंद्र और कृष्ण यही चारप्रकारकी क्वाया निक्ति हैं। ३९४।







TRANSLATION.

- 392. A Topaz, beautiful as the Sana* flower, transparent and smooth is sacred. By wearing this gem, a person who has no child may be blessed with one; and a poor man acquire riches.
- 393. According to the authorities, a Topaz which has a fine yellowish shade, and which is smooth, is excellent.
- 394. The Brahminical classification of castes holds also with Topazes: they emit white, yellow, whitish and black shades.

অনুবাদ।

শণপুষ্পের ন্যায় কান্তিমান্, স্বচ্ছ ও চিক্কণ পুষ্পরাগ অতিপবিত্ত, এইপ্রকার পুষ্পরাগ ধারণ করিলে অপুত্র ব্যক্তি পুত্রবান্ ও নির্ধন ব্যক্তি ধনী হয়। ৩৯২।

রত্নবিৎ পণ্ডিতদিগের মতে ঈষৎপীতবর্ণ, ছায়াবিশিষ্ট, স্বচ্ছ ও মনোহর কান্তিমান্ পুষ্পরাগই উৎকৃষ্ট। ৩৯৩।

ব্রহ্মাদি জাতিভেদে পুষ্পরাগ চারিপ্রকার হইয়া থাকে, এবং পুষ্পরাগ হইতে শুক্ল, পীত, ঈষৎ শুক্ল ও কৃষ্ণ এই চতুর্বিধ ছায়া নির্গত হয়। ৩৯৪।





^{*} Cannavis Saliva.



मूलम्।

सुच्छायपीतगुरु गाचसुरङ्गगुद्धं विग्धञ्च निर्मालमतीव सुष्टत्तशीतं। यः पुष्परागशकलं कलयेदसुष्य पुष्पाति कीत्तिमितशीय्य सुखायुरशिन् ॥ ३९५॥ कृष्पविन्दु द्भितं रूचं धवलं मिलनं लघु। विच्छायं शक्षरागारं पुष्परागं मदोषकम् ॥ ३८६॥

तर्जमा।

जो चादमी उत्तम कायाविशिष्ट चौर वेच्ययेव जरद् रङ्ग, भारी, सिग्ध, बद्धत् साफ, गोल चौर ठाएडा पुखराज पहरे, उस्की नाम्बरी, वल, सुख, उमर चौर दौलत ज्यादा होति हैं। ३८५।

जो पुखराज क्रिटेदार, नीचा उंचा, सादारङ्ग, थोड़ा मथला, त्रोजनमे चाल्का, कमरङ्ग और दुधक, ऐसा पुखराज बद्धत् खाराफ चै। ३८६।

रति पुखराजका वयान।









TRANSLATION.

395. A man, who wears a faultlessly yellow Topaz possessed of a beautiful shade, weighty, exceedingly cool, flawless, and perfectly round, reaps fame, heroism, happiness, wealth, and length of days.

396. That Topaz which is spotted, rough, white, yet dirty, light, void of lustre, and containing grits, is noxious.

অহুবাদ।

যে ব্যক্তি উত্তম ছায়াবিশিষ্ট, পীতবর্ণ, গুরু, বিশুদ্ধবর্ণ, স্নিশ্ধ, অত্যন্ত নির্মাল, উত্তম গোলাকার ও অত্যন্ত শীতল পুষ্পারাগ ধারণ করে, তাহার কীর্ত্তি, শোর্য্য, স্থথ, আয়ু ও অর্থ বর্দ্ধিত হয়। ৩৯৫।

যে পুষ্পরাগ বিন্দুচিহ্নাঞ্চিত, রক্ষ, ধবলবর্ণ অথচ মলিন, ওজনে লঘু, ছায়াবিহীন ও শর্করাযুক্ত, দেই পুষ্পারাগ দোষদূষিত। ৩৯৬।

ইতি পুষ্পরাগ।











THE TOPAZ.

Its Properties.

HE Topaz belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization. Its specific gravity is greater than that of the Diamond-being from 3.6 to 4.2, but it is next to it in hardness-being 8 in the scale. It is scratched by Diamond only and can very easily cut Quartz. It possesses double refraction, though in a small degree; acquires electricity by heat, friction and pressure, and retains it for several hours. It is transparent and its lustre is vitreous. It is infusible in charcoal before the blow-pipe, but, under the influence of strong heat, the surface breaks immediately as blisters are formed thereon. With borax it fuses into clear glass and gets blue with cobalt solution. It yields hydrofluoric acid by the application of sulphuric acid, but is not affected at all by muriatic acid. Its cleavage is perfectly basal, i.e., it breaks with a flat surface at right-angles with or across the prism. The Topaz is generally divided into two kinds, according to the difference in the chemical composition. Those called the Oriental Topaz, are composed of nearly pure alumina; those known as the Occidental, contain little more than 57 parts of alumina —the rest consisting of silica and fluorine.







Where found: Varieties of the Topaz.

THE Topaz is found in almost all the parts of the world, though it varies in color and appearance in almost every country, where it is met with. Next in importance to the Oriental Topaz, is that variety which comes from Brazil. Those from Villa Ricca have a deep orange tint. The crystals, seldom exceeding 2 or 3 inches in length, are generally found in soft loose sandy clay. Those that come from the province of Minas Geräes, are found in rounded pebbles, perfectly pure and colorless. These are called "pingas d'agoa" or "gouttes d'eau," or the "Novas Minas," and, by the Portuguese, the "Slave-Diamond." These are capable of much higher polish than rough crystal. Some specimens of this kind have been found in Tasmania. where also some blue and green ones have been discovered, though these are more water-worn than those of any other place. Topazes of a fine pale-blue color are also found in the east of Siberia, together with Beryl, Felspar, Quartz. &c.; also in the Ural, north of Katharinburg, in Graphic, Granite and Albite. The Saxon Topaz, found at Altenburg, is generally of a clear, transparent yellow, extremely hard and very brilliant. It becomes perfectly white by being put in a small crucible or in a tobacco-pipe, covered with ashes or sand, and subjected to heat. also found in the Voigtland, 2 miles from Anerback, sometimes covered with a yellowish marl. The





Bohemian Topaz is of a deep hyacinth and sometimes of a brown hue. The so-called German Topaz is nothing more than a sort of glassy spar. The Topaz is also found in Connecticut, the United States, Peru, Ceylon, Asia-Minor, Great Britain, and Ireland, and the Hebridis.

The Topaz as known to the Ancients.

This stone was called in Hebrew,—"Pittdoh," by Professor Aaron Pick, and "Pittdoh," by Gesenius, who (the latter) thought, that it was derived from the Sanskrit word Pita (yellow) and that the Greek "Topásion" is a transposition from "Pittdoh" to "Tipdoh." But the Topazion (found in an island of the same name in the Red Sea,) is not what is known as the present Topaz. Topazion is the modern Peridot, while, according to some, Chrysolite was the ancient name for the Oriental Topaz. The Topaz is one of the stones noticed in the Bible and was, in the Middle Ages, considered to be the emblem of Apostle James the Younger. It was also held in high esteem by the Greeks and Romans.

Cutting and Engraving.

THE Topaz is cut on a leaden wheel with emery and polished with tripoli. The form of cutting is the







full Brilliant, leaving the table smaller and the bezil rather deeper than in the Diamond. The grain (which is the technical expression for the cleavage surface) is well nigh impossible to polish and it becomes necessary for the lapidary to take a small angle from the cleavage plane, instead of cutting it flat, in order that the highest degree of brilliance might be obtained. Now-a-days, few stone-cutters pay the necessary amount of attention to secure the intense whiteness and lustre, which it should have, and the consequence is, a well-cut Topaz has become a rare article. The Goutte d'eau, if cut as a Brilliant, with a small table, will make a beautiful ornament.

There are still to be found several intaglios engraved on this stone by the Greeks. The Emperor Hadrian (Hadrianus Guildmus of Naples) was said to possess a Topaz seal-ring, upon which the following lines were engraved:—

"Natura deficit Fortuna mutatur Deus omina Cernit."

Pliny says, that this stone was found in the Alabaster mines, near the Egyptian city of Thebes. In the Bibliotheque Royal in Paris, is a signet-ring of Topaz, upon which the portraits of Philip II. and Don Carlos, are deeply cut. There is also a Topaz, of a citron-yellow tint, which represents an Indian Bacchus. There is in St. Petersburg a specimen of excellent workmanship on the Topaz,







upon which is engraved the Constellation of Sirius. A Persian jeweller is reported to be in the possession of a Topaz amulet, through which the words "From God alone is success" are bored, in Arabic characters. During his visit to Rome (1524 to 27), Cellini mentions, as one of the three finest antiques procured by him from that place, a perfect Topaz, as big as a hazel-nut, upon which was engraved a head of Minerva. But whether the stone was a real Topaz or not is a matter of question.

Its Price: Imitations.

THE Topaz is not so much liked now as it was 50 years ago. The fact is, it is now only used in the cheapest jewelry, in the jewelling of common Swiss clocks and for optical purposes. The rough stones, used for optical purposes, realize from 5 to 10s. per pound avoirdupois. The pink Topaz fetches better value—the price ranging between 40s. to £20 per ounce, according to the depth of the pink color. The Topaz is called by different names according to the difference of color in the specimens:-The Nova Mina is colorless; The Brazilian Sapphire is light blue; the Aquamarine is greenish; the Brazilian Chrysolite is greenish yellow; the Brazilian Ruby is the artificially obtained pink or rose color. It should be distinctly borne in mind that the fine pink in the Topaz is not natural;





it is obtained by covering a brownish yellow Topaz with sand and putting it to a low red heat. experiment can also be tried by wrapping up the stone in German tinder, bound with thin iron wire, and then exposed to heat, either by setting fire to it or by putting it before the blow-pipe. which are of the peculiar brown color obtain this pink hue; while the pale yellow ones become permanently white. The Topaz can be distinguished from the Chrysoberyl or a yellow Sapphire by putting their electrical properties to the test. A yellow variety of the Quartz is sometimes sold for the Topaz, but a careful reference to the characteristics of each will set the question of identity at rest. The Cairn-Gorm (a variety of the Quartz) is often called by the term "false Topaz," owing to its similarity with the stone. The Egyptian Topaz is sometimes passed off for the Oriental, but it is less hard. The true Topaz should be of a bright citron, and at times, of a bright clear gold color. The soft satin-like hue is the one most preferred.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Topaz.

LIKE the Ruby, the Topaz was gifted with the power of giving light in the dark. A Topaz given by Lady Hildegarde, (wife of Theoderic, Count of Holland) to Monsieur Adelbert, was known to give such a brilliant light throughout the chapel where







it was kept, that prayers could be read without the help of a lamp. According to the Ancients, the Topaz would become pale and obscure if it came in contact with poison. It soothed anger and quenched the heat of boiling water. It drove away sadness and night-mares, strengthened the intellect, sharpened the wit, bestowed courage and if bound on the left arm or hung round the neck, set in gold, it dispelled enchantments. If worn on the left hand, it preserved from sensuality. It was also supposed to possess great medicinal virtues. When powdered and taken in wine, it cured asthma, sleeplessness and many other diseases.

Celebrated Topazes.

The finest Topaz on record is the one which Tavernier saw in the treasury of Arungzebe, when he had an audience with that Emperor in 1665. It weighed $157\frac{3}{4}$ carats and was of an exactly octagonal shape, with two rows of small facets, along the top of the besil. It was purchased by the Emperor, at Goa, for Rs. 1,80,000.

The Braganza, of which fuller notice has been taken under the heading, "Celebrated Diamonds," is universally believed to be a white Topaz of unusual brilliancy and extraordinary weight. There is a heavy crystal at St. Petersburg, which is $4\frac{3}{4}$ inches long and $4\frac{1}{2}$ wide, weighing 31ths. A big lump of white Topaz, now in the British Museum,

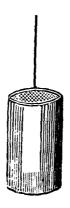






was many years ago used by a London Marine store-dealer as a door-weight, and afterwards sold by him for 3 shillings. Its weight is about 12 lbs. avoirdupois.

There is, in the possession of the Hon'ble Maharajah Joteendro Mohun Tagore, Bahadoor, a very large Topaz, of a beautiful citron tint, weighing about 103 ratis, of very great brilliance and without any flaws whatever. There is also one, with the Maharajah, which is of a smoke-color and weighs about 200 ratis. It forms the pendant to a neck-lace of his family-idol at Moolajore.









अयेन्द्रनील: ।

म्लम्।

इन्द्रनीलस्य सम्भूतिः सिंचलित्रीयमध्यतः ।
नद्या रावणगङ्गायाः जूले पद्मात्ररे समृता ॥ ३८७ ॥
तवासिताञ्चचलभ्रदसनामिभ्रङ्गप्राङ्गीयुधाङ्गचरकण्डकनापिपुच्छैः ।
पुत्रो तरेश्च कुसमिरिकाणिकायासिसान् भवन्ति मण्यः सहमावभागः ॥ ३८८ ॥

दुन्द्रनील या नीलम्का वयान।

तर्जमा।

सिंचलदीपने अन्तर्गतमे रावणगङ्गाके करिद पद्माकर-देशमे दुन्द्रनील या नीला पयदा चौता है। ३१७। तामाम दुन्द्रनीलका रङ्ग समान निच चोता, कोद्र कोद

नीलकमल, नीलाम्बर, बज्जत् साफ तलवार, भ्रमर, क्रष्ण-जीका वदन, महादेवजीका काए, सयूरके पुंकका चांद, श्रीर काले अपराजिताका फुलके समान है। ३८८।







SAPPHIRE.

"——Now glow'd the firmament
With living Sapphires——"
Par. Lost. B. IV.

TRANSLATION.

397. The Sapphire is found in the country of Padmākara near the river Rávana Gangá in Cevlon.

398. All Sapphires are not of the same color. Those found in Ceylon resemble one or other of the following objects:—The blue lotus, a cloth dyed in blue, a polished sword, the *Bhramara*,* Srī Krishna,† Mahádeva's throat,‡ the eye in a peacock's tail, the black *aparájitá*.§

व्यथ हेन्द्रनीन।

अञ्चान।

সিংহল দ্বীপের মধ্যগত রাবণগঙ্গার সন্নিহিত পদ্মা-কর প্রদেশে ইন্দ্রনীল উৎপন্ন হয়। ৩৯৭।

ইন্দ্রনীলের মধ্যে কতকগুলি নীলপদ্ম, নীলবসন, স্থমা-র্জিত করবাল, ভ্রমর, শ্রীকৃঞ্জ, মহাদেবের কণ্ঠ, ময়ুর প্রুছান্ত-র্গত চন্দ্রক, ও কুফাপরাজিতাপুপ্রের সদৃশ হয়। ৩৯৮।

[§] A name applied to several plants, Clitoria Ternatea, Marsilia Quadrifolia, Sesbania Ægyptiaca.



^{*} The black bee.

[†] A God analogous to the Cupid of classical mythology. His color is represented as beautifully gray.

The throat of the Great Destroyer of the Hindu Triad is blue. He swallowed the poison that arose at the far-famed churning of the 'Vasty Sea'—along with the moon, the nectar the fair and lovely Sri'—the Impersonation of all lovelinesss and grace—Mahádeva took in the poison to save Nature and her works, but could not swallow it—a passage in Hindu Mythology rivalled only by the Sufferingat Calvary.



मूखम्।

अन्ये प्रसन्न पयसः पयसांनिधातु-

रस्वुत्विषः शिखिगलप्रतिमास्त्रथान्ये ।

नीलीरसप्रभववुद्दमास्य केचित्

केचित्तया समदकोकिलकएटभामः ॥ ३८८ ॥

एवस्रकारविस्रष्टवर्णेशोभाभिभासिनः ।

जायन्ते मणयस्तिस्तिन्द्रनीला महाग्रणाः । ४०० ।

स्वेतनीलं रक्तनीलं पीतनीलमणापि वा।

क्रषानीलं तथा च्रेयं वास्त्रणादिकमेण तु ॥ ४०९ ॥

काया चतुर्विधा तस्या भृणु वस्त्रामि लच्चणं।

सितच्छायो भवेदिपसाम्बद्धायसु चित्र्यः।

पीतच्छायसु वैश्वः स्वादृषतः क्रष्णदीर्घितः ॥ ४०२॥

तर्जमा।

ससुन्दरका साफ पाणि, मयूरका गला, नीलरङ्ग जलका बुद्बदा और कोकिलका कण्ड दक्की मन चीजोंके समान रङ्ग दन्द्रनीलमे देखा जाता है। और दूसी किसिमका दन्द्रनील सिंचलदेशमे पयदा होता है। ३८८। ४००।

जिम् तरहमे ब्राह्मण, चित्तु, वैश्व और श्रद्ध चारजात होते हैं, उसी तरह नीलम्मेभी चारजात होते हैं। सफेदीमायेल नीला, खुखीमायेल नीला, जरदीमायेल नीला और सेयाहीमायेल नीला यही चारजात होता है। ४०९।

इमी चारजातका इन्द्रनील चारजातके कायाके जरि-येसे जाना जाता है; वास्मणवणकी सफेद काया, चिन्-वणकी सुख काया, वैध्यवणकी जरद काया और श्रुद्रवणकी सेया काया तजविज् कि गेद हैं। 80 २।



399—400. The 'dark blue ocean,' the peacock's throat, the bubbles of blue water and the throat of the mad *Kokila*.* These kinds of the Sapphire are generally found.

401-402. A blue Sapphire with a white shade is a Brahmin; a blue one with a red shade is a Kshetrya; a Sapphire of the same color with a yellow lustre is a Vaisya; and finally a blue Sapphire shining in dark lustre is a Sudra.

অনুবাদ।

সমুদ্রের নির্মাল জলরাশি, ময়ুরের কণ্ঠ, নীলরদের বুদ্বুদ্ ও মত্তকোকিলকণ্ঠ, এই সকল পদার্থের সদৃশ বর্ণ ই সচরাচর ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হয়, এইপ্রকার বর্ণবিভূষিত ইন্দ্রনীল সিংহলে জন্মিয়া থাকে। ৩৯৯। ৪০০।

ব্রাহ্মণাদি বর্ণভেদে ইন্দ্রনীলের শ্বেতের আভাযুক্ত নীল, রক্তের আভাযুক্ত নীল, পীতের আভাযুক্ত নীল এবং কৃষ্ণের আভাযুক্ত নীল, এই চতুর্বিধ বর্ণভেদ হইয়া থাকে। ৪০১।

উক্ত চারি জাতি চারিপ্রকার ছায়া দারা পরিজ্ঞাত হওয়া যায়, ব্রহ্মবর্ণের শ্বেতছায়া, ক্ষত্রিয়বর্ণের রক্তছায়া, বৈশ্যবর্ণের পীতছায়া এবং শূদ্রবর্ণের কৃষ্ণছায়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। ৪০২।





[·] Vide antè.

100 mg

म् चम्।

यथा च पद्मरागाणां जातकचितयं भवेत्।
दुन्द्रनीलेषुपि तथा द्रष्टव्यमिवश्चेषतः ॥ ४०३ ॥
यस्य मध्यगता भातिनीलस्थेन्द्रायुधप्रमा ।
तिमन्द्रनीलमित्याज्जमे हाधं भृवि दुलेभं ॥ ४०४ ॥
यस्तु वर्णस्य भूयस्वात् चौरे शतगुणे स्थितः ।
नीलभावं नयेत् सर्वं महानीलः स उच्यते ॥ ४०५ ॥
दन्द्रनीलस्तु नीलाका पद्मरागस्तु लोहितः ।
यानीलश्कास्त्रिध्य मण्मिरकता भवेत् ॥ ४०६ ॥
यालोहितमापीतञ्च स्रच्हं काषायकं विदुः ।
यापीतपार्षुपाषाणः पुष्परागोऽभिधोयते ।
तमेव लोहिताकारमाज्ञः कौरराहकं वृधाः ॥ ४००॥

तर्जमा।

उत्तम, मध्यम और अधम अर्थात् पहिला, दोस्रा और तिस्रे दर्जेके हिसावने जिस् तरहेसे पद्मराग तिन किमिम्का होता है, उसी तरहेसे नीलाभी तिन किमिम्का होता है। ४०३।

जिस् इन्द्रनीलके बीचमे इन्द्रधनुकको ममान आभा निकेल्ति है, वह इन्द्रनील बद्धत् दुलेभ है, अनायास मिन्नेसे बद्धत् किमतको विकता है। ४०४।

जो दुन्द्रनील ऋप्ने एकश्रौगुले दुधमे रहनेसे तामाम दुधको नीलरङ्ग कर्दे, उस्को महानील बोल्ते हैं । ४०५।

रत्न ने मध्ये जो नीलरङ्ग, वह दन्द्रनील; जो सुखी-मायेल, वह पद्मराग; जो सवुजरङ्ग, वह पान्ना; जो थोड़ा नीलापनिविदेक्तये और थोड़ा सुख, वह काषाय; जो पीलापनिविदेक्तये थोड़ा सादा, वह पुख्राज और वही पुख्राज सुखरङ्ग होनेसे कौरगड़क कहलाता हैं। 8081800।





403. As Rubies are good, middling and bad,—so it is also with Sapphires.

404. That Sapphire whose interior gleams with the iris, is a rare gem of priceless worth.

405. That Sapphire which being thrown into a quantity of milk a hundred times its bulk, paints the whole mass with its native blue, is entitled a mahánīla.

406-407. Of gems, those which are blue, are Sapphires; those which are red, are Rubies; those which are green, are Emeralds; those which are red with a shade of yellow are Kasáyas; those which are ash-colored with a yellow shade, are Pushparágas; those of the last which are red, are called Kaurandakas,

অমুবাদ।

উত্তম, মধ্যম ও অধমভেদে পদারাগ যেমন ত্রিবিধ হয়, ইন্দ্রনীলও সেইরূপ ত্রিবিধ হইয়া থাকে। ৪০৩।

যে ইন্দ্রনীলের মধ্যহইতে ইন্দ্রায়ুধের ন্যায় আভা বিনিঃ-স্থত হয়, সেপ্রকার ইন্দ্রনীল অতিত্র্লভ, দৈবাৎ প্রাপ্ত হইলে মহামূল্যে বিক্রীত হইতে পারে। ৪০৪।

যে ইন্দ্রনীল শতগুণ ছুগ্নে নিক্ষিপ্ত হইয়া নিজনীলবর্ণে সমুদায় ছুগ্ধকে নীলবর্ণ করে, তাহাকে মহানীল বলে। ৪০৫।

রত্নের মধ্যে যেগুলি নীলবর্ণ, তাহারা ইন্দ্রনীল; যে গুলি লোহিতবর্ণ, তাহারা পদ্মরাগ; যেগুলি হরিদ্বর্ণ, তাহারা মরকত; যেগুলি ঈষৎপীতযুক্ত লোহিতবর্ণ, তাহারা কাষায়; যেগুলি ঈষৎপীতের আভাযুক্ত পাণ্ডুবর্ণ, তাহারা পুষ্পারাগ এবং সেই পুষ্পারাগ লোহিতবর্ণ হইলে কৌরগুক বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে। ৪০৬। ৪০৭।





श्रथेन्द्रनीलगुणाः ।

मूचम्।

ग्रुक: सिग्धस वर्णाकाः पार्श्व वर्त्ती च रञ्जकः। दन्ट्रनीलः समाखात: पञ्चभिः समहाग्रुणैः ॥ ४०८ ॥ प्रमाणेऽस्रो ग्रुक्मीने कुलष्टद्विकरो गुक्:। स्रे इं स्वित्वाभाति सिम्धो धनविवर्द्धनः ॥ ४०९ ॥ वालाक्षीभसुखो नीलो वमद्गीलां शिखां हि यः। वर्णाढरो नाम नीलोऽयं धनधान्यविवर्द्धनः ॥ ४१० ॥

नीलाका गुण।

तर्जमा।

युरतः चिम्धतः, वर्णाञ्चल, पार्खवित्तत रञ्जकत्व यही पांच तरहका गुणयुक्त दून्ट्रनील है। ४०८।

जो इन्द्रनील कट्मे छोटा, और खोजनमे भारी, उस्को ग्रक कहते हैं, गुक इन्द्रनील आवलात्की ज्यादाभी कर्ता है; और जिस्के होनेसे हामेसा सुद्रव्यत् होति है, उस्को सिम्ध कन्नते हैं; सिम्ध दुन्द्रनील दौलतकी ष्टिंद्विकर्ता है। ४०६।

स्वक्के सृष्य के सामने रख्नेसे जिस् दून्द्रनीलसे नील-वर्षे शिखा निक्ले, उस्को वर्णाढा कहते हैं; स्रीर वर्णाढा इन्द्रनील जरियेसे धन और धान्यकी टहि होति है। ४९०।







Qualities of the Sapphire.

TRANSLATION.

- 408. Weight, coolness, depth of color, the quality of being *pārsvavartī** and beauty, invest a Sapphire with matchless worth.
- 409. That Sapphire which combines great weight with small bulk is called $Guru\dagger$: such a gem conduces to increase of family. That which always gives out moisture is called Snigdha. A Snigdha Sapphire brings on accession of wealth.
- 410. That Sapphire which, on being exposed to the morning sun, flames in a blue effulgence, is termed Varnādhya. It brings prosperity.

रेन्द्रनीत्नत छन।

অনুবাদ।

গুরুত্ব, দ্বিশ্বত্ব, বর্ণাত্যত্ব, পার্শ্বর্ত্তিত্ব, ও রঞ্জকত্ব, এই পঞ্চবিধ গুণভূষিত ইন্দ্রনীলই শ্রেষ্ঠ। ৪০৮।

যে ইন্দ্রনাল প্রমাণে অতিঅল্প হইয়াও ওজনে অধিক ভারী হয়, তাহাকে গুরু কহে, গুরু ইন্দ্রনীল বংশবৃদ্ধিকর; যাহা হইতে সর্বদা স্নেহ নির্গত হয়, তাহার নাম স্নিগ্ধ, স্নিশ্ধ ইন্দ্রনীল ধনবৃদ্ধিকারক। ৪০৯।

প্রাতঃকালের সূর্য্যাভিমুখে ধারণ করিলে যে ইন্দ্রনীল হইতে নীলবর্ণ শিখা নির্গত হয়, তাহাকে বর্ণাঢ্য বলা যায়, বর্ণাঢ্য ইন্দ্রনীল দারা ধনধান্যাদি রুদ্ধি প্রাপ্ত হয়।৪১০।



^{*} See page 443.

[†] Literally h eavy.

¹ Vide ante.



स्काटिकं रजतं खण्मन्यदा वस्तु तैजमं। पार्घ्व स्थितं नीलमणेः पार्श्ववर्त्ती यशःप्रदः ॥ ४९९ ॥ श्रात्रयं यस्य नीलस्य तमसेव समावतं। रञ्जको नाम नीलोऽयं त्रीयशःकुलवद्वनः ॥ ४९२ ॥

अधेन्द्रनीलदोषाः।

दोषाद्गीले प्रवच्चामि नामभिलेच एँ च षट्। त्रभ्वतपटलच्छाया चासस्यिचक एव च। खदम्मगर्भरौच्याणि महानीलेषु दूषणं ॥ ४१३॥

तर्जमा।

जिम् इन्द्रनीलके एक जगहमे स्फटिक, रूपी, भीणा अथवा औरकोदू चमकनेवाला पदार्थ देखा जाय, उस्का नाम पार्ख वर्त्ती अर्थात् लाजवर्त्त कहते हैं; उस्के पहेरनेसे नास्वरी होति है। ४११।

जो इन्द्रनील किसी वर्त्तनमे रख्नेसे तामाम वर्त्तनको क्रषारङ्ग कर्दे, उस्कानाम रञ्जक है; रञ्जक दुन्द्र-नील दौलन, नास्वरी और आवलातकी ष्टड्डिकर्ते है। ४१२।

नीलाका अयेव।

अभ्वक, चास, चिचक मृद्गर्भ, अक्षगर्भ और रौच्य यही कप्रकारका अथेव दुन्द्रनील में होता है। ११३।



- 411. That Sapphire through which any lustrous substance such as crystal, silver, gold, is seen, is entitled pārsvavartī. A pārsvavartī Sapphire brings on fame.
- 412. That Sapphire which, when placed in a pot, darkens it all through, is called *Ranjaka*. This gem increases wealth and is conducive to fame and increase of family.

Defects of the Sapphire.

413. Avraka, Trása, C'itraka, Mridgarva, Asmagarva and Raukshya are the six defects of Sapphires.

সমুবাদ।

যে ইন্দ্রনীলের একদেশে স্ফটিক, রজত, স্বর্ণ বা অন্য কোন তৈজস পদার্থ লক্ষিত হয়, তাহার নাম পার্শ্বর্তী, পার্শ্বর্তী ইন্দ্রনীল হইতে যশোলাভ হয়। ৪১১।

যে ইন্দ্রনীল কোন পাত্রে স্থাপন করিলে সমুদায় পাত্রটী কৃষ্ণবর্ণ ধারণ করে, তাহার নাম রঞ্জক, রঞ্জক ইন্দ্রনীল লক্ষ্মী, যশ ও বংশ বর্দ্ধন করে। ৪১২।

ইন্দুনীলের দোষ।

অত্রক, ত্রাস, চিত্রক, মূদ্গর্ভ, অশাগর্ভ, ও রৌক্ষ্য, এই ছয়প্রকার দোষ ইন্দ্রনীলে লক্ষিত হইয়া থাকে। ৪১৩।





मृलम्।

श्रम्यत् पटलं यिद्धान् तद्भन्न सिति स्मृतं । धारणे तस्य नम्पत्तिरायुश्चैव विनन्धति ॥ ८९८ ॥ मेदसंत्रयक्तनासस्तेन दं छि, भयं भवेत्। चिचवणे द्वाभाति चिचकः कुलनाणनः ॥ ८९५ ॥ मृत्तिका यस्य गर्भस्या लच्चते रक्षकोविदैः। मृत्तिकागर्भकं नाम तग्दोषजनकं भवेत्॥ ८९६ ॥

तर्जमा।

जिस् इन्नीलके उपरके हिस्से मे अध्वक्त समान छाया मालुम हो, उस्की अध्वक कहते हैं; इस् तरहका इन्द्र-नील पहेर्नेसे उगर और दौनत नाण होति है। ४९४।

जिस् निशानके जिर्थिसे दुन्द्रनील टुटा मालुम हो, उस्को जास कहते हैं; जास अथेवका दुन्द्रनील दांत काट्नेबाले जानवारोंका खौफ पथदा करता है। जो दुन्द्रनील कोद्रप्रकारका रङ्ग रख्ता हो, उस्का नाम चित्रक; चित्रक अथेवका दुन्द्रनील कुलका नाश कर्ता है। ४१५।

जिस्के वीचके हिस्से में माद्विके एँ मा मालुम होए, उस्को मृद्गर्भ कहते हैं; मृद्गर्भ अथेवका नीला जिल-दिकी विमारी पयदा कर्ते हैं। 8१६।



- 414. A Sapphire the surface of which wears a mica-like sheen, goes by the name of Avraka. Such a gem brings about loss of wealth and life.
- 415. That mark in a Sapphire which at first sight looks like a rift, is called *Trása*. A *Trása* renders one liable to bites. That Sapphire which is party-colored, is called *C'itraka*: it causes loss of family dignity.
- 416. The Sapphire which contains dirt, has the sobriquet of *Mridgarva*. This gem produces a variety of skin-diseases like itching.

অञ্বাদ।

যে ইন্দ্রনীলের উপরিভাগে অত্রের ন্যায় ছায়া দৃষ্ট হয়, তাহাকে অত্রক কহে, এইপ্রকার ইন্দুনীলধারণে আয়ু ও সম্পত্তি বিনষ্ট হয়। ৪১৪।

যে চিহ্ন দ্বারা ইন্দুনীলকে সহসা ভগ্ন বলিয়া বোধ হয়, তাহাকে ত্রাস কহে, ত্রাসদ্বারা দংষ্ট্রভয় উৎপন্ন হয়। যাহা নানাবর্ণে চিত্রিত, তাহার নাম চিত্রক, চিত্রক দোষে কুল বিন্ট হয়। ৪১৫।

যাহার মধ্যভাগে মৃত্তিকা দন্নিহিত থাকে, তাহাকে মৃদ্গর্ভ কহে, মৃদ্গর্ভদোষ হইতে গাত্রকণ্ডু প্রভৃতি নানা স্বকের রোগ উৎপন্ন হয়। ৪১৬।





6

मूलम्।

हषत् प्रवच्धते गर्भे अभगभं विनाशकत्।

शक्तरामित्रितं यत्तु तद्रौद्धं कियतं वृधः।

तिसान् धृत दरिद्रतं देशत्यागत्र जायते ॥ ४९७ ॥

दोषेस्यको ग्रणेर्यु क इन्द्रनीलो महामणिः।

यस्य इस्ते भवेत्तस्य चायुर्वेत्वयशस्तरः ॥ ४९८ ॥

इन्द्रनीले धृते शुद्धे शौरिरेव प्रमीदित ।

श्रायः कुलं यशो वृद्धितं धौं भा च वद्धते ॥ ४९८ ।

धार्यमाणस्य ये दोषाः पद्मरागमणेर्युणाः।

धारणादिन्द्रनीलस्य तानेवान्नोति मानवः॥ ४२० ॥

तर्जमा।

जिस् इन्द्रनीलकी अन्दर पायरका सा टुक्रा मालुम होए, उस्का नाम अक्षामभ कहते हैं, अक्षामभका नीला जान मारडाल्ता है। जिस्से चिनिके समान सफेद किटे मालुम हो, अर्थात् दुधक हो, उस्को रौच कहते हैं; रौच्य अयेवका इन्द्रनील जो आदमी पहेरे, उस्को देश कोड़कर भागना हो। ४१७।

वेश्रयेव ज्ञनरवाली दुन्द्रनीलमणि जिम्के पाश रहे। उम्की उमर, जोर श्रीर नाम्बरी ज्यादा होए। ४९८।

जो चादमी वेषयेव इन्द्रनील पहेरता है, नारायण उस्ते खोस होता है; और उस्की उमर, खान्दान, नामरी, चक्केल, दौलत और एी खर्य ज्यादे होए। ४९८।

ग्रुणयुक्त पद्मराग पहेर्नेसे जो फय्दा होता है, ग्रुणयुक्त दुन्द्रनील पहेर्नेसे बड़ी फय्दा होता है, अयेवदार माणिक पहेर्नेसे जो लोक्शान होता है, अयेवदार दुन्द्रनील पहेर्नेसे वही लोकशान होता है। ४२०।





- 417. That which contains gritty fragments, is called Asmagarva. This defect is destructive. That which is rough, is called Raukshya. Banishment is the consequence of wearing this jewel.
- 418. A flawless, sterling Sapphire brings its wearer, strength, fame and length of days.
- 419. The man who wears a Sapphire of spotless chastity, finds favor with Naráyana* and acquires longivity, family dignity, fame, understanding and wealth.
- 420. Those good and bad consequences which follow the wearing of a *Padmarága* combining good and bad qualities, are also produced by the wearing of a Sapphire of a like nature.

অহুবাদ।

যাহার অন্তরে প্রস্তরখণ্ড লক্ষিত হয়, তাহার নাম অশ্বন গর্ভ, অশ্বগর্ভ দোষ বিনাশের হেতু। যাহা শর্করাযুক্ত, তাহাকে রোক্ষ্য বলে, রোক্ষ্যদোষাপ্রিত ইন্দ্রনীলধারী ব্যক্তিকে দেশত্যাগ করিতে হয়। ৪১৭।

দোষহীন অথচ গুণযুক্ত ইন্দুনীল মণি যাহার নিকট থাকে, তাহার আয়ু, বল ও যশ বৃদ্ধি হয়। ৪১৮।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ইন্দ্রনীল ধারণ করে, নারায়ণ তাহার প্রতি প্রদন্ম হন, এবং তাহাতে আয়ু, কুল, যশ, বুদ্ধি, লক্ষ্মী ও সমৃদ্ধি বৃদ্ধিত হয়। ৪১৯।

গুণসম্পন্ন এবং সদোষ পদারাগ ধারণে যে গুণ ও যে দোষ হয়, ইন্দ্নীলেরও তদ্রপ হইয়া থাকে। ৪২০।





^{*} The Preserver of the Hindu Triad.



मूखम्।

युक्भावकितभावावेतेषां नित्यमेव विद्ये यौ ।
काचार्ययावदु तरिवव हुं मानौ विशेषेण ॥ ४२१ ॥
तदाकरसस्र्भूतो मत्तमृङ्गसमद्यातः ।
दीप्तिच्छायाममाविष्टो भ्वामरो मणिक्चते ॥ ४२२ ॥
यारकता यदा तच तदा टिष्टिभसंद्यितः ।
तस्य धारणमाचेण गर्भिणी स्त्रो प्रसूयते ॥ ४२३ ॥
यत् पद्मरागस्य महाग्रणस्य
मूल्यं भवेत्राषसक्तसम्मातस्य ।

तदीन्द्रनीलस्य महाग्रणस्य सवर्णसंख्यात्वितस्य मृत्यं ॥ ४२४ ॥

तर्जमा।

भारी और सक्त होनेसे द्रन्द्रनीलको साचा समभ्राना चाहिये, चर्यात् जाचसे फरक करना चाहिये। ४२९ ।

इन्द्रनीलके खानमेसे भ्रमरको ए से रङ्गका दीप्ति श्रीर छायाविशिष्ट जो मणि पयदा होति है, उस्को भ्रामर कहते हैं। ४५२।

जिस् इन्द्रनीलमे घोड़ा स्नुखीमायेल आभा मानुम हो, उस्को टिट्टिम कहते हैं; टिट्टिम जातका मणि गर्भिणी स्त्रोका गर्भ वज्जत् जलद आरामसे खालास कर्ता है। ४२३।

महागुणसम्मन पद्मराग मणिका जो दाम होता है, युणसम्मन इन्द्रनीलकाभी वही दाम होता है। 828 | इति नीलाका वशन।



- 421. A Sapphire is distinguishable from glass by weight and hardness only.
- 422. A shining gem which is found in Sapphire quarries, resembling the *Vramara*, and furnished with a shade, is called *Vramara*.
- 423. That Sapphire which shows a dash of red, is called a *Tittiva* (amethyst). No sooner a woman who is in her family way, wears a *Tittiva* than she is delivered of her child, with perfect ease.
- 424. The price of the best Sapphire is equal to that of the best *Padmarága*.

অহুবাদ।

গুরুত্ব ও কাঠিন্য অনুসারেই ইন্দ্রনীলকে কাচ হইতে পুথক্ বলিয়া পরিজ্ঞাত হইতে পারা যায়। ৪২১।

ইন্দ্রনীলের আকরে ভ্রমরের ন্যায় বর্ণ, দীপ্তিও ছায়া-বিশিষ্ট যে মণি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভ্রামর মণি কহে। ৪২২।

যে ইন্দ্রনীলে ঈষং লোহিতের আভা দৃষ্ট হয়, তাহাকে টিট্টিভ কহে, টিট্টিভজাতীয় মণিধারণমাত্রেই গর্ভিণী স্ত্রী স্থথে সন্তান প্রসব করে। ৪২৩।

মহাগুণসম্পন্ন পদ্মরাগ মণির যেরূপ মূল্য হয়, গুণশালী ইন্দ্রনীলেরও তাদৃশ মূল্য হইয়া থাকে। ৪২৪।

ইতি ইন্দ্রনীল।







THE SAPPHIRE.

Its Properties.

HE Sapphire is a variety of the Corundum and is of the same composition, hardness and electricity as the Ruby, differing from it only in color, which varies from white to the deepest blue and black. The true Oriental Sapphire is of a clear, beautiful, azure blue, (of the shade formerly called "Bleu du roi,") soft, rich and velvety, neither too light nor too dark. But the blue is seldom pure or spread all over the stone. It is sometimes mixed with black which gives it an inky appearance; sometimes with red, which, though difficult to be seen by day, can be found out by candle-light. Sometimes a Sapphire is found exhibiting a variety of colors. The asteriated or Star Sapphire is usually of a greyish-blue color, and shows, under the microscope, "thread-like shafts, directed towards the faces of the six-sided prisms, said to be spaces left at the moment of crystallization; and it is the reflection of light from these which gives to the stone its star-like brilliancy." "The Star Sapphire is also known under the title of Astrapia (lightning stone), from its supposed action in a colorless or an azure ground, sending out, as it were, rays of lightning diverging from the centre."



Where found.

In former days, Sapphires were found in Persia and Arabia. The best stones now come from Mo-gast and Kiat-pyan, in Burmah, and from Siam. Those that are found in Ceylon are small-sized and rather rose-colored. The blue Sapphire is found in many parts of North America. A fine red Sapphire is said to have been found in South America, with the Diamond. Specimens of the blue and white Sapphires are found in Ballarat, (in Victoria) and near the Pearl river in New South Wales, Australia. The Sapphire is also found in several countries of Europe; on the tops of the Iser Mountains in Bohemia, and in the beds of the river Iser; also in Saxony and Saxon Switzerland.

Samphire as known to the Ancients.

The Sapphire of the present day was known to the ancients as the Hyacinthus. Pliny believed, that it was so called on account of its resemblance to the colour of the flower of the same name. Solinus says:—"Amongst these things (in Ethiopia) of which we have treated, is found also the Hyacinthus of a shining cerulean color; a stone of price, if it be found without blemish, for it is extremely liable to defects." What was called Sapphirus by the classical authors now goes by the name of Lapis-Lazuli. Sapphire was, in old Arabic, termed "Sappeer," to scratch; and in the Syriac and Hebrew languages, it was called by







similar expressions,—probably, on account of the great hardness of the stone and of its power of scratching any other stone, (except, of course, the Diamond.) According to the Ancients, those Sapphires which were of an indigo or very deep color were the male; the pale blue ones, the female. According to Ben Mansur, the Jacut had six divisions; viz., the red, the yellow, the black, the white, the green or peacock-colored, and the blue or smoke-colored. Sapphire came under the last heading—blue, which had three sub-divisions, viz., the light blue, the Lapis-Lazuli blue and the indigo blue, each of which, again, had peculiar grades of tint.

Engraving and Cutting.

The Sapphire being a very hard stone renders itself difficult of being engraved upon. There are still to be found a few specimens of the ancient intaglios, amongst which may be mentioned a magnificent head of Jupiter. This stone was one inch in diameter and was quite accidentally found in the pommel of a Turkish Dagger. In the Marlborough collection is found a Medusa's head in nearly full face, engraved on a very clear and beautiful Sapphire; also, the head of Caracalla, on a stone of $\frac{3}{4}$ inch in length and $\frac{1}{2}$ in breadth. A large pale stone was seen in 1860, in the hands of Mr. Boocke, on which was engraved the figure of an actor in front of an altar, with another actor





imitating his gesticulations. The Signet of Constantius II, a Sapphire of 53 carats, represented that Emperor as spearing a large wild boar, before a reclining female figure. There was another stone, heart-shaped, of a beautiful color and $1\frac{1}{2}$ × $1\frac{1}{4}$, in dimensions, lately seen in the London market, on which was engraved the figure of Hebe feeding the Eagle. Amongst the modern works of Art may be mentioned the portrait of Pope Paul III, executed on a beautiful Sapphire, 3 of an inch square. There is also one pale Sapphire of an octagonal shape, upon which is the bust of Henry IV, with the initials C. D. F., engraved upon it by Coldoré. the cabinet of Strozzi, in Rome, is a Sapphire, upon which is the profile of Hercules engraved by Cincïus. A Sapphire has also been seen in England, on which are engraved the crest and arms of Cardinal Wolsev.

The Brilliant-cut shows the lustre of the stone to the best advantage.

Its Price: Flaws and Defects: Imitations.

SAPPHIRES do not, like the Rubies, rise in value according to their size, but like the Diamonds, in proportion to their color, purity, and symmetry. When a Sapphire is too thick in proportion to its surface, its value is not to be estimated by the weight it actually possesses, but by the weight it should have, if it were properly proportioned. A fine, perfect, evenly-colored, spread Sapphire,







under one carat, if English cut, is worth from £4 to £12; if foreign cut, from £2 to £5; if, of one carat, from £12 to £25. The value of the Star Sapphire, (which the Hindus did and do hold in great veneration), if small, is from £2 to £10; if large, from £10 to £100. A really fine Sapphire should appear blue, as well by day as by night. It has often been noticed that two Sapphires which appear to be of the same color by day, differ widely, by night. "In many of these stones, where the color is partially dark, the lapidary has a method of cutting, by which he takes away the dark colored part, with the exception of a small spot reserved for the cullet, whilst the upper part of the stone is perfectly white; so that when such a stone is looked at from the table, it will present a most vivid hue, often superior in appearance to those stones which are colored throughout. If the stone be held in a pair of ordinary forceps-or corn-tongs, as they are termed in the trade—an inch beneath the surface of clean water, the parts of the stone colored and uncolored will be distinctly apparent." This test might advantageously be applied to all other stones.

The Oriental Sapphire is most highly admired and is consequently of very great value. A perfect stone of this species, weighing about 3 carats, fetches even far higher price than a Diamond of similar weight and quality. But, like the Emerald, it is rarely free from imperfections, which generally







consist of clouds, milky semi-opaque spots, white glassy stripes, cracks, knots, a congregating of colors at one part and silky flakes on the table. The spots are sometimes removed and the color equalized by burning the stone in a crucible, with sand and iron filings, but this process involves serious risks. The white Sapphire resembles the Diamond to such an extent, that when well cut and polished, it may pass for the latter. deception can be detected by taking the specific gravity of each, or by testing the hardness with another Sapphire or with a Diamond. The pale Sapphire, by being rendered perfectly colorless by exposure to a regulated heat, and thereby made to acquire great lustre, has often been sold for the real Diamond. The distinction between this uncolored stone, the white Topaz and the true Diamond can always be made by remembering the fact that neither of the two possesses the iridescence which the Diamond always exhibits when catching the light at a certain angle.

The doublets or semi-stones are counterfeit stones composed of two pieces of crystal, with a color between them so arranged as to make the whole substance appear colored. These are often made use of to cheat the inexperienced. The color may partly point out the imitation; and more specially, the inspection of the girdle, where the inferior stone has been joined. The top of a Sapphire is in some cases genuine, and the under part, a gem of less





value, as for instance, Garnet. Sometimes the under part is glass, artistically joined with the top, with cement. In this case, the application of the file to both the parts at once detects the imposition. Stones that are of a pale color or of little lustre are generally set with a back, often with a colored foil, to add to their beauty. Those that are set "azure" or open, have the interior of the setting enamelled or painted, to throw a tint of color into the gem.

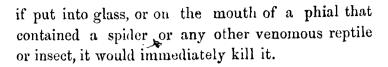
The doublets are often sold by the Cingalese at Colombo, to Europeans and to the passengers by the P. & O. Co.'s steamers. Sometimes blue glass, cut into facets, are sent there from Birmingham and Paris, in order that they might pass for real Sapphire and stones of similar color.

Marvellous and Medicinal Properties attributed to the Sapphire.

EPIPHANES mentions that the vision which appeared to Moses on the mount was in a Sapphire and that the first tables of the law, given by God to Moses, were of Sapphire. It was dedicated by the Greeks to Apollo and was, when consulting his oracle, worn by the inquirer, on account of its divine nature, which was supposed to secure him an early and favorable answer. St. Jerome, in explaining the 19th chapter of the prophecy of Isaiah, states that the Sapphire procures royal favors, softens the anger of the enemies, frees people from enchantment and obtains for them

£ 30

release from captivity. If placed on the heart, it bestows strength and energy. It prevents evil and impure thoughts. Owing to its coldness to the touch, due to its great density, it was thought to have the power of extinguishing fire. It "is said to grow dull, if worn by an adulterer or lascivious person," or by an intemperate man. If "worn in a ring or in any other manner," it "is able to quench concupiscence, and for the reason, is proper to be worn by the priest-hood and by all persons vowed to perpetual chastity." For this reason, perhaps, this stone has been used, to adorn the episcopal ring of office, from the commencement of the Middle Ages down to the present time. The ring of the Abbot of Folleville, the oldest ecclesiastical jewel yet in existence is set with a large Sapphire. Great medicinal virtues have been attributed to the stone. Placed on the heart, it cured fever; on the brow, it stopped hemorrhage. It was an excellent preserver of eye-sight. Sapphire powdered and made into a pill, were placed on the eyes, it would draw out any dust or small insect or any other foreign substance that might have fallen into them, and cured them also of inflammation or irritation by small-pox or any other disease. The application had to be renewed daily for sometime. If the powder were taken internally with milk, it would prove a sovereign remedy for pestilence, fevers, poison, hysteria, &c. The Sapphire is such a deadly enemy to poison that



Celebrated Sapphires.

A VERY large Sapphire of 951 carats in weight, of a beautiful blue color and without a single flaw was seen by the English Ambassador, who had, on some occasion, been sent to Ava. In the Musèe de Minèralogie of Paris, is another very beautiful and flawless Sapphire, weighing 1321 carats. This stone, called the "Wooden Spoon-sellers," from the occupation of the poor man of Bengal who was credited with its discovery, came somehow in the possession of the House of Rospoli in Rome, and subsequently of a German Prince, who sold it to Perrèt, a French jeweller, for 1,70,000 francs, a sum known to be far less than its true value. It is lozenge-shaped and has six faces. The treasuries and regalias of Europe contain some very good Sapphires. There are also some large and beautiful specimens to be seen in the Green Vaults at Dresden. Amongst the several valuable stones to be found in the Russian treasurv is one of a light-blue color, which once belonged to Mr. Hope. There is one Sapphire of considerable beauty and size in Vienna. An English lady had a large-sized Sapphire, which she sold and replaced by such a skilful imitation as to hood-wink the jeweller, who estimated it, for probate duty, at £ 10,000. The disappointment of the legatee, who



came in possession of it, after paying the legacy duty may well be imagined. An oval Sapphire and a drop of a considerably large size and of great purity, belonging to a Russian Countess, were shown in one of the Paris Exhibitions and attracted the notice of all. Several magnificent Sapphires, from the collection of the late Mr. H. T. Hope, were shown in the London Exhibition, where also Mr. A. J. Hope exhibited his well known "Sapphire Marveilleux," which is blue by day and amethystine by night. There is a very large Sapphire, (partly drilled), in the State Crown of England, purchased for it by His Majesty the late King George IV.

A very good Sapphire was once seen with a Mohunt of Mirzapore. Rai Buddree Dass Mokeem has in his possession a small and beautiful stone set, in a ring. The Hindus have a prejudice against this stone and consider it to be the bringer of misfortune. In consequence of this notion, some of them would invariably keep a stone on trial for several days before they would make final settlement with the sellers. Hence, perhaps, the paucity in the number of Sapphires in their possession.







कके तनम्।

मूचम्।

सिन्धा विश्रुद्धाः समरागिण्य यापीतवणा ग्रुरवो विचित्राः। चामवणव्यालविविज्ञितास्य कर्कतनास्ते परमाः पवित्राः॥ ४२५॥ वर्णेन तद्रुधिरसोममधुप्रकाश-मातामृपीतद्ष्वनो व्यालतं विभाति। नीलं गुनः खलु पितं कलुषं विभिन्नं व्याख्यादिदोषकरणेन न तदिभाति। ४२६॥

कके तकका वयान।

तर्जमा।

सिग्ध, वेश्रयेव, सब जगह ममान रक्न, थोड़ा जरद् रक्न, श्रोजनमे भारी, देखनेमे मनोहर श्रीर जास, जंबा नीचा श्रयेव वगैरहमे पास, सर्केतक बद्धत् उमदा है 1859। सुनके समान स्नुख, चन्द्रमाके ममान मफेद, मधुके ममान कम जरद् रक्न, तांवेके समान थोड़ा लालरक्न, श्रामके ममान उज्जूल, नीलरक्न श्रथवा बद्धत् मफेद कर्केतक पापका नाश कर्नेवाला है, लेकिन खुब साफ नाबानानेके श्रयेवमे समक देनेवाला नहिं होता। 85६।



CHRYSOBERYL.

TRANSLATION.

- 425. A Chrysoberyl which is cool, pure, uniformly colored, slightly yellow, heavy, singularly fine and free from such defects as *Trása*, is the best of all.
- 426. A Chrysoberyl which is blood-red, pale like the moon, slightly yellow like honey, light-red like copper, yellow, bright like fire, blue, or white, purges sin away; but sometimes has not that glitter which it has, owing to the defective art of the lapidary.

অথ কক্কে তন।

অহুবান।

মিগ্ধ, বিশুদ্ধ, সর্বব্র সমান বর্ণবিশিষ্ট, ঈষৎ পীতবর্ণ, ওজনে গুরু, বিচিত্র এবং ত্রাসব্রণাদিদোষ-বিবর্জিত কর্কে-তন অতি উৎকৃষ্ট। ৪২৫।

রুধিরের ন্যায় লোহিত, চন্দ্রের ন্যায় পাণ্ডুর, মধুর ন্যায় ঈবং পীত, তামের ন্যায় ঈবং লোহিত, পীত, অগ্নির ন্যায় উজ্জ্বল, নীল এবং শুক্রবর্ণবিশিষ্ট কর্কেতন পাপনাশক এবং সংস্কারকের দোষে ইহা তাদৃশ দীপ্তিশালী হয় না। ৪২৬।





100

मूजम्।

पचेण वाञ्चनमयेन तु वेष्टियत्वा

हस्ते गलेऽय घृतमेतद्दिप्रकारं।

रोगप्रणाशनकरं किलनाशनन्तदायुस्तरं कुलकरञ्च सुखप्रदञ्च ॥ ४२०॥

एविविधम्बज्ज्युणं मिण्मावहन्ति
कर्कतनं ग्रुममलङ्गृतये नरा ये।
ते पूजिता वज्जधना बज्जवान्धवास्य
नित्योज्ज्यूला: प्रमुदिता श्रिप ते भवन्ति ॥ ४२०॥

कर्कतनं यदि परीचितवण्रक्षं

प्रत्यग्रमासुरदिवाकरसुप्रकाशं।
तस्योत्तमस्य मिण्यास्त्रविदा महिस्ना
तुल्यन्तु मूल्यमुदितं तुलितस्य कार्यं॥ ४२०॥

तर्जमा ।

कर्कतक मिण सोनेके पचमे मोड़ कर्के गले श्रयं हातमे पहेरनेसे देख्नेमें बद्धत् श्राच्छा मालूम होता है, रांग श्रीर कलियुगके दोषको नाग्र कर्ता है, श्रीर उमर, खान्दान, सुखकी टिड्ड कर्ता है। ४२०।

जो श्रादमी इम् किसिम्का बद्धगुणमम्पन्न वेश्रयेथ कर्कतक गहनेकेवास्ते पहेरता है, वह श्रादमी लोगसमाजमे पूजित खौर बद्धत् दौलतमन्त, बद्धत् भाइ ब्राद्रवाला, तेजस्वी खौर हामेगा खुस्रहता है। ४२८।

कर्केतक मणि अगर परीचा किया ज्ञया वर्णविशिष्ट. और मूर्यके ममान आच्छि रौमनि पावे, तो रत्नपार्ची पिष्डते के मतके अनुमार उम्कादाम उस्क ओजनके समान होगा। ४२९।

इति क्येतकका वयान ।





- 427. A Chrysoberyl when set on gold and worn on the neck or the hand, is very fine to look at, removes diseases and various vicious properties, and increases life, family and happiness.
- 428. The man who wears a sterling Chrysoberyl free from every defect, is honored among men, acquires wealth, friends, fame and contentment.
- 429. If the color of a Chrysoberyl challenges scrutiny, and if it flames like the sun, it fetches (so say the authorities) a price proportionate to its weight.

অভুবাদ।

বকে তিনমণি স্বর্ণের পাত্রে মৃড়িয়া গলে অথবা হস্তে ধারণ করিলে দেখিতে অতিস্থানর হয়, রোগ ও কলিদোষ নাশ করে এবং আয়ু, বংশ ও স্থাবৃদ্ধি করে। ৪২৭।

যে ব্যক্তি বহুগুণসম্পন্ন নির্দোষ, কর্কেতন রত্ন অলক্ষা-রের নিমিত্ত ধারণ করে, সে মানব লোকসমাজে পূজিত, বহুধনের অধীশ্বর, বহুবান্ধব, দীপ্রিমান ও নিত্য সন্তুষ্ট হয়। ৪২৮।

ককে তিন যদি পরীক্ষিত বর্ণবিশিষ্ট এবং দুর্য্যের ভায় স্থাকাশিত হয়, তাহা হইলে মণিশাস্ত্রবিং পণ্ডিভদিগের মতে তাহার মূল্য ওজনের অনুরূপ হইবে। ৪২৯।

ইতি কলে তন।



THE CHRYSOBERYL.

Its Properties.

HE Chrysoberyl, otherwise called the Oriental Chrysolite, is a brilliant stone, the color of which, varies from asparagus-green to grassgreen, greenish-white, and yellowish-green. belongs to the trimetric or rhombic system of crystallization and possesses a vitreous and oily lustre. It varies from being perfectly transparent to nearly opaque. Its cleavage is parallel to the faces of the right-angled prisms; it breaks with a conchoidal fracture rather uneven. Its specific gravity is from 3.6 to 3.8. It is brittle and translucent; possesses double refraction in a high degree, and acquires by friction positive electricity, which it has the power of retaining for several hours. is infusible before the blow-pipe alone, but with borax or salt of phosphorus, melts with difficulty into clear glass. It is 8.5 in the scale of hardness, scratching Quartz easily and being scratched by the Sapphire, Ruby &c. It is not affected by acids but with a solution of cobalt, it becomes blue. composition has been ascertained to be about 80 per cent. of alumina, and 20 of glucina, with traces of protoxide of iron, oxides of lead and copper, according to color and locality.





Where found.

The Chrysoberyl is found in rolled pebbles in Ceylon, Brazil, Moravia, Pegu, and in the river Tajowaja in the Ural Mountains. The last variety shows by reflected light, an emerald-green hue, and by transmitted light, a red one, and is called the Alexandrite after Alexander, the Emperor of Russia. This stone is also found on the east side of Borneo, mixed with gold dust, Diamond, Topaz, &c. It has latterly been found at Haddam, Connecticut, at Greenfield near Saratoga, New York, and in the granite of Orange Summit, Vermont.

Mode of Cutting.

The transparent yellow Chrysoberyl, which is the variety used in jewelry, is cut in the brilliant form, on a copper wheel with emery and polished with tripoli. The semi-transparent varieties, known as the Cymophanes, and the "Cat's-eyes" of commerce, possess an opalescence and are generally cut en cabchon.

The Chrysoberyl as known to the Ancients.

Chrysoprase appears to have been the gem which was the Chrysoberyl of the Ancients. The name Chrysoberyl is formed of two Greek words, signifying "Golden," and "Beryl." Cymophane is derived from two words, which mean "wave," and "appear;" perhaps, so-called, on account of its variable color.

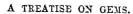


Its Price.

THE transparent yellow Chrysoberyl now being out of fashion and rarely mounted as ornaments, fetches but a nominal value. But the Cymophane or the Chrysoberyl Cat's-eye is worth a good deal; its price varying from £100 to £200 or £300, in proportion to the distinctness and brilliancy of the ray of light across the stone. This gem is considered very lucky by the people of the East, and even by those of the West, and consequently it is getting more valuable than before. An English nobleman is reported to have paid so much as £1000 for one of these. Its beauty is enhanced if surrounded with brilliants or rubies.

The transparent yellow Chrysoberyl, or the Indian Chrysolite must not be confounded with the true Chrysolite, with which it materially differs in hardness and specific gravity; the latter being 6 to 7 in the scale of hardness, and its specific gravity, from 3·3 to 3·5. The Chrysolite, moreover, contains a large element of iron in its composition, and can easily be dissolved into a jelly by sulphuric acid. The Chrysoberyl differs also from the yellow Topaz, in one important point, viz., that of not acquiring electricity by heat.















*J*oj **1**00

ग्रथ पुलकः।

मूलम्।

दामाच्चागटवमेकनकन्यकादौ
गुञ्जाञ्जनचौद्रसणानवर्णाः।
गन्धर्भविक्ककदनीमटणावभाषः

एते प्रशक्ताः पुलका प्रसूताः ॥ ४३० ॥ शक्ताक्रमञ्जाकविचिचवणीः

ख्टाः प्रदिष्टाः प्रमाः पविचाः। माङ्गल्ययुक्ता बज्जभिक्तिचिचा टिड्निप्रदास्ते पुलका भवन्ति ॥ ४३१॥

अथ पुलकका वयान ।

तर्जमा।

हर्का, वग्टार, नम्मीरानदीने किनारे के देशमे पयदा इत्ये ग्रञ्जाने मुखने समान कालारङ्ग, मधु, कमलकी जड़, कस्तूरी, श्राग श्रीर केलेके गाकके समान रङ्गदार पुलक बद्धत् श्राच्छा है। ४३०।

शङ्ख, सफेद कमल, भ्रमर और सूर्यके समान वर्ण-विशिष्ट और सूतदार पुलक बज्जत् पविच और मङ्गल कर्नेवाला है। ४३१।



GARNET.

TRANSLATION.

- 430. The Garnet is produced in the country of Dásarha (Dwáraká) in Bagdad, in the shores of the Narbudda, &c. Of Garnets, those which are colored like the black spot in the Gunjā, like honey, the stalk of the lotus, the musk-deer, fire, or the plantain-tree, are first-rate.
- 431. A Garnet which is colored like the conch, the lotus, the black bee, or the sun, and which is strung on a thread, is sound and auspicious, and heralds good fortune.

অথ পুলক।

অমুবাদ।

দাসার্হ (দ্বারকা) বাগদব (বোগ্দাদ) নর্ম্মদানদীর তীরস্থ প্রদেশোৎপন্ন, গুঞ্জাঞ্জন (কুঁচের শীর্ষদেশস্থ কৃষ্ণবর্ণ), মধু, মুণাল, কস্তুরীমুগ, অগ্নি ও কদলীরক্ষের ভায়ে বর্ণবিশিষ্ট পুলক রক্কই অতিপ্রশস্ত । ৪০০।

শয়, পদ্ম, ভ্রমর ও দূর্ব্যের তায় বর্ণশালী এবং দূত্রোপ-লক্ষিত পুলক অতিপবিত্র, মঙ্গলজনক এবং রৃদ্ধিপ্রদ বলিয়া নিদিষ্ট আছে। ৪৩১।





म्लम्।

काकाश्वरासभशृगान टकोग्ररूपै-

र्यु भ्रेः समांमक्धिराद्र मुखैकपेताः।

चत्युप्रदास्तु विदुषा परिवर्क्कनीया

मुल्यं पलस्य कथितञ्च शतानि पञ्च । ४३२॥

तर्जमा।

काक, घोड़ा, गाधा, श्रेयाल, लेकड़ वाघा, हाड़गेस्नाके सुखके मांसके ममान निशानवाला पुलक मौत कर्ता है, इसीवास्ते पण्डितलोग उस्को कोड़नेको कहते हैं। श्रीर एक पल श्रोजनके पुलकका दाम पांच श्री रूपेयातक हो सक्ता है। ४३२।

इति पुलकका वयान।





TRANSLATION.

432. A Garnet which is colored like the crow, the horse, the ass, the jackal, the bull, or the bloodstained beak of a vulture holding a piece of flesh, brings on death; and the authorities advise us to shun it. A Garnet which weighs one pal,* is worth five hundred Rupees.

অমুব্দ।

কাক, অশ্ব, রাসভ, শৃগাল, রক এবং স্মাংসরুধিরার্দ্রখুথ গুরোপলক্ষিত পুলকধারণে মৃত্যুঘটনার সম্ভাবনা, অতএব পণ্ডিতের। তাহাকে পরিত্যাগ করিতে বিধি দেন এবং পল-পরিমিত পুলকের মূল্য পঞ্ছাত মূদ্রা পর্যান্ত হইতে পারে। ৪৩২।

इंडि পूनक।

* Equal to 4 kar shas.









THE GARNET.

Its Properties.

MHE Garnet belongs to the monometric or cubic system of crystallization, and is, for the most part, found in rhombic dodecahedral crystals, also massive and in small pebbles in rivers and alluvial It is 6.5 to 7.5 in the scale of hardness. It can scratch Quartz slightly and is scratched easily by Ruby or Sapphire. Its specific gravity is from 3.5 to 4.3. Its lustre is vitreous and in some cases resinous. It varies from being transparent to being nearly opaque. Its fracture is uneven or sub-conchoidal. It possesses simple refraction, acquires positive electricity by friction, and has a sensible effect on the magnetic needle. It is fusible before the blow-pipe and melts down to a black enamel. The Garnet is composed of silex, alumina, and a small proportion of oxide of iron, from which it derives its beautiful color. This stone is found of many colors-red, brown, yellow, white, green, black.

Its Varieties: Where found.

Perhaps there is no other stone which varies so much in color, shape, and crystallization as the Garnet. It is to be found in almost all parts of the world.

The Almandine or Precious Garnet is found in the Zillerthal and Tyrol, in parts of Norway



and Sweeden, Switzerland, and Spain, and differs from the common Garnet only in color;—that of the former having a blue tinge mixed with the red; that of the latter being blood-red, slightly tinged with brown. The name Almandine, is according to Pliny, derived from the city of Alabanda (in Carien), where this gem was cut and polished. The Garnet is also found in Greenland, United States, Mexico, Brazil, and many other places in America. Some very fine crystals have been found near Oven and the Peel River in Australia.

The Syrian or Oriental Garnet varies in color from the deepest crimson to a violet purple. It is so called, because it comes from Syrian (or Siriam), the capital of Pegu. It is also found in India and Ceylon.

The Pyrope or Bohemian Garnet is of a fine bright deep-red color and is found in Bohemia, Saxony, and other parts of Germany. Its specific gravity is a little lower than that of the Almandine, but it is one of the hardest stones of the Garnet family. It is called by some jewellers, the Vermilion Garnet, or the Vermeille, on account of its unmixed red color.

The Essonite or the Cinnamon stone is, as its name indicates, of a reddish-yellow color, resembling that of the cinnamon, and comes principally from Ceylon. It melts very easily and is much softer than the other varieties—it being 6.5 to 7, in the scale of hardness.







A new variety of the Garnet has found its way into the market, from Siberia. It is very brilliant and of a beautiful green color.

The other varieties come under the province of the mineralogist rather than that of the jeweller, and are as follows:—

The Grossularite, found in Siberia, is of a greenish, and sometimes black color.

The Succinite, found in Piedmont, is of a yellow hue, of the same composition as the above.

The Colophonite and Melanite, found in Norway and America, are Garnets of the iron-lime species; the one being brown and the other black.

The Leucite, found in Siberia and in the lava of the Vesuvius, is a silicate of alumina and potash, and is of a white color.

The Spessartine, found at Spessart in Germany, and in Sweden and Finland, is brown and is a Garnet of the alumina-maganase species.

The Uwarowite, found in Siberia, is of a bright green and belongs to the lime-chrome class of Garnets. The name is derived from Uwarow, the President of the Imperial Academy of St. Petersburg.

Cutting and Engraving.

BOTH the common Garnet and the Almandine are frequently cut in facets and polished. When the Almandine is cut en cabochon, it is called the Carbuncle; i. e., when it is cut with a convex







surface,—the back being generally hollowed out in order to show off the color of the stone to advantage and also to enable the jewellers to "foil" it, for the purpose of selling it as a Ruby.

The Oriental Garnet is cut with emery or Garnetpowder, on a copper wheel and polished on lead with tripoli, when faceted. The practice is to keep it thin. It is sometimes cut into beads and strung as necklaces.

The Bohemian Garnet is cut as a Brilliant, but more frequently as a Rose, and mounted as a pavè.

The Essonite or Cinnamon stone, is, according to some, "cut thin on account of the depth of color with a pavilion-cut below and a broad table above, bordered with small facets."

The Garnet is easily engraved upon, on account of the small degree of hardness it possesses. Formerly, engravings on this stone were very frequently executed as evidenced by the several beautiful specimens now found in Paris, Turin, Rome, and St. Petersburg. The Greeks do not appear to have made an extensive use of the Garnet for the purpose of engraving. But the Romans have left splendid engravings on this stone. In the Marlborough Cabinet is a large Indian Garnet, upon which is engraved the head of the Dog-star Sirius, in full relief, and with open jaws, the interior of the mouth being very faithfully represented. In the possession of the same Cabinet, is a celebrated Almandine, with the heads of Socrates and Plato







engraved upon it. Several Garnets have been found to bear the image and superscription of different Sassanian kings.

Several antiques of Garnet have been seen, amongst which may be mentioned a cup, "hollowed out of a solid Garnet, as large as a half goose-egg, and which was engraved internally with the name of its ancient owner, Codrus; and a heart-shaped tablet (Hertz collection), covered with a long Gnostic formula on both sides, an Alexandrian work of the third century, is 2½ by 1½ inches in extent, showing the immense magnitude of the crystal from which it has been sawn." catalogue of the French Crown jewels, (1791) are mentioned "an oval cup of a single Garnet, rich in color, $3 \times 2\frac{1}{2}$ inches wide, and 3 inches high, valued at 12,000 francs; and a round cup of oriental Garnet, full of flaws, 3 inches wide by 13 deep; a third is vermeille d'Allemagne, 25 deep, at 6,000 francs; besides six others of less size."

The Garnet as known to the Ancients.

According to some conjecturers, "Garnet" is an Italian corruption of "Garamanticus," an inferior kind of the Carbunculus of Pliny; according to others, the word is derived from the German "Granat owing to the similarity of its color to the blossom and kernel of the pomegranate. According some others, the name is derived from "Granium," a grain, on account of its being often found in that





condition. The name is no doubt modern, but the stone itself was well-known to the Ancients.

Theophrastus and Pliny make copious mention of a stone which exactly answers to our description of the Garnet. It came under the heading of Carbunculus, which Pliny divided into male and female; the former being of a brilliant, the latter of a duller lustre. It has been supposed, from the character of the species as described by that eminent naturalist, that the male Carbuncle was our Ruby, the female, our Garnet. Pliny describes "vessels of the capacity of a pint formed out of Carbuncle devoid of all lustre or beauty of color." These vessels are conjectured to have been formed out of the massive varieties of the Garnet.

Its Price: Imitations.

The Garnet was at one time in great demand for jewelry purposes, but now its commercial value has considerably gone down, owing to its being out of fashion and abundant supply. A Carbuncle of a large size, if pure and free from flaws, will yet fetch as much as £20. One of the size of half-a-crown is said to have been lately sold for £50. The Bohemian Garnet is held in great esteem in Turkey, Austria, and Transylvania, and is sold at very high prices. 600 gulden, or £60, is known to have been asked in Vienna, for a necklace of beads. The Almandines, that come in abundance from Ceylon are, if of a certain size,





of a fine rich hue and perfectly flawless, worth from £8 to £10 each. One Garnet of this description weighing five carats, had been put down for 1,200 francs, in the catalogue of French Jewels mentioned before. The Bohemian Garnet of the size of a hazel nut, would, according to De Boot, be worth as much as a Ruby of the same size. But in De Laet's time, (about 50 years later), both the Indian and Bohemian varieties had diminished in value.

The Almandines set with backs and foils are often sold to the uninitiated, for Ruby. The Essonite sometimes passes for the Hyacinth or Jacinth, with which, however, it differs in essential particulars. Some jewellers frequently confound the one with the other. Then, some of the varieties of the Garnet itself are confounded with each other. The Almandine, the most valued kind, is a stone of great lustre, and, if, of the first quality, cannot easily be detected from the purple Spinel. The Visuvian Garnet is hardly distinguishable from an Essonite.

The common Garnet is exactly of the color of Burgundy wine, more or less diluted, according to its quality. The Bohemian variety differs from it in its chemical composition, but not much in appearance, except that it is brighter and clearer. The Syrian Garnet is sometimes made to compete with the Amethyst. But it can be distinguished from the latter by the disadvantage of its losing







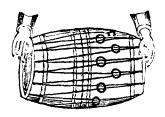
its lustre and assuming an orange tintbycandle-light.

Marvellous and Medicinal Properties.

In the Middle Ages, the Garnet was a gem of great value and was considered to possess the same marvellous and medicinal virtues as the Ruby.

Celebrated Garnets.

GARNETS of extraordinary size have been found in the Cabinet of the Marquis de Drèe; amongst which, may be mentioned one Syrian Garnet, of very good quality, octagonal in shape, which measured $7\frac{1}{5}\times6\frac{2}{5}$, and was valued at 3,550 francs; another of a flame color, which was $10\frac{2}{5}\times6\frac{1}{5}$ in measurement, and valued at 1,003 francs.









श्रथ रुधिराख्यम्।

मूलम्।

तच्चेन्द्रगोपकलितं ग्रुकवक्तृवर्णं संख्यानतः प्रकटपील्समानगाचं। नानाप्रकारविचितं क्षिराख्यरत-सुद्धृत्य तस्य खलु म्ळ्यमानमेव ॥ ४३३॥ मध्येन्द्रपाख्डरसतीवविग्रद्ववर्णं तच्चेन्द्रनीलस्हगं पटलाद्विं स्थात्। ए ख्याप्रस्तावनं क्यातं तदेव पक्षच्च तत्किल भवेत् सुरवज्जवर्णं॥ ४३४॥

श्रथ रिधराख्यका वयान।

तर्जमा।

वीरबज्ज ही के एंसा चिक्क विशिष्ट, सुगे के ठें। ठें। समान लालर क्र और फुटन्त फुल के समान रत्न को क्षिरास्थ कहते हैं। ४३३।

जिस् रिधराख्यके बीचके हिस्सेमे चन्द्रमाके समान पाग्डुवण, और आसपाश वेश्वयेव इन्द्रनीलके समान नील-रङ्ग, वही प्रकार रिधराख्य पहेरनेसे एेख्य की टिडिं होति है। और रिधराख्य खुव पक्नेसे सुरवज्जके समान वर्णविशिष्ट होता है। ४३४।

इति रुधिराख्यका वयान।





CARNELIAN.

TRANSLATION.

- 433. A GEM which is marked like the cochineal, or which is red like the beak of the parrot, and which is shaped like a blown flower is a Carnelian.
- 434. A Carneliau, the interior of which is purely pale like the lunar lustre, and the side of which is like the Sapphire, brings its wearer wealth. When a Carnelian attains its perfect developement, it has a color like the lightning.

অথ ৰুধিরাখ্য।

अञ्दोम।

ইন্দ্রগোপকীটচিহ্নে চিহ্নিত, শুক পক্ষীর ওষ্ঠের স্থায় রক্তবর্ণ, প্রফ্রুটিত পুপোর স্থায় আকারবিশিষ্ট রহ্নকে রুধিরাখ্য কহে। ৪৩৩।

যে রুধিরাখ্যের মধ্যভাগ চন্দ্রের স্থায় বিশুদ্ধ পাণ্ডুবর্ণ, তৎপার্শ ইন্দ্রনীলসদৃশ বর্ণবিশিন্ট, সেই প্রকার রুধিরাখ্য ধারণে ঐশ্বর্য্য-রৃদ্ধি হয়। রুধিরাখ্য অতিপরিপক হইয়া স্করবজ্রের স্থায় বর্ণবিশিষ্ট হইয়া থাকে। ৪৩৪।

ইতি ক্ধিরাধা।







THE CARNELIAN.

Its Properties.

Fight E Carnelian belongs to the Quartz species and is a variety of the Chalcedony;-the liver-colored or brownish-red varieties being called the Sard, and the bright rcd, white and yellow ones, the Carnelian. It is chiefly found in dense imperfect balls; often, however, in obtuse-angled pieces. It is of a cloudy, waxy and semi-transparent lustre. Its hardness is a little less than that of the Chalcedony. It is a fact that its color becomes brighter and intensified by long exposure to the sun, and that by the application of too much heat, it becomes white and pale. The jewellers classify the different kinds of the Carnelian by the following names. "1st, Masc., or Carnelian of old stone, dark red. 2nd, Fem., pale red passing into yellow. 3rd, Sarder, brown, passing into pomeranian and yellow. Sardonyx, where layers of the Sarder alternate with layers of white. 5th, Carnelian Onyx, blood-red stripes playing into white. 6th, Carnelian Beryl, a whitish vellow."

Where found.

THE finest specimens are found in Cambay and Surat, in India and in Arabia. They are also to







be found in Saxony, Scotland, Ireland, New Zealand, and in the rivers of Uruguay. They are also said to be found in Egypt.

Cutting and Engraving.

This stone is cut on a leaden plate with emery and polished on a wooden one with pumice-stone. The finishing polish, is, however, given on a plate consisting of lead and tin, with water. It is generally cut into squares, hexagons or octagons; sometimes round, or by giving the upper part which is called the *treppen* or graduated cut.

The artists of the classical times preferred this stone for cameos, probably on account of its pleasing color and of its possessing a degree of hardness, suited for the execution. In the collection of the Emperor of Germany, is a Carnelian, one of the oldest Greek gems known, on which is engraved a winged Jupiter appearing to Semele, and another an opaque Sardonyx, with a draped figure of Venus represented on it. In the St. Petersburg collection, is a Carnelian, on which is engraved a man's head with a beard most cleverly arranged. specimen of the art of the earliest period. British Musuem, is a specimen of the second period, in the shape of a Carnelian butterfly, with a figure of Venus, with large wings, and wearing a beautiful In the Royal collection of Vienna is a dress. Cornelian of the third period, representing Helena, with wings on her shoulders. A small Carnelian





has been seen in the collection at Florence, bearing a head of Apollo. There is a very transparent Indian Carnelian in the Berlin Musuem, on which is engraved the head of Sextus Pompeius. was once in the possession of Michael Angelo, a famous ancient stone, upon which was represented the birth-day festival of Dionysius. In cutting a Cameo from this stone, the snow-white layer is used for the figure; the red for the base work; and if it has a third layer of pure white, it serves for the hair of the figure. The natives of India cut the figure upon the hard molten mass which is produced by covering the stone with carbonate of soda, and putting it for some time to intense heat.

The Carnelian as known to the Ancients.

This stone was called in ancient times the Sardius or Sarda, which is derived, according to Pliny, from Sardis in Asia Minor, the place where it was first discovered; according to others, from the Arabic word, "Sered," which means "yellow," or "vellowish red." It is said, that the name came with the thing from Persia; and that the Babylonian mines produced the sort first known and most Hence, perhaps, Epiphanius called this stone the Babylonian Sard. Luther translated the Hebrew word "Odem," or "Adam" (red), (vide Exedus, chap. xxvii, V. 17), by the term Sarda; and this fact confirms the assertion that



the Sarda was a stone of a red color. The modern name Carnelian, is, by the generality of authorities. supposed to be derived from Corneus, or raw flesh. which it resembles in color. It is also spelt Cornelian, which name, according to Lessing, is borrowed from the French term Cornaline, or the cornel cherry, to which it is similar in color. Speaking of the Sard, Pliny mentions, in one place, that, "no other stone was so great a favorite with the Greeks as this: at least the plays of Menander and of Philemon revel in allusions to it." He also remarks that this stone is capable of very high polish, which it can retain much longer than any other gem. Ben Mansur divided the Carnelian into seven classes; viz., the liver-colored, rose-red, vellow, white, black, blue, and bi-colored (evidently including some species of the Agate under this designation). He remarked, "although a hard stone, it is commonly used for the engraving of signets upon." It was found in his time at Senaa and Aden in Yemen; on the confines of India and Rum (i. e. the Byzantine Empire), and in the neighbourhood of Basra.

Its Price.

THE Carnelian is not so much used in England as in Germany and Poland. The blood-red specimens are more valuable than the pale-red ones. The price, however, chiefly depends upon the degree of transparency, purity, beauty and







flawlessness of the stones. The abundant supply of the Brazilian stones has sensibly affected their market value, as also the Oberstein method of coloring precious stones. The stone-cutters and polishers in Oberstein and Idar have attained signal success, in not only coloring the surface of the stones but their inner depths. It is said that the Agate merchants at Idar had learnt the use of the honey in coloring the stones from the Romans, who, again, came by the secret either by reading Pliny's works on the subject, or from tradition. The so-called "Carnelian of Brazil" is worked in large quantities in these places.

This stone is profusely used for rings, seals, watch-keys, and other objects of adornment. particularly suited for seals, as it can be very easily taken out of the heated sealing wax, without destroying the impression.

Marvellous and Medicinal Virtues attributed to the Carnelian.

EPIPHANIUS speaks of the Sard as having been supposed to cure tumours and all wounds made by Marbodus, in the 11th century, remarked, that the Carnelian drove away evil spirits and preserved harmony. In the Middle Ages it was supposed to give success in law-suits and bring riches to the owner. Albert Magnus declared that the Sard exhilarated the soul and banished fear and enchantments. The Carnelian, made into powder,







was supposed to be a sovereign remedy for infections, noxious vapours, hemorrhage, &c. It was also an excellent dentifrice. De Laet (in 1647), has described, from personal experience, its power of stopping the bleeding from the nose, and the necessity of wearing rings, cut entirely out of the stone. Some Italians still use rings like these for the same purpose.







श्रंथ स्फटिकम्।

म्लम्।

हिमालये सिंहले च विन्धारवीतरे तथा ।
स्फिटिकं जायते रतं नानारूपं ममप्रमं ॥ ४३५ ॥
हिमाद्री चन्द्रमङ्घागं स्फिटिकं तिह्या भवेत् ।
सूर्य्यकान्तञ्च तचेकं चन्द्रकान्तं तथापरं ॥ ४३६ ॥
सूर्यप्रामाचेण विज्ञस्वमित यत् चणात् ।
सूर्य्यकान्तं तदाख्यातं स्फिटिकं रत्ववेदिभिः ॥ ४३० ॥
पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शदस्तं स्ववित चणात् ।
चन्द्रकान्तं तदाख्यातं दुर्लभं तत्कली युगे ॥ ४३८ ॥

त्र्य स्फटिकका वयान ।

तरजमा ।

हिमालय पर्ब्बत, सिंहलदेश, विन्ध्यपर्ब्बतको जङ्गलको करिवको जमीनसे बद्धत् रौमन तरह तरहका स्फटिक पयदा होति है। ४३५।

हिमालय पर्व्वतमे पौणमामीके चांदके ममान सफेदरङ्ग, सूर्य्यकान्त और चन्द्रकान्त नामे दोकिसिमका स्फटिक पयदा होता है। ४३६।

जो स्फटिक सूर्यके किरणके स्पर्भसे आग देता है, रत्न-पार्ची पण्डित उस्को सूर्यकान्त अर्थात् अतसी सीसा कहते हैं। ४३७।

पौर्णमासीके चांदके किरणके स्पर्धसे जो स्फटिक अस्त देता है, उस्को चन्द्रकान्त कहते हैं, क्लियुगमे चन्द्रकान्त स्फटिक बज्जत दुलेभ हैं। ४३८।





THE QUARTZ.

TRANSLATION.

- 435. A VERY bright Quartz is found in the Himalayas, Ceylon, and the forests in the Vindya Mountains.
- 436. Two kinds of Quartz, respectively called Súrya-kánta and Chandra-kánta,* are produced in the Himalaya. These are deliciously bright as the moon.
- 437. That Quartz which flames in sunshine, the authorities call Súrya-kánta.
- 438. That Quartz which runs nectar when the moon at its full bathes it with its balmy influence, is called *Chandra-kánta*.

অথ ক্ষটিক।

অমুবান।

হিমালয় পর্বত, সিংহল দেশ ও বিদ্ধাপার্বতীয় আরণ্য প্রদেশের সন্নিহিত ভূভাগে অতিপ্রভাশালী নানাবিধ স্ফটিক উৎপন্ন হয়। ৪৩৫।

হিমালয় পর্বতে পূর্ণচন্দ্রসদৃশ শুক্রবর্ণ সূর্য্যকান্ত ও চন্দ্রকান্ত নামে দ্বিবিধ স্ফটিক উৎপন্ন হয়। ৪৩৬।

যে স্ফটিক সূর্য্যের কিরণসংস্পর্শে বহ্নি উদ্গীরণ করে, রত্নতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতেরা তাহাকে সূর্য্যকান্ত কহেন। ৪৩৭।

যে দকল স্ফটিক হইতে পূর্ণচন্দ্র-কিরণ-দংদর্গে অমৃত ক্ষরিত হয়, তাহা চন্দ্রকান্ত নামে অভিহিত হইয়া থাকে। ৪০৮।

^{*} Lit., Sun-like and Moon-like.



मूलम्।

श्राकिपञ्चवक्कायं दा डिमी वी जसिन्न मं। विस्थार वीतरे देशे जायते मन्दकान्ति मं। ४३८॥ सिंचले जायते क्रष्णमाकरे गर्सनील के। पद्मरागमवे स्थाने विविधं स्फरिकसमे वेत्॥ ४४०॥ श्रास्थान निर्माणं स्टब्सं स्वतीव जलं श्रुचि। ज्योति ज्वील नमाश्चिष्टं सुक ज्योतीरसं दिज ॥ ४४९॥ तदेव लो चिताकारं प्रोक्तं राजमयं शुभं। श्रानीलं स्वण्युक् यन्तु राजवक्त सुदाह्यतं। ब्रह्मसूचमयं यन्तु प्रोक्तं ब्रह्ममयं दिज॥ ४४२॥

तर्जमा।

विन्ध्यपर्व्यतके जङ्गलके करिवकी जमीनसे जो स्फटिक पयदा होता है, वह अशोक फुलके पञ्चवके समान क्राया-युक्त और आनारदानेके समान प्रभाविशिष्ट होता है, लेकिन ऐसा रौसन नहिंहोता है। ४३९।

हिमालय देशके गन्धनीलकनामे खानसे क्रव्यारङ्ग स्फटिक पयदा होता है। और जिस् जगह पद्मराग मणि पयदा होति है, बोंहा स्फटिकभी तरह तरहका पयदा होता है। ४४०।

जो स्फटिक बद्धत् साफ, खौर जिससे साफ पाणि निक्ले, खौर यागकी तरह रौसन, उसको सक्त ज्योतीरस कहते हैं, खौर ऐसा जातका स्फटिक लालरङ्ग होनेसे राजवन्त बोला जाता है, नीलरङ्ग होनेसे उन्को राजमय कहते हैं खौर जनेउके समान नियान होनेसे उस्को ब्रह्मनय कहते हैं। 888 | 888 |



TRANSLATION.

- 439. Those Quartzes that are found in the wilds of the Vindya, are furnished with a shade like the leaves of the Asoka* flower, and with a brightness like the seed of the pomegranate; but are not so fair.
- 440. A quarry named Gandha-nílaka in Ceylon, produces a black Quartz. Those places that bring forth the Padma-raga, also bring forth various kinds of the Quartz.
- 441—442. Those Quartzes that are entirely free from flaws, which exude a pure transparent water and which are glorious as the fire, go by the name of Muktajyotīrasa. When these are red, they are called Rájavartas; when bluish, Rájamayas; and when like the holy thread, Brahmamayas.

অমুবাদ।

বিদ্যাপর্বতের অরণ্যদন্মিকটে যে দকল ফটিক জন্মে, তাহারা অশোককুস্থমের পল্লবের ন্যায় ছায়াযুক্ত ও দাড়িমের বীজের ন্যায় প্রভাবিশিক্ত হয়, কিন্তু তাদৃশ কান্তিবিশিক্ত হয় না। ৪৩৯।

সিংহলদেশে গন্ধনীলকনামক আকরে কৃষ্ণবর্ণ স্ফটিক উৎপন্ন হয় এবং যে সকল স্থানে পদ্মরাগ জন্মে, তত্তৎ-প্রদেশে বিবিধ স্ফটিক জন্মিয়া থাকে। ৪৪০।

যে সকল স্ফটিক অত্যন্তনির্মাল, নির্মাল বিশুদ্ধ জলস্রাবী এবং অগ্নির তায় তেজঃপুঞ্জ, তাহাকে মুক্তজ্যোতীরস কহে। তজ্জাতীর স্ফটিক লোহিতবর্ণ হইলে রাজবর্ত্ত, ঈষৎ নীলবর্ণ হইলে রাজময় এবং ব্রহ্মসূত্রময় (পৈতার ন্যায় চিহ্নবিশিষ্ট) হইলে ব্রহ্মময় নামে অভিহিত হইয়া থাকে। ৪৪১। ৪৪২।





^{*} Vide antè.





म्चम्।

मानागगडं तैलाखं ने नाज स्फटिकं दिज। चणालग्रङ्घधवलं किञ्चिद्दणीन्तरान्वितं ॥ ४४३ ॥ न तु तुल्यं हि रत्नानामथवा पापनाशनं। संस्कृतं शिखिना सद्यो मूर्त्यं किष्त्रिक्षभेत्रतः ॥ ४४४ ॥

तर्जमा।

श्राकाशके समान निर्माल स्फटिकको तैलाखा कहते हैं। चांखकी सफेदी, सफेद कमल, कमलकी जब, प्रक्लके समान सफेदरङ और कोइ रङ होने और और रक्षके समान इज्जतके काविल, श्रीर पापका नाश कर्नेवाला निर्दं होता है, लेकिन कारिगर श्रोस्तादके हातका बनाया ज्ञया कुछ किमत रख्ता है। 88३ । 888 ।

इति स्फटिकका वयान ।









TRANSLATION.

443—444. A Tailákya Quartz is pure as the Heavens. When a Quartz is like the white lustre of the eye, the lotus-stalk, or is white like the conch, or is colored like any other object, it is not so valuable, or for that matter, so sacred as other gems. But when a Quartz is refined by a skilful lapidary, it may turn out a good gem.

অহুবাদ।

আকাশের ন্যায় নির্মাল স্ফটিককে তৈলাখ্য কহে। স্ফটিক চক্ষুর ক্ষেত্র, বা শেতপদ্ম, বা মৃণাল, অথবা শদ্খের ন্যায় ধবলবর্ণ কিম্বা অন্য কোন বর্ণান্বিত হইলেও অপরাপর রত্নের সদৃশ গৌরবান্বিত বা পাপনাশক হইতে পারে না, তবে নিপুণ শিল্পী দ্বারা উত্তম সংস্কৃত করিলে স্ফটিকের মূল্য কিঞ্চিং বৃদ্ধি হয়। ৪৪৩। ৪৪৪।

ইতি ফটিক।





THE QUARTZ.

HE Quartz belongs to the hexagonal rhombohedral system of crystallization. There are many varieties, however, which are found massive and compact. The specific gravity of each of the varieties, is from 2.5 to 2.8; its hardness 7 in the scale. In the transparent specimens, the lustre is vitreous, in the opaque ones, it is rather resinous. The fracture is conchoidal and the cleavage not very distinct. It possesses double refraction and acquires positive electricity by friction. The Quartz is formed of pure silica or silicon 48.04 and oxygen 51.96. It is not affected by any acid but hydrofluoric. It is infusible before the blowpipe, but when put before the flame of the oxyhydrogen jet, it melts and then can be drawn into fine threads, and at last becomes volatalized. one piece of Quartz is rubbed with another, both become phosphorescent and "emit an empyreumatic odour."

Its Varieties.

ALL the varieties of the Quartz are of the same composition and have the same properties. The difference of color in the specimens gives us the different names. The whole family of Quartz may be classed under three heads:—

The Vitreous—or transparent.

The Resinous—or opaque.







The Jaspery—or the specimens possessed of the dull color and opacity of the Jasper.

The following Stones come under the 1st Class:—

THE Rock Crystal, (of a white color); the Amethyst, (of a fine violet color); the Cairn-gorm, (so-called, on account of its being found in the Cairn-gorm mountains of Scotland), also called the False Topaz, (of a brown and yellow color); and the Aventurine (of a grey, brown or reddish-brown color.)

The following Stones come under the 2nd Class; (i. e., Chalcedonic Variety):—

The Chrysophrase (of a fine apple-green); the Onyx (with a blackish, brownish or greenish layer); the Sardonyx (having red, or brownish and white layers); the Sard (of a brownish red) and Carnelian (red, white and yellow); the Chalcedony (of a greyish, or milky-white or pinkish color); the Chalceydonyx (having alternate stripes of white and grey); the Mocha-stone (or Moko-stone, "containing infiltrated dendritic oxides of maganese and iron, which gives it the appearance of containing vegetable remains"); the Plasma (of a grass or olive-green color, with yellow and white specks); the Agate (of various colors); and the Quartz Cat's-eye.

The following belong to the 3rd Class:—

THE Jasper (yellow, red, green, black and brown); and the Blood-stone or Heliotrope (of a dark-green color, sprinkled with blood-red specks.

Fuller notice will be taken of some of these stones, in their proper places.







श्रथ भी भम्।

मूलम्।

किन्ति मगधे चैव मनये च हिमानये।
भीषारत्मसृत्यत्तिस्य नचणमुच्यते ॥ ४४५ ॥
ग्रुकाः ग्रङ्घाङ्गिनभाः स्थोणाकसिद्धभाः प्रभावन्तः।
प्रभवन्ति ततस्वकृणा वज्रिनभा भीषापाषाणाः ॥ ४४६ ॥
हेमादिप्रतिवद्धं ग्रुड्डमिप श्रुड्डया विधन्ते यः।
भीषामणिं ग्रीवादिष् स सम्पदं सर्वदा नभते॥ ४४७ ॥

श्रय भीश्रमणिका वयान।

तर्जमा।

किल क्रिकेश, मगधिरेश, मलयगिरि और हिमालय पर्व्वतमे भीषारत पयदा होता है, तपमील वार उस्का वयान होता है। ४४५।

भीषामणि शङ्ख, मफेट कमलके नमान सफेट रङ्ग; मोणा-फुलके ममान जरद्रङ्ग श्रीर नया होनेसे हीरेके समान चमक देनेवाला है। ४४६।

जो आदमी वेअयेव भीषारत मोणेमे जड़ कर्के गले अथवा चातके पहेरे, वह आदमी हामेमा तरह तरहके दौलतका हिस्सादार है। 889।





THE ROCK CRYSTAL.

TRANSLATION.

- 445. The Rock Crystal is produced in Kalinga, Magadha, and the Malaya and Himalaya Mountains. Its properties I shall now describe.
- 446. A Rock Crystal is sometimes white like the conch or the lotus,—sometimes it is yellow like the *Syonaka* flower. When fresh, it is dazzling like the diamond.
- 447. A man who wears a sterling Rock Crystal set on gold, acquires success in life.

অথ ভীয়া।

অञ্বাদ।

কলিঙ্গ ও মগধপ্রদেশে এবং মলয় ও হিমালয়-পর্বতে ভীশ্মরত্ন উৎপন্ন হয়, ক্রমশঃ তাহার লক্ষণাদি বলা যাই-তেছে। ৪৪৫।

ভীশ্বমণি শশ্ব ও পদোর তায় শুক্র, শ্যোণাকপুষ্পের তায় পীত-বর্ণবিশিষ্ট এবং নৃতন অবস্থায় হীরকের তায় প্রভাশালী হইয়া থাকে। ৪৪৬।

যে ব্যক্তি বিশুদ্ধ ভীষ্মরত্ন স্থবর্ণবদ্ধ করিয়া গ্রীবাদিতে ধারণ করে, দে ব্যক্তি সর্ববদা নানাসম্পদ্ভাগী হয়। ৪৪৭।







म्लम्।

गुणयुक्तस्य तस्यैव धारणान्मुनिपुङ्गव ।
विषाणि तानि नम्बन्ति सर्व्वाण्येव महीतने ॥ ४४८ ॥
विषमा नावाधन्ते ये तमरण्यनिवामिनः समीपेऽपि ।
हीपिष्टक्रणरभकुञ्चरसिंच्याष्ट्राद्यो चिस्ताः ॥ ४४८ ॥
शास्यन्ताङ्गतान्यपि सर्पाण्डजाखुद्दिकविषाणि ।
सिल्लाग्निवैरितस्करभयानि भीमानि नम्बन्ति ॥ ४५० ॥
श्वनवलाच्द्वामं पक्षं पीतप्रभं प्रभाचीनं ।
मिल्नद्यति विवर्णं दूरात्परिवर्ज्ञयेत् प्राज्ञः ॥ ४५९ ॥

तर्जमा।

गुणशाली भीषारत पहेरनेसे सव किसिम्का जहेरका दोषनाश होता है, और लेकड वाघा, सेर, शरभ (एक किसिम्का चाट पाचेंका हिंसक चर्यात् दारिन्टा जानवार), हात्यी, सेर वगैरह जङ्गलके रहनेवाले हिंसक जानवार उसके पाशभी चा नहिंसक्ते। ४४८। ४४८।

भीषारत पहेरनेसे वमांय, चूया, विच्छ्का जहेर छौर जल. आग, दुस्मन और चोरका डर नहिरहता। ४५०।

सेवार, मेघके समान रङ्गदार, कर्क्स, जरद्रङ्ग. वेचमक, मयला और बद्रङ्ग भीष्ममणिको परिख्तनीग दूरहीसे कोड्नेको कहते हैं। ४५१।







TRANSLATION.

- 448—449. A good Rock Crystal is an infallible remedy in all cases of poisoning. Wild animals like the leopard, Sarava (an eight-footed beast), the elephant, the lion and the tiger, cannot approach this gem.
- 450. It neutralizes snake, rat, and scorpion poisons, and the wearer need never fear drowning, fire or a thief.
- 451. A moss-colored, cloud-like, rough, yellow, dull, dirty and discolored Rock Crystal the authorities shun from a distance.

অমুবাদ।

গুণশালী ভীয়রত্ন ধারণ করিলে সর্বপ্রকার বিষদোষ প্রশমিত হয়, এবং দ্বীপি, শরভ (এক প্রকার অফপাদ হিংস্রক জন্তু), হস্তী, সিংহ ও ব্যাঘ্র প্রভৃতি অরণ্যবাসী বিষম হিংস্র জন্তুবর্গ তাহার সমীপেও আগমন করিতে পারে না। ৪৪৮। ৪৪৯।

ভীম্মণি ধারণ করিলে সর্প, ইন্দুর ও রশ্চিকের বিষ, এবং সলিল, অগ্নি, শত্রু ও তন্ধরের ভয় প্রশমিত হয়।৪৫০।

শোবাল ও মেঘের তায় বর্ণবিশিষ্ট, কর্ক শ, পীতপ্রতা-শালী, হীনপ্রত, মলিন ও বিবর্ণ তীম্মমণিকে পণ্ডিতেরা দূর হইতে পরিত্যাগ করিবেন। ৪৫১।







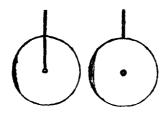


मूल्यं प्रकलामेषां व्रधवरेदेशकालिक्जानात्। दूरेभूतानां बक्ज किञ्चित्रिकटप्रसूतानाम्॥ ४५२॥

तर्जमा।

पिएडतलोग देश और समयके भेदसे भीक्षामणिका मोल ठिक कर सक्ते हैं, अर्थात् बज्जत् दूरदेशका पयदा ज्ञया भीक्षामणिका ज्यादा और नज्दिक् देशमे पयदाज्ज्या भीक्षा-मणिका कम दाम कहते हैं। ४५२।

इति भीश्रमणिका वयान।





TRANSLATION.

452. Rock Crystals vary in price (say the authorities) in accordance with time and place,—i. e., a Rock Crystal coming from a distant country, is more, and that produced near, is less precious.

অনুবাদ।

পণ্ডিতেরা দেশকালভেদে ভীম্মণির মূল্যের তারতম্য করিয়া থাকেন, অর্থাৎ বহুদূরদেশোৎপন্ন ভীম্মরত্নের অধিক এবং নিকটস্থ প্রদেশোৎপন্ন ভীম্মরত্নের অল্প মূল্য নির্দেশ করেন। ৪৫২।

ইতি ভীম।









THE ROCK CRYSTAL.

Its Properties.

pure white, to greyish white, yellow white, yellowish-brown, clove-brown and black. This stone sometimes contains a mixture of mica, rutile, tourmaline, topaz, chlorite, &c., and in some specimens possesses a cavity containing water with an air-bubble in it, which moves as the stone is turned. There are some pieces of this nature coming from Madagascar, which emit a smell like that of burnt oil when subjected to friction.

Where found.

This stone is found in numerous places, among which may be mentioned, several places in Ireland, Scotland, France, Hungary, India, Ceylon, Brazil, Canada, Australia.

Cutting and Engraving.

THE Rock Crystal is cut on a copper wheel by means of emery and polished with tripoli. It is generally cut in the form of a brilliant, rose or table. Splinter of Diamond is used, in case it is required to be drilled. Diamond-powder is necessary for engraving, and sometimes a device is etched on the stone with fluoric acid. Amongst the engravings on the Rock-crystal, may be mentioned, "the contest between Hercules and Antæus,"







and an image of Arsinoë, drawn by Satyreius. In the British Museum may be seen a stone of $7 \times 3\frac{1}{2}$ inches in dimension, upon which is engraved the "Crucifixion."

The Rock Crystal as known to the Ancients: Its Uses.

This stone was extensively known to the ancient nations. The Egyptians used it for making cylinders, scarabæi, &c. Theophrastus mentions that it was selected for seals. Pliny says, that it was very largely used for house ornaments. Its name (derived from the word "Crystallus") signified "ice," and the Ancients thought it to be ice congealed by intense cold, and that it could only be found in the frozen regions. Some of them would not even expose it to great heat, lest it should melt. The Emperor Nero is said to have possessed a pair of beautiful Crystal Cups, which he broke asunder, out of jealousy and anger, when he heard of the loss of his kingdom. The Empress Livia gave to the Capitol of Rome, a piece of Crystal, weighing 50ths. The Roman doctors used the Crystal-balls as lenses, in order to burn out sores. On account of its hardness and superiority to glass, this stone is used for making lenses for spectacles, and is then known as the pebble. The natives of India hollow it out into cups, goblets &c., of very great thinness, and often cover them in beauti-







ful ornamentation. The Chinese use it for the same purpose. The Japanese cut it into large round balls, which are said to be used for cooling the hands. The Indians believe the Crystal to be the mother or external husk of the Diamond—calling the Diamond, the ripe, and the Crystal, the unripe Diamond.

Its Price: Imitations.

THE price depends upon the quality and size required for particular purposes. Those, for instance, that suit for lenses, vary from 2s. to 15s. per pound avoirdupois, but those of a larger size, intended for cups, dishes, &c., and the execution of which is attended with considerable time and risk, fetch a very great price. The green, pink and various other colored beads, which are sold in Switzerland and Germany, are made of crystals colored, by being exposed to heat and put to various chemical solutions. The sudden change of temperature causes the Crystal to crack all over, and the solution easily enters the pores of this stone, and to the naked eye, gives it the appearance of being colored through-The Rock Crystal is used for rings, pins, earrings, seals, caskets, &c., and specimens of these, found in private hands, are still highly valued, though the glass imitations and the abundant supply from Madagascar, have considerably lessened its price. Strass or paste is often sold for Crystal (when







pure and free from air-bubbles,) but it can be easily made out by its greater weight and inferior hardness.

Marvellous and Medicinal Properties.

In the middle Ages, this stone was believed to be an enemy to poison and had the virtue of betraying its presence either by breaking into pieces or becoming obscured. The famous "Show Stone" of Dr. Dee, a sphere of 3 inches in diameter, was known to possess magical properties, and would show to those that consulted it future events and distant persons. This stone may still be seen in the British Museum. The Crystal, powdered and mixed with wine, was a sovereign remedy for dysentery. Orpheus recommended it as the medicine for diseases of the kidneys. Marbodus mentions, that Crystal powdered and mixed with mulsum (wine and honey,) if used by women suckling, would give them an abundant supply of milk. Pieces of Crystal were supposed to allay the thirst of fever, if held against the tongue of the patients.

Celebrated Rock Crystals.

CRYSTALS, of various sizes and in various forms and of considerable value, may be seen in private collections and in public Museums. The finest







work in Rock Crystal in existence, is said to be an urn, $9\frac{1}{2}$ inches in diameter, 9 inches high, and this, together with the pedestal, is made of one entire piece. The upper part contains a representation of Noah asleep, his children holding a covering, and a woman bearing in her hands a basket of fruit. This urn belonged to the French Crown, and was, at the time of the Revolution of 1791, estimated at more than 1,000,000 francs.







N1418175

